बेस्टसेलर हड़प्पा श्रृंखला का भाग 3

विनीत बाजपेयी

काशी

काले मंदिर का रहस्य

"विनीत बाजपेयी...साहित्य के बेहतरीन सितारे हैं।"—टाइम्स ऑफ़ इंडिया

बेस्टसेलर हड़प्पा श्रृंखला का भाग 3

विनीत बाजपेयी

काशी

काले मंदिर का रहस्य

Tree Shade Books

काशी

काले मंदिर का रहस्य

www.VineetBajpai.com

www.treeshadebooks.com

First published in English as *Kashi: Secret of the Black Temple* by Tree Shade Books in 2018
First published in Hindi as *Kashi: Kale Mandir ka Rahasya* by Tree Shade Books in 2019
Published by TreeShade Books (VB Performance LLP) in 2019

Copyright © Vineet Bajpai, 2019
All Rights Reserved

Vineet Bajpai asserts the moral right to be identified as the author of this book. This is a work of pure fiction. Names, characters, places, institutions and events are either the product of the author's imagination or are used fictitiously. Any resemblance of any kind to any actual person living or dead, events and places is entirely coincidental. The publisher and the author will not be responsible for any action taken by a reader based on the content of this book. This work does not aim to hurt the sentiment of any religion, class, sect, region, nationality or gender.

Hindi Translation by Urmila Gupta
Cover Design by Munisha Nanda
ISBN: 9789389237030
Printed by Excel Printer Pvt. Ltd.
A-45, Naraina Industrial Area Phase 1, New Delhi, 110028

This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise be lent, resold, hired out or otherwise circulated without the publisher's prior consent in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition, including this condition, being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the

rights under copyright reserved above, no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photocopying, physical, scanned, recording or otherwise), without the prior written permission of the copyright owner, except in the case of brief quotations (not exceeding 200 words) embodied in critical articles or reviews with appropriate citations.

Published by:
TreeShade Books (VB Performance LLP)
Ansal Corporate Park, Sector142, Noida
Uttar Pradesh - 201305, India
Email - publish@TreeShadeBooks.com
www.TreeShadeBooks.com

Contents

चेतावनी

अब तक की कहानी— पहला भाग— हड़प्पा

अब तक की कहानी— दूसरा भाग— प्रलय

प्राक्कथन

बनारस, 2017: 'ना.....ग!'

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व: 'भगवान ने... हमें त्याग दिया!'

बनारस, 2017: एक शापित असुर सम्राट, एक पराजित कौरव युवराज, एक अधर्मी तांत्रिक

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व: चंद्रधर

बैरकपुर (बंगाल), 1856: आर्यों का असाधारण आक्रमण

बनारस, 2017: राक्षस-बलि

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व: 'जीवित रहने के लिए मेरे साथ आओ, ओ मोहन जोदड़ो की राजकुमारी!'

अलीबाग, मुंबई का तटीय क्षेत्र, 2017: अपराध और रक्त का साम्राज्य

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व: कर्मों का ऋण

बनारस, 2017: एक मनुष्य का कत्ल

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व: हड़प्पा—रक्तधारा का अभिशाप

बनारस, 2017: कार्तिकेय

मोहन जोदड़ो, 1700 ईसापूर्व: मृतकों का टीला

बनारस, 2017: हत्यारों का कानून

आर्यवर्त के घने जंगल, 1699 ईसापूर्व: दैत्य

बनारस, 2017: काशी विश्वनाथ
आर्यवर्त के घने जंगल, 1699 ईसापूर्व: सृष्टि का प्रहार
बनारस, 2017: एक सर्वसत्तावादी सरकार
आर्यवर्त के घने जंगल, 1699 ईसापूर्व: ध्रुव
बनारस, 2017: केदारनाथ
नौका का आधार शिविर, आर्यवर्त का दलदल, 1699 ईसापूर्व: अंतिम मानव बस्ती
बनारस, 2017: एक सर्वसत्तावादी सरकार—भाग II
आर्यवर्त का दलदल, 1699 ईसापूर्व: विराट नौका
न्यूयॉर्क, 2017: स्टोनफेलर परिवार
राष्ट्रकूट साम्राज्य, 762 ईस्वी: पृथ्वीवल्लभ
बनारस, 2017: सर्वसत्तावादी सरकार—भाग III
आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व: प्रचंड का आगमन
बनारस, 2017: 9/11
आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व: नीली अग्नि की रात
बनारस, 2017: मौत की सर्द आंखें
आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व: पुजारी वंश
बनारस, 2017: नैना व विद्युत
आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व: गुप्तचर
बनारस, 2017: देव व दानव
आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व: विदित जग का सबसे भयंकर हथियार
बनारस, 2017: अंतिम समाधान
आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व: रत्न-मारू
बनारस, 2017: अद्वैत, दुर्गादास व मार्कंडेय
आर्यवर्त के काले जंगल, 1698 ईसापूर्व: नर-मुंड
बनारस, 2017: काली मौत
आर्यवर्त के दलदल, 1698 ईसापूर्व: लाखों तीर
बनारस, 2017: 'कार्तिकेय ने इल्यूमिनाती को जलाने की कोशिश की'

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: नरभक्षी पिशाच
बनारस, 2017: रोहिणी नक्षत्र
विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: 'वो आ रहे हैं...'
बनारस, 2017: देवता से मिलने का समय आ गया है...
विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: अंतिम युद्ध—भाग I
बनारस, 2017: काला मंदिर
विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: अंतिम युद्ध—भाग II
बनारस, 2017: नाग राज
विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: 'इससे पहले कि वो नौका में चढ़ना शुरू करें, हमें नीचे उतर जाना चाहिए'
बनारस, 2017: शेषनाग
विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: अंतिम युद्ध—भाग III
बनारस, 2017: रूद्र प्रतिमा
विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: मत्स्य-प्रजाति के घुड़सवार
बनारस, 2017: 'पदार्पणम कुरु, प्रभु!'
विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: गंधक!
बनारस, 2017: 'वो यहां है...'
विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: युद्धविराम
बनारस, 2017: 'वो तुम्हारे पीछे आ रहे हैं, विद्युत'
विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: काली का युग
बनारस, 2017: शैतान!
विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: अंतिम युद्ध—भाग IV
बनारस, 2017: देव-राक्षस

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व: नर-बलि
बनारस, 2017: इतिहास के सबसे घातक हत्यारे
विनाशकारी प्रलय, 1698 ईसापूर्व: 'म...त्स्य!'
बनारस, 2017: 'यहां तक कि मृत्यु भी वाइट मास्क से भय खाती हैं!'
विनाशकारी प्रलय, 1698 ईसापूर्व: लोक-नास!
बनारस, 2017: 'बाबा........!'
विनाशकारी प्रलय, 1698 ईसापूर्व: विद्युत
बनारस, 2017: विद्युत

उपसंहार
क्रमश:...
लेखक के बारे में

चेतावनी

यह उपन्यास, कल्पना और किस्सों पर आधारित है, जिसे महज मनोरंजन के दृष्टिकोण से लिखा गया है। यद्यपि विषय के साथ विविध धर्मों, इतिहास, संस्थान, आस्थाओं और मिथकों का संदर्भ दिया गया है, लेकिन इसका उद्देश्य सिर्फ कहानी को अधिक समृद्ध और दिलचस्प बनाना है। लेखक सर्वधर्म में विश्वास रखता है, और सभी को बराबर मान और सम्मान देता है। कहानी में इस्तेमाल किए गए किसी ऐतिहासिक या पौराणिक तथ्यों की पुष्टि का वो दावा नहीं करता।

अब तक की कहानी— पहला भाग— हड़प्पा

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व —हड़प्पा के देवता, शक्तिशाली विवास्वन पुजारी, जिसे दशकों तक हड़प्पा के सूर्य के तौर पर पूजा जाता रहा, पर एक निर्मम छल द्वारा घात लगाया गया। उसका विश्वस्त मित्र और उसकी पत्नी का भाई, बुद्धिमान पंडित चंद्रधर, अपनी पत्नी प्रियम्वदा की ईर्ष्यालु महत्वाकांक्षा के आगे घुटने टेक देता है। चंद्रधर की रूपवान पत्नी मोहन जोदड़ो की राजकुमारी थी। तीन अंधे, काले जादूगरों, गुन, शा और अप को प्रियम्वदा और उसके दुष्ट सेनाध्यक्ष, रंगा के निमंत्रण पर हड़प्पा बुलाया जाता है। काले जादूगर नगर के जल स्रोत को अपने जहर से दूषित कर, वहां के समस्त नागरिकों को पागल और हिंसक बना देते हैं।

इस सब गहमागहमी में, विवास्वन पुजारी को नयनतारा, हड़प्पा की आकर्षक नृत्यांगना की हत्या के झूठे आरोप में फंसाया जाता है। हड़प्पा के देवता को मृत कारावास की सजा सुनाई जाती है। उसका शूरवीर पुत्र, युवा मनु, विवास्वन पुजारी के अंतिम मित्र और हड़प्पा के मुख्य अभियंता, पंडित सोमदत्त के साथ

मिलकर शत्रु का सामना करता है। उस जंग में मनु बड़ी ही वीरता से दुष्ट रंगा का वध कर देता है। इसी बीच, ज्ञान की देवी सरस्वती, एक असामान्य और अशुभ वेग से हलचल उत्पन्न करती है, जिससे समस्त हड़प्पा सभ्यता के अस्तित्व पर संकट खड़ा हो जाता है। ज्योतिषी भीषण प्रलय की भविष्यवाणी करते हैं। देवता की स्वरूपवान पत्नी और मनु की मां, संजना हड़प्पा के पागल सैनिकों के तीरों का निशाना बन, युद्धभूमि में ही अंतिम सांस लेते हुए, अपने बेटे की बांहों में दम तोड़ देती है। सोमदत्त और अपनी करीबी मित्र, सुंदर तारा के आदेश पर मनु घोड़े पर सवार हो, अपनी मां के मृत शरीर को गोद में लिए, वहां से निकलता है। लेकिन जैसे ही वो मूसलाधार बरसात के बीच आगे बढ़ता है, तो जहर में बुझे तीर मनु की कमर और गले में आ धंसते हैं।

हड़प्पा के देवता को वहां के विशाल स्नानागार में पशुओं की तरह खींचकर, प्रताड़ित किया जाता है। विक्षिप्त सैनिकों के वार, हिंसक भीड़ के पत्थरों और थूक से उसकी खाल उतार दी जाती है। देवता, हड़प्पा का सूर्य—विवास्वन पुजारी—प्रतिशोध की कसम लेता है। वो आदमी जो कभी अपने तेज में स्वयं ईश्वर के समान दिखता था, अब किसी प्रेत या शैतान से कम नहीं दिखाई दे रहा था। वो ऊपर आसमान को देखता है और खून को जमा देने वाली भीषण चीत्कार में घोषणा करता है—

'पहले से ही मृत लोगों सुनो। मुर्दों की सभा, मेरी बात सुनो। मूर्खों सुन लो।

मैं आधा-मनुष्य, आधा-भगवान हूं!'

बनारस, 2017 (वर्तमान) —प्राचीन नगरी बनारस में स्थित, *देव-राक्षस मठ* के 108 वर्षीय वृद्ध, रहस्यमयी प्रधान, द्वारका शास्त्री अपनी मृत शय्या पर हैं। वो अपने बेहद कामयाब, आकर्षक और प्रतिभाशाली परपोते, विद्युत को बुलवाते हैं। गुड़गांव से निकलने से पहले, विद्युत अपनी प्यारी साथी दामिनी और विश्वस्त मित्र बाला को बताता है कि वो प्राचीन और रहस्यमयी, देवताओं के वंश से है। बनारस पहुंचने पर विद्युत पाता है कि वहां सदियों से उसकी प्रतीक्षा की जा रही थी। पुरोहित जी, बलवंत (मठ का युद्ध प्रमुख) और गोवर्धन (उसके वंश के चिकित्सक) से मिलने के साथ ही वो अपने बचपन की दोस्त नैना से भी मिलता है। नैना एक बहुत ही आकर्षक युवती बन चुकी है और विद्युत उसके प्रति एक चुंबकीय आकर्षण महसूस करता है।

महान *मठाधीश* द्वारका शास्त्री विद्युत को बताते हैं कि उनका वंश एक घातक श्राप ढो रहा है। और कि विद्युत आखरी देवता है, जिसका जिक्र भविष्यवाणी में किया गया था—सिर्फ अपने वंश का ही नहीं, न ही सिर्फ मठ या बनारस का—बल्कि वो पूरी मानवजाति का आखरी देवता था। जैसे ही विद्युत ने बनारस में अपने कदम रखे, एक रहस्यमयी इंसान रेग मारिअनी पेरिस में एक आदमी से मिलता है, जिसे उसके नाम नहीं, बल्कि ओहदे की वजह से जाना जाता है—मास्केरा बिआंका। रेग अपने बॉस, बिग मैन का लेटर मास्केरा को देता है। उस लेटर में लिखा था —*'उस कमबख्त आर्य-पुत्र को मार दो।'* मास्केरा बिआंका या वाइट मास्क यूरोप का सबसे खूंखार सरगना था। एक मासूम सा दिखने वाला, लेकिन प्रशिक्षित हत्यारा, रोमी परेरा बनारस पहुंचता है।

महान द्वारका शास्त्री विद्युत को हड़प्पा की भयानक कहानी सुनाते हैं और बताते हैं किस स्याह षड्यंत्र के तहत महानगर का सच हमेशा के लिए भारतीयों से छिपाया गया। वो बताते हैं कि कैसे ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्राचीन सभ्यता के सबसे मूल्यवान अवशेषों को जला दिया और उपमहाद्वीप को उसके पुराने वैभव के सच से वंचित कर दिया। लेकिन इससे भी अधिक अनपेक्षित था कि वो विद्युत को बताते हैं, वो और कोई नहीं बल्कि स्वयं विवास्वन पुजारी है—3700 साल बाद हुआ उसका पुनर्जन्म... जो इस नियति को पूरा करने आया है।

घटनाएं बड़ी तेजी से आगे बढ़ती हैं, जिसमें विद्युत की जिंदगी लेने का एक साहसपूर्ण लेकिन असफल प्रयास; नैना और विद्युत के बीच बीता एक जादुई पल, जब पलभर के लिए वो अपने होंठ विद्युत के होंठों पर रख देती है; मठ में दामिनी का खुशियों भरा आगमन; रोमी देवता को खुला निमंत्रण देते हुए उसे दशाश्वमेध घाट आने की चुनौती देता है। नैना के प्रति किसी संदेह के साथ विद्युत उन किराये के हत्यारों का मुकाबला करता है, जिन्हें उसी ने भेजा था, जिसने रोमी को नियुक्त किया था। विद्युत सारे हमलावरों का अकेले ही सामना करता है, लेकिन अपने सबसे विश्वस्त मित्र, बाला की गोली का शिकार बनता है। बाला पकड़ा जा चुका था, और देवता रात के अंधेरे में घाट पर रोमी का पीछा करता है। वो शातिर हत्यारा विद्युत की पकड़ में आ जाता है और पोटेशियम सायनाइट का कैप्सूल खाकर अपनी जान दे देता है। अपने आखरी समय में वो विद्युत को बताता है कि एक ताकत, जिसे न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के नाम से जाना जाता है, उसके... और समस्त मानवजाति के विनाश के लिए आ रही थी।

अब तक की कहानी— दूसरा भाग— प्रलय

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व —हड़प्पा का *देवता* , विवास्वन पुजारी चमत्कारिक रूप से महान स्नानागार की यातनाओं से बच निकलता है। एक साहसी और हिंसक मुकाबले में उसे बचाने के लिए उसका अंतिम मित्र और हड़प्पा का प्रतिभाशाली मुख्य अभियंता, पंडित सोमदत्त और उसकी वीर शिष्या तारा आते हैं। वो बचाव अभियान ऐसे भीषण युद्ध में बदल जाता है कि आने वाली पीढ़ियां सदियों तक उसे रक्त-वर्षा के रूप में याद रखेंगी। विवास्वन पुजारी उस कैद से एक राक्षस के रूप में बाहर निकलता है, जो अपने खाली हाथों से हड़प्पा के सेनाध्यक्ष के शरीर को फाड़कर रख देता है।

प्रतिशोध की अग्नि में जलता हुआ और अपने पुत्र मनु के जीवित होने की खबर से अनभिज्ञ, हड़प्पा का सूर्य, विवास्वन पुजारी नफरत के वशीभूत हो गया है। वो अकेला अपने धुर-दुश्मन, असुरों के सम्राट, कुख्यात राजा सुरा से हाथ मिलाने के

लिए जाता है। दानवीय सुरा और उसका योग्य युद्ध-प्रमुख प्रचंड विवास्वन पुजारी के मन में जहर भरने में सफल हो जाते हैं। देवता पर थूकने और उसे प्रताड़ित करने वाले हड़प्पावासियों और देवता का सबकुछ छीन लेने वाले नगर के विरुद्ध आक्रमण के बदले में, सूर्य ऐसा वचन दे देता है, जो उसकी पवित्र आत्मा को हमेशा-हमेशा के लिए कलंकित कर देता है। वो हड़प्पा के शाश्वत संरक्षकों, दिव्य सप्तऋषियों के सिर अ-सुरा को देने का वादा कर देता है।

इस दौरान, मनु उस रणक्षेत्र से निकलने में सफल रहता है, जहां उसने वहशी रंगा को उसकी परिणति तक पहुंचाया था। वो अपनी मां का शव घोड़े पर, अपनी गोद में लिए निकलता है। गंभीर रूप से घायल मनु सोमदत्त के सुझाव पर पूर्व दिशा—काले मंदिर—की ओर बढ़ता है, जहां उसे मार्ग में मूर्च्छित अवस्था में, पानी की कुछ बूंदों को तरसता, एक विचित्र मत्स्य-पुरुष दिखाई देता है। मत्स्य की खाल के से परिधान पहने और त्वचा में अलौकिक नीला प्रकाश लिए वो रहस्यमयी व्यक्ति जल्द ही मनु का मार्गदर्शक, मित्र, उपदेशक और सलाहकार बन जाता है। उसका नाम मत्स्य है। मनु मानने लगता है कि वो व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि स्वयं भगवान विष्णु का अवतार है।

जब मत्स्य मनु को प्राचीन काले मंदिर में ले जाता है, तो वो सूर्य पुत्र को बताता है कि यह मंदिर ऐसी पवित्र श्रृंखलाओं की सिर्फ एक कड़ी है। और काले मंदिर में मानवजाति का सबसे मूल्यवान रहस्य छिपा है। वह मनु को बताता है कि उसके पिता काले मंदिर के संरक्षक थे, और अब यह दायित्व मनु के कंधों पर आ गया है।

फिर मत्स्य आने वाले विनाश की भविष्यवाणी करता है—*'प्रलय... एष्यति...!'*

'विनाशकारी प्रलय आने वाली है!'

जब मनु अपनी प्रिय शतरूपा, जिसे वो प्यार से तारा पुकारता था, और पंडित सोमदत्त से मिला—तो मत्स्य ने उसे सत्यव्रत नाम से शोभित किया, और उसे विशाल नौका बनाने का आदेश दिया।

ऐसी नाव जो आने वाली प्रलय के सम्मुख मानवजाति की अंतिम शरण स्थली साबित हो।

हड़प्पा के सिपाहियों को, एक भीषण संग्राम में कुचलते हुए विवास्वन पुजारी ईंट और कांसे के पर्वत का नियंत्रण अपने हाथों में ले लेता है। वह दुष्ट सुरा को पवित्र सप्तऋषियों के पावन स्थल तक भी ले जाता है। उसके बाद हुए भयानक संघर्ष में, विवास्वन पुजारी सातों मुनियों को बचाने का असफल प्रयास करता है। देवता कीलगभग-परास्त हो चुकी तलवार, रत्न-मारू को उसी नीली अग्नि में परिष्कृत किया जाता है, जिसमें मुनि जलकर भस्म हुए थे, और हड़प्पा का सूर्य राक्षस-राजा सुरा का वध करता है।

लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। सातों मुनि सरस्वती के अलौकिक पुत्र थे, जो अपने बच्चों के वध से क्रोधित हो चुकी थी। रक्त धारा न सिर्फ विवास्वन पुजारी और उसके वंशजों को, बल्कि समग्र मानवजाति को शाश्वत कलह, हिंसा और नफरत का अभिशाप देती है। वो और उसके जलते हुए पुत्र भविष्यवाणी करते हैं कि विवास्वन पुजारी के वंश का प्रत्येक पुत्र उसी पीड़ा और क्रूरता से मारा जाएगा, जो उस रात नीली अग्नि में जलते हुए सप्तऋषियों ने भोगी थी।

बाद में, अंतिम सप्तऋषि हड़प्पा के देवता को आशीर्वाद देता है। इससे पहले कि विशाल भूस्खलन मुनियों की पवित्र शरण-स्थली को लील जाता, अंतिम मुनि विवास्वन पुजारी को भरोसा दिलाता है कि उसका पुत्र मनु अभिशाप और विनाशकारी प्रलय से अछूता रहेगा।

सत्यव्रत मनु ईश्वर द्वारा की जाने वाली कार्मिक शुद्धि में मानवजाति का बचाव करेगा।

अंतिम मुनि ने फिर विवास्वन पुजारी की ब्रह्मांडीय नियति के बारे में यह घोषणा की—

'तुम्हारा नाम अमर हो जाएगा, विवास्वन पुजारी। अब से हजारों साल बाद, तुम फिर से जन्म लोगे—उस महान नियति को पूरा करने के लिए, जो इस ग्रह पर आने वाले किसी भी दूसरे से अधिक महान होगी।

तुम इस काले मंदिर के राज की रक्षा इसके अंतिम समय तक करोगे। तुम ही होगे जो अब से सदियों बाद, रोहिणी नक्षत्र की पावन पूर्णिमा को इस रहस्य का उद्घाटन करोगे।

ओ महान देवता, इसके लिए तुम्हारा ही चयन किया गया है।'

बनारस, 2017 (**वर्तमान**) —बनारस के घाट से देव-राक्षस मठ की चिकित्साशाला में जाते हुए विद्युत अपनी अंतिम सांसें ले रहा था। तेजी से स्वस्थ होने पर, विद्युत को महान द्वारका शास्त्री के तांत्रिक-संघर्ष का पता चलता है, जिसमें उन्होंने विद्युत की आत्मा को पाताल की गहराइयों में कैद होने से बचाया था।

विद्युत को अभी भी अपने सबसे अच्छे मित्र बाला का विश्वासघात खाए जा रहा था, जिसने उसे घाट पर गोली मारकर घायल किया था। बाला अब मठ की कोठरी में कैद था, और उसे अपने किए का कोई पछतावा नहीं था। वह तो विद्युत को दुत्कारता है कि कैसे वो दुनिया की वास्तविकता से अनजान था। वो विद्युत को बताता है कि न्यू वर्ल्ड ऑर्डर देवता (विद्युत) को भविष्यवाणी में व्यक्त समय, रोहिणी नक्षत्र तक जीवित रखेगा। उनकी बातचीत में देव-राक्षस मठ में भयानक महा-तांत्रिक, त्रिजट कपालिक के आने से व्यवधान पड़ता है। मसान-राजा के नाम से विख्यात तांत्रिक द्वारका शास्त्री पर व्यंग्य कर, विद्युत का करीब से मुआयना करता है। उसके साथ आई हुई दो हत्यारिन डाकिन तुरंत ही अघोरियों की भीड़ में खो जाती हैं।

बाला का कटा हुआ सिर उसी मेज पर रखा मिलता है, जहां विद्युत कुछ देर पहले उससे बात कर रहा था। इस अमानवीय क्रूरता से अंतिम देवता हिल जाता है। उसके परदादा, शक्तिशाली द्वारका शास्त्री विद्युत को न्यू वर्ल्ड ऑर्डर की भयानक कहानी सुनाते हैं। वह बताते हैं कि कैसे नाइसेआ की ऐतिहासिक परिषद् में भयानक वैश्विक नजरिए की उत्पत्ति हुई थी। वह उद्घाटित करते हैं कि कैसे उनके शूरवीर पूर्वज अद्वैत शास्त्री ने महान कांस्टेंटाइन को इसके विकराल अंजाम से परिचित कराया था, और कैसे 12वीं सदी के नाइट्स टेम्पलर ऑर्डर की पहली महत्वपूर्ण सफलता थी। वो विद्युत को यह भी बताते हैं कि कैसे इस एकाग्र नजरिए ने स्याह भ्रातृसंघ में दुनिया के सबसे बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी और ताकतवर मनुष्यों को एकत्र कर दिया।

सारे रक्तपात और रहस्योद्घाटन के बीच, विद्युत और नैना इतने करीब आ जाते हैं, जितनी दोनों में से किसी ने भी उम्मीद नहीं की थी। नैना की अप्रतिम सुंदरता के वशीभूत हो, विद्युत स्वयं को रोक पाने में असफल रहता है और बनारस की उस आकर्षक लड़की को चूम लेता है।

रोम का बिग मैन एक बार फिर से अपने गुप्तचर को, हरी-आंखों वाले, इटली के डॉन मास्केरा बिआंका या वाइट मास्क के पास भेजता है। अब गुप्त भ्रातृसंघ के प्रमुख का विश्वसनीय मित्र बन चुके मास्केरा का उदय रक्त से भरी गलियों से हुआ था—मिलान की गलियों में पेचकश से हत्या करने वाला शातिर हत्यारा, अब यूरोप का निर्विवादित सरगना बन चुका था।

विद्युत और बलवंत बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के बुद्धिमान प्रोफेसर त्रिपाठी से मदद मांगने जाते हैं। पहले अनिच्छुक सा लगने वाला वो तांत्रिक, अंत में विद्युत की छाया तले मठ के समर्थन में आ जाता है। मठ में द्वारका शास्त्री प्रोफेसर का ब्रह्मानंद कहकर स्वागत करते हैं। पुरोहित जी विद्युत को बताते हैं कि त्रिजट और ब्रह्मानंद, दोनों कभी महान द्वारका शास्त्री के अनुयायी हुआ करते थे!

ब्रह्मानंद अमावस की रात को मसान-राजा पर आक्रमण करने का सुझाव देता है। उसके अनुसार उसी दिन रक्तबीज-अनुष्ठान में व्यवधान डालना उपयुक्त होगा। अगर उसे नहीं रोका गया, तो यह भयानक अनुष्ठान त्रिजट को अपराजेय बना देगा।

जब विद्युत, बलवंत और द्वारका शास्त्री त्रिजट कपालिक की यज्ञ-शाला में प्रवेश करते हैं, तो भयानक जंग छिड़ जाती है। मसान-राजा के तहखाने में, हवन-कुंडों में बिछी लाशों को देखकर, विद्युत को निश्चित हो जाता है कि वो महातांत्रिक के पाताल में कदम रख चुका था।

त्रिजट मृतकों का आह्वान करता है। हवन-कुंड से दो डाकिनी निकलने लगती हैं, तभी द्वारका शास्त्री शक्तिशाली शिव-कवच के मंत्रोच्चार से उन्हें वापस उन्हीं अंधेरों में भेज देते हैं, जहां से वो आई थीं। विश्वासघात करते हुए, ब्रह्मानंद विद्युत के सिर पर पीछे से वार करता है। देवता बेहोश हो जाता है। जब वो दोबारा अपनी आंखें खोलता है, तो स्वयं को त्रिजट के विशाल हवन-कुंड के ऊपर लटका पाता है। तहखाने की गुफा के चार स्तंभों से विद्युत के हाथ-पैरों को, चारों दिशाओं में जंजीर से जकड़ दिया जाता है।

एक-आंख वाले दानव, ब्रह्मानंद के परामर्श पर, मसान-राजा अपनी दो हत्यारिनों को द्वारका शास्त्री का सिर कलम करने का आदेश देता है। इस अकल्पनीय हरकत से विद्युत क्रोध से भर जाता है। देवता गुस्से से एक स्तंभ को चकनाचूर कर

अपनी एक बांह को मुक्त करा लेता हैं, और दिल दहला देने वाली आवाज में चिल्लाता है—

‘तुमने बड़ी गलती कर दी, ओ मसान-राजा!’ दर्द, क्रोध और नफरत से भरा विद्युत चिल्लाता है।

इसी के साथ वो दूसरे स्तंभ को गिराते हुए अपने दाहिने पैर को भी मुक्त करा लेता है, अब वो अग्नि के बिस्तर पर किसी उड़ान भरते ईश्वर की तरह झोटे भरता है।

‘तुम भूल गए, त्रिजट!

मैं आधा-मनुष्य, आधा-भगवान हूं!’

प्राक्कथन

नवंबर 1991, फिशरमैन’स वार्फ, सैन फ्रांसिस्को

वह जानता था कि वो अधिक देर तक नहीं छिप पाएगा।

वो संख्या में अधिक थे।

वो गंगा के घाटों से लेकर विख्यात अल्कात्राज़ जेल के पास के जमा देने वाले पानी तक उसका पीछा करने में सफल रहे थे। वह जानता था कि दुनिया के सबसे खतरनाक आदमी उसके पीछे लगे थे... और उन्हें कोई नहीं रोक सकता था।

अभी तो नहीं।

रोहिणी नक्षत्र की भविष्यवाणी तक तो नहीं।

मुझे एक फोन ढूंढ़ना होगा।

मुझे बाबा को बताना होगा।

जितना वो भीगे होने की वजह से कांप रहा था, उतनी ही थरथराहट उस योद्धा की भी थी, जो कड़े युद्धों के अनुभव से यह जानता हो कि उसका समय आ गया था। जब वो यह जान गया हो कि इस मुश्किल से पार नहीं पाया जा सकता था, और उसने अपनी आती हुई मौत और शत्रु की विजय को भांप लिया हो।

लेकिन यह कोई साधारण मनुष्य नहीं था। और उसे आसानी से पराजित नहीं किया जा सकता था। उसने अपने आकर्षक चेहरे से, अपने लंबे भूरे बालों को

पीछे की तरफ झटका दिया, और अपने बादामी आंखों को कुछ पल के लिए बंद किया। वो अपनी चेतना को अपनी कुंडलिनी में उतार रहा था, जैसा कि अधिकतर सक्षम वैदिक योगी अपने नश्वर शरीर को हमेशा के लिए त्यागने से पहले करते हैं।

फिर देव-राक्षस मठ का वंशज, अपने दांतों को भींचे, उस ओपन-एयर रेस्तरां के कोने से निकलकर, उस अशुभ रात के अंधेरे में आ गया। वह शटर बंद दुकानों और सूप के स्टॉल की छाया में चलने लगा। जब वो चुपचाप फोन बूथ की तरफ बढ़ा, तो नवंबर की निर्दयी बारिश उसके चेहरे और चमकते काले रेनकोट पर वार कर रही थी। उसे एक अंतिम फोन करना था। उसे अलविदा कहना था।

इससे पहले कि वो उन भेड़ियों के झुंड से भिड़ता।

अकेले अपने दम पर।

एक विशाल अफ़्रीकी-अमेरिकी आदमी, न जाने कहां से आ गया था। वो लगभग सात फीट लंबा था। वो किसी सांड की तरह चौड़ा था और भारी बरसात का उस पर कोई असर नहीं हो रहा था। उसने अपनी बेल्ट से बड़ा-सा ब्लेड निकाल लिया था।

काशी का तेजस्वी युवक निर्भीक था। वह दानवीय आदमी की तरफ बढ़ा, अपना रास्ता छोड़, अपनी दाहिनी तरफ की ग्रिल से छलांग लगाते हुए, उसने अपने बलिष्ठ बदन को मोड़, एक लात अमेरिकी के सिर पर जमाई।

आदमी विशाल पर्वत की तरह ढह गया, अपना चाकू यूं ही हवा में हिलाते हुए। मठ के वंशज ने फिर एक और लात जमाई, और दुश्मन के हाथ से चाकू गिर गया। वो अमेरिकी के पेट में जीत का अंतिम मुक्का मारने ही वाला था कि उसे अपने पीछे से जोरदार आवाज के साथ, किसी के असहनीय दर्द का अहसास हुआ।

वो मुड़ा और उसने उस अंधियारी, बरसात भरी रात में, स्वयं को दानवों की तरह दिखते सात-आठ आदमियों से घिरा पाया। असाधारण मनुष्य अपने हमलावरों के पीछे दिखते गोल्डन गेट ब्रिज की चमकती लाल रौशनी देख पा रहा था। उनमें से

एक ने पहले ही अपनी तलवार से उस पर घातक वार कर दिया था। अन्य दो उस पर अपनी लोहे की जंजीरों से वार कर रहे थे।

उसके बदन से रक्त यूं बह रहा था, मानो फटे हुए गुब्बारे से पानी निकल रहा हो। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा रहा था। वो जानता था कि उसका अंत नजदीक था। लेकिन उसने स्वयं को समेटते हुए, ठंडे पसीने को झटका और एक उनका मुकाबला करने के लिए खड़ा हो गया।

लेकिन वो जानता था।

इसी तरह मेरा अंत होगा। इस बरसाती रात में। अपनों से दूर।

एक निर्मम हत्या। जैसा कि भविष्यवाणी में कहा गया था।

‘बाबा......!’ दर्द और तकलीफ से सुबकते हुए, वो फोन में चिल्लाया। ‘मैं... मैं बोल रहा हूं... बाबा...’

वो फोन बूथ के ग्लास पैनल के सहारे टिका हुआ था। बूथ की दीवारें इस पवित्र आत्मा, सक्षम योगी और अद्भुत दक्ष योद्धा के रक्त से सनी थीं।

‘हां, मेरे पुत्र, मैं जानता हूं, तुम ही हो... मैं जानता हूं, तुम ही हो!’ वृद्ध द्वारका शास्त्री रोते हुए चिल्लाए।

मठाधीश जानते थे कि क्या हो रहा था। उनका उससे सामना हो चुका था। आख़िरकार, इतने साल धरती की काली ताकतों से लड़ते हुए, शास्त्री वंश का एक और वंशज उस काले अभिशाप की बलि चढ़ने वाला था।

‘मैं जा रहा हूं, बाबा...’ वो सिसका। ‘लेकिन मैं उनसे खूब लड़ा, और मैं बिलकुल बहादुरी से लड़ा... बाबा...’

वह अब बेहोश होकर जमीन पर गिर गया, फोन का रिसीवर अपने तार के साथ उसके कान के पास लटका हुआ था।

‘कुछ कहो... कुछ बोलो... मेरे बच्चे!’ द्वारका शास्त्री सुबकियों में डूबने से पहले फोन पर चिल्लाए।

वह हिला। काशी का वो आदमी, इतनी आसानी से, इतनी जल्दी नहीं मरने वाला था।

अपनी बची-खुची जान समेटते हुए वो वापस से फोन तक पहुंचा।

‘मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया, बाबा... मैंने उन्हें काले मंदिर का राज नहीं दिया!’ पूरी जान लगाकर वो फुसफुसाया।

द्वारका शास्त्री ने अपने दांत भींचे, आंसू उनकी आंखों से बह निकले।

‘मुझे तुम पर गर्व है, मेरे बच्चे। हम सबको तुम पर गर्व है।’

‘बाबा... मेरी पत्नी का ख्याल रखना। और मेरे छोटे बच्चे का भी... बाबा! उसे काशी में मत रहने देना। वादा करो मुझसे, बाबा... वादा करो कि आप उसे सुरक्षित रखोगे। सिर्फ आप ही उसे बचा सकते हो... बाबा...’

उत्तेजित, तड़पती हुई आवाज धीरे-धीरे गुम हो रही थी।

‘मैं वचन देता हूं, मेरे बच्चे...’ द्वारका शास्त्री ने कहा, तकलीफ से उनकी आवाज दब रही थी।

वो फिर से फुसफुसाए।

‘मैं तुम्हें वचन देता हूं... ओ ताकतवर कार्तिकेय!’

बनारस, 2017

'ना.... ग!'

वो अंधियारी, पत्थर की सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था। उस पेचीदा उतराई की खड़ी सीढ़ियों पर रौशनी के नाम पर सिर्फ उसी मशाल का प्रकाश पड़ रहा था, जो उसने अपने हाथ में पकड़ी हुई थी। दशकों तक काशी के रहस्यमयी संस्थान में वरिष्ठ सदस्य के रूप में रहने के बावजूद, इस रहस्यमय तहखाने में वो पिछले कुछ दिनों में ही पहली बार उतरा था।

उसके हर कदम से उस भयावह अंधेरे और मौत की सी ख़ामोशी में एक गूंज उठती। उसके खड़ाऊं की खटखट उसकी बेचैनी को और बढ़ा रही थी। वो बार-बार पसीने पोंछते हुए, प्रभु विष्णु की प्रार्थना बुदबुदा रहा था। उसे यकीन नहीं हो पा रहा था कि धरती में कितनी गहराई पर यह तहखाना बना था। उसने इसके बारे में सुना तो कई बार था, लेकिन अपने भयावय स्वप्न में भी उसने कभी यह कल्पना नहीं की थी कि यह जगह इतनी डरावनी और रहस्यमयी होगी।

जब उसने आखिरकार, तहखाने की जमीन पर पैर रखा, तब भी उसे कोई राहत महसूस नहीं हुई। असल में अब उसके काम के मुश्किल हिस्से की शुरुआत हुई थी।

कांपते हाथों से उसने गुफा की दीवार में लगी हुई दो मशालें और जलाईं। धीरे-धीरे अंधकारमय कक्ष अग्नि की नारंगी लौ से प्रकाशित हो गया।

अब जाकर तहखाने का वास्तविक विस्तार दृश्यमान हो पाया था। गुप्त कक्ष काले पत्थर से बना था, जिस पर पुराण में वर्णित, भगवान शिव और भगवान विष्णु की प्राचीन दानवों पर प्राप्त विजय गाथाएं, आकर्षक नक्काशी के रूप में उकेरी गई थीं। उन कलाकृतियों की उपस्थिति ने ही उसे आगे बढ़ने का हौसला दिया। वह सावधानी से एक लंबे, अंधियारे रास्ते की तरफ बढ़ा, जो तहखाने के केंद्र में बने कक्ष की ओर जा रहा था। उसे अपने गले में गांठ सी बनती महसूस हुई। भय उस पर दोबारा से हावी हो रहा था। और क्यों नहीं?

वह अब स्याह, मटमैले रास्ते से गुजर रहा था।

वो रास्ता जो उसे उस *जीव* तक ले जाने वाला था।

इस रहस्यमयी, अति-महत्वपूर्ण अतिथि के लिए सारे सम्मान के बावजूद भी वो उसे किसी और विशेषण से नहीं पुकार पा रहा था।

राह के मध्य में पहुंचकर, उसने रीढ़ में सिहरन उत्पन्न कर देने वाला हरे रंग का प्रकाश देखा। एक बार फिर से, उसका दिल धड़कना भूल गया। उस गुप्त तहखाने में यह उसका दूसरा चक्कर था, लेकिन फिर भी उसके मन से वो पहली बार वाला प्रभाव नहीं निकला था। दूर से आता प्रकाश अपने स्थान से हिला, और उनके अलौकिक अतिथि के पृष्ठ पर तेज दिखाई दिया।

और फिर उसने सुनी। वो आवाज जो दीवारों, छतों और दीवारों पर बनी प्रतिमाओं से आती जान पड़ रही थी। वो नसों को सुन्न कर देने वाली फुफकार थी।

किसी विकराल, आदिकालीन सर्प की फुफकार!

वो नहीं जानता था कि यह पारलौकिक आवाज कहां से आ रही थी। लेकिन यह देव-राक्षस मठ के परतदार-त्वचा वाले अतिथि की उपस्थिति की घोषणा सी करती

प्रतीत हो रही थी। उस मध्यकालीन तहखाने से आती वो ठंडी, निर्मम फुफकार बता रही थी कि वहां किस ने उपस्थिति दर्ज कराई थी...

‘नाग...’

‘ना.....ग...’

‘ना.....ग...’

वो निर्मम फुफकार उस तहखाने के प्रत्येक कण, प्रत्येक कोने से आती जान पड़ रही थी।

और भय के निष्ठुर तीर की तरह, उसने पुरोहित जी की आत्मा को भी भेद दिया।

अपने दोनों हाथों से अंजुली बना उसने उस बाल्टी से दूध लिया, जो पुरोहित जी उसके लिए लेकर आए थे। उसके लंबे बालों ने पूरी तरह उसका चेहरा ढंक रखा था, और बीस फुट की दूरी से भी वृद्ध पुजारी समझ सकता था कि उनका यह मेहमान आकार में बहुत बड़ा था, शायद आठ फुट से भी कुछ अधिक। यद्यपि उसकी आकृति इंसानों की तरह ही थी, लेकिन उसकी त्वचा सरीसृप प्रजाति की थी। और भयग्रस्त होने के बाद भी, पुरोहित जी सहमत थे कि उसकी परतदार त्वचा से जो तेज निकल रहा था, वैसा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

पुरोहित जी का मुंह सूख गया, जब उन्होंने उसके पैर पर एक कोबरा को रेंगते हुए देखा। उन्होंने नीचे देखने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि वो जानते थे कि वहां क्या होगा। दर्जनों जहरीले किंग कोबरा इस सर्प-मनुष्य के दास थे। लेकिन कभी भी उन्होंने उससे मिलने आए किसी आगंतुक को डसा नहीं था—अभी पुरोहित जी आगंतुक थे। कोबरा अतिथि के बलिष्ठ कंधों, उसकी शक्तिशाली बांह पर हमेशा की तरह विराजमान थे। ये साफ़ था कि वो उसकी इच्छा के दास थे।

उस सर्प मनुष्य के सम्मान में हाथ जोड़ने से पुरोहित जी स्वयं को रोक नहीं पाए। उसमें कुछ तो चुंबकीय आकर्षण था। और फिर अगर शक्तिशाली द्वारका शास्त्री ने

पुरोहित जी से कहा था कि उस अतिथि की देखभाल ठीक वैसे ही करना, जैसे तुम स्वयं भगवान शिव की करते हो, तो जरूर उसकी कोई तर्कपूर्ण वजह होगी।

लेकिन वो मूलभूत भय, जो उस पवित्र 'जीव' की उपस्थिति में आध्यात्मिक रूप से संपन्न, पुरोहित जी को भी हो रहा था, उसने दूसरे सभी भावों को दबा दिया। उस रहस्यमयी अतिथि के लिए मीठा दूध पहुंचाने के अपने कर्तव्य के बाद, बुद्धिमान पुजारी ने वहां से चले जाने का निर्णय लिया।

'प्रभु, अब मैं जाने की आज्ञा चाहता हूं,' पुरोहित जी ने विनम्रता से अपना सिर झुकाकर कहा।

तेजस्वी अतिथि ने सिर हिलाकर आज्ञा दी, उसका सिर अभी भी उसकी हथेलियों में था। लेकिन जैसे ही पुरोहित जी मुड़ने को हुए, उस अतिथि ने अपना सिर उठाया। यद्यपि उसके लंबे बाल अभी भी उसके चेहरे पर पड़े हुए थे, लेकिन उसकी तेज आंखों ने देव-राक्षस मठ के पुजारी को देखा, और पुजारी भय से बेहोश होते-होते बचा।

वो किसी मनुष्य के नेत्र नहीं थे। वो सीधे अंधेरे को भेदकर, काले आसमान में भयावह सूर्य के समान चमक रहे थे।

वो एक अनश्वर, आदिकालीन सर्प के पीले और काले नेत्र थे।

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व
‘भगवान ने... हमें त्याग दिया!’

वो नगर की सीमाओं पर बनी दीवारों से उसे देख रहे थे। वो भारी सेना से घिरे उनके द्वार की तरफ किसी निर्भीक सिंह की तरह बढ़ रहा था।

जिन लोगों ने उसे पहले देख रखा था, उन्हें भी वो शानदार ढंग से कुछ भिन्न दिखाई पड़ रहा था। तूफानी रात के इस अंधियारे और झिलमिलाते मशालों के प्रकाश में भी, हड़प्पा के उस सूर्य पुत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई पड़ रहा था।

उनमें से कोई भी नहीं जानता था कि वो बदलाव क्या था। वो नहीं जानते थे कि वो बदलाव हुआ कैसे था। क्योंकि उनमें से किसी को भी नहीं पता था कि पिछले कुछ दिनों से मनु किस दैवीय अस्तित्व के साथ था।

मनु का व्यक्तित्व, अधिक नहीं तो, अपने महान पिता की तरह ही आंखें चौंधिया देने वाला था। उसकी एक झलक भर से सैकड़ों हड़प्पावासियों की आंखों से दुख और पछतावे के आंसू बह निकले। वो मानने लगे थे कि अगर हड़प्पा का सूर्य जीवित होता तो ये सब कोहराम नहीं आया होता।

अगर विवास्वन पुजारी जीवित होता तो इस अवश्यंभावी प्रलय को भी टाला जा सकता था।

शायद वो सही सोच रहे थे।

उसके दाहिनी तरफ उसकी प्रिय साथी तारा थी। वो उसके साथ किसी योद्धा-राजकुमारी की तरह घुड़सवारी कर रही थी, उसकी कमर पर उसकी तलवार लटकी हुई थी। उसके हाथ में उसका पसंदीदा फरसा था, मानो वो अकेले ही पूरी फौज का सामना करने के लिए तैयार थी। पंडित सोमदत्त मनु के बाईं तरफ था। उसकी सम्मानित उपस्थिति उस पल को अधिक विश्वसनीय और गंभीर बना रही थी।

अपने निजी योद्धाओं और सोमदत्त की टुकड़ी के अतिरिक्त, मनु के झंडे तले आने वाले मत्स्य-प्रजाति के सैनिकों ने उसकी सैन्य श्रेष्ठता को बढ़ा दिया था। हड़प्पा के निवासियों और सैनिकों ने कभी ऐसी अपराजेय सेना नहीं देखी थी। जिस तरह मत्स्य-प्रजाति के सिपाहियों ने अपनी एकताल और एकाकार भावों से मनु को चकित कर दिया था, वैसे ही अब हड़प्पा के वासी मुग्ध थे। वो सभी निर्भीक और अपराजित लग रहे थे।

द्वार से सौ कदम दूर रहने पर, मनु ने अपनी दाहिनी मुट्ठी ऊपर उठा दी। यह उसकी सेना को रुकने का आदेश था। कुछ ही पलों में, घोड़ों के चलने और हथियारों के खनखनाने की आवाज शांत हो गई। हड़प्पा के वासी पूरी तरह खामोश थे, और वो नगर की दीवारों में बने झरोखों से झांक रहे थे। वो नहीं जानते थे कि विवास्वन पुजारी के बेटे से क्या उम्मीद करें। क्या मनु नगर का विनाश करने आया था? क्या वो अपने अपकृत अभिभावकों के भयानक अंत का बदला लेने आया था?

तेज हवाओं और लगातार गरजते बादलों के बीच बस ऐसी ही फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी।

मनु घोड़े से उतरा और उसके एक सिपाही ने उसे मशाल पकड़ाई। उसने सोमदत्त को देखा, जिसने धीमे से सिर हिलाकर उसे अपना समर्थन दिया। वह धीरे-धीरे लेकिन दृढ़ कदमों से नगर की दीवारों की तरफ बढ़ा, वो जानता था कि डरे हुए हड़प्पावासी वहां से उसकी बात सुन पाएंगे। उनके नजदीक पहुंचकर, मनु ने अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाली, सबको दिखाने के लिए उसे उठाया, और फिर उसे जमीन पर गिरा दिया, सबको किसी धातु के गिरने की तेज आवाज सुनाई दी। वो उन लोगों को भरोसा दिलाना चाहता था, जो कभी उसके महान पिता को प्रेम करते थे कि वो वहां उन्हें नुकसान पहुंचाने नहीं आया था।

लेकिन वो नहीं जानते थे कि मनु वहां सिर्फ उन्हें ही नहीं, बल्कि समग्र मानवजाति को बचाने आया था। पुरुषों को, महिलाओं को और बच्चों को। वृद्ध और युवाओं को। धनी और निर्धनों को। पापियों और संतों को। उन सबको।

वो वहां उन्हें निश्चित विनाश से बचाने आया था।

वह उन्हें प्रलय से बचाने आया था!

‘हड़प्पावासियों, मेरी बात सुनो!’ मनु ने उन हजारों लोगों से चिल्लाकर कहा, जो ऊंची दीवारों के पीछे एकत्र हो गए थे, वो अपनी गर्दन ऊंची करके उस आकर्षक युवक की एक झलक देखना चाहते थे, जो उन्हें संबोधित कर रहा था।

‘हड़प्पा में ऐसी प्रलय आने वाली है, जिसकी कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी!’ उसने कहा। ‘ये बर्फीला तूफान जो भूमि को भूखे अजगर की भांति निगल रहा है; ये कभी न रुकने वाली बारिश, जिसने हमारी आत्मा तक को भिगो दिया है; गरजते बादलों की यह दहाड़, किसी शैतान की तरह आग उगल रही है—ये और कुछ नहीं बल्कि उस विनाश की अशुभ चेतावनी है, जो आर्यवर्त की तरफ बढ़ता चला आ रहा है!’

महानगर के वासी ये सुनकर स्तब्ध थे। पिछले कुछ दिनों से हो रही अप्राकृतिक, दिल को दहला देने वाली घटनाओं की वजह से वो कुछ भी मानने को तैयार थे। हड़प्पा के आम जनों के बीच एक विशिष्ठ व्यक्ति भी खड़ा था, जिसने स्वयं को सिर से लेकर पैर तक दुशाला से ढंक रखा था। वो भी दूसरे लोगों की ही तरह विवास्वन पुजारी के बेटे के मुख से निकली बातों को सुनने के लिए उत्सुक था।

वो पंडित चंद्रधर था, हड़प्पा का कुछ ही दिनों के लिए बना, बदकिस्मत राजा।

‘ओ हड़प्पावासियों जल का एक विशाल पर्वत आपके नगर की तरफ बढ़ रहा है! एक विनाशकारी प्रलय, जो समस्त बसावट को एक प्रहर से भी कम समय में निगल जाएगी। आपको अपने बच्चों को बचाना होगा। आपको स्वयं को बचाना

होगा। आपको मुझ पर विश्वास करना होगा! हमें तुरंत यह नगर खाली करना होगा... अभी!’

दीवार की मुंडेर पर पसरा मौत का सन्नाटा अब फुसफुसाहट में बदल गया। क्या इस युवक का भरोसा किया जा सकता था? क्या उसने वो जल पर्वत देखा था, जिसकी वो बात कर रहा था? और अगर उसने देखा था, तो वो उससे कैसे बचा?

‘ओ सूर्य पुत्र, हमें आपकी बात का भरोसा क्यों करना चाहिए?’ किसी ने चिल्लाकर पूछा। ‘आने वाले भविष्य के बारे में आप इतने निश्चित कैसे हैं?’

अब तक, सोमदत्त भी आगे बढ़कर मनु के पास पहुंच गया था। हड़प्पा के सम्मानित अभियंता को हर कोई पहचानता था और उसके अभिवादन में बहुत से हाथ जुड़ गए। लोग जान गए थे कि वो सोमदत्त ही था जो मुश्किल समय में हड़प्पा के सूर्य के साथ खड़ा था। इस बात ने भी सोमदत्त के व्यक्तित्व को अधिक पूज्य बना दिया था। आज प्रत्येक हड़प्पावासी सोमदत्त बनना चाहता था।

‘चर्चा और बहस का समय निकल चुका है, मित्रों। हर गुजरता पल हमें मृत्यु के जबड़े के और करीब ले जा रहा है,’ सोमदत्त ने तेज आवाज में कहा। ‘यह युवक महान विवास्वन पुजारी का पुत्र है—उस व्यक्ति का, जिसने इस नगर और इसके निवासियों को अनेक आपदाओं से बचाया था। आपको इस पर भरोसा करना ही होगा। मैं आपसे विनती करता हूं। इस अनमोल पुत्र पर भरोसा करो!

सत्यव्रत मनु का विश्वास करो!’

शापित नगर के बहुत से लोगों ने एक झटके में ही अपने घर त्याग दिए थे—और अपने बच्चों और कुछ बहुमूल्य सामान को गठरी में बांधकर साथ ले लिया था। दूसरे लोग अभी भी नगर की दीवारों पर खड़े संदेह से उन्हें देख रहे थे।

अचानक एक तेज आवाज रात्रि की बयार को चीरती हुई सुनाई दी।

‘ईश्वर ने... हमें त्याग दिया है!’ एक वृद्ध महिला चिल्लाई।

उस कोलाहल भरी रात्रि में, उसकी कांपती हुई भयावह आवाज ने सबके दिल को दहला दिया था ।

‘नहीं, उन्होंने हमें नहीं त्यागा है!’ मनु ने प्रत्युत्तर में कहा।

‘कम से कम उनमें से एक ने हमें नहीं त्यागा है...’ एक पल बाद ही उसने स्वयं से बुदबुदाते हुए कहा।

बनारस, 2017

एक शापित असुर सम्राट, एक पराजित कौरव युवराज, एक अधर्मी तांत्रिक

वह ऐसा लग रहा था मानो उसके पूरे बदन को लाल लपटों ने निगल लिया हो।

तेजस्वी विद्युत अब त्रिजट कापालिक के हवन-कुंड के जलते अंगारों के बीच से बाहर आ रहा था। जबकि हर कदम के साथ वो दर्द से तड़प उठता था, लेकिन फिर भी इस जलन का उस आग से कोई मुकाबला नहीं था, जो देवता के दिल में जल रही थी।

मसान-राजा ने अपनी सारी सीमाएं पार कर दी थीं, जब उसने अपने दो निर्दयी साथियों को दराती से द्वारका शास्त्री का गला काटने का आदेश दे दिया था, वैसे ही जैसे उसने बाला का सिर धड़ से अलग करवाया था। भविष्यवाणी में व्यक्त देवता पर प्राप्त हुई कुछ क्षणों की जीत के नशे में अंधे हो, त्रिजट और ब्रह्मानंद ये भूल गए थे कि महान मठाधीश विद्युत के परिवार के इकलौते जीवित सदस्य थे। उसके प्यारे बाबा!

और इस कृत्य के लिए देवता उन्हें कभी क्षमा नहीं करेंगे।

ब्रह्मानंद को अपनी अकेली आंख पर विश्वास नहीं हुआ, जब उसने विद्युत को जलते हुए हवन-कुंड से बाहर आते देखा, विद्युत के पैरों के नीचे आते जलते कोयलों से उसे कोई असर नहीं पड़ रहा था। वो धरती के नीचे से निकलते हुए

आदिकालीन तेजस्वी राजकुमार की तरह लग रहा था। दोनों डाकिनियों का ध्यान भी उसी पर लगा था, जिसने अपनी बलिष्ठ मांसपेशियों द्वारा लोहे की जंजीर और मजबूत चट्टान से बने स्तंभ को तोड़ दिया था।

लेकिन सबसे अधिक अनपेक्षित और आश्चर्यभरी प्रतिक्रिया और किसी की नहीं, बल्कि स्वयं मसान-राजा की थी। त्रिजट कुंड से कुछ दूरी पर, जड़ खड़ा विद्युत को बिना पलकें झपकाए एकटक देख रहा था। मानो किसी बेहोशी में वो बार-बार यही शब्द दोहरा रहा था।

'ये वही है

ये वही है

ये वही है...'

उसके अनुयायियों ने पहली बार मसान-राजा के चेहरे पर मृत्यु का भय देखा था।

विद्युत के मन में कोई संदेह नहीं था। दोनों डाकिनियों को सख्त सजा दी जानी चाहिए थी। उन्होंने बेरहमी से बाला का सिर धड़ से अलग किया था, वो भी तब जब उस पतित खलनायक के हाथ बंधे थे और वो आत्मरक्षा तक नहीं कर सकता था। और अब, वो त्रिजट के आदेश पर विद्युत के परदादा का सिर धड़ से अलग करने चली थीं। वो इंसान नहीं थीं। कम से कम अब तो नहीं। और अब उन्हें खत्म किया जाना जरूरी था।

विद्युत सुनिश्चित करना चाहता था कि आज के बाद वो डाकिनियां किसी अन्य व्यक्ति को नुकसान न पहुंचा पाएं।

वो देवता के अनुमान से अधिक तीव्र थीं। जैसे ही विद्युत कुंड से उछलकर द्वारका शास्त्री के पास वाली डाकिनी की तरफ बढ़ा, वो वहां से नागिन की सी फुर्ती से भागी। इससे पहले कि विद्युत जान पाता, वो हाथ-पैरों के बल कलाबाजी मारते हुए विद्युत के पीछे पहुंच गई। एक अभ्यस्त दाव के साथ, उसने विद्युत पर अपनी

तेज दराती से वार लिया। लेकिन वह हत्यारिन नहीं जानती थी कि वो किसके सामने खड़ी थी।

विद्युत ने अपना सिर घुमाया, और किसी दक्ष किक-बॉक्सर की तरह, हवा में उछलते हुए अपनी दाहिनी टांग से डाकिनी के चेहरे पर वार किया। वो किक उस पर एक्सप्रेस ट्रेन के बल से पड़ी। अपने सारे रण-कौशल के साथ, वो निष्ठुर हत्यारिन खून उगलते हुए धरती पर जा गिरी। दस सैकंड से भी कम के समय में विद्युत ने उस दुष्ट दुश्मन का सफाया कर दिया था।

अपने दूसरे मुक्के के साथ तैयार होकर, विद्युत दूसरी डाकिनी की तरफ मुड़ा। उसने जो देखा वो उसकी उम्मीद से बिल्कुल परे था।

दूसरी हत्यारिन ने अपना हथियार गिरा दिया था और वो डर से कांप रही थी।

धीरे-धीरे गुफा के कोने की तरफ बढ़ते हुए, वो अपने घुटनों पर ढह गई थी, उसकी लाल आंखों से आंसू बह रहे थे।

मानो भयभीत त्रिजट अपनी जुड़वां की कठोर पराजय के बाद, बदकिस्मत अचानक किसी काले जादू से मुक्त हो गई थी।

विद्युत थक चुका था, वह बुरी तरह से घायल और झुलसा हुआ था। लेकिन वो टूटा नहीं था।

वो महातांत्रिक के आदमियों को देखने के लिए मुड़ा, जो इस पाताल में, मसान-राजा के नेतृत्व में सालों से राज करते आए थे। लेकिन अब उनमें से कोई भी इस भूमिगत गुफा के लाल अंधियारे में दिखाई नहीं पड़ रहा था। वो बदमाश पहले ही देवता के शुरुआती हमले में घायल हो चुके थे। और अब इस आदमी देवता को पत्थर का स्तंभ और लोहे की जंजीरें तोड़ते देखने के बाद, वो वहां से दुम दबाकर भाग चुके थे।

ऐसे समय जब मसान-राजा को अपने अनुयायियों की सबसे अधिक आवश्यकता थी, तो उसके साथ खड़े होने के लिए कोई नहीं था।

फिर वो आर्यवर्त का हारा हुआ असुर सम्राट हो, या द्वेपायन झील की गहराइयों में छिपा पराजित कौरव राजकुमार या भयानक तांत्रिक, जो ब्रह्मांड के प्रत्येक संसार में, प्रत्येक समय में पथ-भ्रष्ट हुआ हो... लेकिन बुराई का अंत ऐसे ही होता है।

अकेले।

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व
चंद्रधर

वो नजारा अविश्वसनीय और अद्भुत था।

हड़प्पा के दसियों हजार पुरुष, महिलाएं और बच्चे महानगर की अंधेरी गलियों में उतर आए थे, जो गरजते बादलों और कड़कती बिजली की चमक से बार-बार नीले प्रकाश से प्रकाशित हो उठते थे। वो तेज तूफ़ान और ठंडी बारिश को चुनौती दे रहे थे।

उन सबने एक आदमी पर अपना भरोसा पक्का कर दिया था। एक बार फिर से। उन्होंने अपना विश्वास वापस विवास्वन पुजारी पर स्थापित कर लिया था। उनकी मृत्यु के पश्चात भी। अब वो लोग मानने लगे थे कि अगर सत्यव्रत मनु में अपने महान पिता के चरित्र की लेशमात्र भी विशेषता होगी, तो वो ही उन्हें इस आपदा से बचा सकता था।

यहां तक कि शक्तिशाली सरस्वती के विनाशकारी प्रलय में डूबने के बाद भी, हड़प्पा के सूर्य ने अपने लोगों को नहीं त्यागा। वह उनके दिलों में था, उनके पछतावे और उनकी आशा में भी।

संपन्न व्यापारी और पुजारी अपने घोड़ों पर सवार हो गए थे, उनके परिवार उनके पीछे ढकी हुई घोड़ा-गाड़ी में थे। हजारों दूसरे लोग बैल-गाड़ियों में थे, जल्दी में जो भी हाथ लगा था, उसे उन्होंने गठरी में बांध लिया था। लेकिन अधिकांश जनता पैदल ही चल रही थी, यकीनन वो सभी आगे के अंतहीन सफर से डरे हुए थे।

हड़प्पा की सेना भी छिन्न-भिन्न होकर, इस महान गमन में नागरिकों के साथ चल दी थी। वो नशा जो मैसोपोटामिया के जादूगरों अप-शा-गुन के दिए जहर से हुआ था, अब हड़प्पा के योद्धा उसके प्रभाव से निकलने लगे थे। पछतावे में आकर वो सब अब उन दिनों को याद करके रो रहे थे, जब हड़प्पा के सूर्य ने उनका हाथ पकड़कर, उन्हें तलवार चलाना सिखाया था। उनमें से बहुत से लोगों को याद आ रहा था कि कैसे स्नेह से देवता ने उन्हें अश्व को नियंत्रित करना सिखाया था, वो पशु जिस पर आज उन्हें गर्व था।

ये सिपाही जानते थे कि अब वो पराजित और नेतृत्व विहीन थे। रंगा के हिंसक अंत की कहानी उनके कानों तक पिछली रात को ही पहुंची थी और वो देख रहे थे कि उस युगल मुकाबले का विजेता आज उनकी तरफ सहायता का हाथ बढ़ाने आया था। उन्होंने रक्त-वर्षा के बारे में भी सुना था, जिसमें विवास्वन पुजारी को बचाया गया था। वो हड़प्पा के सूर्य के हाथों बेरहमी से मरे सेनाध्यक्ष की कहानी से भी अनजान नहीं थे।

जो वो शक्तिशाली देवता विवास्वन पुजारी के लिए नहीं कर पाए थे, वो अब उसके शूरवीर पुत्र के लिए करने वाले थे।

वो अकथित रूप से सत्यव्रत मनु के आदेशों का पालन करने वाले थे।

बुद्धिमान, साहसी लेकिन दयनीय रूप से बदकिस्मत पंडित चंद्रधर अपने भव्य महल के निजी कक्ष के द्वार पर बैठा था। उसने एक निजी यज्ञ करके ब्रह्मांड के प्रत्येक कण से अपनी समग्र वीरता, दक्षता और साहस का आह्वान किया था। उसने अपनी पसंदीदा लंबी-तलवार भी म्यान से बाहर निकाल ली थी, जो उसके सम्मुख चमकते स्तंभ की तरह खड़ी थी। उसके हाथ उस तलवार के मूठ पर थे, जबकि तलवार का सिरा नीचे चमकते फर्श को छू रहा था।

अगर उसका भांजा अपने अभिभावकों संजना और विवास्वन की यातना और मृत्यु का बदला लेने आता है, तो इसमें उसका कोई दोष नहीं होगा।

लेकिन मेरे बच्चे, उसके लिए तुम्हें मेरी लाश पर से गुजरना होगा।

चंद्रधर को अपने प्राणों की परवाह नहीं थी। वो तो अंदर से उसी दिन मृत्यु को प्राप्त हो गया था जब वो अपने प्रिय मित्र, मार्गदर्शक और आर्यवर्त के संरक्षक, विवास्वन पुजारी की यातना और उस पर पत्थर फेंके जाने का मूक साक्षी बना था। लेकिन उस विद्वेषपूर्ण षड्यंत्र के बावजूद भी, जो उसने हड़प्पा के खिलाफ रचा था, उसकी सत्ता की भूख के बावजूद भी, उसकी नफरत से हड़प्पा में आई तबाही के बावजूद भी, उसे प्रियम्वदा को संरक्षित करना ही था। वो उसके जीवन का प्रेम थी।

वो उसकी पत्नी थी।

अब तक, चंद्रधर अच्छी तरह समझ गया था कि अपनी पत्नी के प्रति उसका अंधा-प्रेम और कुछ नहीं बल्कि उसकी मानसिक बीमारी थी। उसके प्यार की वजह से वो तर्क भूल जाता था। उसकी वजह से वो वास्तविकता और तथ्य का अंतर भूल जाता था। उसके प्यार ने उसे दानव बना दिया था।

इतने रक्तपात और धोखे के बाद भी, इतनी मौत और तबाही के बाद भी, हड़प्पा के पहले और अंतिम राजा की आंखें नहीं खुली थीं।

ना ही कभी खुलेंगी।

और सिर्फ इसी वजह से, इतिहास उसे हमेशा के लिए अपने पन्नों से मिटा देने वाला था।

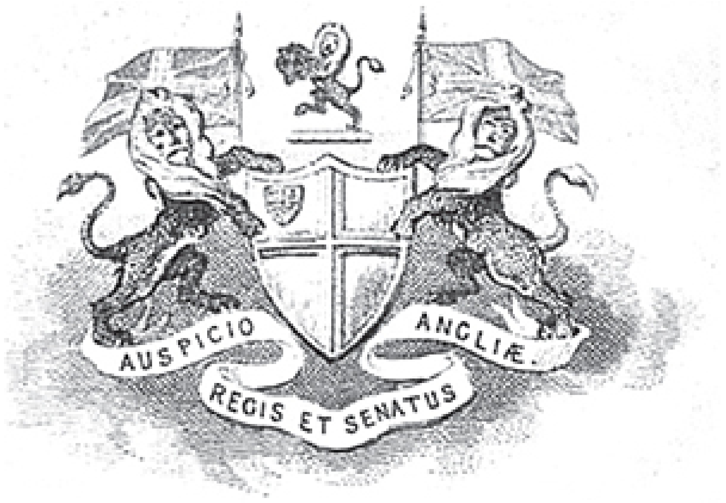

बैरकपुर (बंगाल), 1856
आर्यों का असाधारण आक्रमण

आधी रात बीत चुकी थी।

यद्यपि भारतीय गर्मी में भी रात 9 बजे तक अपना काम समेट लेते थे, लेकिन आज रात अपने महोगनी मेज पर बैठा हुआ, ब्रिटिश अधिकारी कागजों से नजर नहीं हटा पा रहा था। तेल के दीये की मद्धम रौशनी में वो पढ़ रहा था, उसका कमरा उसके सिगरेट के धुएं से भरा हुआ था, जो वो लगातार पिए जा रहा था।

यह अविश्वसनीय है।

वेन एश्ब्रूक अदम्य ईस्ट इंडिया कंपनी का युवा अधिकारी था। दो सदी से भी कम समय में वो कंपनी मुगल साम्राज्य को टैक्स और सत्कार देने वाली कंपनी से ऐसे विशाल साम्राज्य में परिवर्तित हो चुकी थी, जो पूरे भारत पर शासन करती थी। कभी अपराजेय रहे मैसूर के शेर, टीपू सुल्तान की 4 मई 1799 को हुई पराजय और हत्या के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी अबाध हो गई थी। और इस प्रभुसत्ता के

साथ ही उपमहाद्वीप में अगले कुछ दशक हिंसक इतिहास के गुजरे—ब्रिटिश दंभ के।

अंग्रेज अधिकारी, क्लर्क और सिपाही जो जहाजों से बॉम्बे और कलकत्ता के पोत पर शुरुआती सालों में उतरे, उन्हें तुरंत ही हिंदुस्तान से प्यार हो गया। भारतीय परिधान से लेकर भारतीय बीवियों तक, इन अंग्रेजों ने देश को खुली बांहों से गले लगाया। लेकिन फिर चीजें बदलने लगीं। कंपनी अधिकारियों की नई खेप शासक के अभिमान के साथ आई, और वो हर देसी चीज को असंतोष से देखने लगे। परिणामस्वरूप, भारतीय सिपाहियों की रैंक में घृणा पनपने लगी। गुपचुप इशारे और संकेत एक अनकहे विद्रोह की कहानी कहने लगे।

नफरत और मौत की पुरानी भविष्यवाणी एक बार फिर से साकार होने जा रही थी।

रक्त-धारा का अभिशाप सच होने जा रहा था।

पुराने, पीले पन्नों को पलटते हुए, वो बार-बार पढ़ने वाले अपने गोल चश्में को साफ किए जा रहा था। वेन एश्ब्रूक अपने आसपास के दूसरे अंग्रेज अधिकारियों से भिन्न था, और भारत की संपन्न संस्कृति और अतुलनीय विरासत की दिल से सराहना करता था।

मैनचेस्टर में पैदा हुए और संघर्षरत परिवार में पले, वेन को अपनी शिक्षा पूरी करने और नामी ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी पाने के लिए अनेक पापड़ बेलने पड़े थे। स्कूल में अमीर बच्चों के बीच हंसी का पात्र बनकर पढ़ते हुए, वेन ने सादगी और सज्जनता को सराहना सीख लिया था। जब वो मैनचेस्टर के नव-धनाढ्य समाज की जटिल गलियों में से गुजर रहा था, तभी उसने सादगी को अपनाना सीख लिया था।

और भारतीयों की इसी सादगी और सज्जनता ने ही युवा और ईमानदार अधिकारी का दिल जीत लिया था।

और उसके लिए संकट भी।

‘मुझे... मुझे कर्नल सेंडर्स से अभी मिलना होगा,’ उसने बैरकपुर छावनी के मध्य में बने कर्नल सेंडर्स के आलीशान बंगले के दरवाजे पर, उसके भारतीय रसोइये से कहा।

वेन अपने कागज एकत्र कर अपने वरिष्ठ से मिलने आ गया था। उसे ये दुर्लभ कागज आगरा और औध (आधुनिक उत्तर प्रदेश) के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, प्रयाग में एक हिंदू पुजारी ने दिए थे। पुजारी ने यह कहकर वेन को हैरान कर दिया था कि वो चालीस साल से अधिक समय से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब अंग्रेज ने उसे बताया कि चालीस साल पहले तो वो पैदा भी नहीं हुआ था, तो पुजारी ने वेन के बारे में सब कुछ बताकर उसे स्तब्ध कर दिया। उसने उसका जन्मस्थान, उसके अभिभावक और उसकी जीवन घटनाओं का समग्र ब्योरा सुना दिया।

‘इस, हिंदुस्तान में ही सब सभ्यताओं का जन्म हुआ है, वेन साहेब। इन ग्रंथों को लीजिए और अगर ग्रहण कर सकते हैं, तो उस सच को पढ़िए,’ कहते हुए पुजारी ने अपने झुर्रीदार हाथों से वेन को पुराने कागजों का एक पुलिंदा पकड़ा दिया। लेकिन उस दिन के बाद से, हर रात वेन उस पुजारी की दी हुई चेतावनी की वजह से सो नहीं पाया।

‘आपको नुकसान पहुंचाने से पहले वो एक बार भी नहीं सोचेंगे, साहब। बुराई की काली ताकतों से होशियार रहना।

ऑर्डर से होशियार रहना...’

वेन ये सोचे बिना नहीं रह सका था।

अगर पुजारी मेरे अतीत के बारे में जान सकता था, तो वो मेरा भविष्य भी देख सकता था। वह जानता है कि मेरे साथ क्या होने वाला था।

लेकिन उन ग्रंथों में से जो राज वेन के सामने खुला था, वो उसकी जान से अधिक बड़ा था।

‘ये बकवास है, वेन!’ अपने अध्ययन कक्ष में रखी मेज पर मुक्का मारते हुए कर्नल सेंडर चिल्लाया।

एक पल स्वयं को शांत करते हुए, वो कमरे के एक कोने में रखी लकड़ी की अलमारी की तरफ गया, वहां इकलौती लालटेन जल रही थी। उसने दराज खोलकर स्कॉच व्हिस्की की बोतल निकाली। बिना कुछ कहे, उसने दो क्रिस्टल गिलास में उसे उंडेल लिया। वो वेन की तरफ मुड़ा और घबराए हुए युवा अधिकारी को एक गिलास पकड़ाया। सेंडर फिर अपनी डेस्क के पीछे बैठ गया। उसने अपनी बेहतरीन व्हिस्की का एक घूंट भरा और सिगार जलाया। फिर उसने अपने सिगार से इशारा करते हुए, वेन को सामने की तरफ बैठने के लिए कहा।

‘देखो वेन, इस काम के लिए मैंने स्वयं तुम्हारा चयन किया था। मैं ये नहीं कह रहा कि तुम अच्छे मानवविज्ञानी और इतिहासकार नहीं हो। बल्कि, तुम तो बहुत अच्छे हो! लेकिन इस विषय की संवेदनशीलता के चलते, मैं तुम्हें सीधे अपनी कमांड में लेकर आया। मैं हमेशा जानता था कि मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूं।’

‘जी, सर...’ वेन ने अपने गिलास से सुनहरे द्रव्य का एक घूंट भरते हुए कहा। उसे भी खुद को सहज करने की आवश्यकता थी।

‘तो, जब तुम कह रहे हो कि तुमने इन प्राचीन हस्त-लिखित ग्रंथों को पढ़ा, और कि आर्य कभी भारत में बाहर से नहीं आए, तो तुम एक बड़ी योजना पर संकट का संकेत कर रहे हो,’ सेंडर ने अपनी बड़ी सी मुस्कान के पीछे अपना डर और निर्दयता को बड़ी मुश्किल से छिपाते हुए कहा।

‘कर्नल सेंडर्स, सर, अगर आप मुझे आज्ञा दें तो मैं समझा सकता हूं—1842 में चार्ल्स मेसन ने जिन अवशेषों को खोजा था वो किसी सामान्य व्यवस्था के नहीं थे। इन मध्यकालीन कागजों में ये बात स्पष्ट है। ये कागज एक प्राचीन ग्रंथ का अनुकरण हैं। वो कहते हैं कि इसकी मूल प्रति और किसी ने नहीं, बल्कि महान मुनि-राजा सत्यव्रत मनु ने लिखी थी!’

अपनी मेज के नीचे पिस्तौल पर सेंडर्स की पकड़ मजबूत हो गई।

फिर उसने उसे ढीला छोड़ दिया।

मैं इसे स्वयं नहीं मार सकता। यहां नहीं। छावनी के मध्य में नहीं।

वेन नहीं जानता था कि वो मौत के कितना करीब आ गया था। एक सच्चे शोधार्थी की तरह वह पढ़े हुए पर यकीन कर, उसका वर्णन कर रहा था।

'सर, पिछले कुछ दिनों में मैं कई हिंदू पंडितों से मिला। उन्होंने मुझे बताया कि यह सत्यव्रत मनु कोई साधारण मनुष्य नहीं था। उसने विनाशकारी प्रलय के समय समग्र सृष्टि को बचाया था। मनु हिंदुओं के लिए वही है जो नोआहम ईसाईयों के लिए था। दरअसल, कुछ शब्द-व्युत्पत्ति शास्त्री द्वारा ये संकेत करते हैं कि नोआ किसी व्यक्ति का नाम नहीं था। इसकी उत्पत्ति नौका या नैया या नाव से हुई थी!'

कमरे में भयानक सन्नाटा था। मानवजाति का सत्य बताने की उमंग में वेन सेंडर्स के चेहरे पर आए भयावह भावों को कोई नहीं देख सका।

'सर, वो अवशेष पृथ्वी की सबसे प्राचीन सभ्यता के थे। सरस्वती सभ्यता के! भारत मानवजाति की उन्नति का केंद्र था। इसकी भूमि दुनिया के किसी भी देश या प्रांत से अधिक संस्कृति संपन्न थी! और हमें इस भव्य सत्य को दुनिया के सामने लाना ही चाहिए, सर।'

वृद्ध, झुर्रीदार पुजारी सही कह रहा था।

ऑर्डर वेन की बात सुन रहा था।

·||卐||·

उसने कलकत्ता ट्रिब्यून के संपादक का आभार व्यक्त किया और उस प्रतिष्ठित अख़बार के भरे हुए कार्यालय से बाहर निकल गया।

जब वेन कलकत्ता की भीड़ भरी गलियों और खानों के ठेलों के पास से गुजर रहा था, तो कुछ सोचते हुए परेशान था। वो कर्नल सेंडर्स द्वारा पिस्तौल की नोंक पर कागज लिए जाने से हैरान था। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि ईस्ट इंडिया कंपनी का इतना वरिष्ठ अधिकारी ऐसी हरकत करेगा। लेकिन वो खुश था

कि कर्नल से मिलने जाने से पहले उसने कागजों की एक अन्य प्रति भी तैयार कर ली थी।

जब शाम की धुंधलाती रौशनी में किसी ने उसे पीछे से आवाज लगाई, तब भी वो विचारों में ही खोया हुआ था।

‘कैप्टन वेन एश्ब्रूक...?’

‘जी...’ कहते हुए वेन उसे देखने के लिए मुड़ा जिसने उसे आवाज लगाई थी।

वेन का क्षत-विक्षत शव राइटर्स बिल्डिंग सेक्रेट्रीएट के सामने एक पेड़ पर लटका हुआ था। सभी अखबारों ने इसे दो भारतीय सिपाहियों की हिंसात्मक कार्यवाही माना था। लेकिन सच कुछ और था। अधिक भयानक।

रक्त की प्यास वाली भविष्यवाणी वापस से अपना सिर उठाने वाली थी।

बनारस, 2017
राक्षस-बलि

विद्युत ने त्रिजट के अनुयायियों द्वारा छोड़ी हुई तलवार उठाई और महान मठाधीश के बंधे हुए हाथों को खोला। फिर उसने अपने बाबा के पास वापस आने से पहले, बलवंत को आजाद कराया, आखिर में उसने अपने बाबा को जमीन से उठाया और उन्हें कसकर गले से लगा लिया।

'मुझे क्षमा कर देना, बाबा, मैंने इतनी देर लगाई। मुझे अफसोस है कि किसी ने मुझ पर पीछे से वार किया और मैं समय रहते सचेत नहीं हो पाया...'

द्वारका शास्त्री स्तब्ध थे। एक मिनट पहले ही, एक धारदार दराती से उन्हें दर्दनाक मौत मिलने वाली थी। और पलक झपकने भर की देरी से, उन्होंने अपने परपोते को फिनिक्स के समान पाताल की गहराई से निकलते देखा। लेकिन इससे भी अधिक, वह प्रत्येक सांस और प्रत्येक पल गिन रहे थे। अपने अंत का पल। वह समय आया, और निकल भी गया।

उसकी कुंडली में यह समय निश्चित रूप से द्वारका शास्त्री के अंत का था और उसमें उच्च डिग्री का मारकेश योग भी था।

लेकिन यहां वो जीवित थे। जब उनकी आत्मा को दूसरी दुनिया में पहुंच जाना चाहिए था, तब द्वारका शास्त्री स्वस्थ और प्रसन्न खड़े थे।

कुछ चीज थी, जिसने उनकी नियति को कुछ दिया था।

कुछ चीज... या कोई व्यक्ति।

·||卐||·

विद्युत ने सोनू को इशारा किया कि मनोरोगी प्रोफेसर त्रिपाठी या ब्रह्मानंद को बंदी बना ले। उसने यही संकेत बलवंत को भी त्रिजट कपालिक को बंदी बनाने के लिए दिया। उसने अब अपना पूरा ध्यान अपने बाबा पर लगा दिया था।

लेकिन विद्युत बलवंत के रक्तिम नेत्रों से निकलती चिंगारियां देखने में असफल रहा था।

द्वारका शास्त्री अपने आंसू नहीं रोक पाए और उन्हें उन्मुक्तता से बहने दिया। विद्युत भी रो रहा था, उसका सिर अपने परदादा के कंधों पर रखा था, जो अभी भी मजबूत थे। उन्होंने शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से बहुत सहा था। हालांकि, कुछ ही पलों में देवता को महसूस हुआ कि उसके बाबा भावविह्वल हो सुबक रहे थे। यह अजीब था। यहां तक कि जिस सदमे से वो अभी गुजरे थे, वो भी द्वारका शास्त्री को यूं तोड़ पाने में सफल नहीं हो सकता था। विद्युत ने अपना सिर उठाकर मठाधीश के चेहरे को देखा, उसके हाथों ने अभी भी अपने बाबा की बांह पकड़ी हुई थी।

'*क्या हुआ बाबा. ..?*' उसने नरमाई से पूछा।

द्वारका शास्त्री ने नम आंखें लिए, हां में सिर हिलाया और अपने परपोते के गाल अपनी हथेलियों में लिए।

'*तुम वास्तव में देवता हो, विद्युत ...!*' वृद्ध ने जवाब दिया।

विद्युत उदासीनता से मुस्कुरा दिया।

'बिल्कुल नहीं, बाबा। मैं जानता हूं कि पिछले कुछ दिनों में मैंने दो बार स्वयं को आधा मनुष्य, आधा भगवान कहा था, लेकिन वह एक प्रकार का युद्ध-आह्वान था। मैं नहीं समझा सकता... लेकिन वो कहने से मैं स्वयं को अधिक मजबूत, अधिक गंभीर महसूस करता हूं। जैसे मैंने पहले भी ये शब्द कहे हों...' विद्युत ने कुछ अस्पष्टता से यह कहा, मानो वो याद करने की कोशिश कर रहा था कि उसने अतीत में कब ये कहा था।

उसने ये शब्द विशाल स्नानागार में यातना और पीड़ा के दौरान कहे थे। 1700 ईसापूर्व में। हड़प्पा के अंतिम दिनों में।

लेकिन विद्युत के रूप में नहीं।

'पहले से ही मृत लोगों सुनो। मुर्दों की सभा, मेरी बात सुनो। मूर्खों सुन लो।

मैं आधा-मनुष्य, आधा-भगवान हूं!'

'मुझे ऐसा कोई भ्रम नहीं है, बाबा। मैं कोई देवता नहीं हूं, न ही आधा-भगवान हूं। मैं बस आपका विद्युत हूं। महज एक मनुष्य।'

मठाधीश ने न में अपना सिर हिलाया, लंबी सांस ली और बोले। इस बार विद्युत को स्तब्ध करते हुए, उनके कांपते हाथ अपने परपोते के सम्मान में जुड़े थे।

'सिर्फ एक वास्तविक देवता ही कालचक्र पर विजय हासिल कर सकता है। मेरी मृत्यु लिखी जा चुकी थी, विद्युत! इस ब्रह्मांड में कोई वस्तु उसे नहीं बदल सकती थी। मेरा समय आ गया था। लेकिन वह पल आया और चला गया!'

विद्युत वहां खड़ा हुआ सुन रहा था, वो समझ नहीं पा रहा था कि उसके बाबा क्या कहने की कोशिश कर रहे थे।

'तुमने देखा नहीं, विद्युत? तुम्हारी उपस्थिति ने सब बदल दिया। तुम्हारी इच्छा-शक्ति ने समय की गति को बदल दिया। इस अशुभ समय से पहले जब तुमने

मुझसे कहा था कि तुम मेरे लिए वापस आओगे—तो ब्रह्मांड वो सुन रहा था, विद्युत।

और तुम्हारे आदेश का पालन कर रहा था!'

·||卐||·

विद्युत का दिमाग अभी उस धृष्ट सिद्धांत पर विश्वास करने की हालत में नहीं था, भले ही वो बात उसके प्यारे बाबा ही क्यों न कह रहे हों।

'अब हमें निकलना होगा, बाबा। हम वापस जाकर भी इस पर बात कर सकते...'

इससे पहले कि विद्युत अपना वाक्य पूरा कर पाता, उस तहखाने की गुफा, तेज चीख से गूंज उठी।

'विद्युत दादा........!!!'

विद्युत सोनू को देखने के लिए मुड़ा। वो घबराया हुआ युवक, मसान राजा के हवन-कुंड की तरफ इशारा कर रहा था।

जब उसकी नजर सोनू के इशारे की तरफ पड़ी, तो देवता ठंडे पसीने से तर हो गया।

·||卐||·

'नहीं बलवंत दादा... रुक जाइए!' चिल्लाते हुए विद्युत दौड़ा, वो छोटा सा फासला भी उस समय मीलों दूर जान पड़ रहा था।

देव-राक्षस मठ के युद्ध-प्रमुख, बलवंत ने त्रिजट कपालिक को अपने हवन-कुंड की दीवार पर टिका दिया था, जो मूल रूप से *रक्तबीज अनुष्ठान* के लिए बना था। बलवंत के भारी पैर त्रिजट के सीने पर थे, और गिरे हुए अघोरी का सिर नीचे जलते कोयलों और मांस के ऊपर झूल रहा था।

वो दया की भीख मांग रहा था।

विद्युत जानता था कि वो बलवंत की नीचे आती कुल्हाड़ी से तेज नहीं भाग सकता था।

'इसने हमारे मठ को अपवित्र किया, विद्युत! इसने आपको, हमारे मसीहा को मारने की कोशिश की! और फिर इसने हमारे मठाधीश के गले पर ब्लेड रखने की हिम्मत की!' बलवंत चिल्लाया, और फिर उसने महाकाल की भयावह प्रार्थना बुदबुदाते हुए, कुल्हाड़ी उठा ली।

बलवंत अब सीधे मसान-राजा की डर से फैली आंखों में देख रहा था, और फिर उसने लगभग वही शब्द दोहराए, जो कुछ समय पहले त्रिजट स्वयं बोल रहा था, बस कुछ अंतर के साथ।

'आज इसी अनुष्ठान अग्नि में... राक्षस-बलि चढ़ेगी!'

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व

‘जीवित रहने के लिए मेरे साथ आओ, ओ मोहन जोदड़ो की राजकुमारी!’

‘तुम कहां जा रहे हो, मनु?’ तारा चिल्लाई, जब उसने मनु को अपने हिनहिनाते घोड़े के साथ हड़प्पा के नए राजा के महल की तरफ मुड़ते देखा।

‘मुझे उन्हें बचाना होगा, तारा। मुझे पंडित चंद्रधर और प्रियम्वदा को बचाना होगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन्होंने मेरे और मेरे परिवार के साथ क्या किया। मैंने मत्स्य की आंखों में देखा है। जब हम इस विनाशकारी प्रलय के बारे में जानते हैं, तो प्रत्येक आत्मा को बचने का एक अवसर तो मिलना ही चाहिए। वैसे भी, प्रलय अपने तरीके से ही शुद्धि करेगी!’

‘लेकिन बाढ़ आने ही वाली है, सत्यव्रत! तुम शायद सही समय पर नगर को निगलने वाली उस बड़ी लहर से बचकर नहीं लौट पाओगे!’ मनु को रोकने की बेकार कोशिश करते हुए, तारा चिल्लाई।

सूर्य पुत्र एक बार फिर से मुड़ा, उसका तेज गति से भागता हुआ घोड़ा हवा की मानिंद घूमा। इस तूफानी रात में भी, मनु के चेहरे पर शरारत भरी, प्यारी मुस्कान दिखाई दी।

‘पता नहीं क्यों, लेकिन जब तुम मुझे सत्यव्रत पुकारती हो तो अच्छा लगता है!’

तारा शरमाई।

उसे प्यार से देखते हुए, बस इतना कहकर ही मनु और उसका घोड़ा उस तूफानी रात में गुम हो गए।

तारा स्तब्ध थी। कुछ दिन पहले ही मनु बदले की आग में झुलस रहा था। और अब वो, इस डूबते नगर में, उन दो लोगों को बचाने जा रहा था, जिन्होंने उसकी दुनिया उजाड़ दी थी।

उसमें इतना बदलाव कैसे आया था?

उसे तुरंत ही अपना जवाब मिल गया। वो मुस्कुराई।

मत्स्य।

वो महसूस कर सकती थी कि यह हड़प्पा की अंतिम रात्रि थी।

इस अशुभ रात्रि के वीराने में, उसने एक अकेले घोड़े को अपने महल, अपने घर की तरफ आते देखा। उसने स्वयं को मृत्यु के लिए तैयार कर लिया। यद्यपि वो जानती थी कि उसका पति चंद्रधर स्वयं एक समर्थ योद्धा था, लेकिन प्रतिशोध ने मनु को उसके सामर्थ्य से दोगुना अधिक बल दे दिया था। उसके अपने घर में रक्त गिरना तो अब तय था। फिर वो रक्त विवास्वन पुजारी के पुत्र का हो या उसके अपने पति का।

मनु ने सीधा अपना घोड़ा राजा के महल के केंद्र की तरफ बढ़ा दिया, पशु का पसीना उनके चमकते तल पर गिर रहा था, उसकी गूंज और चीख महल के खाली पड़े दरबार में गूंज रही थी। जब उसने भूतल को खाली पाया, तो तुरंत अपने घोड़े को विशाल सीढ़ियों की तरफ हांक दिया, जिससे वो ऊपरी मंजिल पर जा सके। राजा के शानदार महल में घोड़े से जाकर मनु गर्व या अनादर प्रकट नहीं कर रहा था। यह तात्कालिकता थी।

बाढ़ आने वाली थी।

चंद्रधर की भारी तलवार के निचले सिरे से रगड़ की तेज आवाज निकली, जैसे ही हड़प्पा का बुद्धिमान राजा मनु का सामना करने के लिए उठा।

वह जानता था कि यह उसके जीवन की सबसे बड़ी लड़ाई होने वाली थी।

वह गलत था।

जब मनु ने अपने कभी स्नेही रहे मामा को ऊपरी मंजिल के गलियारे में खड़े देखा, तो वो घोड़े से उतर गया। विशाल कक्ष में झिलमिलाती मशालों की रौशनी थी और खिड़कियों पर पड़े, आलीशान पारदर्शी पर्दे हिंसक हवा से तेजी से हिल रहे थे।

मनु ने अपने मामा के सामने अभिवादन से हाथ जोड़े। भली भावनाओं के बावजूद, उसका युवा दिल गुस्से से भड़क रहा था। एक पल के लिए तो उसे लगा कि अपनी तलवार निकालकर, तुरंत अपने अभिभावकों का प्रतिशोध ले ले। अपनी मां के मरने और पिता की यातना का दृश्य उसे सता रहा था। लेकिन फिर किसी तरह उसकी आंखों के सामने मत्स्य का मुस्कुराता चेहरा आ गया, और उसे समझ आया कि उसकी नियति में क्या बनना लिखा था।

'विजयी-भव, मनु,' चंद्रधर ने प्रत्युत्तर में कहा।

पंडित चंद्रधर जैसा उदार व्यक्ति ही अपने दुश्मन को विजयी होने का आशीर्वाद दे सकता था। वो अपनी प्यारी बहन संजना को नहीं भूला था। उसका पश्चाताप हिमालय की सबसे गहरी दरार से भी गहरा था। उसकी आत्मा उसके मृत मित्र के लिए रो रही थी। अगर वो अकेला होता, तो कब का उसने अपने नश्वर शरीर को त्याग दिया होता। लेकिन वो अकेला नहीं था। उसके पास प्रियम्वदा थी।

जब दोनों आदमी आमने-सामने आए, तो न जाने कहां से आकर्षक प्रियम्वदा शांति से गलियारे में आकर खड़ी हो गई। वह नंगे पैर थी। उसके रेशमी बाल खुले हुए थे और उसकी आंखों का काजल, उसके आंसुओं के साथ मिलकर उसके गोरे गालों पर आ गया था। अपनी निगाहों में वो स्वयं को भयानक मान रही थी। लेकिन वो देखने में असाधारण रूप से आकर्षक नजर आ रही थी।

मनु ने अपनी मुट्ठी भींचकर, दांत पीसे और उस महिला को देखकर अपने गुस्से को पिया। वह जानता था कि पंडित चंद्रधर महज एक प्यादा था, वो भावुक पति था। उसके परिवार और इस पूरे आर्यवर्त को तबाह करने वाला जहरीला नाग तो इस घृणित महिला के दिल में बैठा था।

लेकिन उसने एक बार फिर से स्वयं को याद दिलाया कि वो यहां क्यों आया था, और उसने प्रियम्वदा को देखकर जोर से और दृढ़ता से कहा।

‘जीवित रहने के लिए मेरे साथ आओ, ओ मोहन जोदड़ो की राजकुमारी!’

अलीबाग, मुंबई का तटीय क्षेत्र, 2017

अपराध और रक्त का साम्राज्य

असलम बाइकर पसीने से तर हो रहा था।

वो उस आदमी के आने की प्रतीक्षा कर रहा था, जिसकी उसने इतने सालों में सिर्फ आवाज ही सुनी थी—फोन के दूसरी तरफ से आती शाही ठसक लिए वो आवाज अकल्पनीय रूप से इतने ताकतवर और भयानक इंसान की थी कि असलम तक का रक्त जम जाता था।

और असलम बाइकर का रक्त जमना कोई रोज की बात नहीं थी।

असलम मुंबई के सबसे निर्भीक और भयावह अंडरवर्ल्ड डॉन में से एक था।

उसका वास्तविक नाम असलम राजी था। लेकिन अब कोलाबा की गलियों के लड़कों से लेकर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री तक, सब उसे असलम बाइकर के नाम से ही जानते थे।

जब उसने छोटे-मोटे अपराध से अपने कैरियर की शुरुआत की, तो उस झोपड़पट्टी में दो असलम थे। असलम राजी के पिता टेक्सटाइल मिल के एक ईमानदार कर्मी थे, जिन्होंने पैसे बचा-बचाकर एक नई, चमचमाती 100 सीसी मोटरसाइकिल खरीदी थी। लेकिन उस वृद्ध को यह नहीं पता था कि हर रात उसका अपराधी बेटा, उसकी बाइक को बाहर ले जाता था, और सुपारी (पैसों के लिए की जाने वाली हत्या) लेकर अपराधों को आकार देता था।

जैसे-जैसे समय गुजरा असलम का नाम मशहूर होने लगा, अब उसकी मोटरसाइकिल ही उसकी पहचान बन गई, जो उसे कॉलोनी के दूसरे असलम से अलग दिखाती।

कुछ ही दिनों में, उसका उपनाम राजी भुला दिया गया। डांस बार की दुनिया से लेकर पुलिस रिकॉर्ड तक में, उसका एक ही नाम था।

असलम बाइकर।

आलीशान सिकोर्स्की एस-76सी हेलीकॉप्टर, जिसे ब्लैक हॉक के नाम से जाना जाता है, धीरे-धीरे एक बड़े से बीच हाउस के बागीचे में उतरा। उस घर का मालिक असलम था। उस चॉपर की मुख्य सवारी वो इंसान था, जिसने सालों से चले आ रहे मुंबई के गैंगवार में असलम को जीवित रखा था। ये वही आदमी था, जिसने ज्यूरिक बैंक के दरवाजे असलम बाइकर के लिए खोल दिए थे। वो असलम के पंटर लोगों के लिए अत्याधुनिक ऑटोमैटिक हथियारों की सप्लाई भी करता था। उसके एक फोन की वजह से असलम कानून के पंजों से बचता आया था।

जैसे ही उस चमकते हेलीकॉप्टर का दरवाजा झटके से खुला, असलम और उसके आदमियों ने ध्यान दिया कि वो फ्लाइंग मशीन उड़ते हुए किसी विशाल पक्षी की तरह लग रही थी, लेकिन मजबूती में वो मिलिट्री के स्तर से कम की नहीं थी। चॉपर के इन समूहों का मालिक अपनी सुरक्षा को लेकर पूरी तरह गंभीर था।

जब ब्लैक हॉक की चिकनी लकड़ी और भूरे चमड़े की अंदरूनी साज-सज्जा दिखाई दी, तब उन्होंने उसे देखा। वो ऐसे प्रशिक्षित आदमियों से घिरा बैठा था, जिन्हें कोई भी गलती से अमेरिकी राष्ट्रपति का सुरक्षाकर्मी मान सकता था। जैसे

ही वो आदमी धीरे से मुंबई के डॉन को देखने के लिए मुड़ा, तो असलम को अपने गले में गांठ सी महसूस हुई। असलम उस गोरे आदमी के विशाल वैश्विक साम्राज्य का महज एक अदना सा मोहरा ही तो था।

·||卐||·

जब वो सिकोर्स्की एस-76सी की स्टील और महोगनी की सीढ़ियों की तरफ आया, तो वो स्वयं किसी तूफ़ान से कम नहीं नजर आ रहा था। उसके नैन-नक्श इतने आकर्षक थे कि एक बार तो वो चेहरा नारी-सुलभ प्रतीत होता, लेकिन उसका बलिष्ठ शरीर उसे अंतर्राष्ट्रीय अप्रश संगठन का निर्विवादित बादशाह घोषित करता था।

उसके बाल सफाई से उसके माथे से पीछे की ओर संवारे गए थे और उसका *मेबैक द डिप्लोमेट 1* चश्मा उसके असाधारण व्यक्तित्व को किसी युवक का सा अहसास करा रहा था। ये अलग बात थी कि उसका सारा लड़कपन तुरंत ही हवा में छू हो जाता था, जब नजर उसकी बेल्ट में लगी कोल्ट पाइथन रिवॉल्वर पर जाती थी।

उसकी काली जैकेट समुद्र की हवा से फड़फड़ाने लगी जैसे ही उसने पक्की सड़क पर कदम रखे। तब असलम बाइकर ने अपनी हिम्मत बटोरकर इटली के इस सरगना के स्वागत का निर्णय लिया। जैसे ही उसने आगे कदम बढ़ाया, गोरे आदमी के एक सुरक्षाकर्मी ने अपनी बांह बढ़ाकर मुंबई के गैंगस्टर को रुकने का इशारा किया। उस आदमी के दाहिने हाथ में सेमी ऑटोमेटिक मैक-10 मशीनगन तैयार थी।

ताकतवर मेहमान ने आपत्ति जताई। उसने अपने आदमी को संकेत किया कि उसके मेजबान को आने दिया जाए।

जैसे ही असलम बाइकर ने अपने कदम आगे बढ़ाए, उसके दिल की धड़कने रुक गईं । डॉन ने धीरे-धीरे अपना महंगा चश्मा उतारा। उसकी गहरी हरी आंखें सीधे असलम की आत्मा को चीर रही थीं, और उसे याद दिला रही थीं कि वास्तव में डर का क्या मतलब होता है।

वो बस कुछ ही शब्द बुदबुदा पाया...

‘मुंबई में आपका स्वागत है... मास्केरा।’

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व
कर्मों का ऋण

‘अपनी तलवार खींचों, मेरे बच्चे,’ चंद्रधर ने कहा। ‘तुम्हें अपना प्रतिशोध लेने का पूर्ण अधिकार है। और मैं उस महिला की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हूं, जिसे मैंने हमेशा प्यार किया है। हम दोनों सिर्फ वही कर रहे हैं जो किसी भी सम्मानित मनुष्य को करना चाहिए।’

प्रियम्वदा बुत बनी खड़ी थी और दो प्रतापी पुरुषों की बात सुन रही थी। उसकी सांस भारी हो गई थी, और बमुश्किल ही वो सांस ले पा रही थी... मानो उसकी सांस उसके पापों का बोझ ढो रही हों।

‘मैं यहां प्रतिशोध के लिए नहीं आया हूं, पंडित चंद्रधर। शायद आपने ध्यान दिया हो, हम प्रलय का सामना कर रहे हैं। इस नगर का पतन होने जा रहा है। आपको मेरे साथ आना होगा... अभी!’

भव्य कक्ष में एक पल के लिए सन्नाटा छा गया, जब तेज हवा ने आकर प्रियम्वदा के मनोरम चेहरे से बालों को हटा दिया और बिजली की चमक से कुछ पल के लिए कमरे में उजाला हो गया। चंद्रधर अपने कानों पर भरोसा नहीं कर पा रहा था। अपनी परेशान पत्नी का चेहरा देखने से पहले वो कुछ देर के लिए स्तब्ध खड़ा रहा। उसके चेहरे पर उभर आए राहत के भाव सुस्पष्ट थे।

‘लेकिन क्यों, मनु? मैंने नगर की दीवार से तुम्हारी पूरी बात सुनी थी। लोग तुम्हारे साथ आ रहे हैं! सेना तुम्हारे साथ है! और उसमें उनकी कोई गलती भी नहीं है।

लेकिन हम क्यों? तुम यहां हम दोनों को बचाने क्यों आए हो... हम दोनों, जिन्होंने तुमसे तुम्हारा सबकुछ छीन लिया?' टूटे हुए चंद्रधर ने कहा, उसकी आंखें भर आई थीं और आवाज भावुकता से बिखर रही थी।

बहुत सी ऐसी बातें थीं जो मनु कहना चाहता था। बहुत से ऐसे सवाल थे जो उसे पूछने थे। लेकिन यह सही समय नहीं था। उसने सिर्फ वही प्रतिक्रिया दी, जिसकी गवाही इस समय उसका दिल दे रहा था। उसने वही कहा, जो वास्तव में उसका व्यक्तित्व था।

'मैं यह इसलिए कर रहा हूं क्योंकि मैं महान विवास्वन पुजारी... हड़प्पा के वैभवशाली सूर्य का पुत्र हूं।'

अपनी बिखरती आवाज को साधने के लिए मनु रुका, और फिर अपनी बात पूरी की।

'मैं जानता हूं कि वो भी यही करते।'

पंडित चंद्रधर अपने घुटनों पर ढहकर, फूट-फूटकर रोने लगा।

वो चाहता था कि मनु उस पर हमला करे। वो चाहता था कि ये युवक अपना प्रतिशोध ले। वो स्वयं को अंतिम युद्ध के लिए तैयार कर रहा था। लेकिन इस युवक की भलमनसाहत के लिए वो किसी भी तरह स्वयं को तैयार नहीं कर पा रहा था। पंडित चंद्रधर के लिए मनु की क्षमा और उदारता की चुभन उससे अधिक दर्दनाक थी, जो दर्द उसे मनु के बाण दे पाते।

पागलपन के एक क्षण में, हड़प्पा के अंतिम राजा ने अपनी तलवार उठा ली, और मनु के तरफ बढ़कर उसे प्रतिघात के लिए ललकारा।

'अपनी तलवार उठाओ और मुझसे युद्ध करो, तुम युवा कपटी!' वो मनु पर चिल्लाया। 'मैं जानता हूं कि तुम इसीलिए ही यहां आए हो! अपनी कृपाण निकालों और मुझे बताओ कि तुम किस मिट्टी के बने हो! तुम्हें क्या लगता है कि पंडित चंद्रधर कोई रंगा है जिसे तुम आसानी से हरा दोगे? बच्चे, मुझे कोई नहीं

हरा सकता! केवल एक मनुष्य या देवता ऐसा कर सकता था... जो अब हड़प्पा में नहीं है। तो, युद्ध करो मुझसे!'

मनु जरा भी नहीं हिचका। पहली बार, उसे अपने सामने खड़े मनुष्य पर दया आ रही थी।

और फिर उसने प्रियम्वदा को देखा। उसके भाव बदल गए थे, वो नरम हो चली थी। वो रो रही थी, और उसके चेहरे पर केवल स्नेह ही था।

क्या दृश्य था! किसी और प्रतिशोध की आवश्यकता ही नहीं थी। चंद्रधर और उसकी बदकिस्मत पत्नी प्रियम्वदा पहले ही उस दर्द और जलन को सह रहे थे, जो किसी भी तलवार, भाले या बाण से अधिक थी।

तब मनु को समझ आया कि किस तरह कर्म ऋण का चक्र अविरत घूमता है। सृष्टि ने पहले ही प्रियम्वदा और उसके पति के पापों की सजा नियत कर दी थी। उसमें रक्त और हिंसा शामिल नहीं थी। किसी इंसानी दखल की आवश्यकता नहीं थी। कोई व्यक्तिगत प्रतिशोध जरूरी नहीं था।

ब्रह्मांड स्वयं ही सारे ऋणों का हिसाब चुकाने वाला था। अपने तरीके से।

'यही हमारे सफर का अंत है, मनु...' प्रियम्वदा ने अपने मुलायम, कांपते हाथों से मनु के गालों को सहलाते हुए कहा।

दूर से आती प्रलय की आवाज को अनसुना नहीं किया जा सकता था। मनु जानता था कि वो अगर अभी यहां से नहीं निकले, तो तीनों ही इस हतभाग्य नगर के साथ विशाल जल-पर्वत की भेंट चढ़ जाएंगे।

'आप समझते क्यों नहीं, हमें अभी निकलना होगा, ओ बुद्धिमान पंडित चंद्रधर!' मनु ने लगभग चीखते हुए कहा। उस पल की तात्कालिकता सारी औपचारिकता से बढ़कर थी।

'हमें यहीं छोड़ दो, और चले जाओ मनु। यह सुनहरी नगरी, जो आज हमारे पापों का बोझ ढो रही है, आज इसे ही हमारी अंतिम भूमि बनने दो। तुम यकीनन अपने

महान पिता का वास्तविक प्रतिबिंब हो। और इसी वजह से सृष्टि निर्माता ने तुम्हारा चुनाव बड़े उद्देश्य के लिए किया है। तुम्हें अभी निकल जाना चाहिए, सत्यव्रत। जाओ और जाकर अपनी नियति को पूर्ण करो।'

मनु चंद्रधर की बात को अनुसना कर, प्रियम्वदा की तरफ मुड़ा और अपना हाथ बढ़ाकर कहा।

'मेरे घोड़े पर चढ़ जाओ, देवी। यह हम तीनों को इस पतित नगर से बाहर निकाल पाने में समर्थ है...'

प्रियम्वदा के नेत्र अब अपने आंसू नहीं रोक पा रहे थे, जिन्हें वो बार-बार अपनी कलाई की सूती बांह से पोंछ रही थी। वो मनु को अब गहन प्रशंसा और उदारता की नजरों से देख रही थी।

'ओ शूरवीर सत्यव्रत, मुझमें कोई दिव्यता नहीं है। शायद अब तो कोई मानवता भी नहीं बची। लेकिन अगर मेरे पास कोई दिल है, जो अभी भी धड़क रहा है, रोने के लिए आंखें हैं और आशीष देने के लिए हाथ, तो इस ब्रह्मांड से मेरा आध्यात्मिक बंधन पूरी तरह टूटा नहीं है।'

मनु ध्यान से उस खूबसूरत जादूगरनी की बात सुन रहा था, जो अपने वर्तमान रूप के आकर्षण और अच्छाई से किसी को भी मोहित कर सकती थी।

'मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूं, मनु...' मोहन जोदड़ो की राजकुमारी ने कोमलता से मुस्कुराते हुए कहा। 'तुम विधाता के उस आदेश को पूर्ण करने में सफल रहो। तुम्हें जीवन में आंतरिक सुकून और ढेर सारा प्रेम मिले।'

उसने आगे बढ़कर मनु के मस्तक को चूम लिया, और वो अंतिम शब्द कहे जो प्रकृति का सामना करने वाले उस युवक के अमर होने वाले थे।

उसका दिया आशीर्वाद हमेशा के लिए सत्य होने वाला था... अपने समग्र रूप से।

'ओ सत्यव्रत मनु, ईश्वर करे तुम्हारा नाम हमेशा के लिए अमर हो जाए!'

बनारस, 2017
एक मनुष्य का कत्ल

सोलह घंटे गुजर गए थे।

'कुछ नहीं, बाबा...' सोनू ने कहा, वो अपने हाथ में खाने की अनछुई थाली लेकर वापस लौटा था।

देव-राक्षस मठ में आने के तुरंत बाद, विद्युत ने अपने कमरे में घुसकर, स्वयं को बंद कर लिया था। सोलह घंटों से उसने किसी की बात का कोई जवाब नहीं दिया था। उसने तब से कुछ खाया भी नहीं था।

देवता की आत्मा घायल हो गई थी।

उसका अब कोई उपचार नहीं था।

बर्बर पागलपन और मठाधीश के अपमान के आवेग में, बलवंत ने अपनी भारी कुल्हाड़ी से त्रिजट कपालिक का सिर छिन्न कर दिया था। ये सब कुछ ही पलों में हो गया था, और विद्युत को इस सबको रोकने तक का अवसर नहीं मिल पाया था।

विद्युत बस वहां बेबस खड़ा, मसान राजा के कुंड में उसके ही कटे सिर को खून उगलते देख रहा था। उसके लंबे बाल आग में तड़तड़ कर जल रहे थे।

और यह उसकी उम्मीद का आखरी तार था। जब वह अपने गुड़गांव के पेंटहाउस से बनारस निकलने के लिए हल्का-फुल्का सामान पैक कर रहा था, तब विद्युत को कोई अंदाजा नहीं था कि कितना रक्तपात, कितने षड्यंत्र, काले-जादू और कपट उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन फिर भी उसने बहादुरी से सबका सामना किया—वो किराये के हत्यारों से लड़ा, प्रशिक्षित हत्यारे का सामना किया, अपने प्रिय मित्र बाला के छल-कपट को सहा और उसका कटा हुआ सिर भी देखा, सब किसी प्राचीन अभिशाप और भविष्यवाणी की वजह से। लेकिन उसके अपने ही आदमी द्वारा, यूं किसी की जिंदगी लेने को वो बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

जिंदगी, फिर वो चाहे किसी भले इंसान की हो या बुरे, उसे बचाया जाना चाहिए। विद्युत स्वयं को ऐसे किसी भी संगठन से नहीं जोड़ सकता था जो ऐसा काम करती हो, या इस पर भरोसा करती हो। किसी इंसान को मारने के लिए कोई सफाई दी ही नहीं जा सकती थी।

बलवंत के निर्मम, बददिमाग कार्य ने इतना नुकसान किया था, जिसका अनुमान मठ का युद्ध-प्रमुख कल्पना में भी नहीं कर सकता था।

इसने विद्युत का यकीन देव-राक्षस मठ पर से हटा दिया था।

और उसके अस्तित्व के लक्ष्य से भी।

सुबह पौ फटते ही पुरोहित जी दिन की अपनी पहली प्रार्थना करने के लिए तैयार थे। जब वो देव-खंड में बनी विशाल शिव प्रतिमा के चक्कर लगा रहे थे, तो उन्होंने कुछ ऐसा देखा जिसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी।

विद्युत महान द्वारका शास्त्री जी की कुटीर की सीढ़ियों पर बैठा था। वो पूरी तरह तैयार था और विद्युत के पास रखा उसका छोटा बैगपैक देखकर तो पुरोहित जी का दिल ही बैठ गया। वृद्ध पुजारी सब समझ चुके थे।

विद्युत जा रहा था।

पुरोहित जी अंतिम देवता के पास आए, जिसने मद्धम मुस्कान से उनका स्वागत किया।

बुद्धिमान पुजारी ने विद्युत के पास की खाली जगह की ओर संकेत करके, सुबह की मंद हवा की तरह ही पूछा, 'क्या मैं वहां बैठ सकता हूं?'

'बिलकुल, पुरोहित जी,' विद्युत ने जवाब देते हुए अपना बैग हटाकर उनके लिए जगह बनाई। विद्युत के सारे शिष्टाचार के बावजूद, वृद्ध पुजारी देवता के घायल दिल की टीस महसूस कर सकते थे।

卐

'तो तुम जा रहे हो?'

'जी, पुरोहित जी...'

वहां एक पल ख़ामोशी रही, जब दोनों आदमी नीले-नारंगी आसमान को देख रहे थे। हर गुजरते छण के साथ, पवित्र नगरी काशी अपनी निद्रा से जागती हुई प्रतीत हो रही थी। पक्षी चहचहाने लगे थे और गाय भी रंभा रही थीं, जिन्हें मठ के आसपास के अनेक परिवार प्यार से खिला रहे थे। दूर पास के मंदिरों की घंटियां बजने लगी थीं, और उन्हीं के साथ सुबह की आरती का पवित्र स्वर भी सुनाई दे रहा था।

'मुझे बताओ, विद्युत... पुराणों में क्यों बुराई पर अच्छाई की विजय की अनेकों कहानियां वर्णित की गई हैं?' पुरोहित जी ने विद्युत की तरफ मुड़े बिना पूछा।

विद्युत समझता था कि ये चर्चा कहां जाने वाली थी। वो उसके बारे में कोई बहस नहीं करना चाहता था, जो उसकी नजरों में अक्षम्य पाप था।

'देखिए पुरोहित जी, आप जानते हैं कि मैं आपको कितना प्रेम और सम्मान देता हूं। लेकिन मैं आपसे भीख मांगता हूं कि अभी मुझे अकेला छोड़ दीजिए। आपकी कही कोई भी बात मेरे सामने हुई किसी आदमी की निर्मम हत्या की सफाई नहीं दे सकती है।'

‘यह मेरे सवाल का जवाब नहीं है, विद्युत,’ पुरोहित जी ने शांति से कहा। ‘अगर तुमने मन बना ही लिया है तो कोई भी तुम्हें नहीं रोक सकता। लेकिन तुम चाहे कितने ही परेशान क्यों न हों, लेकिन मठ को अपनी सफाई देने का एक मौका तो मिलना ही चाहिए।’

‘अपनी सफाई? आपने क्या कहा, अपनी सफाई? भगवान, मैं इस पर भरोसा नहीं कर पा रहा!’ विद्युत ने हताशा से कहा।

उसने घृणा से अपना सिर हिलाया और अपना बैग उठाकर चल दिया।

पुरोहित जी एक पल को झिझके। लेकिन फिर उन्हें अहसास हुआ कि यह पल ‘अभी या कभी नहीं’ का था।

उन्होंने चिल्लाकर विद्युत से कहा।

‘अगर तुम्हें लगता है कि इस हिंसा की शुरुआत हमने की, तो तुम गलत हो, मेरे देवता।

क्या तुम नहीं जानना चाहोगे कि तुम्हारे पिता, महान कार्तिकेय शास्त्री की हत्या कैसे हुई थी, विद्युत?’

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व

हड़प्पा—रक्तधारा का अभिशाप

‘जल्दी चलो... जल्दी चलो, मेरे विश्वसनीय मित्र!’

मनु अपने शक्तिशाली घोड़े के कान में बोलते हुए, उसे उस जल पर्वत से तेज दौड़ने को प्रोत्साहित कर रहा था, जो अब दुधिया आसमान के क्षितिज पर दूर से दिखाई दे रहा था। वो प्रलय इतनी विशाल, इतनी विकराल थी कि मनुष्य उससे बच निकलने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। दूर से दिखाई देती, आकाश तक पहुंचती लहर को देख इस दुर्लभ शूरवीर और असाधारण योद्धा, सूर्य पुत्र को भी पसीना आ गया।

प्राकृतिक आपदाओं में भी भयंकर, इस विनाश की भविष्यवाणी केवल ईश्वर ही कर सकते थे। मनुष्यों का विनाश करने वाले इस दूत को, धरती को हिला देने वाली गर्जना के अतिरिक्त और कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा था। हवा तीर से भी अधिक तेज से चल रही थी, जिससे प्रभावित हुई वर्षा, भव्य नगर हड़प्पा को हर तरफ से भेद रही थी।

अब जाकर मनु पिछले कुछ दिनों में दी गई मत्स्य की चेतावनी का वास्तविक अर्थ समझ पाया था। प्रलय—विनाशकारी प्रलय—धरती पर इसके प्रत्येक जीव को समाप्त करने के लिए उतरी थी। उसकी पहली ही झलक से मनु सहमत हो गया था।

प्रलय वास्तव में दुनिया का अंत था ।

वो—तारा, सोमदत्त, सत्यव्रत मनु और मत्स्य प्रजाति के लोग—हड़प्पा से एक योजन (लगभग 14 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित चट्टान पर खड़े हड़प्पा को देख रहे थे। उनके पीछे हड़प्पा के पुरुषों, महिलाओं, बच्चों और पशुओं का एक विशाल कारवां था। कुछ ही घंटों में मनु, सोमदत्त और उसके अनुयायी हड़प्पा के हजारों निवासियों को सफलतापूर्वक नगर से निकाल लाए थे।

सिवाय दो लोगों के।

पंडित चंद्रधर और उसकी प्रिय पत्नी प्रियम्वदा ने प्रलय के दौरान अपने ही नगर में रहने का निर्णय किया था। विनाशकारी प्रलय की चपेट में आने वाला हड़प्पा पहला नगर था। जैसे ही हड़प्पा के अंतिम राजा और मोहन जोदड़ो की राजकुमारी ने जबरन मनु को नगर के द्वार से बाहर जाने पर मजबूर किया, तो युवक बेबस होकर बस उन लोगों को पीछे मुड़-मुड़कर देखता रहा। अंतिम बार वो महल की छत पर खड़े होकर, उस बदकिस्मत जोड़े की धुंधली परछाई ही देख पाया था।

उस शापित नगर में प्रलय का स्वागत उन्होंने ईश्वर के सम्मुख अपनी बलि से करने का निर्णय लिया।

जब वो अस्थायी रूप से सुरक्षित ऊंचाई पर पहुंचा, तब भी मनु का मन उन मृत्यु को प्राप्त होने वाले पति-पत्नी पर ही लगा था।

क्या निरंकुश महत्वाकांक्षाओं से भरे दिल के अलावा और कोई भी बदकिस्मती होती होगी? ऐसा भी क्या सिंहासन जिसकी चमक इंसानी आत्मा के दर्द और यातना से फीकी पड़ जाए? और इस सबका अंत कैसे होगा?

प्रेम और क्षमा भरे दिल से, सत्यव्रत मनु ने उस शाही जोड़े को अपनी अंतिम विदाई दी।

'अंतिम प्रणाम, ओ बुद्धिमान पंडित चंद्रधर। प्रणाम, ओ मोहन जोदड़ो की सुंदर राजकुमारी।'

प्रलय ने अपनी सबसे पहली सफाई सफलतापूर्वक कर ली थी, और वो थी मनु की नफरत।

वह ऐसा दृश्य था, जिसे उनमें से किसी ने भी कभी संभव नहीं माना था। उनमें से कोई भी कल्पना नहीं कर सकता था कि एक नदी शक्तिशाली सागर से भी विशाल हो सकती थी। लेकिन वो वास्तव में उपस्थित थी। रक्त धारा!

मनु, तारा और सोमदत्त, सभी की आंखों से आंसू बह निकले, जब उन्होंने पहली लहर को भव्य नगर की दीवारों को ढहाते देखा। और वो लहर तो वास्तविक दानव का अदना सा ही सिपाही थी, वो दानव जो हड़प्पा को निगलने आ रहा था। किसी जहरीले नाग के फण की तरह समग्र नगर को निगलने से पूर्व जब पानी की चादर ने नगर को अपने में समा लिया, तभी मनु ने मन ही मन एक प्रार्थना बुदबुदाई। और फिर तुरंत ही उस निर्मम लहर ने नगर को यूं निगल लिया मानो वो कभी वहां मौजूद ही नहीं था।

अपने प्यारे नगर को तबाह होते देख हजारों हड़प्पावासी दुख और शोक के सागर में डूब गए। उन्होंने प्रत्येक इमारत, प्रत्येक मंदिर और प्रत्येक उपवन को नष्ट होते देखा। विशाल महल निर्मम हथौड़े की मार की तरह यूं ढहा मानो ताश के पत्तों का महल था। विशाल अन्नभंडार रेत के ढेर की तरह बह गए। विशाल स्नानागार पानी के इतने नीचे समा गया कि फिर कभी उस तक सूर्य का प्रकाश नहीं पहुंचने वाला था। ईंट दर ईंट, गली दर गली, सारे घर... हड़प्पा हमेशा के लिए लुप्त हो चुका था।

सृष्टि ने ही कभी मनुष्य को आकांक्षा दी थी कि वो मेहनत करके हड़प्पा जैसा विशाल नगर बसाए। और फिर उसी ताकत ने मनुष्य को अपनी सत्ता का अहसास करा दिया।

ये तो रक्त धारा के अभिशाप की शुरुआत भर थी।

बनारस, 2017
कार्तिकेय

पुरोहित जी के कहे कठोर शब्दों को सुनकर विद्युत जड़ रह गया।

'क्या तुम नहीं जानना चाहोगे कि तुम्हारे पिता, महान कार्तिकेय शास्त्री की हत्या कैसे हुई थी, विद्युत?'

विद्युत को अब तक यही बताया गया था कि नवंबर 1991 की एक बरसात भरी बदकिस्मत रात में, उसके पिता कार्तिकेय शास्त्री की कार एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई थी।

क्या उसकी जिंदगी में कुछ सच भी है? ये कौन सी जगह है? ये लोग कौन हैं?

विद्युत के हाथ से उसका बैग छूट गया, वो क्रोध और सच जानने की तड़प से झुलस रहा था। वो वृद्ध पुजारी की तरफ मुड़ा, जो अभी भी सीढ़ियों पर ही बैठे थे।

पुरोहित जी विद्युत की बेचैनी और उसका बढ़ता हुआ अविश्वास महसूस कर सकते थे। वो जानते थे कि मानवजाति की सुरक्षा की अंतिम लड़ाई के लिए, उन्हें विद्युत को वापस देव-राक्षस मठ में लाना ही होगा!

उन्होंने जल्दी से, स्पष्टता से अपनी बात रखी। 'कल बलवंत ने जिस आदमी की हत्या की वो उसी भयानक, घातक संगठन का हिस्सा था, जिसने हमारे प्रिय कार्तिकेय को मारा था, विद्युत।'

त्रिजट कपालिक न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के अनेकों शक्तिशाली सदस्यों में से ही एक था।'

अब वो देव-खंड के उद्यान में सैर कर रहे थे। विद्युत के दिल में पल रही सारी नफरत और तकलीफ के बावजूद भी, पुरोहित जी के लिए उसका स्नेह सबसे बढ़कर था। द्वारका शास्त्री के उठने तक, वो बुद्धिमान पुजारी के साथ कुछ समय व्यतीत करने को मान गया था।

'जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हूं, उसे स्वीकारना मुश्किल होगा, विद्युत। उस पर यकीन कर पाना और भी कठिन। इस अकल्पनीय षड्यंत्र का स्तर और जटिलता किसी को भी हैरान कर सकती है। लेकिन जो कुछ भी मैं तुम्हें अभी बताऊंगा, या तुम्हारे परदादा बाद में साझा करेंगे—वो सब सच है। उसका प्रत्येक शब्द सच है।'

विद्युत ने हां में सिर हिलाया। लेकिन वास्तव में उसकी रुचि अभी किसी और चीज में नहीं थी। वो बस जानना चाहता था कि आठ साल की उम्र में किसने उसके प्यारे पिता को उससे दूर कर दिया था। उसने सालों तक अपनी सुंदर और स्नेही मां को अकेलेपन से जूझते हुए देखा था। उसने अपना पूरा बचपन अपने पिता के बिना, बनारस से दूर, कहीं छिपते-छिपाते काटा था। इसकी वजह वो आज तक नहीं जानता है।

पुरोहित जी ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

'नाइसिया परिषद् के बाद जिस ऑर्डर की नियुक्ति महान कांस्टेंटाइन ने की थी, वो जल्द ही अनियंत्रित और खतरनाक संस्थान में बदल गया, जिसमें दुनिया के बहुत से शक्तिशाली और बुद्धिमान व्यक्ति थे। नाइट्स टेम्पलर का उदय और पतन तो उसके शुरुआती कुछ दांव का हिस्सा था, जिसमें वो बताना चाहता था कि वह दुनिया को किस कदर नियंत्रित कर सकता था। धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से उनके डिजाइन और महत्वाकांक्षा और भी अधिक भयावह होती गई।'

विद्युत अधीर हो उठा। अभी के लिए घटनाओं के क्रम में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसे किसी न्यू वर्ल्ड ऑर्डर की परवाह नहीं थी। वो बस ये जानना चाहता था कि उसके पिता के कातिल कौन थे।

'पुरोहित जी, मैं आपका बहुत सम्मान करता हूं, लेकिन अभी मैं उस मानसिक हालत में नहीं हूं कि किसी ऑर्डर का इतिहास समझ सकूं, जिसके बारे में आप

और बाबा बात करते हैं। आप कृपया मुझे बताइए कि मेरे पिता, आपके प्रिय कार्तिकेय को किसने मारा था??'

पुरोहित जी को विद्युत की हालत से पूरी सहानुभूति थी। वह रुके और अपने देवता की तरफ मुड़े।

'प्यारे विद्युत बस एक बात अपने दिमाग में रखना। जबकि कोई भी तुम्हारे नुकसान की बराबरी नहीं कर सकता, लेकिन हम सब भी प्रिय कार्तिकेय को उतना ही चाहते थे जितना तुम। शायद उससे कुछ अधिक ही।'

आंसू भरी आंखों से, वृद्ध पुजारी ने अपने दोनों हाथ उठाकर उन्हें देखा। फिर उन्होंने विद्युत को देखा।

'इन्हीं हाथों से मैंने कार्तिकेय को पाला था, ओ देवता। वो मेरी प्रथम संतान की तरह ही था।'

मोहन जोदड़ो, 1700 ईसापूर्व
मृतकों का टीला

'ओ सत्यव्रत, ये करना बेवकूफी होगी।'

सात युवा मुनि, दिव्य सप्तऋषि मनु से बात कर रहे थे। सूर्य पुत्र गुफा में तेजी से इधर-उधर चक्कर काट रहा था। वो गुफा मशाल के प्रकाश से प्रकाशित थी, जहां उन्होंने रात्रि के लिए शरण ली थी।

'महान मुनि सही कह रहे हैं, मनु। मोहन जोदड़ो यहां से लगभग तीस योजन दूर है। यहां तक कि तेज और मजबूत घोड़े भी समय रहते नगर में नहीं पहुंच पाएंगे,' परेशान तारा उर्फ शतरूपा ने कहा। उसे मनु की चिंता हो रही थी जो फिर से एक आत्मघाती अभियान पर जाने की कगार पर था।

लेकिन वो उसकी मानसिक हालत भी समझती थी। मोहन जोदड़ो जनसंख्या के हिसाब से आर्यवर्त का दूसरा बड़ा नगर था। अगर यह नगर प्रलय की भेंट चढ़ जाएगा, तो इसका मतलब इस नगर के अनगिनत निवासियों की मौत होगी।

‘लेकिन हम बिना कुछ करे ऐसे कैसे बैठ सकते हैं...??’ मनु ने खीझते हुए कहा। अंदर ही अंदर वो जानता था कि यहां खतरा अधिक बड़ा था। ‘क्या आप लोग भूल गए हैं कि उस महानगर में कितने लोग रहते हैं? दसियों हजार! शायद सौ हजार! हम उन्हें यूं मरने के लिए कैसे छोड़ सकते हैं?’

ऊंची गुफा में गहरा सन्नाटा था, सिवाय मशाल से निकलते फीके प्रकाश की फड़फड़ाहट के।

गुफा में पसरी हताशा निराशा का केंद्र थी, जो धीरे-धीरे उसमें शरण लेने वालों के दिलों में घर करती जा रही थी।

‘मैं जाऊंगा!’ एक आवाज सुनाई दी।

सभी ने मुड़कर गुफा के एक कोने में देखा, जहां बैठा ध्रुव पत्थर से रगड़कर अपने बाणों को तेज कर रहा था। यह आकर्षक युवा जिसके भूरे बाल थे और मजबूत कंधे, मनु का बचपन का मित्र और एक समर्थ योद्धा था।

‘तुम कहना क्या चाहते हो, ध्रुव?’ तारा ने पूछा।

ध्रुव खड़ा हुआ, अपना धनुष उठाया और अपने बाणों को तरकश में भरकर, गुफा के केंद्र में आ गया, जहां कुछ प्रकाश था। उसने मनु, तारा, सोमदत्त और सप्तऋषि को देखा। सातों पवित्र मुनि आंशिक ध्यानावस्था में बैठे थे।

‘मुझे मोहन जोदड़ो जाने की आज्ञा दो, मनु। मैं अकेला जाऊंगा और रात और दिन सफर करूंगा। अगर मेरा घोड़ा इस कठिन सफर को पूरा नहीं कर सका, तो मैं मोहन जोदड़ो चलकर जाऊंगा!’

‘पागल मत बनो, ध्रुव!’

इस बार पंडित सोमदत्त ने कहा।

‘मैं तुम्हारे साहस और दूसरों के लिए अपनी जान दांव पर लगाने के जोश की सराहना करता हूं। वास्तव में। लेकिन इस समय मोहन जोदड़ो पहुंचने की

कोशिश करना एक पागलपन है। हमारे निरीक्षकों की खबर के मुताबिक, बाढ़ कुछ ही घंटों में नगर की दीवारों को तोड़ते हुए, उसे ख़त्म कर देगी। ये कुछ दिनों का मसला नहीं है...' सोमदत्त ने कहा।

'लेकिन हम उन सबको मरने के लिए नहीं छोड़ सकते!' मनु चिल्लाया, उसकी आंखें डर और लाचारगी से फैल रही थीं। मनु की एक ऊंची आवाज समस्त श्रोताओं को चुप कराने के लिए पर्याप्त थी।

ध्रुव अपने मित्र के पास गया और अपना हाथ मनु के कंधे पर रखा।

'हम में से एक को जाना होगा, मनु। अगर हमने आज उस नगर को छोड़ दिया, तो तुम और मैं दोनों जानते हैं कि हम में से कोई भी अपनी आत्मा पर इतना बढ़ा बोझ लेकर नहीं जी पाएंगे। और हम तुम्हारी जान का जोखिम नहीं ले सकते, मेरे मित्र। तुम नाव और बची-खुची मानवजाति के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो। मुझे जाने की आज्ञा दो, मेरे राजन।'

मनु ने कुछ नहीं कहा। उसने अपनी तलवार उठाई और तारा के पास गया। उसने तारा के माथे को चूमा, और उसकी आंखों में देखते हुए फुसफुसाया, 'तुम जानती हो कि मुझे यह करना ही होगा, तारा। मैं विवास्वन पुजारी का पुत्र हूं। और महान विवास्वन पुजारी कभी पीछे लोगों को मरने के लिए नहीं छोड़ते।'

तारा के जवाब की प्रतीक्षा किए बिना, मनु ध्रुव की तरफ मुड़ा।

'हम दोनों अभी, इसी पल मोहन जोदड़ो के लिए निकलेंगे, मेरे भाई।'

'बहुत देर हो चुकी है... ओ सूर्य पुत्र।'

इससे पहले कि ध्रुव और मनु गुफा से बाहर कदम रख पाते, वैभवशाली मुनियों में से एक ने तेज आवाज में कहा, वो अभी भी ध्यानावस्था में ही थे।

मुंडे सिर और बिना दाढ़ी वाला मुनि उन्नीस वर्ष से अधिक उम्र का नहीं था। सभी सातों सप्तऋषि युवा ही थे, लेकिन उनका तेज अनुपम था। उनका तेज अतिप्राकृतिक जीवन-ऊर्जा से निकलता प्रतीत होता था। मनु को लगता था कि

मत्स्य अपना कुछ भाग पवित्र सप्तऋषियों के साथ पीछे छोड़ गया था। या मनु को ऐसी उम्मीद थी।

युवा मुनि ने अपनी आंखें खोलीं, ऐसा लग रहा था कि अभी भी उसके नेत्र दूर क्षितिज में देख रहे थे।

'बहुत देर हो चुकी है, सत्यव्रत। विनाशकारी लहर नगर से टकरा गई हैं... कुछ पल पहले।'

इतना कहते ही पहले मुनि ने अपनी आंखें बंद कर लीं। इससे पहले कि घबराया हुआ मनु कुछ पूछ पाता, दूसरे मुनि ने अपनी आंखें खोलकर कहा।

'बाढ़ द्वारों, दीवारों और महल से टकरा चुकी है। मोहन जोदड़ो ढह चुका है, ओ महान राजा, कभी न उठने के लिए।'

इसके बाद, दुख और सन्नाटे से भरी उस गुफा में, बचे हुए पांचों मुनियों ने बारी-बारी से भयानक घोषणा की।

'डूबती हुई प्रजा के बहरा कर देने वाले चीत्कार से समस्त ब्रह्मांड रो रहा है। महान शुद्धि की शुरुआत हो चुकी है...'

'इस नगर को हमेशा रहस्य में दबे हुए अवशेष के रूप में ही याद किया जाएगा। इस नगर का नाम हमेशा हमें विनाशकारी प्रलय की याद दिलाएगा...'

''मुआ', जैसा कि सिंधु वासी अपने मृत लोगों को पुकारते हैं, और 'मुअन' जिसका अर्थ है बहुवचन, यह हमेशा इस शापित महानगर और इसके बदकिस्मत निवासियों से समय के अंत तक चिपका रहेगा...'

'इसे हमेशा मुअन-जो-दारो पुकारा जाएगा।'

'इसे हमेशा 'मृतकों का टीला' नाम से संबोधित किया जाएगा।'

बनारस, 2017

हत्यारों का कानून

विद्युत जमीन पर एक ही स्थान पर अपने नेत्र गड़ाए बैठा था।

वो अब महान मठाधीश के कक्ष में थे। पुरोहित जी और द्वारका शास्त्री, दोनों विद्युत के चेहरे पर तनाव और भ्रम टूटने के निशान देख सकते थे। वो जानते थे कि उन्हें जल्दी ही कुछ करना होगा। अंतिम देवता को अब जाने की आज्ञा नहीं दी जा सकती थी। अभी तो बिलकुल नहीं।

वो भी तब जब *रोहिणी नक्षत्र* केवल तीन दिन दूर था।

‘इस जंग की शुरुआत सैकड़ों वर्ष पूर्व हुई थी, मेरे बच्चे,’ द्वारका शास्त्री ने कहा। ‘क्या सच में ऐसे दुश्मन से अहिंसा के माध्यम से लड़ा जा सकता है, जो नरसंहार और करोड़ों लोगों के दमन का दोषी हो?’

विद्युत ने कोई जवाब नहीं दिया। द्वारका शास्त्री ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

‘मैं मानता हूं विद्युत कि जो बलवंत ने किया वो निंदनीय था। और उसे टाला जा सकता था। उसे टाला जाना ही चाहिए था! लेकिन हमारे पास दूसरे विकल्प क्या थे? अगर बलवंत त्रिजट को जीवित छोड़ देता, तो वो महातांत्रिक दोगुनी बुराई के साथ वापस लौटता। हां, हम उसे बंदी बनाकर ला सकते थे। लेकिन फिर हम बाला को भी तो पकड़कर लाए थे। हम सब जानते हैं कि उसके साथ क्या हुआ था।’

मठाधीश के बोलने से पहले, कमरे में एक पल के लिए सन्नाटा रहा।

‘एक क्रूर दानव के साथ—जो इंसानों की जिंदगी को मजाक समझता है और बेगुनाहों का रक्त बहाता है—जंग में रहते हुए हम बेदाग नहीं बच सकते, विद्युत। तुम्हें ये साफ़-साफ़ समझना ही होगा, मेरे बच्चे—हम जंग के मैदान में हैं! भले ही प्रत्यक्ष देखने पर ऐसा न लगे, लेकिन वास्तविकता यही है।’

विद्युत सुन रहा था। उसके मन में उठते तूफान के अंदर भी वो एक बात को लेकर दृढ़ था कि उसके परदादा के नैतिक चरित्र और मानवता पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता था।

‘इसमें कोई संदेह नहीं है कि हम जंग में हैं, बाबा। पहले रोमी परेरा और फिर वो प्रशिक्षित किराये के हत्यारे। फिर बाला की निर्मम हत्या। और उसके बाद महातांत्रिक और प्रोफेसर त्रिपाठी। मैं समझता हूं कि अब बहुत शक्तिशाली और निर्दयी दुश्मन का सामना कर रहे हो,’ विद्युत ने कहा।

द्वारका शास्त्री और पुरोहित जी, दोनों ने राहत की सांस ली कि विद्युत ने कम से कम अपनी ख़ामोशी तो तोड़ी थी।

‘हमारी सारी परेशानियों के बावजूद भी बाबा, मैं किसी इंसान की जान लेने को स्वीकार नहीं कर सकता। अगर चाहता तो मैं रोमी को मार सकता था। मैं उन किराये के हत्यारों को भी मार सकता था। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। और यही मुझे मेरे माता-पिता ने सिखाया था। यही मुझे पुरोहित जी ने सिखाया था। यही ज्ञान तो मुझे आपने दिया था, बाबा।’

द्वारका शास्त्री ने हां में सिर हिलाया। ‘इसीलिए तो पुरोहित ने तुमसे पुराणों में वर्णित अच्छाई और बुराई के संघर्ष के विषय में पूछा था, विद्युत।’

विद्युत ने अचानक सिर उठाकर देखा, उसकी आंखें अविश्वास से फैल गई थीं।

बाबा को इस बारे में कैसे पता? जब पुरोहित जी ने ये कहा था, वो तो वहां मौजूद भी नहीं थे!

अंतिम देवता अपनी हैरानी नहीं छिपा पाया और उसने पुरोहित जी को देखा, जो मुस्कुरा रहे थे। विद्युत भी सिर हिलाते हुए मुस्कुरा दिया। ये दोनों आदमी जानते थे कि महान मठाधीश त्रिकालदर्शी थे।

‘हिंदू धर्म या सनातन धर्म सिर्फ विश्व शांति की कामना करता है। यह सर्व-धर्म-समभाव की दुहाई देता है। यह अनासक्ति का पाठ पढ़ाकर, ब्रह्म की खोज पर जोर देता है। यह तो वसुदेव कुटुंबकम के माध्यम से पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखता है।’

द्वारका शास्त्री ने दोबारा बोलने से पहले कुछ पल प्रतीक्षा की। वो चाहते थे कि उनका परपोता, उनके कहे प्रत्येक शब्द को ग्रहण कर ले।

‘और फिर भी मां दुर्गा ने महिषासुर का शिरश्छेदन किया। भगवान कृष्ण ने राक्षस नरकासुर को मारा। मां काली ने उन हजारों दानवों का संहार किया, जो रक्तबीज के रक्त से उत्पन्न हुए थे। प्रभु राम ने रावण को मारा था और शिव ने त्रिपुर दानव का दमन किया था। इंद्र ने वृत्रासुर को ख़त्म किया और नरसिम्हा के अवतार में विष्णु ने राक्षस हिरण्यकश्यप के पेट को फाड़ दिया था। यह सब केवल मानवों को कठोर संदेश देने के लिए था, विद्युत। कि लड़ाई से लड़ा जाना जरूरी है। कि निरंकुशता को पराजित करना ही चाहिए। और अगर हिंसा के माध्यम से ही लाखों मासूमों को पीड़ा से बचाया जा सकता है, तो किसी धर्मात्मा को भी इस राह का चयन करना चाहिए।’

‘लेकिन बाबा, मसान-राजा निहत्था था। वह पराजित हो चुका था। कौन सा कानून ऐसी हालत में किसी की हत्या किए जाने की सलाह देता है?’

अब क्रोध से फटने की बारी पुरोहित जी की थी। तमतमाया हुआ चेहरा लिए वो अपनी कुर्सी से उठे। विद्युत की तरफ एक-दो कदम बढ़कर, गुस्से से भरी आवाज में चिल्लाए।

‘वही कानून जिसने महान योद्धा-पुजारी अद्वैत शास्त्री को तब मारने की आज्ञा दी थी, जब वो निहत्थे थे! वही कानून जिसने तुम्हारे पूर्वज मार्कंडेय शास्त्री के तब

टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे, जब वो अकेले ध्यानावस्था में बैठे थे। वही कानून जिसने कप्तान वेन एश्ब्रूक को सच बोलने के लिए पेड़ से लटकवा दिया था!'

पुरोहित जी के शब्दों को सुन विद्युत स्तब्ध था। लेकिन उस क्रोधित पुजारी की बात अभी पूर्ण नहीं हुई थी। आंखों से बहते आंसू के साथ उसने अपनी आखरी बात कही।

'वही कानून जिसने तुम्हारे पिता कार्तिकेय शास्त्री को हजारों मील दूर ढूंढ़कर, घेरकर, मार डालने की आज्ञा दी थी!'

आर्यवर्त के घने जंगल, 1699 ईसापूर्व
दैत्य

वो बुरी तरह हांफ रहा था, उसके फेफड़ों की हवा ख़त्म हो रही थी। लेकिन वो किसी भी तरह रुक नहीं सकता था।

उसे अपने बहुमूल्य रसायनशास्त्रियों तक उनसे पहले पहुंचना था।

वो घने जंगल के बीच से रास्ता बनाते हुए चल रहा था, उसके पैर बार-बार दलदली जमीन पर फिसल रहे थे। उसके मजबूत हाथ ने उसकी भारी तलवार का मूठ पकड़ा हुआ था, जो रास्ते में आने वाले किसी भी बदकिस्मत दुश्मन का पेट चीरने के लिए तैयार थी।

मौत, तबाही, युद्ध, नफरत, अस्वीकार और आशा के पिछले कुछ महीनों ने उसके बाहरी रूप को पूरी तरह बदल दिया था। कभी मुड़े रहने वाले उसके सिर पर अब बालों की लंबी जटाएं उग आई थीं, जो उसके पतले, लेकिन मजबूत कंधों पर झूल

रही थीं। बिना दाढ़ी के उसके बालक समान चेहरे पर सख्त दाढ़ी उग आई थी। उसके चेहरे और बदन पर बहुत सी तलवारों और तीरों के घाव थे। लेकिन एक चीज थी, जो पिछले कुछ महीनों में मिली बहुत सी परेशानियों के बावजूद भी लेशमात्र नहीं बदल पाई थी।

उसकी गहरी, नेक, बादामी रंग की आंखें।

सत्यव्रत मनु की आंखों की तीव्र ईमानदारी अभी भी नहीं बदली थी।

उस रात हड़प्पा के विनाश का साक्षी बनने के बाद से मनु के लिए आगे का सफर अधिक कठिनाइयों भरा ही रहा था। अगले कुछ दिन और रात कालीबंगन और धोलावीरा और उनके आसपास की जगहों को खाली कराने में बीते। वो अधिक संख्या में लोगों की जान बचाने में कामयाब रहे, इससे पहले की निष्ठुर बाढ़ आकर उन लोगों को लील जाती।

हफ्ते और महीने गुजरने के साथ, बाढ़ ने सैकड़ों योजन भूमि को अपने उदर में समा लिया था। वो बंजर जमीन, जहां एक समय कैक्टस और छिपकली के अलावा और कुछ नहीं होता था, वहां अब चारों तरफ पानी ही पानी था। पहाड़ और पर्वत जो एक समय में गगन को चूमते दिखाई पड़ते थे, अब उन तूफानी लहरों के नीचे समा गए थे, जो कभी-कभी बादलों को छूती प्रतीत होती थी।

विशाल शुद्धि ने मनुष्यों के मन में छिपी बातों को सामने ला दिया था। उसने मनुष्य के मन में छिपे भ्रष्ट विष को भी ख़त्म करके, उस उदारता और अच्छाई को सामने ला दिया था, जिससे मनुष्य अभी तक अनभिज्ञ था। तबाही और कोलाहल के एक छोर पर आए पुरुष और महिला दूसरे लोगों की जान बचाने के लिए अपना सबकुछ दांव पर लगाने को तैयार थे। तो दूसरी तरफ, इसने इंसान को हैवान भी बना दिया था, जो इस तबाही के पल में भी कमजोर और लाचार के शोषण का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहता था।

कुछ ही महीनों में सत्यव्रत मनु का दुनिया को देखने का नजरिया पूरी तरह बदल गया था। अब वो नहीं मान सकता था कि मनुष्य का दिल अच्छाई से भरा था, जब तक कि मनुष्य खुद हालात वश ऐसा करने को न प्रेरित हो। इस धरती पर कई

दशक गुजारने के बाद वो इस निरंकुश प्रजाति के बारे में इतना तो जान ही गया था।

मनुष्य धरती पर ईश्वर की अभिव्यक्ति था।

मनुष्य ही शैतान का प्रतिबिंब भी था।

वो झुंड में लकड़बग्घों की तरह शिकार करते थे।

वो शिकार की खोज में दिन-रात घने जंगल में घूमते रहते थे। इस गहन जंगल में होने वाली कोई भी हरकत उनकी नजरों से बच नहीं पाती थी। वो उसी योग्यता से किसी शेर का शिकार करके, उसको पकाकर खाते थे, जिस सहजता से वो जंगली धारा में से मछली पकड़ा करते थे। आर्यवर्त के लोग इन जंगली लोगों को दैत्य के नाम से जानते थे, जिनका भय हर जगह व्याप्त था।

जिन जानवरों के साथ वो रहते थे, उन्हीं की तरह ही युगल युद्ध में वो अपने नेता का चयन करते थे।

परिणामस्वरूप, इस प्रजाति का प्रत्येक संभावी मुखिया, अपने वर्तमान मुखिया को युद्ध की चुनौती देता और बिना शस्त्रों के वो दोनों तब तक आपस में लड़ते, जब तक उनमें से किसी एक की मृत्यु न हो जाती। वर्तमान में जो इस घने जंगल का बेताज बादशाह था, वो वास्तव में एक राक्षस था। अफवाह थी कि उसका कद सात बांह जितना लंबा था, और उसने अपने नंगे हाथों से अपने से पिछले मुखिया का पेट फाड़ डाला था, और उसकी अतड़ियां निकालकर उन्हें पुरस्कार स्वरुप अपने कमर पर बांध लिया था।

पूरे जंगल और समस्त आर्यवर्त में उसे *नर-मुंड* के नाम से जाना जाता था।

बनारस, 2017
काशी विश्वनाथ

वो मंदिर की तरफ जाती एक पतली गली के कोने में खड़ा था, और बड़ी दिलचस्पी से सारी गतिविधियों को देख रहा था। *काशी विश्वनाथ मंदिर* उसके देखे हुए किसी भी अन्य आध्यात्मिक स्थल से अधिक ऊर्जावान था। उस मंदिर में प्रत्येक साल इतने श्रद्धालु आते थे, जितने वैटिकन और मक्का के मिलाकर भी नहीं थे।

वो सही थे। इस जगह और इस प्राचीन नगर के बारे में कुछ तो शक्तिशाली बात है।

कोई आश्चर्य नहीं कि वो देवता यहां है।

वो मंदिर के मुख्य परिसर में प्रवेश नहीं कर सकता था, क्योंकि विदेशियों को वहां अंदर जाने की अनुमति नहीं थी। लेकिन मंदिर के द्वार के बाहर से वो अन्नकूट की एक झलक देख पा रहा था, जिसके माध्यम से हजारों गरीबों और बेसहारा लोगों को खाना खिलाया जाता था। उसने दूरी से मंदिर का केंद्रीय गुंबद देखा, जो कभी खरे सोने का बना था। वो मंदिर के फर्श पर बिछे चांदी के सिक्कों को भी देख पा रहा था।

आते-जाते लोग उसे घूर रहे थे। जबकि काशी विश्वनाथ की गली में विदेशियों का आना असामान्य बात नहीं थी, लेकिन उस व्यक्ति के तेज में कुछ ऐसी बात थी, जो उसे विशिष्ठ बना रही थी।

और बात भी सही थी।

उसके जैसा कोई आदमी पहले इस प्राचीन नगरी, काशी में आया भी तो नहीं था।

ज्ञान-वापी कुएं और उसके आसपास जुटे भक्तों को देखकर वो हैरान भी था और चिंतित भी। अनंत ज्ञान के स्रोत के रूप में विख्यात, ज्ञान-वापी कुएं से जुड़ी कई कहानियां प्रचलित थीं। उनमें से एक थी कि जब लुटेरे सुल्तान की सेना ने बनारस और फिर काशी विश्वनाथ मंदिर के मुख्य परिसर पर आक्रमण किया, तो मंदिर के मुख्य पुजारी ने अपनी बांहों में शिवलिंग को उठाकर इस कुएं में छलांग लगा दी थी, और शिवलिंग को हमलावरों के अनादर से बचा लिया था।

पवित्र कुएं के पास आने वाले प्रत्येक भक्त को, वो बहुत ध्यान से देख रहा था। उसने निर्धन युवा जोड़ों को देखा। कांपती वृद्धाओं, आधे-नंगे जीर्ण बूढ़ों, रोते हुए बच्चों, अपंग और रोगियों को देखा। उनकी आंखों में दिखाई देती दृढ़ भक्ति ने उसे बेचैन कर दिया। वो अपनी गरीबी से लापरवाह नहीं हो सकते थे। उन्होंने अपनी भक्ति की राह में अपनी अपंगता को नहीं आने दिया था।

इन गहन और संयुक्त आध्यात्मिक बल वाले लोगों को कौन नियंत्रित कर सकता था?

और इससे भी बदतर, इस जीवन ऊर्जा और अपनी अलौकिक शक्तियों के साथ आए मनुष्य को कौन पराजित कर सकता था?

इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, देवता को रोकना जरूरी था।

उसने जोर दिया था कि इस पवित्र मंदिर और पावन कुएं के दर्शन के लिए वो अकेला ही जाएगा। अब वो बनारस की भीड़ भरी गली से, अपनी तेज चाल से निकल रहा था। जैसे ही वो चौड़ी सड़क पर पहुंचा, तो उसके अपने सुरक्षाकर्मियों ने उसे घेर लिया और वो जल्द ही प्रशिक्षित लड़ाकों की भीड़ में खो गया।

विद्युत, द्वारका शास्त्री, दामिनी, पुरोहित जी, नैना, सोनू, बलवंत और पूरे देव-राक्षस मठ को चिंता करने की जरूरत थी। समस्त मानवजाति को चिंतित होने की आवश्यकता थी।

इसकी बहुत ही खतरनाक वजह थी।

मास्केरा बिआंका काशी में आ चुका था।

मानवजाति का भविष्य हमेशा के लिए बदल देने वाली भविष्यवाणी को सच होने से रोकने के लिए।

आर्यवर्त के घने जंगल, 1699 ईसापूर्व
सृष्टि का प्रहार

मनु और उसके विश्वस्त, ध्रुव ने अपने हथियार निकाल लिए थे। चार रसायनशास्त्रियों को सुरक्षा घेरे में घने जंगल ले जाते हुए, उनकी आंखें और कान हर उस हरकत पर लगे हुए थे, जिससे आते हुए खतरे का अनुमान लगाया जा सके।

ईश्वर द्वारा त्यागे हुए इस घने जंगल में हर कदम पर खतरा होने के बावजूद भी रसायनशास्त्रियों को यहां लाया गया था। दिव्य सप्तऋषियों ने, जो अब प्रलय से मुकाबला करने में मनु के आध्यात्मिक मार्गदर्शक और साथी थे, कुछ आवश्यक औषधीय बूटियों और जड़ों की सूची तैयार की थी, उन्हें इस जंगल से ले जाकर नौका में संरक्षित करना था।

卐

मनु को यह मानने में कही सप्ताह लगे थे कि उसका प्रिय भाई, शिक्षक, मित्र और दार्शनिक, शक्तिशाली मत्स्य, जिसे उसने स्वयं भगवान विष्णु का अवतार माना था, वो उसे छोड़कर चला गया था। जाने से पहले उसने एक अंतिम बार अलविदा तक नहीं कहा था।

उसने मनु के लिए एक पत्र छोड़ा था, जिसमें लिखा था कि जब लगे सब खत्म हो रहा है, तभी उसे बुलाया जाए। उसने एक अजीब सा फूंक मारने वाला भोंपू भी छोड़ा था। वो भोंपू किसी रहस्यमयी समुद्री जीव से बना था, और उसे तभी बजाना था, जब मनु को लगे कि मानवजाति की हर उम्मीद समाप्त हो गई थी। इसके अलावा उसे नहीं बजाना था।

यद्यपि अब कई महीने गुजर गए थे और विश्व की सबसे विशाल नाव बनाने का विशाल काम, प्रकृति के प्रकोप के बावजूद चल रहा था, लेकिन मनु मत्स्य के बिना स्वयं को बहुत अकेला महसूस कर रहा था। जब उसने विशाल नौका बनाने के मत्स्य के आदेश को स्वीकार किया था, तब उसे पूरा यकीन था कि यह तेजस्वी नीलवर्णी मनुष्य हमेशा उसके साथ रहेगा। लेकिन ऐसा नहीं होना था।

सत्यव्रत मनु अकेला रह गया था। महाकाय कार्य के साथ, जिसमें उसे सृष्टि को सृष्टि के ही वार से बचाना था!

·||卐||·

मनु और ध्रुव के साथ उनके आधे दर्जन योद्धाओं की टुकड़ी थी।

नौका निर्माताओं के लिए लोग ही उनके सबसे बहुमूल्य संसाधन थे। पिछले कुछ महीनों में, जब से विनाशकारी प्रलय ने आर्यवर्त को अपना शिकार बनाया था, वो सैकड़ों हजार पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को बचाने में सफल रहे थे। अब तक उन्होंने सफलतापूर्वक कालीबंगन नगर खाली करवा लिया था, और लोथल जैसे दूरदराज के स्थानों में भी अपने घुड़सवार दौड़ा दिए थे।

आज प्रत्येक नगर ने अपने आदमी और सेना मनु की नौका-निर्माण में झोंक दिए थे। शारीरिक रूप से मजबूत आदमियों को पैदल या घुड़सवार सेना के लिए चुन लिया गया था, उनका महत्वपूर्ण कार्य था निर्माण की मुख्य श्रम शक्ति बनना। एक सुसज्जित सेना इस अंतिम सभ्य मानव बस्ती को डाकुओं और हत्यारों से बचाने के लिए भी चाहिए थी।

महिलाएं भी किसी से कम नहीं थीं और वो सशस्त्र बल और अभियांत्रिकी श्रम में बराबर का योगदान दे रही थीं। उन्होंने एक जरूरी टुकड़ी भी बना ली थी, जो घायलों और बीमारों की देखभाल कर रही थी, वो विशाल रसोई को भी संभाल रही थीं, और उन्होंने पशुओं, पौधों, कीटों, धातुओं, वस्त्र, पुस्तकों, औषधियों, बीज, आग जलाने का पत्थर और नक्शे के नमूनों का भी संरक्षण कर लिया था। वो हथियारों और विशालकाय नौका के लिए जरूरी सामान को भी संभाल रही थीं।

वो लोग मिलकर संघर्ष कर रहे थे, जिससे प्रलय के बाद की दुनिया को देखने के लिए जीवित रह सकें।

ये कार्य संपूर्ण नई दुनिया बनाने से कम नहीं था—और वो भी ठंडी बारिश और कड़कती बिजली के बीच। जिस भी ऊंचे स्थल का चयन वो अपने शिविर के लिए करते, वो उन्हें बढ़ती बाढ़ की वजह से कुछ ही सप्ताहों में खाली करनी पड़ती। वो बाढ़ जो मानो पूरे ग्रह को ही निगलने आ रही थी।

वो आ रही थी।

इस अकेली पवित्र नगरी को छोड़ते हुए।

भीमकाय युवा ध्रुव ने अपनी तर्जनी उठाते हुए, अपने छोटे से दल को तुरंत स्थिर हो जाने का इशारा किया। फिर उसने अपनी पांचों उंगलियां उठा लीं, जिसका मतलब था कि प्रत्येक अपने औजार तैयार रखे। उसके समर्थ योद्धा कानों ने दूरी पर सूखी पत्तियों के तड़कने की आवाज सुन ली थी।

मनु, ध्रुव और उनके छहों योद्धाओं ने चारों रसायनशास्त्रियों के गिर्द घेरा बना लिया था, और अपनी तलवार, भाले और तीरों को किसी भी जवाबी हमले के लिए तैयार कर लिया था।

उनमें से एक रसायनशास्त्री, जो धुर विंध्या श्रृंखलाओं से आया था, वो कुछ दुविधा में था। उसने पूछ ही लिया।

‘ओ ताकतवर सत्यव्रत, हम इससे पूर्व भी अनेक ऐसी आपदाओं में घिरे हैं। प्रत्येक खतरा दूसरे से अधिक भयावह था। लेकिन मैंने कभी इतनी चौकसी नहीं देखी। क्या दैत्यों के बारे में कुछ ख़ास भयावह बात है?’

मनु ने जवाब नहीं दिया। लेकिन उसके परम मित्र ध्रुव ने दिया।

‘हां, ज्ञानीजन। दैत्य हमारे सारे दुश्मनों से अधिक खतरनाक हैं।’

मनु ने ध्रुव को असहमति की नजरों से देखा। ध्रुव ने अपने दोस्त और अग्रेता की तरफ आंख मारी और अपना वाक्य पूरा किया। ‘हे बुद्धिजीवी, ये दैत्य नर-भक्षी हैं।’

बनारस, 2017

एक सर्वसत्तावादी सरकार

द्वारका शास्त्री का दिल भी अपने परपोते के साथ रो रहा था। लेकिन वो जानते थे कि ये दिन आना ही था। और विद्युत को कभी न कभी तो इस सचाई का सामना करना ही था।

ढाई दशक तक यह मानने के बाद कि उसके पिता, कार्तिकेय शास्त्री की मृत्यु एक दुखद कार दुर्घटना में हुई थी, देवता को अब वास्तविकता का पता चला था।

आज वह जिंदगी के सबसे मुश्किल और असहनीय सच का सामना कर रहा था।

मेरे पिता को बेरहमी से घात लगाकर, बहुत से लोगों ने घेरकर... मारा था!

‘मुझे सब कुछ बताइए, बाबा। अब कोई राज नहीं, कोई आधी-अधूरी जानकारी नहीं, अब किसी सही समय की प्रतीक्षा नहीं करनी है... मैं सबकुछ जानना चाहता हूं, बाबा।’

बुजुर्ग जानते थे कि अब समय आ गया था।

‘सबकुछ, बाबा...’ विद्युत ने विशेष रूप से *सबकुछ* पर जोर देते हुए कहा।

‘मुझे इस न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के बारे में बताओ। मुझे रोहिणी नक्षत्र के बारे में बताइए। नाइट्स टेम्पलर के पतन के बाद क्या हुआ? मेरे पिता को क्यों मारा गया? किसने उन्हें मारा? रोमी परेरा और त्रिजट कपालिक जैसे दानवों को कौन भेज रहा है?’

विद्युत की नजरें कभी अपने परदादा को, तो कभी पुरोहित जी को देख रही थीं। उसे जवाब चाहिए था। आज ही।

‘और बाबा... काले मंदिर का क्या रहस्य है?’

‘जैसा कि मैंने तुम्हें बताया, विद्युत... 12वीं सदी में नाइट्स टेम्पलर की योजना और विविध छल-कपट न्यू वर्ल्ड ऑर्डर की शुरुआती सफलताओं का प्रतिबिंब थी। टेम्पलर का तेजी से अमीर हो जाना, असीमित शक्तियां हासिल कर लेना, और फिर उतने ही नाटकीय रूप से उनका पतन—इसने ऑर्डर के अधिपति बनने की आकांक्षा को खूब बल दिया। वो सुनियोजित रूप से एक सैन्य बल स्थापित करने में सफल रहे। उन्होंने बैंकिंग को राजनीति के साथ मिला दिया। उन्होंने धर्म को विजय से जोड़ दिया। उन्होंने पुजारी को राजा का साझेदार बना दिया। वो जब चाहते, एक अपराजेय सैन्य प्रारूप को खड़ा कर देते। और अपनी ही इच्छा से वो उसका खात्मा भी कर देते।’

दोबारा बोलने से पहले, मठाधीश एक पल के लिए रुके।

‘ये कहा गया कि 1307 ईस्वी में 13 तारीख, शुक्रवार के उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन में, सारे टेम्पलर को मार दिया गया था। उनमें से कुछ बच भी गए थे। ये वो लोग थे जिनका चयन स्वयं ऑर्डर ने अपने हाथों से किया था। उन्हें भागने की अनुमति दे

दी गई, जिससे वो यूरोप और मध्य पूर्व के भिन्न भागों में जा सकें, और वहां गुप्त भ्रातृसंघ के लिए नए प्रारूप की स्थापना कर सकें। अधिपति अब पूरी तरह से आश्वस्त हो गया था। अगर वो फ्रांस और साइप्रस की भौगोलिक राजनीति को अपने इशारों पर नचा सकते थे, तो और अधिक प्रांतों, राष्ट्रों और द्वीपों का नियंत्रण लेने से उन्हें कौन रोक सकता था?'

विद्युत पूरे मन से सुन रहा था। उसे धीरे-धीरे, लेकिन दृढ़ता से इस बात का यकीन हो चला था कि किसी तरह से ये सब मठ, उसके मृत पिता, रोमी, त्रिजट और स्वयं उससे भी जुड़ा था।

और हड़प्पा से भी।

हालांकि अब वो समझ गया था कि किस तरह ऑर्डर ने टेम्पलर के साथ छल किया था, लेकिन अभी भी विद्युत ये नहीं समझ पा रहा था कि इस सबसे वो हासिल क्या करना चाहते थे।

'बाबा, ये ऑर्डर वास्तव में चाहता क्या है? राजनीति, देशों और धर्म पर उसके नियंत्रण का प्रयास समझ आता है, लेकिन इस सबके अंत में क्या?'

द्वारका शास्त्री ने लंबी सांस ली और अब तक टाली जाती रही बातचीत के लिए स्वयं को तैयार किया।

'जैसा कि तुम जानते हो, यह सब नाइसिआ में शुरू हुआ था, सम्राट कांस्टेंटाइन की एक-विश्व, एक-सरकार की महत्वाकांक्षा के साथ। शासन और सामाजिक व व्यक्तिगत नियंत्रण का एक नया तरीका—एक सर्वसत्तावादी सरकार जो धार्मिक उन्माद, आर्थिक संरक्षण, जाति, रंग, पंथ, भाषा इत्यादि के वैविध्य को मिटा देगी... सिर्फ देशभक्ति को ही नहीं! उसका औचित्य, जो हालांकि आज सुनने में अजीब लगता है, सैद्धांतिक रूप से सही और अच्छे उद्देश्य से था।

लेकिन पहले दिन से ही तय था कि यह सफल नहीं हो सकता था। विविधता ही तो मानवजाति को इस ग्रह की श्रेष्ठ प्रजाति बनाती है। विविधता ही तो संस्कृति, महत्वाकांक्षा, कला व साहित्य, वैज्ञानिक उन्नति, आर्थिक अभिलाषा इत्यादि की

जनक है। लोगों की इस विविधता के बिना हम महज भेड़ों का एक झुंड बनकर रह जाएंगे। अगर दुनिया में आज अनेकों चर्च के साथ बनारस के घाट हैं, अगर वैश्विक फैशन की फलती-फूलती दुनिया के साथ ही चमकता खेल जगत है, अगर आज इच्छा मृत्यु और गर्भपात पर स्वस्थ बहस हो रही है—तो ये सब इसीलिए कि हम मनुष्य एक-दूसरे से भिन्न हैं।

तो, दूसरे शब्दों में, कांस्टेंटाइन की योजना मूलभूत रूप से प्रकृति की प्रमुख वास्तविकता, क्रमिक विकास के विरुद्ध थी। वो वापस से मानवजाति को भेड़ों का झुंड बनाना चाहता था। लेकिन इससे भी अधिक, उसकी सबसे बड़ी भूल थी कि उसने एक सबसे शक्तिशाली ताकत को अनदेखा कर दिया था।

मनुष्य की महत्वाकांक्षा।'

‘इससे पहले कि मैं तुम्हें न्यू वर्ल्ड ऑर्डर और उनके अविश्वसनीय अधम प्रारूप के बारे में बताऊं, एक आखरी चीज और तुम्हें समझनी होगी, विद्युत। क्या तुम जानते हो कि टेम्पलर के पूरे रक्तरंजित इतिहास से उन्होंने क्या सबक लिया? इसी सबक से वो आगे जाकर विश्व की अबाध शक्ति में बदलने वाले थे।'

‘वो सबक क्या था, बाबा?' विद्युत ने पूछा।

‘उसकी वजह से मानवता की नियति हमेशा के लिए ऑर्डर के पैरों तले आ गई, और युद्ध, तानाशाही, अतिवादियों और अमानवीय उद्दंडता का रास्ता खुल गया,' द्वारका शास्त्री ने जवाब दिया।

‘उन्होंने सीख लिया था कि जंग व्यवस्थित की जा सकती थी।

कि वो दोनों पक्षों की तरफ से युद्ध लड़ सकते था।

और यह भयानक, बेरहम कार्य-प्रणाली दुनिया का विनाश करने वाली थी... बार-बार।'

आर्यवर्त के घने जंगल, 1699 ईसापूर्व

ध्रुव

तीर सामने से आते दैत्य के माथे में जा घुसा, सीधे भवों के बीच में। बाण का वेग इतना तेज था कि हमलावर पीछे कुछ दूर जाकर गिरा।

दो और दैत्य पेड़ की ऊंची शाखाओं से चिल्लाते हुए गिरे, क्योंकि तुरंत ही दो तीरों ने उन्हें अपना निशाना बना लिया था।

बेशक ध्रुव आर्यवर्त का महानतम धनुर्धर था। उसके धनुष और तरकश मानो उसके अपने ही शरीर का विस्तार थे।

मनु ने एक दैत्य के सीने पर लात से प्रहार किया, जो उस पर किसी गिरती हुई चट्टान की तरह पड़ी। उसी गति से, सूर्य पुत्र ने एक दूसरे हमलावर का भी सिर धड़ से अलग कर किया, जो एक रसायनशास्त्री के कुछ अधिक ही निकट आ गया था। हमलावर के बिना सिर वाले धड़ से रक्त का फव्वारा फूट पड़ा, जिससे सत्यव्रत के चेहरे, बालों और कंधों पर रक्त फ़ैल गया। अब मनु देखने में बहुत विकराल नजर आ रहा था।

अब तक मनु इसका आदी हो चला था। उसने अपनी कलाई पर बंधे चमड़े के पट्टे से रक्त साफ़ किया और वापस लड़ाई में जुट गया।

जब वो वापस मुड़कर युद्ध स्थल को देखने लगा, तो मनु की नजर एक दैत्य पर पड़ी, जिसने तीर से ध्रुव पर निशाना साधा हुआ था। बिना एक पल हिचकिचाए

और पूरी दृढ़ता से, सत्यव्रत मनु ने अपने दोनों हाथों से अपनी मोटी तलवार का मूंठ पकड़ा, और उसे पीछे की तरफ खींचते हुए, पूरी ताकत के साथ दुश्मन पर बाण की तरह निशाना साधते हुए फेंका। ताकतवर तलवार ने दुश्मन धनुर्धर का सीना फाड़ते हुए, उसे वृक्ष के मोटे तने से बींध दिया।

ध्रुव ने समय पर मिली हुई इस मदद को देखा और सिर हिलाकर अपनी जान बचाने के लिए मनु का आभार व्यक्त किया। योद्धा-राजकुमार भी अपने करीबी मित्र को देखकर मुस्कुरा दिया।

मनु और ध्रुव की शानदार जोड़ी एक साथ पूरी सेना के छक्के छुड़ा सकते थे।

उस रक्त संघर्ष को समाप्त होने में कुछ पल से अधिक का समय नहीं लगा। जब मनु और ध्रुव ने उस छोटे से संघर्ष का मुआयना किया, तो वो परिणाम से संतुष्ट थे। उनका कोई आदमी नहीं मरा था, जबकि एक दर्जन क्षत-विक्षत दैत्यों के शव उनके आसपास पड़े थे। जंगल में उनके नीचे की जमीन, वृक्ष और झाड़ियां सब दैत्यों के रक्त से लाल हो गई थीं।

'वो शायद पहली टुकड़ी रहे होंगे, ध्रुव। हमें अब रसायनशास्त्रियों को यहां से बाहर निकाल लेना चाहिए!' मनु ने अपनी नजर दूर जंगल में टिकाये हुए ही कहा।

ध्रुव ने भी सहमति में सिर हिलाया और अपना धनुष और बाण उठाकर, तुरंत जंगल से बाहर जाने के लिए तैयार हो गया।

लेकिन मनु नहीं जानता था कि यह हमला तो महज एक आत्मघाती अभियान था। नर-भक्षी को इतनी सरलता से नहीं हराया जा सकता था।

जब सत्यव्रत मनु, ध्रुव, रसायनशास्त्री और उनके साथी घने जंगल की सीमाओं से बाहर निकल रहे थे, तो वो नहीं जानते थे कि वृक्षों की ऊंची गुप्त मचान से निर्दयी काली आंखें उनका पीछा कर रही थीं।

वो उन्हें देख रहा था।

और अब शक्तिशाली नर-मुंड उनके लड़ने की शैली जान गया था, वो उनकी ताकत और कमजोरी को भी पहचान गया था।

उसने सूर्य पुत्र को स्वयं मारने के लिए चुना

और मनु का कलेजा खाने की कसम खाई... कच्चा ही।

बनारस, 2017
केदारनाथ

'मैं सही हूं, गुरुदेव,' नैना ने कहा। 'हां... वो भी सही है। हमारा देवता सही है।'

वो देव-राक्षस मठ की एक शाखा की छत पर टहलते हुए, अपने मोबाइल पर बात कर रही थी। इस साधारण उपकरण को अपना साथी बनाने से पहले, उसे इरीडियम 9555 सेटेलाइट फोन की ही आदत थी। दूरस्थ पर्वत, जो विद्युत के आने से पहले उसकी छावनी थी, पर और कोई उपकरण काम नहीं करता था। और अब फोन के दूसरे छोर पर जो इंसान था, वो वैसा ही, अत्याधुनिक सेट-फोन इस्तेमाल कर रहा था, क्योंकि वो संचार के दूसरे सभी नेटवर्क से परे था।

वह महंत भवानीशंकर से बात कर रही थी, उत्तरी हिमालय की ऊंची श्रृंखलाओं में रहने वाले रहस्यमयी साधु। उनका आश्रम मंदाकिनी नदी के किनारे पर था।

बुजुर्ग महंत अंतिम काले मंदिर का संरक्षण कर रहे थे।

वह रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड के केदारनाथ मंदिर के उच्च पुजारी थे।

केदारनाथ को भगवान शिव के पूजनीय बारह ज्योतिर्लिंग में से एक माना गया है। ये बाढ़ पवित्र स्थल शिव के दिव्य प्रकाश का केंद्र माने गए हैं और सौ सालों से अधिक समय से हिंदू तीर्थयात्रियों द्वारा पूजे जाते रहे हैं।

माना जाता है कि केदारनाथ मंदिर मूल रूप से पांडवों द्वारा बनवाया गया था। हस्तिनापुर के पांच शूरवीर और नेक भाई भगवान शिव से महाभारत युद्ध में हुए रक्तपात की माफ़ी मांगना चाहते थे। सैकड़ों साल गुजरने के बाद, वो पवित्र स्थल लाखों तीर्थयात्रियों के आकर्षण का स्थल बन गया।

जब 2013 में उत्तराखंड में आई बाढ़ के दौरान, पहाड़ी राज्य की विशाल घाटी जल के नीचे समा गई, तब यह मंदिर चमत्कारी रूप से क्षतिग्रस्त होने से बच गया था। कहा गया कि मंदिर को पीछे बनी बड़ी सी चट्टान ने बचा लिया था, जिसकी वजह से मंदाकिनी का सीधा प्रवाह बंट गया, और मंदिर आज भी अपने मूल स्थान पर खड़ा रह पाया।

ये चमत्कार कैसे हुआ? वो मंदिर बिना ढहे कैसे खड़ा रह पाया, जबकि उसके आसपास की सभी इमारतें ध्वस्त हो गई थीं?

कोई भी निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। शायद कोई अनजानी दिव्य ताकत इस अनमोल परिसर की रक्षा कर रही थी। शायद इस मंदिर के केंद्र में कुछ मूल्यवान वस्तु छिपी थी, जिसका मान मंदाकिनी ने अपने पूरे आवेग में भी रखा।

आखिरकार, केदारनाथ अंतिम काला मंदिर जो था।

या शायद वो था?

‘वो हमारे पास ही है, गुरुदेव, छिपा हुआ और स्वयं बाबा द्वारा सुरक्षित... और हम सब अपनी सांस रोके रोहिणी नक्षत्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन मुझे अभी भी समझ नहीं आ रहा है कि इस तीन हज़ार साल पुराने रहस्य को विद्युत कैसे उद्घाटित कर सकता है। क्या हम उससे कुछ अधिक की उम्मीद नहीं कर रहे हैं?’

महंत भवानीशंकर खुलकर हंसे। जिस उद्देश्य के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित किया था, वो कुछ ही दिनों में फलीभूत होने वाला था। और नैना से भिन्न, उन्हें भविष्यवाणी के सच होने का पूरा विश्वास था।

'देखो, बिटिया... देखो कैसे सब चीजें वैसे ही हो रही हैं जैसे कि उसे होना चाहिए था। पवित्र नक्षत्रों के संयोजन से पूर्व ही विद्युत काशी में आ पहुंचा है। बुराई की ताकत भी बेचैन हो रही है और लूसिफर स्वयं अंतिम लड़ाई के लिए आ गया है। महान द्वारका शास्त्री मारकेश कालं बीत जाने के बाद भी जीवित है और भयानक महातांत्रिक अपने ही हवन-कुंड में स्वाहा हो गया है। तुम समझ नहीं पा रहीं, नैना... ये सब वैसे ही हो रहा है, जैसे भविष्यवाणी में लिखा था!'

सफ़ेद दाढ़ी वाले महंत फिर से हंसे, और अपना फोन एक तरफ रखकर उन्होंने अपने मुख पर पर्वत-धारा के ठंडे पानी के छींटे मारे। उनकी समर्पित हंसी, उनके आसपास की बर्फ से ढकी चोटियों में गूंज रही थी।

नैना भी राहत से मुस्कुरा दी। वो जानती थी कि महंत सही कह रहे थे। सब कुछ उसी तरह से प्रकट हो रहा था, जैसे उसे होना चाहिए था। उसने अपनी उंगलियां क्रॉस करके छोटी सी प्रार्थना बुदबुदाई।

हालांकि, आशा और विश्वास से राहत मिलने के बाद भी नैना का ध्यान महंत के कहे एक शब्द पर अटककर रह गया था। एक नाम जिसे वो समझ नहीं पाई थी।

लूसिफर।

·||卐||·

'गुरुदेव, "लूसिफर आ पहुंचा है" से आप क्या कहना चाहते हैं। ये लुसिफर कौन है, गुरुदेव?'

भवानीशंकर पहली बार उससे बात करते हुए गंभीर हुए।

'नैना, तुम्हें सब समझाने के लिए अभी समय कम है। बस याद रखो की अच्छाई की सबसे बड़ी ताकत को रोकने के लिए, बुराई की भी सबसे बड़ी ताकत को आना पड़ता है।'

नैना सुन रही थी, लेकिन वो समझ नहीं पा रही थी कि महंत क्या कहने की कोशिश कर रहे थे।

‘बस सावधान रहना, नैना... और महान मठाधीश को भी सूचित कर देना।

उन्हें बता देना कि शैतान ने काशी में कदम रख दिए हैं।’

नौका का आधार शिविर, आर्यवर्त का दलदल, 1699 ईसापूर्व

अंतिम मानव बस्ती

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो पूरी धरती पर किसी ने बड़ी सी कूची से धूसर रंग पोत दिया हो। जब घोड़े पर बैठे मनु और ध्रुव, विशाल आधार शिविर की केंद्रीय पंक्ति से गुजर रहे थे, तो सब कुछ मलिन नजर आ रहा था। दलदली जमीन, जुगाड़ू तंबू, उनके लोगों के फटे हुए कपड़े, पशु, दूर दिखाई देते पर्वत, आसमान... हर कण दुख के धूसर रंग में डूबा दिखाई दे रहा था।

ये हाल तो दिन के समय था।

रातें और भयानक थीं, जब लाल-बैंगनी रंग के गरजते हुए बादल मौत की चेतावनी देते थे। सैकड़ों हज़ार पुरुष, महिलाएं और बच्चे ठिठुरते हुए इन रातों को शिविर की नाममात्र की सुरक्षा में बिताते थे। ऐसे समय में एक घंटे की नींद भी हजारों अश्वों से अधिक मूल्यवान थी।

मनु अपने चारों ओर फैला, तंबुओं का दयनीय नगर देख रहा था, जो प्रत्येक दिशा में मीलों तक फैला हुआ था। उसे बस हर दिन जीने का संघर्ष करता हुआ मानव समुद्र दिखाई दे रहा था। उसे बच्चों के रोने, घायलों व रोगियों के कराहने और घबराए पशुओं के हिनहिनाने की आवाजें आ रही थीं—ये सारी आवाजें तेज हिंसक हवाओं में गड़मड़ हो रही थीं।

कई महीनों से बारिश नहीं रुकी थी। प्रत्येक चीज और प्रत्येक व्यक्ति हर समय भीगा रहता था। संसार उससे अधिक गीला था, जितना की ये पीड़ित लोग अपने

बुरे सपने में भी कल्पना नहीं कर सकते थे। रोज बहुत से लोग मौत के सामने घुटने टेक रहे थे, उनका शरीर प्रकृति का यह निर्मम वार नहीं सह पा रहा था।

॥卐॥

ध्रुव अपने मित्र और नेता के चेहरे पर हताशा देख सकता था।

मनु के बचपन का यह साथी एक चीज तो अच्छी तरह से जानता था कि अगर कोई इस विनाशकारी प्रलय से उन लोगों को बचा सकता था, तो वो सत्यव्रत मनु ही था। उसे पूरा भरोसा था कि इस भीषण बाढ़ और समस्त मानवजाति के बीच केवल मनु ही खड़ा था।

इस अंतिम आशा की किरण को जगाए रखने का जिम्मा ध्रुव ने अपने ऊपर ले लिया था। वो मनु पर हर दिन और हर घंटे बढ़ते भीषण तनाव को अच्छी तरह समझता था। वो जानता था कि हजारों जिंदगियों की जिम्मेदारी कितनी असहनीय हो सकती थी, वो भी तब जब मुकाबला स्वयं कुदरत के विरुद्ध हो। वो अपना पूरा-पूरा दिन सूर्य पुत्र के साथ बिताता, और अपने डर और हताशा को छिपाए रखता। वो जानता था कि ऐसे विकराल समय में मनु को स्वयं अपनी योग्यता पर संदेह होने लगा था—विशेषकर मत्स्य के मार्गदर्शन के बिना।

और यद्यपि ध्रुव ने पिछले कुछ महीनों में मनु के नेतृत्व में हुए उल्लेखनीय बहकाव अभियान और नगरों को खाली होते देखा था। यह सूर्य पुत्र नगर दर नगर, गांव दर गांव, प्रवेश द्वार पर जा खड़ा होता... और उन लोगों को जल्द से जल्द जगह खाली करने का आग्रह करता। वो लोग प्रलय की चेतावनी से अधिक उसके अद्भुत व्यक्तित्व की वजह से उसकी बात मानने के लिए तैयार होते। लोगों की जान बचाने के लिए मनु तूफ़ान की परवाह किए बिना, अपनी जान जोखिम में डाल उस तरफ बढ़ जाता। हर बार जब मनु पीड़ितों को बचाकर लाता, तो उसका कद कुछ और बढ़ जाता था।

ध्रुव ने भी अपने नेता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर तूफ़ान का सामना किया था। इस तेजस्वी व्यक्तित्व पर उसे पूरा भरोसा था।

वो कभी मनु को हारता नहीं देखने वाला था।

‘मनु, क्या बात तुम्हें परेशान कर रही है?’

मनु ने जवाब नहीं दिया। वो ध्रुव की तरफ पलटा भी नहीं। उसने बस अपने घोड़े को यूं ही बिना लक्ष्य के, आधार शिविर की किसी गली में मोड़ लिया। ध्रुव ने अपने नेता का अनुगमन किया।

कुछ पल तक चलने और विशाल शिविर का निरीक्षण करने के बाद, मनु बोला।

‘क्या तुम्हें लगता है कि हम इस विनाशकारी प्रलय से बच पाएंगे, ध्रुव? इन लोगों को देखो। हर गुजरते दिन के साथ ये और कमजोर होते जा रहे हैं। उनकी आंखों की उम्मीद कुछ और फीकी पड़ जाती है। उनके पेट खाली हैं, उनकी त्वचा गल रही है और हड्डियां भी गलकर गूदा बनने वाली हैं! ऐसे ये कब तक जीवित रह पाएंगे?’

‘जब तक ये तुम्हें सामने देखेंगे, मनु,’ ध्रुव ने कहा। ‘तुम ही इन सैकड़ों हजारों लोगों की उम्मीद हो। इनमें से बहुत से लोग तो तभी मर गए होते, जब बाढ़ ने इनके नगरों में कदम रखा। अगर इनमें से आज हर कोई जीवित है, सांस ले रहा है और मानवजाति के नए सूर्योदय के लिए संघर्ष कर रहा है, तो वो सिर्फ तुम्हारी वजह से! वो सब मानते हैं कि तुमने इन्हें एक बार बचाया था, और तुम ही आगे भी इनकी रक्षा करोगे। इन्हें तुम पर भरोसा है, मनु। सिर्फ तुम पर।’

मनु ने अपना घोड़ा मोड़ा और ध्रुव की तरफ मुड़ा। उसके चेहरे पर खीझ और लाचारगी थी।

‘मैं वो नहीं हूं, ध्रुव, जो ये मुझे मान रहे हैं! तुम मुझे बचपन से जानते हो। मैं बस कोई सामान्य मनुष्य हूं, जो किसी तरह से मत्स्य के माया जाल में आ फंसा। मैं तो ये भी नहीं जानता कि वो नौका समय पर बन भी पाएगी या नहीं। मैं ये भी नहीं जानता कि इतनी विशाल और वजनदार नौका उस प्रलय के सामने टिक भी पाएगी या नहीं। शायद वो इन सारे लोगों के साथ, किसी चट्टान की तरह ही डूब जाए! तुम नहीं जानते कि मत्स्य एक आकर्षक जादूगर है, जो शब्दों से खेलना जानता है! मैं वो नहीं हूं जो उसने मेरे बारे में कहा। मैं नकली हूं, ध्रुव!’

ध्रुव ने अविश्वास से अपने नेता की आंखों में देखा। वो जानता था कि यह समय किसी राजा मनु से नहीं, बल्कि अपने सच्चे मित्र से बात करने का था।

'तुमने जो अभी कहा उस पर तुम भरोसा नहीं करते हो, सत्यव्रत मनु। जो कुछ मैंने तुमसे सुना और जो तारा ने मुझे बताया, मत्स्य वास्तव में दिव्य हैं। तुम उनसे बहुत स्नेह करते हो और उन्हें अपने साथ देखना चाहते हो। और तुम जानते हो कि तुम साधारण नहीं हो, मनु। विवास्वन पुजारी का रक्त साधारण कैसे हो सकता है? ये अंतिम मानव बस्ती सिर्फ तुम्हारी वजह से ही अस्तित्व में है! पुरुषों और महिलाओं का यह विशाल रैला आज तक सिर्फ तुम्हारी वजह से ही जीवित है! तुम्हारी वजह से ही दैत्य उन्हें काटकर जीवित खा नहीं गए हैं! और अगर मैं किसी के लिए अपनी जिंदगी दांव पर लगा सकता, कोई ऐसा जो इस प्रलय के बाद भी जीवित रहेगा—तो वो तुम ही हो, मेरे मित्र! वो सत्यव्रत मनु ही है!'

ध्रुव ने ये शब्द चिल्लाकर कहे, पूरी सघनता से अपने गले की नसों पर दबाव डालते हुए।

शब्दों ने अपना असर दिखाया।

थकी हुई उदासीन मुस्कान देने से पहले, मनु के चेहरे पर गंभीरता थी। उसे उसी ताकत, विश्वास और ऊर्जा की जरूरत थी, जो ध्रुव ने अभी उसे दी थी। सत्यव्रत अपने प्रिय मित्र को देखकर मुस्कुराया और फिर अपने घोड़े को दौड़ता हुआ अपने तंबू की तरफ बढ़ा।

आगे जाकर, मनु ने मुड़कर ध्रुव से कहा।

'ओ शक्तिशाली धनुर्धर, थोड़ी देर आराम कर लो। कल हम दोनों विशाल नौका की तरफ चलेंगे।'

'मनु की नौका की तरफ!' ध्रुव ने हंसते हुए जवाब दिया, और मनु ने भी शर्मिंदगी से झेंपते हुए अपना घोड़ा दौड़ा दिया।

बनारस, 2017
एक सर्वसत्तावादी सरकार—भाग II

वो एक छोटी सी अनुष्ठानिक अग्नि के गिर्द बैठे थे, जो पूजा पूर्ण होने के बाद स्वयं धीरे-धीरे बुझ गई। द्वारका शास्त्री ने अपनी सांध्यकालीन अर्चना के लिए कुछ विराम लिया था।

‘जैसा कि मैंने तुम्हें पहले भी समझाया है, विद्युत, स्याह ऑर्डर ने समय-समय पर अपना नाम और पहचान बदली थी। इसे एक अकेला संगठन मानने की भूल मत करना। यह दुनिया भर में फैले गुप्त समाजों, संगठित संस्थानों और शक्तिशाली व्यक्तित्वों का जटिल संयोजन है। उनका लक्ष्य मात्र राजनैतिक ही नहीं है। द न्यू वर्ल्ड ऑर्डर सदियों पुराना नेटवर्क है, जिसका उद्देश्य पूरी दुनिया का नियंत्रण कुछ थोड़े से व्यक्तियों के हाथों में दे देना है।

वे मात्र राजनैतिक मुद्दे से ही संचालित नहीं होते हैं। वे वैश्विक अर्थव्यवस्था, धर्म, सैन्य कार्यवाही, नागरिक युद्ध, सामाजिक मतभेद, मीडिया और यकीनन राजनीति को भी नियंत्रित करते हैं। नाइट्स टेम्पलर के दम पर उन्होंने जो राजाओं, पादरियों, स्वर्ण और भूगोल की जटिल पहेली तैयार की थी, वो कृत्रिमता,

पैमाने और पहुंच के स्तर पर और बढ़ी ही है। इससे पहले की कोई जान पाता, दुनिया युद्ध-अर्थव्यवस्था के रूप में चलने लगी।'

'युद्ध-अर्थव्यवस्था से आपका क्या मतलब है, बाबा?' विद्युत ने जानना चाहा।

'क्या तुमने इस पर ध्यान दिया, विद्युत... वो चाहे अमेरिका की आजादी की लड़ाई हो या फ़्रांस की क्रांति, रूस के सम्राट पर बोलशेविक पार्टी का हावी हो जाना या विश्व युद्ध, शीत युद्ध हो या मध्य पूर्व, कश्मीर हो या चेचन्या... दुनिया एक दिन के लिए भी युद्ध और रक्तपात से मुक्त नहीं हो पाई है?'

देवता गहरे विचारों में खोया था। महान मठाधीश सही कह रहे थे। लेकिन चीजें इतनी सरल नहीं हो सकती थी।

'आप सही कह रहे हैं, बाबा। लेकिन क्या आपको नहीं लगता कि इसका कारण हम मनुष्य या हमारी प्रजाति होमो सेपियंस की आत्म-विध्वंस की अनोखी प्रतिभा नहीं है? क्या समूह, प्रजाति या राज्य बनाकर, फिर उस पहचान के लिए लड़ना मनुष्य के विकास का विशेष तत्व नहीं है?'

द्वारका शास्त्री के कुछ कहने से पहले, पुरोहित जी ने जवाब दिया।

'क्या हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि क्या कारण और क्या प्रभाव रहा होगा, विद्युत? तुमने जो अभी हम मनुष्यों के बारे में कहा वो उस लगातार हिंसा की वजह से नहीं है जो हमने अपने ऊपर थोप ली है? लेकिन क्या हम इसलिए लड़ते हैं क्योंकि हम आनुवांशिक, शारीरिक रूप से रक्तपात के लिए बने हैं? या हमने स्वयं को हिंसक इसलिए मान लिया है कि किसी ने हमें कभी शांति से रहने ही नहीं दिया? उदाहरण के लिए, भारत और पाकिस्तान के अधिकांश लोग दोनों देशों में हमेशा शांति और प्रेम चाहते रहे हैं, लेकिन अब तक चार बार युद्ध हो चुका है और अनगिनत लोग मारे जा चुके हैं। दोनों देश जिन्हें अपना पैसा स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार में लगाना चाहिए, वो करोड़ों डॉलर के परमाणु हथियार और फाइटर जेट खरीद रहे हैं। जब दशकों से साधारण भारतीय या पाकिस्तानी शांति की कामना करता रहा, तो तुम्हें क्या लगता है कि ऐसा क्यों नहीं हो पाया?'

'द न्यू वर्ल्ड ऑर्डर की वजह से...' विद्युत ने कहा।

‘ठीक है, बाबा, अब मैं विस्तृत रूप से न्यू वर्ल्ड ऑर्डर का डिजाइन समझ चुका हूं, और कि इसे ताकत के भूखे कुछ असाधारण रूप से शक्तिशाली लोग चला रहे हैं। लेकिन मैं अभी भी नहीं समझ पा रहा हूं कि इतने षड्यंत्र, प्रभाव और नियंत्रण से वो हासिल क्या करना चाहते हैं।’

‘उनके लक्ष्य उतने ही सहज हैं जितने वो निडर, और शायद साधारण इंसान की समझ से परे। वो न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के रूप में स्थापित करना चाहते हैं—

दुनिया की एक अर्थव्यवस्था।

दुनिया का एक धर्म।

दुनिया की एक सेना।

दुनिया का एक समाज।

और पूरी दुनिया की एक ही सरकार...’

‘...जो उनके अपने भ्रातृसंघ के हाथ में हो,’ कहते हुए विद्युत ने अपने परदादा की बात ख़त्म की।

विद्युत वो सब सुनकर हैरान था। वो यकीन नहीं कर पा रहा था कि कोई इतनी जघन्य, इतनी गुप्त और इतनी विनाशकारी काली परछाई पूरे ग्रह पर घूम रही है, और लगभग सात बिलियन लोगों को इसका कोई अनुमान नहीं है!

द्वारका शास्त्री ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

‘जैसा कि मैंने तुम्हें पहले भी बताया था कि पहली बार वैश्विक-नेता ने 1921 में खुले तौर पर ‘न्यू वर्ल्ड ऑर्डर’ की घोषणा की थी, जब अमेरिकी राष्ट्रपति वूड्रो विल्सन ने जनसभा में इसका नाम लिया था। वह पहले विश्व युद्ध के बाद बने राष्ट्र संघ का संदर्भ दे रहे थे, लेकिन तब हम काले मंदिर के संरक्षक जान गए थे कि ऑर्डर ने खतरनाक मुकाम हासिल कर लिया था कि अब स्वयं को विश्व मंच पर प्रस्तुत करने के लिए तैयार था।

इसके बाद बहुत से प्रभावशाली आदमियों ने विभिन्न जन मंचों और मीडिया से न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के बारे में बात करनी शुरू कर दी। इन आदमियों की सूची में विकसित देशों के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री भी शामिल थे। इसमें बिजनेस जगत की नामी हस्तियां और चिंतक भी शामिल रहे। क्या यह संयोग ही था कि 1921 से अब तक के लगभग सौ सालों में न्यू वर्ल्ड ऑर्डर का नाम बार-बार लिया जाता रहा? यह एक बीज रोपण था, विद्युत।

मानो न्यू वर्ल्ड ऑर्डर की आवश्यकता को कृत्रिमता से जनसंख्या के मन में रोपित कर दिया गया था।'

‘बाबा, आपने पहले मुझे बताया था कि ऑर्डर की सबसे सक्षम कार्य प्रणाली यह थी कि वह दोनों तरफ से युद्ध लड़ता था। इस बात से आपका क्या मतलब था? कौन से ऐसे युद्ध थे, जिन्हें वो सीमा के दोनों ओर से लड़ या नियंत्रित कर रहे थे?'

‘मैं खुश हूं, विद्युत कि तुमने यह सवाल पूछा, क्योंकि इसके जवाब से ही ऑर्डर के इतिहास के रहस्य और आतंक की कई गांठें खुल जाएंगी। और कि गुप्त भ्रातृसंघ का प्रभाव उससे कई भयानक है, जिसकी तुम सपने में भी कल्पना नहीं कर सकते। एक बार सच जानने के बाद, दुनिया कभी भी तुम्हारे लिए पहले की तरह नहीं रहेगी।'

इतना कुछ सुनने के बाद विद्युत को यकीन था कि कोई भी बात उसे पहले से अधिक सदमा नहीं दे सकती थी।

वह गलत था।

‘मुझे बताइए, बाबा। मैं जानने को उत्सुक हूं कि हमारे अतीत और वर्तमान पर इन दृढ़ और निर्दयी लोगों के समूह ने क्या प्रभाव डाला। आखिरकार, एक गुप्त समाज हमारे इतिहास की धारा को कितना प्रभावित कर सकता है?'

मठाधीश मुस्कुराए लेकिन उनकी मुस्कान उनकी आंखों तक नहीं पहुंच पाई, जो अब पथरा गई थीं। उन्होंने विद्युत से वो सवाल पूछा, जिसकी उसने कल्पना नहीं की थी।

‘तुम्हें क्या लगता है, विद्युत कि फ़्रांस क्रांति के पीछे कौन था? और सोवियत संघ के विलगाव के पीछे?

या फिर... 9/11 के पीछे?’

आर्यवर्त का दलदल, 1699 ईसापूर्व

विराट नौका

बरसात की बूंदें उनके चेहरे पर चाबुक के कोड़े की तरह पड़ रही थीं, जब वो लोग विशाल समतल की ओर बढ़ रहे थे। समतल स्थल के बीचोबीच की ऊंची जमीन को मानवजाति की सबसे विशाल रचना के निर्माण स्थल के रूप में चुना गया था।

विद्युत घुड़सवारों के उस कारवां को तेज हवाओं और बादलों की भीषण गर्जना के बीच से ले जा रहा था। मीलों तक सिवाय निर्जन दलदल और दूरस्थ पर्वतों के अतिरिक्त कुछ और दिखाई नहीं पड़ रहा था। लगातार गिरती बारिश कुछ भी उगने नहीं दे रही थी। काले जंगलों को छोड़कर, आर्यवर्त की सारी वनस्पति महीनों पहले ही बह गई थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो यह दल किसी ऐसे ग्रह पर जा रहा था, जहां कभी जीवन ने सांस नहीं ली थी।

तारा और उसकी टुकड़ी की बीस महिला वीरांगनाएं ध्रुव के पीछे-पीछे ही चल रही थीं। सम्मान और सराहना के साथ, मनु ने इस महिला टुकड़ी को *दामिनी सेना* नाम दिया था।

दामिनी सेना किसी भी तरीके से सूरज के झंडे तले चलने वाले, मनु के योद्धाओं से कम नहीं थी।

मनु को कोई अनुमान नहीं था कि उसकी मृत मां संजना, तीन हजार सात सौ साल बाद दोबारा से धरती पर दामिनी के नाम से ही जन्म लेगी।

मनु स्वयं घोड़ा गाड़ियों के उन बड़े से दल के पीछे चल रहा था, जो निर्माण स्थल पर श्रमिकों के लिए जरूरी सामान लेकर जा रही थीं। दो सौ घोड़ा गाड़ियां थीं। तुलनात्मक रूप से यह छोटी टुकड़ी थी। निर्माण स्थल के लिए आपूर्ति श्रृंखला हर समय चालू रहती थी। काम में लगे हज़ारों पुरुषों और महिलाओं को भोजन, वस्त्र और कच्चा माल उपलब्ध कराया जाना जरूरी था।

कारवां लंबाई में आधे योजन तक फैला हुआ था, और एक हजार सशस्त्र सैनिकों की सुरक्षा में, अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहा था। पिछले सप्ताहों में ऐसे कई आपूर्ति दलों को पहाड़ों पर रहने वाले लुटेरों और क्रूर दैत्यों ने लूट लिया था। मनु उस गाड़ी के साथ चल रहा था, जो वर्तमान समय में हमलावरों के लिए सबसे बड़ा लालच थी। वो जानता था कि उनके प्रत्येक कदम पर नजर रखी जा रही थी। वो ये भी जानता था कि इस राशन और सामान का निर्माण स्थल तक पहुंचना कितना जरूरी था।

वो पत्थर के टुकड़े पर चल रहे थे, उस सड़क का निर्माण मालवाहक गाड़ियों की सुगम आवाजाही के लिए किया गया था। जब वो दूसरी तरफ पहुंचे, तो उन्होंने उसे देखा।

वो अभी भी ऊंची जमीन से बहुत दूर थे, कम से कम एक दिन की दूरी पर... लेकिन फिर भी वो दूर क्षितिज पर विशालकाय प्रतिमा के समान दिखाई दे रही थी।

नौका।

जब भी उसकी नजर उस विशालकाय नौका पर पड़ती, तो मनु का दिल गर्व और उम्मीद से भर उठता। आठ महीनों में उन्होंने उस विकराल नौका का आधारभूत ढांचा तैयार कर लिया था, जो मनुष्य की किसी भी कल्पना से अधिक बड़ी थी। दूरी से, नाव विशाल धूसर पर्दा नजर आ रही थी, जो सीधा आसमान से उतरा हो, और उसने धरती व आकाश को आधा कर दिया हो।

इस आकर्षक प्राचीन अभियांतिकी के नजदीक जाने पर, आसमान बिलकुल दिखाई ही नहीं देता था। ऐसा लगता था मानो आप ऐसी दीवार की तरफ बढ़ रहे हों, जो अनंत तक फैली है। धीरे-धीरे, इसकी रूपरेखा और नाव का आकर स्पष्ट होने लगा। सैकड़ों हजार शक्तिशाली शाहबलुतों से उसे थामकर और पशु बल के माध्यम से झुकाकर उस विशालकाय जहाज का ढांचा तैयार किया गया। उतनी ही संख्या के पेड़ के मजबूत तनों, लताओं और विशालकाय चट्टानों ने विशाल नौका को आसमान की ओर साध रखा था।

नजदीक आने पर ही पता चल रहा था कि छोटे-छोटे, हिलते हुए लाखों कण क्या थे। कुछ मील दूरी से ही वो कण अपने वास्तविक आकार में नजर आ पा रहे थे। वो लोग थे! वो संख्या में इतने अधिक थे कि लग रहा था विशाल बरगद में दीमक लग गई हो। दसियों हजार पुरुष-महिला, बिना रुके लगातार उन असहनीय हालात में मानवजाति की अंतिम आशा को जीवित बनाए रखने के लिए काम कर रहे थे।

वह हर दशा में उल्लेखनीय दृश्य था। विभिन्न नगरों, प्रांतों और भाषाओं के सैकड़ों हजार लोग, कंधे से कंधा मिलाकर इस साहसिक कार्य को अंजाम दे रहे थे। तांबे की प्रत्येक कील, जो हथौड़े के माध्यम से गीली लकड़ी में धंसती, वो मानवता को निश्चिंत तबाही से एक कदम दूर ले जाती। वो दिन के प्रत्येक घंटे में भूख, बीमारी, जंगली जानवर, प्रियजनों के वियोग, अंग भंग और अकल्पनीय यातनाओं से जूझ रहे थे। लेकिन जल्द ही यह संयुक्त प्रयास समग्र ब्रह्मांड को स्पष्ट कर देने वाला था। कि मानव मन में दबी एक चेतना प्रकृति की ताकतवर शक्ति से भी अधिक बलवान थी।

जीने की चेतना।

लेकिन इस पर्वत समान नौका को बनाना आसान नहीं था।

प्रत्येक दिन अनेकों मजदूर दुर्घटना में मारे जाते। हर समय गरजते बादल और हिंसक बरसात हर कदम और निर्णय को धुंधला बना देते। कुछ नौका के शीर्ष से फिसलकर मर जाते। कुछ किसी भारी स्तंभ या चट्टान तले दब जाते। कुछ गिरती बिजली का शिकार बनते, जो एक ही बार में नाव के अनेकों स्थल पर आ गिरती। इससे भी बढ़कर, प्रत्येक दिन बहुत से महिला-पुरुष चोट या कड़ी थकान से चूर होकर मौत के सामने घुटने टेक देते।

लेकिन इंसानी जान का इससे भी अधिक नुकसान किसी और वजह से हो रहा था।

दर्जनों सोते हुए पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को चीखती रातों में ख़ामोशी से दबोच लिया जाता।

जिंदा खाने के लिए।

न्यूयॉर्क, 2017
स्टोनफेलर परिवार

वो अपनी अध्यक्षता वाली बोर्ड मीटिंग से बहाना बनाकर निकला और तेज कदमों से मैनहट्टन के आसमान को छूते, अपने आलीशान ऑफिस चैम्बर की तरफ बढ़ा। वह 44 वर्ष का था, उसके बाल भूरे थे और उसने बहुत महंगा बिजनेस सूट पहन रखा था। लेकिन इससे भी अधिक सहज थे उसके चेहरे पर शाही भाव... किसी ऐसे इंसान की तरह जिसका जन्म ही असाधारण संपदा और सत्ता में हुआ हो।

उसने अपना आईफोन स्वाइप कर इनकमिंग कॉल को लिया। स्टोनफेलर परिवार का वंशज जानता था कि वो बिग मैन के फोन को नजरंदाज नहीं कर सकता था।

वो साझेदार थे। वो दोनों ही ऑर्डर की उच्च पंक्ति में विराजमान थे। वो दोनों ही दुनिया के सबसे शक्तिशाली और सबसे जघन्य गुप्त भ्रातृसंघ के ताकतवर सदस्य थे।

'अभिनंदन, होलीनेस,' फ्रैंक स्टोनफेलर ने कहा। वो छठी पीढ़ी का रईस था और उनसे कहीं अधिक अरबपति। न तो उसे और न ही उसकी हॉलीवुड फिल्मों की नायिका, पत्नी को ठीक-ठीक अंदाजा था कि उनके पास कितनी संपत्ति थी। उसके परिवार का दखल दुनिया के सारे जरूरी व्यापारों में था, जैसे तेल, दवाइयां, इन्फोटेक, मीडिया, शस्त्र और इससे भी महत्वपूर्ण... इंटरनेशनल बैंकिंग।

'हेल्लो, फ्रैंक। तुम्हारा बिजनेस कैसा चल रहा है, मेरे बच्चे?'

'सब आपकी कृपा है, योर होलीनेस,' फ्रैंक ने जवाब दिया।

‘और बीट्रिस और छोटा साइमन कैसा है? वो तो अब शायद छह साल का हो गया होगा?’

‘आपके आशीर्वाद से, वो दोनों भी ठीक हैं, फादर,’ फ्रैंक ने कहा, उसे अब इस दिखावे की खैरियत से चिढ़ हो रही थी। वह जानता था कि बिग मैन भला आदमी नहीं था, और उसे फ्रैंक की पत्नी बीट्रिस और उसके बेटे साइमन की कोई चिंता नहीं थी।

दरअसल, फ्रैंक तो सही समय और सही मौके का इंतजार कर रहा था कि कब इस बदमाश बूढ़े को उसकी जगह से हटाया जाए।

‘आपकी आवाज सुनकर हमेशा ख़ुशी मिलती है, फादर। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?’

बिग मैन जानता था कि फ्रैंक स्टोनफेलर की इन मीठी बातों के पीछे कौन सा जहरीला सांप रेंग रहा था। वो इस शक्तिशाली उद्योगपति की रग-रग से वाकिफ था।

इसका पूरा परिवार ही धोखेबाजों का है। पीढ़ियों से। एक बार देवता और काले मंदिर का मसला सुलझाने के बाद, मैं हमेशा के लिए स्टोनफेलर वंश का सफाया कर दूंगा।

गॉड मुझे माफ़ करें, साइमन अभी बच्चा ही है। लेकिन जो जरूरी है, वो करना ही होगा।

‘ख़ुशी तो मुझे मिलती है, फ्रैंक। तुम एक पुराने मित्र हो, मैं तुम पर भरोसा करता हूं और तहेदिल से तुम्हें स्नेह करता हूं।’

‘मेरी भी भावनाएं ऐसी ही हैं, योर होलीनेस। बल्कि, बीट्रिस तो पूछ भी रही थी कि दोबारा आपकी मेजबानी का अवसर हमें कब प्राप्त होगा।’

बिग मैन झूठी नम्रता से हंसा। उसने सीधे पॉइंट पर आने का निर्णय लिया।

'बीट्रिस उतनी ही उदार हैं, जितनी वो सुंदर हैं। अब सुनो, फ्रैंक, तुम जानते हो न कि उस खतरनाक भारतीय शहर में, गंगा के किनारे क्या हो रहा है?'

'जी, फादर। मैं भी अब भविष्यवाणी के पलों को गिन रहा हूं। सदियों में हमने जो भी किया, सारे बलिदान, सारी शुद्धि, सहयोग, युद्ध और संक्रमण... सब इस अंतिम पल के लिए ही तो था। हम अब असफल नहीं हो सकते, फादर। हमें असफल नहीं होना है!'

'हम नहीं होंगे, फ्रैंक,' रोम के बिग मैन ने कहा। 'मास्केरा हमारा सबसे खतरनाक हथियार है। वो अतीत में कभी असफल नहीं हुआ है। और तुम जानते हो कि उसकी क्या बात उसे दूसरों से अलग बनाती है... क्या चीज है जो उसे अजेय बनाती है। तुम जानते हो कि इस मास्क के पीछे कौन सी काली शक्ति है।'

फ्रैंक स्टोनफेलर और बिग मैन दोनों जानते थे कि दांव पर क्या लगा था। वो दोनों जानते थे कि अगर विद्युत को नहीं रोका गया, तो वो अंतिम युद्ध हार जाएंगे। जिस ग्रैंड वर्ल्ड ऑर्डर का उन्होंने सपना देखा था, तो आने वाले रोष में भांप बनकर उड़ जाएगा।

वो जानते थे कि अगर विद्युत काले मंदिर के रहस्य को उजागर करने में कामयाब हो गया, तो इस धरती पर ब्रह्मांड की सबसे ताकतवर शक्ति उतरेगी। वो ताकत इतनी सक्षम होगी कि वैश्विक भ्रातृसंघ तक उसका सामना नहीं कर पाएगा।

महान द्वारका शास्त्री और पुरोहित जी की तरह ही बिग मैन और फ्रैंक स्टोनफेलर भी इससे सहमत थे।

विद्युत और वाइट मास्क के बीच होने वाली यह जंग, समय के अंत तक के लिए मानवता की नियति निर्धारित कर जाएगी।

राष्ट्रकूट साम्राज्य, 762 ईस्वी
पृथ्वीवल्लभ

'काशी से घुड़सवार आ पहुंचे हैं, स्वामी।'

शक्तिशाली राजा कन्नेश्वर, जिसे दूरदराज में और सात समुद्र पार तक अपराजित पृथ्वीवल्लभ के नाम से जाना जाता था, ने अपना चेहरा अपने सेनापति की ओर घुमाया।

इसी पल के लिए मेरा जन्म हुआ था।

पृथ्वीवल्लभ भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिणी प्रायद्वीप का सबसे शक्तिशाली राजा था। उसकी शूरवीरता की कहानियां दूर-दूर तक मशहूर थीं। राष्ट्रकूट वंश के सिंहासन पर बैठने के कुछ समय बाद ही, उसकी सेना ने अनेकों अपराजेय विरोधियों को धूल चटा दी थी, जिसमें गंगावाड़ी के राजा श्रीपुरुष और कोंकण के शिलाहार भी शामिल थे। उसने चालुक्य शासक विष्णुवर्धन को भी पराजित कर दिया था।

लेकिन पृथ्वीवल्लभ का नाम विंध्य के दक्षिण और उत्तर में केवल इन विजय अभियानों के लिए ही प्रसिद्ध नहीं था। उसकी प्रसिद्धि की कुछ और भी वजह थी।

पृथ्वीवल्लभ भगवान शिव का परम भक्त था। और वो चट्टान काटकर बनाए जाने वाले गुफा मंदिरों का सबसे बड़ा निर्माता भी था।

हालांकि वो नहीं जानता था कि उसकी श्रेष्ठ कृति तो अभी बननी बाकी थी। एक ऐसा स्मारक जो उसे ईश्वर और मनुष्य से लड़वाते हुए, उसका नाम हमेशा के लिए अमर कर देगा।

‘मैं स्वयं उनका स्वागत करूंगा,’ राजा ने अपने कंधों पर शाही दुशाला लपेटते हुए कहा। वो अपने आवासीय कक्ष से बाहर निकलने के लिए तैयार था।

जैसे ही उसने अपने भव्य महल के विशाल बरामदे में, अपने सेनापति के साथ कदम रखा, तो पृथ्वीवल्लभ ने काशी से आए दल को मुख्य द्वार से अंदर आते देखा। दल के मध्य में, देव-राक्षस मठ के भगवा और गहरे लाल रंग के परिधान पहने, योद्धा-संतों की सुरक्षा में आई एक घोड़ागाड़ी को देखकर तो एक पल के लिए उसकी धड़कन थम गई।

उसने एक पल को अपनी आंखें बंद कर, भगवान हरिहर की प्रार्थना बुदबुदाई। हरिहर शिव और विष्णु का पवित्र संयोजन थे। पृथ्वीवल्लभ जानता था कि शिव और विष्णु की एकता को याद करने का इससे पुण्य कोई और पल नहीं हो सकता था।

जैसे ही घुड़सवार नजदीक आए और एक-एक कर घोड़ों से उतरे, तो राजा ने उनके नेता को देखा। वो देव-राक्षस मठ के तत्कालीन मठाधीश, सर्व सम्मानित तांत्रिक और संत, दुर्गादास शास्त्री थे। वो उस घोड़ागाड़ी के आगे चल रहे थे, जिस पर एक विशाल, प्राचीन, किसी अपरिचित धातु के संयोजन से बना संदूक रखा था।

दोनों महापुरुषों ने एक-दूसरे को देखा और मुस्कुराए। उनकी पारस्परिक सराहना और स्नेह राष्ट्रकूट सेनापति को स्पष्ट था, जो दूसरे योद्धा-संतों का सुगंधित जल और पारंपरिक चिरोटी से अभिनंदन करने में व्यस्त था।

'मेरी विनम्र कुटीर में आपका स्वागत है, महान दुर्गादास शास्त्री,' राजा ने कहते हुए अपने हाथ सम्मान में जोड़ लिए।

8वीं सदी के मठाधीश घोड़े से उतरे, और चलकर पृथ्वीवल्लभ के पास गए और अपने हाथ शक्तिशाली राजा के कंधे पर रख दिए।

'तुमसे दोबारा मिलकर ख़ुशी हुई, मेरे परम मित्र। पिछली बार जब हमने तुम्हें देखा था, तो तुम एक युवा राजकुमार थे,' दुर्गादास शास्त्री ने कहा।

'और आपके बाल भी काले थे...!' राजा ने चुटकी ली, तो दोनों आदमी खिलखिलाकर हंस दिए।

दोनों पुराने मित्रों के अभिनंदन के बीच, दुर्गादास ने विनम्रता से नाश्ते की तश्तरी को मना कर दिया। मठाधीश ने राजा का ध्यान उस कीमती सामान की ओर आकर्षित किया जो वो अपने साथ लाए थे।

'यह अब आपकी सुरक्षा में है, राजन,' उन्होंने उस बड़े संदूक की ओर संकेत करते हुए कहा।

पृथ्वीवल्लभ ने मुग्धता से संदूक को देखा। उस धातु के संदूक में जो भी था, उसने मानो राजा पर जादू चला दिया था।

राष्ट्रकूट का सम्राट धीरे-धीरे घोड़ागाड़ी की तरफ बढ़ा और कोमलता से, अपनी उंगली के पोरों से उस संदूक को छुआ। वो पूरी तरह भावुक हो गया था। फिर उसने अपने दोनों हाथ संदूक पर रखकर, अपना माथा उस पर टिका दिया।

भक्ति में उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

‘लेकिन शास्त्री जी, काशी विश्वनाथ मंदिर को स्कंद पुराण के काशी खंड में वर्णित किया गया था... वह शाश्वत था। पृथ्वी की कोई भी ताकत उसे नष्ट कैसे कर सकती है?’

वो अब राजा के शाही भोजन कक्ष में थे। सम्राट द्वारा प्रस्तुत किए गए छप्पन भोग के बावजूद, दुर्गा शास्त्री केवल दूध के साथ एक कटोरा चावल खा रहे थे। अपने सारे पूर्वजों की तरह, वो भी एक संत थे—जिन्होंने अपना जीवन काले मंदिर के रहस्य की रक्षा में समर्पित किया था। वो जानते थे कि रक्त धारा के प्राचीन श्राप की वजह से, उन्हें एक हिंसक और निर्दयी मृत्यु प्राप्त होगी।

‘मंदिर शाश्वत है और वो समयातीत रहेगा। लेकिन वह अपनी आकृति और प्रारूप बदल लेगा, पृथ्वीवल्लभ। अब से कुछ सदियों बाद, मंदिर ढह जाएगा। फिर से उदय होने के लिए। ऐसा बार-बार होगा। परिणामस्वरुप काले मंदिर का रहस्य भी काशी में लौट जाएगा, राजन। यह तब लौटेगा जब देवता आएगा। तब तक, तुम चयनित संरक्षकों में से एक रहोगे।’

सम्राट सुन रहा था, वह अपने सौभाग्य पर भरोसा नहीं कर पा रहा था। संसार की सबसे अनुपम संपत्ति की सुरक्षा के लिए वो अपनी जान तक दे सकता था।

‘मैं आपके आदेश का पालन करूंगा, ओ महान मुनि। लेकिन मुझे आपकी सलाह की जरूरत होगी। मेरे विनम्र मंदिरों में से आप अगला काला मंदिर किसे बनाना चाहेंगे?’

‘उनमें से किसी को भी नहीं,’ दुर्गादास ने सपाट कहा।

卐

मठाधीश को भोजन के आसन से उठता देख राजा स्तब्ध रह गया। अगर उसका कोई भी मंदिर इस जिम्मेदारी के योग्य नहीं था, तो वो क्या कर सकता था?

उसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। दुर्गादास शास्त्री की आंखें युवा रसायनशास्त्री के उत्साह से चमक रही थीं। वो सीधे प्रतिभाशाली पृथ्वीवल्लभ की आंखों में देख रहे थे और तभी उन्होंने भारी जोश से घोषणा की।

‘ओ शक्तिशाली पृथ्वीवल्लभ, ऐसा मंदिर बनाओ जो अनश्वर हो! सबसे सख्त चट्टान काटकर प्रभु के लिए एक रथ उसी दक्षता से बनाओ, मानो तुम ताजे मक्खन को गढ़ रहे हो। फिर उसे मां पृथ्वी की गोद में बिठा दो। ये एक ऐसा अभेद्य मंदिर होगा, जो सदियों तक काले मंदिर के रहस्य की सुरक्षा करेगा। आज से हजारों साल बाद भी मनुष्य तुम्हारे वास्तुशिल्पीय कौशल की सराहना करेंगे।

और उस भव्य मंदिर को उस नाम से पुकारना, जो तुम्हारे इष्ट, देवों के देव, प्रभु महादेव को तुम्हारा अमर समर्पण हो।

एलोरा के उस मंदिर को कैलाश पुकारना।’

बनारस, 2017
सर्वसत्तावादी सरकार—भाग III

‘एक वैज्ञानिक या तुम कह सकते हो विकासपरक आधार पर गुप्त भ्रातृसंघ ने अपनी योजना के सदियों तक विस्तार की नींव रखी थी। यद्यपि कांस्टेंटाइन शायद अपनी योजना के सामाजिक-राजनीतिक एकत्रीकरण से अनभिज्ञ था, और मानवों पर पड़ने वाले इसके प्रभाव को नहीं जानता था, लेकिन बाद में आए उसके उत्तराधिकारी को यह स्पष्ट ज्ञात था।

जैसा कि युवाल नूह हरारी की किताब *सेपियंस: ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमनकाइंड* , में बेहतर तरीके से व्यक्त किया है कि एकीकरण की तरफ बढ़ती दुनिया और समाज कुछ हद तक मानवशास्त्रीय वास्तविकता को स्वीकार कर रहे हैं। 20,000 ईसापूर्व में धरती मनुष्यों के दसियों हजार समूहों में बंट गई थी, जो शिकारियों की तरह जीवनयापन करते थे। 2,000 ईसापूर्व तक वो बड़ी व्यवस्थाओं में संगठित हो गए थे, जो पहले की तुलना में अधिक सभ्य थीं और उन्होंने खेती करना भी सीख लिया था। इनमें सिंधु घाटी प्रांत, मैसोपोटामिया, मिस्र सभ्यता इत्यादि शामिल थीं। धीरे-धीरे इन व्यवस्थाओं के बीच व्यापार शुरू होने लगा और मानवजाति आदर्शों, आवश्यकताओं और आर्थिक लाभ के लिए और अधिक एकीकृत होने लगी।’

वो अब तक साथ में सात घंटे लगातार बिता चुके थे। द्वारका शास्त्री द्वारा लगातार, बिना थके, विकराल षड्यंत्र के पन्ना-दर-पन्ना खोलने से विद्युत पूरी तरह स्तब्ध था।

‘हड़प्पा के मैसोपोटामिया के लोगों के साथ सुविकसित व्यापारिक संबंध थे, और मैसोपोटामिया के लोग मिस्र के साथ बढ़िया वाणिज्य करते थे। इस तरह, धर्म

एकीकरण का अगला सामाजिक माध्यम बनकर उभरा। बौद्ध धर्म और ईसाईयत एशिया और यूरोप के बड़े भागों में तेजी से फैलने लगे। लेकिन धर्म के फलने-फूलने के बावजूद भी, यह प्रभावित करने में मुख्य स्थान पर नहीं था। सबसे बड़ी जोड़ने वाली शक्ति थी—विजयी अभियान!

व्यापार और धर्म के बाद आई इतिहास के कुछ यादगार व्यक्तियों और राजघरानों की साम्राज्य-निर्माण की आकांक्षा। फिर वो चाहे सिकंदर, समुद्रगुप्त और चंगेज खान हों या फिर रोमन, स्पेनिश, पुर्तगाली और ब्रिटिश साम्राज्य, लेकिन संसार धीरे-धीरे दसियों हजार तितर-बितर फैली जनसंख्या से, एक वैश्विक नक़्शे में सिमटने लगा, जिन्हें आसानी से कुछ सैकड़ों देश और राज्यों में बांटा जा सकता था। यह एकीकरण हालिया इतिहास तक भी जारी रहा। यहां तक कि भारतीय उप-महाद्वीप भी वर्ष 1947 तक 565 राजसी राज्यों में बंटा हुआ था। आज वो एक देश, एक पहचान है—भारत। तो, तुमने देखा, विद्युत, ऑर्डर का मानना था कि वो बस वही कर रहा था जो उससे प्रकृति और नियति चाहती थी! वो स्वयं को आधुनिक समय के विजेता मान रहे हैं, जो वही कर रहे हैं, जो अवश्यंभावी है!'

'लेकिन यह तो असंगत है, बाबा! आपने जिस सामाजिक-राजनीतिक और भौगोलिक विकास की बात बताई, उसे स्वाभाविक रूप धारण करने में हजारों-हजार साल लगे। उसकी तुलना में न्यू वर्ल्ड ऑर्डर तो शिशु ही है! उससे भी अधिक, इतने अधिक इंसानी समाजों और सभ्यताओं का संयोजन किसी लिखित योजना के लक्ष्य से नहीं हो सकता। यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें अनेकों तथ्य जुड़े रहते हैं, जो मानवजाति के सफर और पृष्ठभूमि को लगभग प्राकृतिक चयन के डार्विन के सिद्धांत के अनुसार परिभाषित करते हैं। तो कोई सही दिमाग वाला आदमी इन्हें इतने बड़े पैमाने पर बरगलाने की कल्पना भी कैसे कर सकता है?'

द्वारका शास्त्री फिर से थकान भरी, उदासीनता से मुस्कुराए ।

'वही लोग, जो पहले भी कई बार उन्हें सफलतापूर्वक बरगला चुके हैं, विद्युत।'

'जबकि ऑर्डर नियमित रूप से अपना रूप और नाम बदलता रहा था, और विभिन्न ताकतवर संगठनों के तौर पर अपना विस्तार किया था, जैसे *फ्रीमेसंस,*

ऑर्डर ऑफ़ द स्कल एंड बोंस, प्रायरी ऑफ़ सायन और *रोसीक्रुशंस* , लेकिन इन सबमें सबसे अधिक भयानक रहे थे *इल्यूमिनाती* ,' महान मठाधीश ने आगे बताया।

विद्युत को अब थोड़ी चिंता होने लगी थी। जबकि वो जिंदगी को बदल देने वाली इस कहानी को रुकने नहीं देना चाहता था, और वो उस ताकत के बारे में सबकुछ जान लेना चाहता था, जिसने उसके प्यारे पिता को मारा था, लेकिन उसने ध्यान दिया कि उसके बूढ़े बाबा ने घंटों से पानी का एक घूंट तक नहीं लिया था। उन्होंने अपनी सारी आयुर्वेदिक दवाओं को लेने से मना कर दिया था, और स्पष्ट था कि वो स्वयं को बहुत कष्ट दे रहे थे।

'बाबा, हम बाद में शुरू कर सकते हैं। अब आपको कुछ आराम करना चाहिए। आप घंटों से लगातार बोल रहे हैं,' विद्युत ने विनम्रता से सुझाव दिया।

द्वारका शास्त्री ने अपने परपोते की सलाह को नजरअंदाज कर दिया। मठाधीश का पूरा जीवन, उनके सारे काम, सारे संघर्ष और भयानक बलिदान... सबकुछ उनकी आंखों के सामने नाच रहे थे। सबकुछ जिसके लिए आज तक वो जिए थे, अब सामने खड़े होकर उन्हें घूर रहे थे।

भविष्यवाणी का समय आने ही वाला था। भयानक और बहुप्रतीक्षित अतिथि भी आ पहुंचा था और मठ के राक्षस-खंड के नीचे बने तहखाने में, सब्र से प्रतीक्षा कर रहा था।

कुछ ही घंटों में, ग्रह स्वयं को उजागर कर देंगे।

सदियों से प्रतीक्षित, वो ख़ास रोहिणी नक्षत्र लगने ही वाला था।

'इतिहास का रुख बदल देने वाली कुछ अजीब घटनाओं पर गौर करो। चलो बोल्शेविक आंदोलन या आसान शब्दों में कहें तो 1917 की रूसी क्रांति से शुरू करते हैं, जिसने तसार साम्राज्य का पतन कर सोवियत यूनियन की स्थापना की। जैसा कि हम जानते हैं, बोल्शेविक कार्ल मार्क्स के आदर्शों से प्रेरित था और उसने तसार महल का देश पर से नियंत्रण समाप्त कर दिया था। लेकिन क्या तुम जानते

हो, विद्युत कि महान क्रांति से चार साल पहले तक, बोल्शेविक किसी छोटी राजनीतिक ईकाई से अधिक कुछ नहीं थे, और उनका कोई प्रभाव भी नहीं था? तो फिर वो अचानक कैसे इतनी बड़ी शक्ति के रूप में उभरे, जिसने सर्व-शक्तिशाली तसार को हरा दिया? उनके इस अद्भुत उदय में किसने उन्हें सहयोग दिया? कौन उनके साथ था?

चलो कुछ थोड़े पुराने उदाहरण भी लेते हैं। चलो फ्रेंच क्रांति पर थोड़ी नजर डालते हैं—एक वैश्विक घटना जिसने जितना रोमांटिक साहित्य और नाटक को प्रेरित किया उतना ही आगे आने वाली क्रांतियों को। लेकिन फ्रेंच क्रांति को आखिर तुरंत हासिल क्या हुआ था? यह हमें आतंक युग में ले गया और इसमें बहुत सी इंसानी जानों का नुकसान हुआ। और अगर मैं तुम्हें बताऊं कि 1784 में, फ़्रांस की क्रांति से ठीक पांच साल पहले, इल्यूमिनाती के संस्थापक, एडम वेशौप्ट ने मैक्सीमिलेन रोब्सपिएर नाम के एक आदमी को गुप्त पत्र लिखा था, जिसमें उस क्रांति का पूरा प्रक्रियागत वर्णन था? विद्युत—फ्रेंच क्रांति कोई सीधा-सादा अपने शासकों के विरुद्ध फूटा गरीबों का आक्रोश नहीं था। वह योजनागत तरीके से तैयार किया गया सामाजिक-राजनीतिक षड्यंत्र था, जिसे इल्यूमिनाती ने बल दिया था!'

कमरे में गहन सन्नाटा था। यहां तक कि पुरोहित जी भी दुनिया की घटनाओं जैसे बोल्शेविक और फ्रेंच क्रांति पर, इल्यूमिनाती के इतने जटिल प्रभाव को नहीं जानते थे। आखिरकार, कुछ पलों बाद, विद्युत बोला।

'इल्यूमिनाती कौन हैं, बाबा? वो न्यू वर्ल्ड ऑर्डर से कैसे जुड़े हुए हैं?'

द्वारका शास्त्री ने गहरी सांस ली, और रक्त जमा देने वाली कहानी के रहस्यमयी अध्यायों को परत दर परत खोलना शुरू किया।

आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व

प्रचंड का आगमन

सत्यव्रत लकड़ी की एक जुगाड़ू मेज पर फैले नमूने के नक्शों को देख रहा था। मेज को एक विशाल वृक्ष के तने को बीच में से फाड़कर बनाया गया था। नमूने सूत की मोटी चादर पर बने थे, और उसमें नौका के विभिन्न भागों की आधारभूत संरचना का विस्तृत वर्णन था। वो लोग विशाल नौका के आधे बने कक्ष में थे। इस क्षेत्र से मनु पूरी परियोजना पर नियंत्रण रखता था।

मनु ने अपने लंबे बालों को पीछे, चोटी के रूप में बांध रखा था, और कानों में बड़े-बड़े गोल कुंडल लटक रहे थे। तारा के कहने पर उसने अपनी आंखों में काजल डाल लिया था, जिससे उसकी आंखों का तेज अधिक गहन हो गया था। मनु हर कोण से प्राचीन पुजारी-राजा लग रहा था, वो राजा जिसे समय के अंत तक याद रखा जाना था।

'यह सही प्रतीत नहीं हो रहा है,' उसने सोमदत्त से कहा, जो उल्टे पड़े वृक्ष के तने के दूसरी तरफ खड़ा था, और नक्शे को समझ रहा था।

'क्या, मनु...?' सोमदत्त ने पूछा।

पिछले बीते मुश्किल भरे महीनों में, मनु ने तेजी से जहाज बनाने की कला और विज्ञान को सीख लिया था। उसने कई रातें जलती हुई मशाल के नीचे बैठकर, उन पाठों को पढ़ा था, जिनका संदर्भ सोमदत्त ने दिया था। वो अपने दल के मुख्य अभियंता द्वारा संचालित सत्रों में पूरी सजगता से बैठता था, और जरूरी बातों को लिखता चलता था। उसने काफी समय सोमदत्त के साथ वैदिक गणित और वास्तुशिल्प की बारीकियां सीखने में बिताया था और उससे इस बारे में अनेकों

सवाल पूछे थे। इतने कम समय में उसने इतना जान लिया था कि मुख्य अभियंता भी विशाल नौका के निर्माण में, मनु के आधारभूत सुझावों को मान देते थे। वैसे भी यह ऐसी परियोजना थी कि किसी एक आदमी की कल्पना और बौद्धिकता से परे थी।

'इसकी सख्त पतवार में बहुत सी कांसे की रस्सियों का इस्तेमाल हो रहा है। इतने अधिक कांसे से पतवार पर वजन अधिक बढ़ जाने का जोखिम है और उसका सीधा खड़ा हो पाना मुश्किल। याद है न कि सिर्फ पंद्रह सौ आदमी ही इसे दोनों तरफ से खींच सकते हैं।'

'हम्म... मुझे लग रहा है कि तुम सही कह रहे हो। अगर हम मस्तूल की संख्या बढ़ा दें और उसकी निर्भरता कम...'

इससे पहले की सोमदत्त अपना वाक्य पूरा कर पाता, मत्स्य-प्रजाति का एक सिपाही मनु के लिए ऐसा संदेसा लाया, जिसकी उसे उम्मीद नहीं थी।

'प्रणाम, सत्यव्रत,' संदेशवाहक ने कहा। 'एक बहुत बड़ा सशस्त्र बल विशाल नौका की तरफ आ रहा है। और हमारे गुप्तचर जो समाचार लाए हैं, वो परेशान करने वाला है।'

मनु की मुट्ठी अपनी तलवार के मूंठ पर कस गई।

'और वो समाचार क्या है?'

खबर सुनाने से पहले, सिपाही एक पल को झिझका।

'वो असुर हैं।'

'ऐसा नहीं लग रहा कि वो हमले के लिए आ रहे हैं,' ध्रुव ने कहा। वो नौका के शीर्ष पर खड़े हो, आते हुए असुर दल पर नजर रख रहे थे।

ध्रुव सही कह रहा था। असुर नौका की तरफ धीमी गति से बढ़ रहे थे। जबकि उनमें से प्रत्येक के पास हथियार था, लेकिन किसी ने भी अपने हथियार को लड़ने

के लिए तैयार नहीं कर रखा था। और इस दूरी से तारा, ध्रुव और मनु जो देख पा रहे थे, उससे असुर थके हुए प्रतीत हो रहे थे।

'हमारे योद्धाओं से तैयार रहने को कहो। लेकिन कोई भी तीर तब तक नहीं चलाया जाएगा, जब तक असुर सामने से हमला न करें,' तारा ने नौका के सेनाध्यक्ष को आदेश दिया।

'और रसोई में आग्रह करके बहुत सा गर्म शोरबा तैयार करवा दो। ऐसा लगता है कि हमारे अतिथियों को इसकी जरूरत पड़ेगी,' मनु ने कहा, जब सेनाध्यक्ष जाने को हुआ।

·||卐||·

इस जीर्ण अवस्था में भी प्रचंड का व्यक्तित्व प्रभावशाली लग रहा था। वो अपनी बड़ी सी टुकड़ी के आगे चल रहा था, और हालांकि वो अपने पूर्ववर्ती राजा सुरा की तरह शाही नहीं लग रहा था, लेकिन इस कमी को वो अपनी विनम्रता से पूरा करता था। अपनी सदयता से।

मनु अतिथि का स्वागत करने के लिए विशाल नौका से एक मील आगे चला आया था, स्पष्ट था कि अतिथि शांतिपूर्ण बातचीत के लिए आए थे। मनु के साथ उसका अभिन्न मित्र ध्रुव और उसके विश्वसनीय सलाहकार पंडित सोमदत्त थे। मत्स्य-प्रजाति के बीस चुनिंदा योद्धा उनके पीछे खड़े थे, जिससे किसी भी अप्रत्याशित स्थिति का सामना किया जा सके।

असुरों की बदनामी उनसे चार कदम आगे चलती थी।

और प्रचंड के अतिरिक्त, मनु की नौका का कोई भी व्यक्ति विवास्वन पुजारी के अंतिम युद्ध के विषय में नहीं जानता था।

·||卐||·

वो अब विशाल नौका के बड़े से कक्ष में, जानवरों की खाल से बने आसन पर बैठे थे। सत्यव्रत मनु जानता था कि उसे अधिक से अधिक मित्रों की आवश्यकता होगी। अब तक नौका को एक अंतिम उम्मीद के रूप में देखा जा रहा था। यह

मानवता की अंतिम नौका और अंतिम उम्मीद थी। यह स्पष्ट था कि प्रलय समग्र आर्यवर्त का नामोनिशान मिटा देगी। और विकराल लुटेरे अवसर की तलाश में थे। वो इस नौका को छीन लेना चाहते थे।

असुरों का अपने पक्ष में आना मनु की नौका के लिए फायदे का सौदा रहेगा। वह जानता था कि जल्द ही एक भयंकर युद्ध छिड़ने वाला था। इसीलिए, खुली बांहों से असुरों का स्वागत करना सूर्य पुत्र को सही लगा। धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, सत्यव्रत कूटनीति सीख रहा था।

·||卐||·

लकड़ी की दीवारों और स्तंभों की नमी प्रत्यक्ष थी। और इस विशालकाय नौका के प्रत्येक कोने की ही तरह, इस बड़े से कक्ष की छत भी कई जगहों से टपक रही थी।

प्रचंड स्तब्ध था। दूर और पास से इस विशाल नौका को देखना प्रचंड के लिए जीवन बदल देने वाला पल था। इतनी बड़ी चीज का अस्तित्व में होना ही भावनाओं को हिलाकर रख देने वाला था। और इसके भी ऊपर ये भरोसा करना कि इस विकराल जहाज को इंसान बना रहे थे, कोई दिव्य प्राणी नहीं। ये सब उसके लिए ग्राह्य कर पाना मुश्किल था।

शक्तिशाली असुरों का नया सम्राट ऊपर और नीचे, सब दिशाओं में देखते हुए उसके स्तर की सराहना कर रहा था। वो अभी भी उस विशाल नौका के काफी निचले माले पर था। लेकिन उसमें बनी हुई छोटी सी, गोल खिड़की से इतनी ठंडी हवा आ रही थी कि असुरों और उनके सेनाध्यक्ष की हड्डियां जम रही थीं। वो यह कल्पना करने में भयभीत हो रहा था कि इस जहाज के ऊपरी तल पर, बादलों के ऊपर, चिंघाड़ते आसमान के बीच जाने पर कैसा महसूस होता होगा।

·||卐||·

‘कृपया भोजन ग्रहण करें, प्रचंड। जबकि हममें से अधिकांश लोग शाकाहारी हैं, लेकिन आप और आपके साथियों के लिए हमने विशेषकर मांस पकवाया है,’ मनु ने असुर राज को भोजन पर आमंत्रित करते हुए कहा।

प्रचंड पिता और पुत्र में अद्भुत समानता देखकर हैरान था। मजबूत जबड़ा और चमकती आंखें ही उनकी पहचान नहीं थीं, बल्कि मनु बात भी उसी अधिकार भावना के साथ करता था, जैसे उसके भव्य पिता किया करते थे।

भोजन बहुत सादा था, लेकिन फिर भी इतने कम समय में काफी विविधता से तैयार किया गया था। प्रचंड और उसके आदमियों ने ताजा पके चावल और बकरे के मांस के रस में अपनी उंगलियां डुबोई। ठंडी हवाओं और जटिल पहाड़ों के बीच के उनके दुर्गम सफर के बाद, यह गर्म भोजन असुरों और उनके सेनाध्यक्ष के लिए जीवन-रक्षक था।

जैसे ही प्रचंड ताजे चावल और मांस का पहला निवाला अपने मुंह में डालने वाला था, उसका हाथ मुंह तक जाते-जाते रुक गया।

'क्या कुछ परेशानी है, मेरे मित्र? आपने स्वयं को रोक क्यों लिया?' मनु ने पूछा।

प्रचंड ने बेझिझक कहा।

'मेरे सिपाहियों का क्या, सत्यव्रत? इतने लंबे सफर के बाद वो भी भूखे और कमजोर...'

प्रचंड की बात पूरी होने से पहले ही, मनु ने कहा।

'उनकी चिंता मत कीजिए, राजन। हमारे ही साथ, उनके लिए भी गर्मागर्म मांस का रस, सब्जियां और चावल परोसे गए हैं। उनके खाना खाने के बाद, नौका के चिकित्सक उनका निरीक्षण भी कर लेंगे।'

प्रचंड ने मुस्कुराकर, आभार से अपने मुंह में गर्म रस और चावल रखे।

'आप अपने पिता की ही तरह दयालु और नेक हैं, राजा मनु। आपके बात करने की शैली भी उन्हीं की तरह है!'

पहले तो मनु ने जवाब में विनम्रता से अपना सिर हिला दिया, लेकिन अगले ही पल, उसने खाना रोककर ऊपर देखा। यहां कुछ तो गड़बड़ थी।

‘क्षमा करें, ओ असुर राजा... लेकिन आप निजी रूप से मेरे पिता से कब मिले, या कब उनसे बात की? उन्होंने तो महान स्नानागार में मिले घावों की वजह से अपने प्राण त्याग दिए थे...’

प्रचंड ने हैरानी से अपने आसपास बैठे व्यक्तियों को देखा, और फिर यकीन से जवाब दिया।

‘यह सत्य नहीं, सत्यव्रत। विवास्वन पुजारी की मृत्यु स्नानागार में नहीं हुई थी।

मैं उनकी अंतिम, सबसे बड़ी जंग का साक्षी हूं, जिसने मानवता की नियति को हमेशा के लिए बदल दिया।’

बनारस, 2017
9/11

‘1776 में बवेरियाई दार्शनिक एडम वेशौप्ट ने इल्यूमिनाती की स्थापना की। जबकि इल्यूमिनाती के शुरुआती सिद्धांतों में रूढ़िवादी रोमन कैथोलिक चर्च के बंधनों और सामाजिक क्रम का विरोध था, लेकिन जल्द ही इस रहस्यमयी संगठन ने उस समय के सबसे धनी और प्रभावशाली लोगों को अपना सदस्य बनाना शुरू कर दिया।

उस संगठन के गुप्त दस्तावेज, जो कुछ चयनित लोगों के लिए ही उपलब्ध हैं, में यह दर्ज है कि इल्यूमिनाती के सदस्य धनी परिवारों से आए हैं, और वो दुनिया में आज तक भी ऊंचे मुकाम पर ही कायम हैं, जिनमें फ्लोरेंस के ताकतवर मेडिसी और स्टोनफेलर परिवार भी शामिल हैं। इल्यूमिनाती के विकास के साथ यह स्पष्ट हो गया कि उनका लक्ष्य हर कीमत पर एक सर्वसत्तावादी सरकार स्थापित करना था। 1972 में, अमेरिकी अर्थशास्त्री प्रोफेसर एंटनी सटन ने अपनी किताब *द बेस्ट एनिमी मनी कैन बाय* में लिखा था कि इल्यूमिनातियों ने 21वीं सदी की प्रत्येक लड़ाई और नागरिक विद्रोह को नियंत्रित और संचालित किया था, जिसमें सोवियत यूनियन और अडोल्फ़ हिटलर का उदय भी शामिल था। उसने दावा किया था कि कोसोवो से लेकर अरब स्प्रिंग तक प्रत्येक विवाद को वाल स्ट्रीट के नकाब के पीछे से एक ताकतवर गुप्त सोसाइटी ने निवेश और तिकड़मबाजी से संचालित किया था। और वो संयुक्त राष्ट्र के इल्यूमिनाती के ही बैंकिंग घराने थे, जिन्होंने सोवियत यूनियन की सैन्य तकनीक को नब्बे प्रतिशत आपूर्ति के साथ साम्यवादी राज्यों में अगले तीन दशकों के लिए युद्ध-अर्थव्यवस्था की नींव रख दी, जिसे शीत युद्ध कहा गया।’

महान मठाधीश ने अब पानी के गिलास की तरफ इशारा किया। विद्युत जल्दी से उठा, और सुराही के पानी को बाबा के गिलास में डालकर, उन्हें पकड़ा दिया।

‘उनकी कार्य प्रणाली जटिल किंतु प्रभावशाली थी—देशों में सामाजिक उथल-पुथल पैदा करो, उन्हें सशस्त्र करो, सरकार और लोगों के बीच अविश्वास और तनाव उत्पन्न करो, विपक्षी दल को पैसे और हथियारों से समृद्ध करो, नागरिक विद्रोह के हालात बनाओ, फिर अपने शांति दल भेज कर, ये सुनिश्चित कर लो कि उन प्रदेशों में फिर कभी शांति का वास हो ही न—जिससे बैंकरों, दवाई कंपनियों, तेल उत्पादकों और शस्त्र व उपकरण बनाने वाली कंपनियों की चांदी ही चांदी हो जाए। और साथ मिलकर ये तेजी से बढ़ता हुआ भ्रातृसंघ दुनिया पर अपनी पकड़ मजबूत करता जा रहा था!’

‘9/11 का क्या, बाबा? न सिर्फ न्यूयॉर्क, बल्कि दुनिया को हिलाकर रख देने वाले उस जघन्य आतंकवाद के बारे में आप कुछ बता रहे थे। मेरे लिए यह यकीन कर पाना मुश्किल है कि इल्यूमिनाती की उसमें भी कोई भूमिका रही होगी।’

द्वारका शास्त्री ने हां में सिर हिलाया। वो गहरे विचारों में खोये थे। वो इस विषय की गंभीरता और उसके पड़ने वाले प्रभाव को जानते थे।

कुछ पल रुकने के बाद, उन्होंने सावधानी से अपनी बात शुरू की।

‘अमेरिकी लोग सुशिक्षित हैं और उन्होंने काफी दुनिया देखी है, शायद कम विकसित देशों के लोगों की तुलना में तो। और लोकतंत्र में अपने गहरे यकीन के बावजूद, विचित्र तरीके से उनके दिमाग पर कब्ज़ा किया गया। सदियों तक, वो लोग इल्यूमिनाती और न्यू वर्ल्ड ऑर्डर को बोगस सिद्धांत मानकर ठुकराते रहे। लेकिन वो भूल गए थे कि 1798 में उनके अपने संस्थापक पिता, जॉर्ज वाशिंगटन ने खुद अपने परवर्ती को पत्र लिखकर, इल्यूमिनाती के बढ़ते प्रभाव की चेतावनी दी थी। क्या जॉर्ज वाशिंगटन जैसा सक्षम और जिम्मेदार इंसान, बिना किसी ठोस सबूत के, ऐसे आधाररहित सिद्धांत पर विश्वास करेगा?’

‘वो ऐसा नहीं करेंगे,’ पुरोहित जी ने कहा, उनके सामने भी आज अनेकों रहस्य उद्घाटित हो रहे थे। द्वारका शास्त्री ने रहस्य के सबसे जटिल पहलू को,

भविष्यवाणी का समय आने तक, देवता को बताने के लिए सुरक्षित रखा था।

या वह था?

‘9/11 की वास्तविकता के पीछे अनेक कपटपूर्ण सिद्धांत हैं, और उन सबकी बात करने का कोई लाभ नहीं है। तो, मैं तुमसे कुछ सीधे सवाल पूछूंगा, विद्युत, और तुम अपनी समझ के हिसाब से उनका जवाब देना।’

‘ठीक है, बाबा,’ देवता ने जवाब दिया।

‘पूरी दुनिया का सबसे धनी संस्थान कौन सा है, विद्युत?’

विद्युत इस सवाल की उम्मीद नहीं कर रहा था, फिर भी उसने जवाब दिया।

‘पक्के तौर पर नहीं कह सकता, बाबा... शायद गूगल? या माइक्रोसॉफ्ट? या शायद वालमार्ट या अमेज़न?’

‘नहीं। अमेरिकी सरकार।’

‘ओह... जी, बिलकुल...’ अपना सिर खुजाते हुए विद्युत ने कहा।

‘तुम्हें क्या लगता है, अपनी जमीन से बाहर, अमेरिकी सरकार का सबसे बड़ा निवेश या व्यय क्या है?’ द्वारका शास्त्री ने पूछा।

‘उम्म... युद्ध क्षेत्रों में अपनी सेना को पैसे भेजना, जैसे इराक या अफगानिस्तान में। या नाटो जैसे संगठन के तहत वैश्विक सैन्य संरचना को स्पोंसर करना?’

‘संक्षेप में... युद्ध छेड़ना, सही?’

‘जी, बाबा।’

‘युद्ध के इन खर्चों की अनुमति कौन देता है?’

‘यूएस सीनेट, शायद...’

‘सही। अब मुझे बताओ, मेरे बच्चे... ये सारा पैसा जाता कहां है? मेरा मतलब, क्या तुम जानते हो कि अमेरिकी सिपाही के युद्ध के उपकरण कितने महंगे हैं? मैं तुम्हें बताता हूं। इसकी लागत आती है लगभग 17,000 अमेरिकी डॉलर प्रति सैनिक। लगभग बीस लाख अमेरिकी सैनिकों ने इराक और अफगानिस्तान की लड़ाइयों में हिस्सा लिया था। इसका हिसाब लगाओ, मेरे बच्चे। क्या तुम ऐसे उपकरणों के खरीद के आकार की कल्पना कर सकते हो, जब अमेरिका युद्ध में बाहर हो जाता है तो? क्या तुम जानते हो कि अमेरिकी करदाता ने लगभग 4.5 अरब डॉलर तो बस इराक में अमेरिकी सेना के बैरकों में एयर-कंडीशन लगवाने में खर्च किए थे? तो यहां युद्ध पर खर्च होने वाले अरबों नहीं, बल्कि खरबों डॉलर की बात कर रहे हैं।’

विद्युत ने विचार मग्नता से सिर हिलाया। वह सोच रहा था कि उसके परदादा को यहां देव-राक्षस मठ में बैठे हुए, अमेरिका के सैन्य खर्च की इतनी जानकारी कैसे है!

‘तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया, विद्युत। यह सारा पैसा जाता कहां है?’

‘संभवतः यह सब शस्त्र और गोला-बारूद बनाने वाले और वितरित करने वाले, साथ ही सेना का दूसरा सामान बनाने वाले लोगों को जाता होगा।’

‘हां। अरबों डॉलर हथियार बनाने वाले समूहों के बैंक खातों में जाता है। और अरबों ही निजी सुरक्षा कंपनियों जैसे ब्लैक स्काई को। और अरबों ही फाइटर जेट बनाने वाली कंपनियों से लेकर नाईट-विज़न ग्लासेस और मच्छरों के जाल तक बनाने वालों को!

अब मुझे बताओ, विद्युत—यूएस सीनेट का चुनाव कौन करता है?’

यह आसान सवाल था।

‘अमेरिका के मतदाता,’ विद्युत ने विश्वास से कंधे उचकाते हुए जवाब दिया।

द्वारका शास्त्री प्रसन्न थे कि यह चर्चा इतनी तेजी से आगे बढ़ रही थी।

‘तो तुम मानोगे कि यूएस सीनेट की अमेरिका के लोगों के सामने जवाबदेही होगी, और उसे बताना होगा कि देश का पैसा कहां खर्च हो रहा था?’

‘हां, बाबा... किसी भी दूसरे लोकतांत्रिक देश की सरकार की तरह ही।’

‘बिलकुल सही। लेकिन क्या तुमने कभी सोचा है कि वो कारण कितने भयावह, कितने मार्मिक होंगे... जिससे एक चयनित सरकार यह दिखा सके कि वो देश का पैसा क्यों ऐसे सुरक्षा ठेकेदारों की तिजोरियों में भर रही है?’

विद्युत पूरी तरह से नहीं समझ पा रहा था कि मठाधीश क्या पूछ रहे थे।

द्वारका शास्त्री ने बात आगे बढ़ाई। उनका रोमांच और उनका क्रोध दोनों ही अब उजागर हो रहे थे।

‘वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के गिरने की तस्वीरों ने अमेरिकी मनोविज्ञान पर गहरा प्रभाव छोड़ा। इसने डर, नफरत और बदले का एक गहरा, स्थायी जख्म बनाया। एक ही झटके में, इसने पूरे देश का समर्थन युद्ध के लिए और उस दुश्मन के विरुद्ध ला खड़ा किया, जिसे वास्तव में कोई जानता ही नहीं था।’

विद्युत के चेहरे पर आए अचानक स्पष्टता के भावों को देखकर बुजुर्ग ने राहत की सांस ली।

‘मैं इसे पहले क्यों नहीं समझ पाया, बाबा...? 9/11 इल्यूमिनाती द्वारा किया गया, दुनिया का सबसे बड़ा अमानवीय रक्त-पात था, जिसने इतिहास की सबसे बड़ी आर्थिक सेंधमारी को सहज बना दिया!’

आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व
नीली अग्नि की रात

वो अपने राजा की प्रतीक्षा कर रहे थे।

वो राजा जिसे अपनी पीठ में विश्वासघात का तीर धंसा हुआ महसूस हो रहा था।

वो छल जो किसी चतुर दरबारी ने नहीं किया था। न ही यह सिंहासन पर बैठने की चाह पालने वाले, क्रम में दूसरे व्यक्ति का काम था।

ये भयानक धोखा उसे एक नहीं, दो नहीं... बल्कि उन तीन लोगों ने दिया था, जिन पर वो दुनिया में सबसे अधिक भरोसा करता था।

उसके दिवंगत पिता का विश्वस्त मित्र पंडित सोमदत्त।

उसकी अपनी तारा। उसके जीवन का प्यार।

और मत्स्य।

मत्स्य ने मुझसे झूठ बोला था!

अपने अतिथियों प्रचंड और असुरों को पीछे छोड़, अपने मित्र और सलाहकारों को पीछे छोड़, मनु तारा की बांह पकड़कर, उसे नौका के एक अपेक्षाकृत निर्जन स्थल पर ले गया था। उन्हें बहुत सी बातें करनी थीं।

तारा एक पत्थर के आसन पर बैठी थी, उसने अपना चेहरा हथेलियों से छिपा रखा था और वो रो रही थी।

विशाल नौका के एक ऊंचे तल पर, कुछ दूरी पर खड़ा, मनु, क्षितिज में उद्देश्यहीनता से देख रहा था।

'मैंने झूठ बोला क्योंकि मैं तुम्हें दानव बनने से बचाना चाहती थी, मनु!' तारा ने चिल्लाकर कहा, उसकी आवाज सुबकियों में बिखर गई।

मनु ने कुछ प्रतिक्रिया नहीं की। मानो वो वहां पर उसकी उपस्थिति को भूल गया था। वो दयनीय अवस्था में था। अपने घायल और टूटे दिल वाले पिता की सुरा और उसके सक्षम साथियों के साथ, अकेले लड़ने की कल्पना मात्र ने मनु की आंखों को आंसुओं से भर दिया। उसका दिल भर आया, जब उसने कल्पना की कि कैसे रक्त-धारा ने उसके स्नेही पिता को निगला होगा। वो सोच रहा था कि मृत्योपरांत वो कैसे अपनी मां संजना का सामना करेगा।

अभी और भी बाकी था। मनु को अपनी आत्मा में जो भावुक चुभन महसूस हो रही थी, वो प्रचंड द्वारा बताए वीभत्स वर्णन से और भी बढ़ गई थी। नए असुर राजा ने मनु को महान मुनियों के अभिशाप के बारे में बताया, और सारा मां की बद्दुआ के विषय में भी।

मनु को अब मानो वो सारे अभिशाप एक-एक कर सुनाई दे रहे थे। नीली अग्नि की उस रात में वो अपने पिता के टूटने, अकेले और हतोत्साह से ढहने की कल्पना कर पा रहा था।

सबसे पहले, रक्त धारा का अभिशाप उसके मन में गूंजने लगा—

‘सप्तऋषियों ने तुम्हें अपने भाई की तरह स्नेह किया। मैंने तुम्हें अपना पुत्र ही माना। ईश्वर ने तुम्हें दिव्यता प्रदान की और तुमने भी हमेशा उसका मान रखा—जब तक कि घृणा ने तुम्हारे सारे सुकर्मों पर पानी नहीं फेर दिया, ओ देवता! और तुम्हारी पतितता तुम्हें शून्य पर ले आई! असुरों ने अनगिनत पाप किए। समग्र हड़प्पा ने पाप किए। राजाओं ने पाप किए और पुजारियों ने भी पाप किए। दानवों ने पाप किए और देवता ने भी पाप किए। मानवजाति ने ब्रह्मांड को विवश कर दिया कि अब वो इस पाप का सफाया कर दे! मैं पापों की इस नगरी को हमेशा के लिए त्यागकर, वापस मां पृथ्वी की पावन कोख में समा जाऊंगी। सरस्वती, ज्ञान की नदी अब से सिर्फ कहानियों का हिस्सा बनकर रह जाएगी। लेकिन उससे पहले मैं अपने अपराधियों को उनके किए की सजा देकर जाऊंगी।

ध्यान रहे... प्रलय... आ रही है...!

विकराल प्रलय... अवश्यंभावी है...!’

सत्यव्रत मनु न चाहते हुए भी अपने मन में अगले अभिशाप की कल्पना करने लगा। उसे याद था कि अब तक प्रचंड ने उसे क्या-क्या बताया था। उसे याद था कि किस तरह रक्त धारा महज एक अभिशाप तक नहीं रुकी थी। उसकी शक्तिशाली आवाज अब मनु की कल्पना में गूंज रही थी—

‘प्रत्येक व्यक्ति के दिल में स्थित मानवता में उसे ईश्वर बनाने की क्षमता होती है। लेकिन फिर भी, अध्यात्म से निर्वाण की राह तलाशने के बजाय, मानवजाति धोखे, वध, लूटपाट और बदले को अपनाती है। ये वो नियति है जिसका चुनाव तुम्हारी प्रजाति ने स्वयं किया है! तो यही सही! ईश्वर कभी तुम्हें तुम्हारी नफरत भरी नियति से मुक्त नहीं करेंगे। हिंसा और रक्त-संघर्ष का सांप कभी भी मानवजाति को अपनी पकड़ से निकलने नहीं देगा, जो उसी ईश्वर के नाम पर ही एक-दूसरे का वध करते रहेंगे, जिसे उन्होंने आज धोखा दिया है! कभी भी विध्वंस और मार-

काट तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगी। यह मेरा अभिशाप है, ओ पतित देवता! मानवजाति अपने अंत तक असीमित वेदनाओं को झेलेगी!

मैं तुम्हें अभिशाप देती हूं! मैं तुम सबको अभिशाप देती हूं!'

तारा अब मनु को लाल, अश्रुपूरित नेत्रों से देख रही थी। वह जानती थी कि वह सिर्फ नाराज ही नहीं है। वो कभी इस तरह शांत नहीं हुआ था। उसने कभी उससे बात करनी बंद नहीं की थी। उन दुर्लभ पलों में भी नहीं, जब उसने क्रोध को स्वयं पर हावी होने दिया था।

अब तक, सत्यव्रत मनु उस नीली अग्नि की रात में पहुंच चुका था, उसी दृश्य में जहां उसके पिता और राक्षस-राजा के बीच भीषण युद्ध छिड़ा था। वो भयानक रात उसे अपनी आंखों के सम्मुख घटती प्रतीत हो रही थी...

सरस्वती के पांचों पुत्रों की तरह, झुलसते हुए छठे मुनि ने, आग के नीले अंगारों के बीच से कहा।

'तुमने महज अपने शब्दों से इन कसाइयों को रोकने का सतही प्रयास किया, ओ देवता! और वो भी तब जब तुम्हारे पास ईश्वर का दिया, ब्रह्मांड का सबसे शक्तिशाली हथियार है! तब जब तुम्हारे पास विशाल रत्न-मारू है! तो ये ही सही।

जिस तरह से, इस अभागी रात में, तुमने दिव्य मुनियों को एक-एक कर जलता देखा, नियति भी तुम्हारे वंश को ऐसी ही हिंसा में खत्म होते देखेगी। पुत्र दर पुत्र, पीढ़ी दर पीढ़ी। मैं तुम्हें और तुम्हारे समग्र वंश को अभिशाप देता हूं, ओ पतित देवता...

तुम्हारे वंश का प्रत्येक पुत्र उसी हिंसक मौत मरेगा, जो आज भयानक रात में तुमने देखी है!

मैं तुम्हें अभिशाप देता हूं! और तुम्हारे समग्र वंश को!

यह अभिशाप समय के अंत तक रहेगा!'

इससे पहले कि छठा सप्तऋषि राख में भस्म हो जाता, उसकी आवाज़ एक आखरी बार सुनाई दी... इस बार उसमें क्रोध से अधिक दया थी।

‘तुम सच में अंधे हो गए हो, विवास्वन। एक श्रेष्ठ मनुष्य, जो एक समय में आदमियों की आत्मा और समय की धुरी के अंदर झांक सकता था, आज उसे अपने पुत्र के विषय में ही ज्ञात नहीं है।

ओ मलिन सूर्य, तुम्हारा पुत्र जीवित है! और वो ही भीषण बाढ़ के बाद, सुबह की पहली किरण देखेगा।

मनु पुजारी... समस्त सृष्टि का संरक्षक होगा!

और सत्यव्रत मनु के नाम से अमर हो जाएगा... परम सत्य का संरक्षक!

हमें तुम पर दया आ रही है, बदकिस्मत पिता, पतित आधा- भगवान!’

मनु को तारा की आवाज़ कहीं दूर से आती हुई प्रतीत हुई, लेकिन अपनी बांह पर कसी उसकी उंगलियों से अहसास हुआ कि वो तो उसके पास ही खड़ी, क्षमा की भीख मांग रही थी। वो किसी दूसरे समय में चला गया था। पछतावे, दुख और डर के सम्मोहन में। एक-एक करके सारे अभिशाप सत्य हो रहे थे। आर्यवर्त तबसे रक्त के आक्रोश में झुलस रहा था। अगर इन भयानक भविष्यवाणियों का एक-एक शब्द सच हुआ, तो अनर्थ हो जाएगा। उसका अपना वंश, और समस्त मानवजाति—रक्त धारा के अभिशाप के बेरहम पंजों तले कुचलकर रह जाएगी।

धीरे-धीरे वर्तमान में लौटने पर उसे अपने चेहरे पर ठंडी, नमी भरी हवा महसूस हुई, उसे अहसास हुआ कि तारा, बार-बार, प्यार से उसके चेहरे को चूम रही थी। वो उसके जबड़े और गर्दन को प्यार से सहला रही थी। वो उसके कानों में इतने प्यार से फुसफुसा रही थी कि उस पत्थरदिल भगवान का भी दिल पसीज जाए, जिसने मानवजाति को इस प्रलय की सजा सुनाई थी।

‘तुम मेरे हो, मनु... हमेशा के लिए! मैं तुम्हें जाने नहीं दे सकती थी। बदले की आग तुम्हें और हम सबको बर्बाद कर देती। मत्स्य जानते थे कि यह सच था। उन्होंने जो किया, मैंने भी वही किया... उसी आशा की जीवित रखने के लिए किया, जिसके सहारे आज ये सैकड़ों हजारों लोग जी रहे हैं, मनु।

मुझे यह कहने के लिए क्षमा करना, ओ ताकतवर सत्यव्रत... लेकिन मैंने देखा था कि वो महान सूर्य बन गए थे। मैं रक्त वर्षा में वहां थी। मैं तुम्हें उसी रास्ते पर नहीं जाने दे सकती थी।

मैं तुम्हें राक्षस नहीं बनने दे सकती थी।'

बनारस, 2017
मौत की सर्द आंखें

असलम बाइकर दूर से, कांच की एक बड़ी सी खिड़की से देख रहा था। लगभग आधी रात बीत चुकी थी।

बनारस के शानदार होटल का पूरा जिम एरिया मास्केरा बिआंका के लिए रिजर्व किया गया था।

होटल के हेल्थ-क्लब का प्रवेश द्वार सबके लिए बंद था और उस पर यूरोपियन माफिया के सशस्त्र आदमी पहरा दे रहे थे।

वाइट मास्क अपने ठंडे दिमाग का तारतम्य अपने अनश्वर शरीर और अपनी काली आत्मा के साथ बिठाकर, काम करना पसंद करता था।

रात के इस प्रहर में ही विद्युत को अपने लिए जरूरी वर्कआउट का समय मिल पाया था। अपने बाबा और पुरोहित जी के साथ एक लंबा दिन बिताने के बाद, एक के बाद एक दिल दहला देने वाली जानकारी सुनने के बाद, देवता के लिए कसरत के माध्यम से, अपने शरीर की नसों को तनाव मुक्त करना जरूरी था।

वह अपने क्वार्टर की छत पर अकेले वर्कआउट किया करता था, जिसमें कभी-कभी सोनू मदद देने आ जाता था। उसका समर्पित अनुयायी हर काम में उसकी मदद करता था, जैसे अपने देवता की पानी की बोतल उठाने से लेकर, कोई और सहारा न होने पर भारी वजन तक उठाने में।

चांद की धवल रौशनी में, उसके ही पसीने तले विद्युत का शानदार शरीर चमक रहा था।

·||卐||·

एक आदमी के इतना वजन उठाने का दृश्य असलम के लिए अकल्पनीय था। हालांकि अपने हिंसक कैरियर के चलते वो खुद नियमित रूप से जिम जाता था, लेकिन फिर भी उसने ऐसा कभी नहीं देखा था।

मास्केरा एक शानदार बेंच पर लेटा हुआ था, और उसने काले, इजरायली क्राव मागा लोअर के अलावा और कुछ नहीं पहन रखा था। उसका धड़ ऐसा लग रहा था मानो ठोस स्टील का बना हो। अपने सीने के ऊपर स्टील रॉड पकड़कर वो उतने वजन को पम्पित कर रहा था, जिसे सामान्य रूप से उठाने के लिए किसी क्रेन की आवश्यकता होगी। इस अमानवीय तनाव को सहने की वजह से उसके मस्तिष्क में रक्त जम आया था, और उसकी नसें फटने को तैयार मालूम पड़ रही थीं। लेकिन वाइट मास्क डटा रहा।

किसी कारण से असलम बाइकर को उबकाई सी आती प्रतीत हुई। वो अजीब तरह से घिनौना दृश्य था। यह सब असामान्य था, अरुचिकर। जिसकी शुरुआत एक सघन व्यायाम से हुई थी, वो अब महामानवीय, अप्राकृतिक बल का प्रदर्शन मात्र रह गया था।

·||卐||·

हर दिन सोनू अपने देवता के किसी ख़ास गुण से प्रभावित हो जाता।

सोनू भी शारीरिक क्षमता और व्यायाम से अजनबी नहीं था। वो स्वयं एक स्वस्थ युवा था, जो नियमित रूप से, प्रत्येक सुबह मठ की व्यायामशाला में शारीरिक अभ्यास किया करता था। वो बनारस के अखाड़ों में भी अक्सर जाता था, जहां वो बैल के सामान तगड़े पहलवानों को देखा करता था।

लेकिन उसके विद्युत दादा में कुछ तो अलग था। कुछ वैभवशाली, कुछ दिव्य।

और सोनू अकेला ही नहीं था जो विद्युत की बलिष्ठ मांसपेशियां देख रहा था। किसी और की भी नजर उन पर टिकी थी।

यहां से कुछ दूरी पर, अपनी छत से, नैना उस सुनहरे मनुष्य से अपनी आंखें नहीं हटा पा रही थी। उसे उसकी मर्दाना महक याद आ रही थी। उसे अचानक से उसके नरम होंठ, एक बार फिर से अपने होंठों पर महसूस हुए।

रात के इस समय में, इस ख़ास पल में—उसे विद्युत की जरूरत थी। उसे अपना हीरो चाहिए था, अपना विद्युत!

जबकि वाइट मास्क को डर ने ढक रखा था, लेकिन यहां प्यार देवता का कंबल बना हुआ था।

·||卐||·

ऐसा लग रहा था मानो असलम बाइकर के पैर अपनी जगह पर जम गए थे। वो हिल नहीं पा रहा था। खिड़की के पीछे चलते पागलपन के बावजूद, वह अपनी जगह से खड़ा उसे घूर रहा था, कुछ था जो उसे वहां से हटने नहीं दे रहा था। वो उसे आगे आने वाली चीजें देखने को मजबूर कर रहा था।

मास्केरा अब जिम के कोने में लटके पंचिंग बैग पर जुटा था। उसके हाथों पर पट्टी बंधी थी और उसने भारी बैग पर धीरे-धीरे, लेकिन अभ्यस्त गति से वार करना शुरू किया। अब तक वह पसीने में तर हो चुका था और उसके रेशमी भूरे बाल पीछे को पड़े थे।

और फिर उसने अपनी गति बढ़ा दी। और अब उसके मुक्के, चमड़े के उस भारी लाल बैग पर यूं पड़ रहे थे, मानो मशीनगन से धड़ाधड़ गोलियां बरस रही हों। युवा, हरी-आंखों वाला, पेचकस से मारने वाला वो मिलान का कातिल, अब दूसरी चीजों के साथ-साथ असाधारण रूप से दक्ष योद्धा भी बन गया था। वो इतनी तेजी से मुक्के मार रहा था कि असलम को चक्कर आने लगे थे।

कुछ ही पलों में, मुंबई के उस गैंगस्टर ने एक और अजीब दृश्य देखा। यद्यपि मास्केरा की मुट्ठियों पर मोटी प्लास्टिक की टेप लगी थी, लेकिन फिर भी उसके पोर उसके अपने रक्त से गुलाबी हो गए थे। कुछ पल गुजरने पर, वाइट मास्क के

हाथ अपने ही रक्त से लाल हो गए थे, लेकिन फिर भी वो चमड़े के बैग पर वार करता रहा—मानो उसे दर्द का कोई अहसास ही नहीं हो रहा था।

मानो वो कोई इंसान ही नहीं था।

विद्युत अब अपने प्रशिक्षण के दूसरे दौर में था।

कुछ दूरी पर खड़ी नैना, और पास में खड़ा सोनू, दोनों ही विद्युत के बल पर भरोसा नहीं कर पा रहे थे, जब वो अष्टांग योग कर रहा था। कड़ा श्रम और वजन उठाने के बाद, अब देवता धीरे-धीरे अपने अभ्यास के समापन की तरफ बढ़ने लगा।

लेकिन इतना ही काफी नहीं था। विद्युत केवल वामन ऋषि द्वारा प्राचीन पांडुलिपि *योग कुरुन्था* में दर्ज अष्टांग योग ही नहीं कर रहा था। नैना समझ सकती थी कि इसमें वो बड़ी निपुणता से मन और तन को पोषण देने वाली चीनी तकनीक, ची-गोंग का भी समावेश कर रहा था।

वो अपने हाथों को धीरे-धीरे एक वृताकार में यूं घुमा रहा था, मानो मंच पर कोई निर्देशित प्रस्तुति दे रहा हो। उसका अदम्य शारीरिक बल उसकी योगिक मुद्राओं को समान रूप से समर्थित कर रहा था।

कुछ देर बाद, विद्युत ध्यानावस्था में बैठ गया। अभ्यास के बाद उसकी तेज चलती सांस अब शांत, एक लय से आती-जाती सांसों में बदल गई थी। गंगा से आती काशी की ठंडी हवा अब विद्युत के लंबे, रेशमी बालों को धीरे-धीरे सहला रही थी।

उसके भाव धीरे-धीरे एक सक्षम युवा मुनि के भावों में बदलते जा रहे थे। उसके ध्यानस्थ चेहरे पर एक मंद मुस्कान थी।

अपने चाहने वालों के लिए वो हर कोण से स्वयं एक भगवान था।

मास्केरा बिआंका अब भव्य होटल के आलीशान जिम के केंद्र में बैठा था। वहां खूब प्रकाश था।

जमीन पर बैठा वह किसी तरह की साधना में रत था। बुराई के किसी रूप में। साधना रत किसी मनुष्य से अलग, असलम बाइकर उसके चेहरे पर भयानक भाव देख पा रहा था। ध्यान की इस अवस्था ने अचानक बाइकर को जापानी समुराई मेडिटेशन की याद दिला दी। लेकिन यह समुराई अभ्यास की तरह पवित्र नहीं थी। यह कुछ अलग थी। शायद, निन्जा? मुंबई डॉन ने सोचा। अब वो मास्केरा के चेहरे के एक ही तरफ के भाव देख पा रहा था।

वाइट मास्क कुछ मंत्रोच्चार कर रहा था, जो इतनी दूर से मुंबई का भाई नहीं सुन पा रहा था, लेकिन फिर भी अब उसने वहां से हटने का निर्णय लिया। वो काफी देख चुका था। वो आभार जता रहा था कि मास्केरा ने उसे यूं अपनी निजता में झांकते हुए देख नहीं लिया था।

जैसे ही वो जाने को हुआ, असलम का दिल मानो जम गया। उसके चेहरे के साइड पोज से ही उसे पता चला कि अचानक वाइट मास्क ने अपने आंखें खोल दी थीं।

इससे पहले कि असलम जरा भी हिल पाता, मास्क उसे देखने के लिए मुड़ा।

जो उसने देखा, उससे असलम कसम खाकर बता सकता था कि वो किसी इंसान की आंखें नहीं थीं।

मास्क की हरी आंखें पूरी तरह से गायब हो चुकी थीं। वो खुली आंखें जो खिड़की में से असलम को घूर रही थीं—वो कफन की तरह सफेद थीं।

मौत की सर्द आंखें।

वाइट मास्क हर कोण से शैतान प्रतीत हो रहा था।

आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व
पुजारी वंश

‘सत्यव्रत मेरे पास आपके लिए, आपके पिता का दिया एक संदेश है,’ प्रचंड ने कहा।

असुर राजा के आग्रह पर, मनु अब प्रचंड को विशाल नौका के बारे में बताते हुए, नौका की सैर करा रहा था।

उसने तारा को माफ़ कर दिया था। वो समझता था कि उसने वो क्यों किया था। वो उससे बहुत प्रेम करता था और अधिक समय तक उससे क्रोधित नहीं रह सकता था। उसने सोमदत्त को भी उससे उसके पिता का सत्य छिपाने के लिए क्षमा कर दिया था। उस पर सोमदत्त के बहुत ऋण थे। उसे मुख्य अभियंता के चेहरे में अपने पिता का चेहरा नजर आता था।

लेकिन उसने मत्स्य को क्षमा नहीं किया था। वह जानता था कि आखिरकार तारा और सोमदत्त नश्वर प्राणी थे। वे मत्स्य के कहे शब्दों की अवहेलना नहीं कर सकते थे। वो उसकी अनुमति से बाहर नहीं जा सकते थे। लेकिन मत्स्य ईश्वर था। वो चीजों को बदल सकता था।

अगर मत्स्य चाहता, तो वो अपने पिता से अंतिम समय में मिल पाता। वो कम से कम उनसे अंतिम विदा तो ले पाता।

मत्स्य के प्रति सत्यव्रत मनु की कड़वाहट और कुछ नहीं बल्कि उस भव्य मत्स्य-पुरुष के प्रति उसका असीमित प्रेम ही था। यह एक बच्चे की खीझ थी, जिसका व्यापारी-पिता महीनों के लिए समुद्री सफर पर गया हो।

इस मामले में केवल, मत्स्य ही समुद्र था।

·||卐||·

‘क्या संदेश है, ओ ताकतवर प्रचंड... मेरे पिता ने क्या कहा था?’ मनु ने उत्सुकता से पूछा। अपने पिता का कहा कोई भी शब्द इस युवा पुजारी-राजा के लिए बहुमूल्य उपहार था।

प्रचंड रुका और मनु की तरफ मुड़ा।

‘आपके पिता के लिए अंतिम पलों में बस यही सबसे बड़ी राहत थी कि आप जीवित रहोगे और प्रलय के बाद उगता सूरज देख पाओगे। अंतिम सप्तऋषि ने उन्हें भरोसा दिलाया था। उन्होंने यह भी घोषणा की थी कि प्रलय के अंतिम पलों में आप ही मानव जाति का मसीहा बनकर उभरोगे।’

मनु ने आह भरकर अपना सिर हिलाया। वह नहीं जानता की क्या कहे, और किस पर भरोसा करे। अभी के लिए, प्रलय अपराजित मालूम पड़ रही थी।

‘देखते हैं क्या होगा, ओ असुर राज। कृपया मेरे पिता का संदेश सुनाइए,’ मनु ने जोर दिया।

‘सूर्य को भरोसा था कि नौका पर दसियों हजार मनुष्यों के साथ, आप वनस्पति और पशुओं की भी अनेकों प्रजातियों को ले जाएंगे। उन्हें कोई शंका नहीं थी कि आप आवश्यक बूटियों, सूत, बीज और धातुओं को भी संरक्षित करेंगे। लेकिन उन्होंने विशेष रूप से मुझे ये संदेश देने को कहा कि आप मानवता के नए सूर्योदय तक हमारे संसार का ज्ञान और पांडित्य लेकर जाएं।’

सत्यव्रत मनु अपने पिता के संदेश को स्पष्ट तरीके से नहीं समझ पाया। लेकिन फिर भी वो किसी भी कीमत पर अपने पिता की अंतिम इच्छा को पूरा करना चाहता था। उनका अंतिम आदेश।

‘मैं जानता हूं कि आने वाले समय में हमारा प्राचीन ज्ञान और पांडित्य कितनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे, ओ असुर राज। इसीलिए हमारे सामान में जरूरी किताबें, मानचित्र और ग्रंथ हैं। हम अपने साथ अनुभवी विद्वानों, रसायनशास्त्रियों,

चिकित्सकों और अभियंताओं को भी ले जा रहे हैं। सप्तऋषि भी हमारे साथ हैं और...'

'आपके पिता का यह आशय नहीं था, मनु,' प्रचंड ने अपना हाथ हवा में उठाकर मनु की बात को काटा।

एक पल ठहरने के बाद, उसने अपनी बात शुरू की। 'जो ग्रंथ आप अपने साथ ले जा रहे हैं, क्या वो आने वाली पीढ़ियों को प्रलय की कहानी बता पाएंगे?'

'नहीं, वो ऐसा नहीं कर पाएंगे,' मनु ने सोचते हुए जवाब दिया।

'क्या वो मत्स्य की कहानी बयां कर पाएंगे?'

'नहीं...'

'अन्यों की बात छोड़ो। जो पुस्तकें आप ले जा रहे हैं क्या वो सत्यव्रत मनु, सतरूपा और विशाल नौका की कहानी सुना पाएंगे?'

मनु खामोश था।

प्रचंड ने अब वो सुनाया जो विवास्वन पुजारी ने अपने पुत्र मनु को बताने के लिए कहा था... शब्द प्रति शब्द।

'तुम नए ग्रंथ लिखोगे, ओ सत्यव्रत।
प्राचीनता के विषय में लिखना।
वर्तमान के विषय में लिखना।
अच्छाई के विषय में लिखना और बुराई के विषय में भी।
नेकी के विषय में लिखना और बदी के बारे में भी।
ईश्वर की कहानी लिखना और दानव की कथा भी कहना।
विष्णु के बारे में लिखना और पशुपति के बारे में भी।
सूर्य के विषय में लिखना और सरस्वती के विषय में भी।

जो तुम आज लिखोगे वो अनश्वर रहेगा, ओ सत्यव्रत।
जो तुम लिखोगे वो पवित्र शास्त्र बन जाएगा...
...जिसकी आराधना और अध्ययन मानवजाति समय के अंत तक करेगी!'

मनु की आंखों में आंसू भर आए थे। उसे अपने पिता की आवाज इन शब्दों में सुनाई दे रही थी। हाथ जोड़कर उसने प्रचंड के सम्मुख सिर झुकाया, जो उसे इस समय अपने प्रिय पिता का ही रूप प्रतीत हो रहा था।

'अगर आपको लगता है कि मैं इस महत्वपूर्ण कार्य के योग्य हूं, अगर आपको लगता है कि मैं पवित्र शास्त्रों को रच सकता हूं, तो मैं वही करूंगा जो आपका आदेश है, पिताजी...' उसने कहा।

'मैं शास्त्रों की रचना करूंगा। *योग-शास्त्र, न्याय-शास्त्र, धर्म-शास्त्र, वास्तु-शास्त्र, मोक्ष-शास्त्र, रसायन-शास्त्र, काव्य-शास्त्र और अनेकों अन्य* । मेरे वंशज भी पीढ़ी-दर-पीढ़ी इन ग्रंथों में नया जोड़ते चलेंगे।

और जो वादा आज मैंने आपसे किया है, कोई भी उसे न भुलाए, इसलिए आज से हमारा वंश पुजारी नाम से नहीं, बल्कि शास्त्री नाम से जाना जाएगा!

मेरे बच्चे और उनके बच्चे हमेशा शास्त्रों के रचयिता के रूप में जाने जाएंगे।

उन्हें हमेशा शास्त्री पुकारा जाएगा।'

बनारस, 2017
नैना व विद्युत

रात के लगभग 2 बज गए थे।

विद्युत शारीरिक और मानसिक रूप से थक गया था।

लेकिन, नींद उसकी आंखों से कोसों दूर थी।

उसे आज दिन में इल्यूमिनाती, न्यू वर्ल्ड ऑर्डर और पृथ्वी पर उनकी घिनौनी पकड़ के बारे में काफी कुछ पता चला था।

लेकिन वो अभी भी नहीं जानता था कि किसने उसके पिता को मारा था। उन्होंने उसके पिता को क्यों मारा था।

व्यायाम के बाद, देर तक स्नान करके और हल्का-फुल्का खाना खाकर, विद्युत सोने के लिए तैयार था।

वो अपने बिस्तर पर करवटें बदल रहा था, जब उसे दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक सुनाई दी।

विद्युत उठा और लोहे का पुराना, भारी दरवाजा खोला।

दरवाजे पर नैना थी।

उनके बीच जो भी हुआ था, सारे सही और गलत के बावजूद भी, विद्युत और नैना स्वयं को एक-दूसरे के दिल और दिमाग से नहीं निकाल पाए थे। नैना जानती थी कि विद्युत किसी और का था। लेकिन उसका धड़कता दिल उसके हर तर्क को भुलाकर, उसे मदहोश कर देता था। विद्युत जानता था कि वो दामिनी का था। लेकिन नैना में कुछ तो था कि वो सारे तर्क, सारा औचित्य... यहां तक कि दिव्यता भी भूल जाता था।

और फिर भी, मानवीय कमजोरी के एक या दो पलों के बाद, वो दामिनी को कभी नहीं भुला पाया था।

नैना ने ढीली, काली रंग की कमीज पहन रखी थी, जिसके ऊपरी बटन सामान्य से कुछ अधिक खुले थे। उसकी आंखों में चमक थी और त्वचा मोतियों के जैसे निखर रही थी। विद्युत को बिना उपरी वस्त्रों के देख उसे ख़ुशी हुई। उसने आगे बढ़कर अपने होंठ उसके सीने से टिका दिए, और कुछ देर के लिए उन्हें वैसे ही रहने दिया। फिर उसने विद्युत के कंधे, छाती और गले पर चूमना शुरू कर दिया।

विद्युत भी उसे बांहों में भरकर, बिस्तर तक ले जाने के लिए उतावला था। वो अत्यंत सम्मोहक थी। एक सुंदर, प्यार में डूबी महिला को कोई देवता ही ठुकरा सकता था।

विद्युत देवता था।

कुछ पल तक ऐसे ही खड़े रहने के बाद, विद्युत धीरे से पीछे हटा।

नैना ने शायद ध्यान नहीं दिया था। वो आगे बढ़ी और पीछे दरवाजा बंद कर, अपनी बांहें देवता के गले में डाल दीं।

‘मुझे प्यार करो, विद्युत...’ वो उसके कान में फुसफुसाई, और उसने धीरे से उसके कान की त्वचा पर काट लिया।

विद्युत ने नरमाई से उसकी कलाई पकड़कर, खुद को उसकी पकड़ से छुड़ाया। इससे पहले की वो कोई प्रतिक्रिया दे पाती, विद्युत ने उसकी आंखों में देखते हुए उसे स्नेह से गले लगा लिया।

इस रात देवता नैना को बस यही दे सकता था। नैना को और अधिक चाहिए था। विद्युत को भी।

लेकिन विद्युत ने 3,700 साल पहले दामिनी से वादा किया था।

विवास्वन ने संजना से वादा किया था।

उन्हें एक साथ में दूसरी दुनिया में जाना था।

·||卐||·

नैना कोई साधारण महिला नहीं थी।

वो जानती थी कि मुश्किलों का सामना कैसे करना है। वो दुश्मन का डटकर मुकाबला कर सकती थी। बचपन में ही हमेशा के लिए अपने माता-पिता को खो देने पर वो जुदाई की पीड़ा समझती थी। वो जानती थी कि नफरत से कैसे निबटते हुए, दानव का सामना करना था।

लेकिन वो अस्वीकार का सामना करना नहीं जानती थी।

विद्युत के अस्वीकार का नहीं।

वो कुर्सी पर सिकुड़कर बैठ गई, जिस आदमी को वो वास्तव में चाहती थी, उसके द्वारा ठुकराए जाने पर शर्मिंदा और टूटा हुआ महसूस कर रही थी।

'मुझे चलना चाहिए!' उसने अपनी आकर्षक उंगलियों से, अपने गालों पर आए आंसू पोंछते हुए कहा।

'मत जाओ, नैना...' विद्युत ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा। 'हमें बात करनी होगी, है न?'

नैना ने हां में सिर हिलाया। वो जानती थी उनके बीच बहुत कुछ था, जो उन्हें एक-दूसरे से जोड़े रखे हुए था। ऐसा जिसे बिना कहे और बिना सुने नहीं छोड़ा जा सकता था।

‘तुम जानती हो न, नैना कि अगर दामिनी मेरे जीवन का प्यार नहीं होती तो मैं किसी भी कीमत पर तुमसे अलग नहीं होता? तुम ये जानती हो न?’

‘तुम मुझसे क्या चाहते हो, विद्युत?’ नैना ने विरोध जताया। वो दूसरे नंबर पर रहने के लिए तैयार नहीं थी। यह उसके लिए कोई प्रतियोगिता नहीं थी।

विद्युत नैना के पैरों के पास बैठ गया, और प्यार से उसका हाथ सहलाने लगा।

‘मैं चाहता हूं कि तुम हमेशा मेरी सबसे अच्छी दोस्त बनकर रहो, नैना। बाला के जाने से मैं पूरी तरह अकेला हो गया हूं। मुझे एक ऐसा दोस्त चाहिए जिस पर मैं भरोसा कर सकूं। ऐसा दोस्त जिससे मैं प्यार...’

नैना मुस्कुराई, आंसू अभी भी उसके आकर्षक चेहरे पर बह रहे थे।

‘तुम जानते हो, विद्युत... दामिनी सच में बहुत खुशकिस्मत है। हर किसी को कोई ऐसा नहीं मिलता, जो उन्हें इतने जुनून, इतनी जिद से चाहे...’

वो सीधे उसकी आंखों में देख रही थी, उसके हर आंसू के साथ दर्द बह रहा था।

विद्युत ने आगे झुककर उसके गालों को चूम लिया।

‘नहीं, खुशकिस्मत तो मैं हूं। हर किसी पर कोई इतनी सुंदर लड़की नहीं मर मिटती!’

नैना ने अपनी आंखें बंद कर लीं, यकीनन वो इतने अधिक अकेलेपन और भावनात्मक पीड़ा से गुजर रही थी, जो उसके बर्दाश्त से बाहर था।

फिर उसने अपनी आंखें खोलीं, उनमें वही पहले वाली चमक थी, और फिर विरोध सा जताते हुए बोली।

‘तुम पर मर मिटी? तुम्हें ऐसा क्यों लगने लगा, श्रीमान आधे इंसान, आधे...’

वो अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाई। नैना विद्युत की बांहों में गिरकर तब तक रोती रही, जब तक उसके आंसू सूख नहीं गए।

आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व
गुप्तचर

प्रचंड और उसके मुख्य सेनापति स्तब्ध थे।

उन्हें चलते हुए अब तक सात घंटे बीत गए थे, और अभी तक उन्होंने नौका के विस्तार का एक छोटा-सा टुकड़ा भी पार नहीं किया था। विशाल जहाज देखने में बेतरतीब, चरमराता हुआ और विनाशकारी प्रलय की एक छोटी सी लहर से भी टूट जाने वाला मालूम पड़ रहा था।

लेकिन फिर भी उसमें कुछ तो ऐसा था जो उसे भव्य, अजय और वो इकलौती नौका बना रहा था, जो प्रलय में समस्त पृथ्वी के निगल जाने के बाद भी बचे रहने वाली थी।

‘सबसे नीचे के विभाग या तली में हम भारी धातु संगृहित करेंगे, जो सामान्य रूप से अंधेरे और नमी से कम प्रभावित हो। पानी के नीचे रहने वाले इस विभाग में भारी सामान जैसे तांबे के हथियार और बड़े सांप और रेंगने वाले जीव रखे जाएंगे! मछली और समुद्री जीवों के संरक्षण के लिए भी इसी विभाग में जगह बनाई गई है।’

मनु नौका के विभिन्न विभागों के बारे में सामान्य रूप से बता रहा था। लेकिन श्रोता, जो इस अभियांतिकी से अनभिज्ञ थे, उनके लिए यह किसी हैरतअंगेज कहानी की तरह था! तांबे के हथियारों के साथ सरीसर्प! नाव पर समुद्री जीव?

अब तक सत्यव्रत को बोलते हुए कई घंटे बीत चुके थे। उसने अब अपने मित्र ध्रुव को इशारा किया कि वो उन्हें नौका के बारे में बताए।

‘विशाल नौका के सामने वाली कब्जेदार पतवार दस हजार बलूत से बनी है। नौका की प्रत्येक पतवार पर पंद्रह सौ हत्थे और खींचने की रस्सियां लगी हैं, जिससे एक ही समय पर दोनों तरफ से इतने आदमी इन्हें खींच सकें। हम इसका परीक्षण तो नहीं कर पाएं हैं, लेकिन सारे आंकलन से कह सकते हैं कि पतवार के नीचे के पानी के भार को, इतनी संख्या के माध्यम से संभाला जा सकता है।’

ध्रुव को अपने निर्माण पर गर्व था।

प्रचंड जैसा साहसी मनुष्य भी भयभीत हो गया था।

रस्सी की सीढ़ी, जिसका उपयोग तारा, सोमदत्त और उनके दूसरे सिपाही नाव के शीर्ष पर चढ़ने-उतरने के लिए कर रहे थे, वो असुर-राज और उसके आदमियों को मौत के किसी जाल से कम नहीं लग रही थी। एक गलती का परिणाम सिर्फ मौत ही नहीं था। इसका मतलब था गहरी खाई में इतना नीचे गिरना कि कहीं तली में टिकने से पहले ही प्राण पखेरू का उड़ जाना। काले बादल और तेज वर्षा इस उतराई और चढ़ाई को और जटिल बना रही थी। इससे नीचे उतरने का मतलब था कि कोहरे और बर्फ जमे पाताल में उतरना।

और फिर प्रचंड ने मनु और ध्रुव को देखा। वो तो नाव की इस असीमित ऊंचाई पर चढ़ने और उतरने के लिए केवल रस्सियों का प्रयोग कर रहे थे। वो दोनों दो भिन्न रस्सियों को पकड़ते। अपने पैरों का इस्तेमाल करते हुए, स्वयं को हवा में धकेलते, और दक्ष पर्वतारोहियों की तरह ही, सधे हुए प्रयास से, फिसल जाते। पलभर में ही, वो नीचे कोहरे में लुप्त हो गए थे।

प्रचंड और उसके आदमियों के पास अब रस्सी की सीढ़ियों से उतरने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं था, जो मनु और ध्रुव के साधन की तुलना में तो बहुत भव्य लग रही थीं।

नाव के निचले तले पर पहुंचने पर, उन्होंने राहत की सांस ली कि उनके सारे आदमी सही-सलामत उतर गए थे, और असुरों ने उस नाव का हैरतअंगेज सफर शुरू किया।

‘नाव के मुख्य तल के नीचे के सत्रह तलों में लोगों के रहने के लिए कक्ष बनाए गए हैं। हर तल पर बारह सौ कक्ष हैं। एक कक्ष में चार आदमियों के ठहरने से, प्रत्येक के लिए इतनी जगह होगी कि वो अपने पैर सीधे करके सो सकें। महिलाओं और बच्चों को उनमें दो पारियों में सोने को मिलेगा। मजबूत आदमी तीन-तीन की पारी में कक्ष का इस्तेमाल करेंगे, जिससे प्रत्येक आदमी को दिन में कम से कम आठ घंटे का आराम तो मिले। इस तरह से हम तक़रीबन दो सौ हजार मनुष्यों का प्रबंध कर पाएंगे। इसीलिए कक्ष एक डिब्बे जैसा ही है, जिसमें एक छोटी खिड़की की व्यवस्था है। समस्या ये है कि हम नहीं जानते कि विनाशकारी प्रलय कब ढलान पर होगी। इसमें महीनों भी लग सकते हैं... और साल भी...’ ध्रुव ने बताया।

प्रचंड ध्यान से सुन रहा था। वो सोच रहा था कि क्या राजा को अलग से कक्ष उपलब्ध कराया जाएगा। उसने तुरंत ही इस ख्याल को झटक दिया। हर कक्ष में चार जिंदगियां होंगी। चार इंसानी जिंदगियां!

प्रचंड ने स्वयं के लिए एक पात्र में मदिरा डाली, जो वो अपने साथ लेकर आया था। उसने एक पात्र मनु को देना चाहा, जिसने विनम्रता से अस्वीकार कर दिया। ध्रुव ने असुर राजा का साथ देने का निर्णय लेते हुए मदिरा का पात्र ले लिया। और फिर पीने का दौर चल पड़ा।

लेकिन उनकी बातचीत उतनी सुखद नहीं होने वाली थी, जितनी ध्रुव ने उम्मीद की थी।

‘अपने आदमियों के साथ, यहां तक के मेरे सफर का एक उद्देश्य है, सत्यव्रत। जैसा कि आप जानते हैं कि असुरों की गुप्तचर सेना बहुत ही सक्षम है। इस बीहड़ के प्रत्येक कबीले और प्रत्येक गांव में हमारे भेदिये हैं, जहां दस्यु योद्धा अपनी बेरहम सेना के साथ रहते हैं। उनका कठोर दल अक्सर राहगीरों पर हमला करके, उन्हें लूटता है और मार भी देता है। मैंने सुना था कि उन्होंने आपके आपूर्ति दलों पर भी कई बार आक्रमण करने का प्रयास किया। लेकिन अभी हाल ही में, मेरे गुप्तचरों ने अधिक बड़े खतरे को भांपा है।’

‘ओ शक्तिशाली राजा, वो खतरा क्या है?’ कक्ष में मौजूद, सोमदत्त ने पूछा।

‘पिछले कुछ महीनों में गुप्तचरों ने कुछ ऐसा देखा, जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। दस्यु योद्धाओं के गांवों और कबीलों में अप्रत्याशित दूत भेजे जा रहे हैं,’ प्रचंड ने अपना गिलास खाली करते हुए कहा।

‘किसके दूत, राजा प्रचंड?’

इस बार सवाल मनु ने पूछा था। वो जवाब सुनने से पहले ही भयभीत था। पलभर में ही उसे अहसास हो गया कि उसकी शंका गलत नहीं थी।

‘दैत्यों के दूत, मनु। खूंखार नर-मुंड दस्यु कबीलों में अपने दूत भेज रहा है। यह सामान्य बात नहीं है, क्योंकि ऐसा कभी पहले नहीं हुआ। दैत्य और दस्यु हमेशा एक-दूसरे के दुश्मन रहे हैं। लेकिन अब चीजें बदल रही हैं...’

‘इससे उन्हें क्या हासिल होने वाला है? वो राक्षस नर-मुंड दस्युओं से क्या चाहता है?’ ध्रुव ने पूछा। वो उस खतरे को भांप नहीं पाया था जिसे मनु और प्रचंड अच्छी तरह समझ चुके थे।

मनु अपने मित्र की ओर मुड़ा।

‘हमसे लड़ने के लिए वो अपनी शक्ति बढ़ा रहे हैं। नर-मुंड सारे दस्यु कबीलों को अपने झंडे तले एकत्र करना चाहता है, ध्रुव।’

‘लेकिन क्यों?’ ध्रुव ने पूछा, वो अभी भी खतरे की गंभीरता नहीं आंक रहा था।

मनु ने साधारण शब्दों में कहा, लेकिन उसके लहजे में उसके दिल की शंका साफ़ व्यक्त हो रही थी।

‘वो नौका चुराना चाहते हैं।’

बनारस, 2017
देव व दानव

विद्युत अपने बाबा के साथ भोजन करने के हर पल का आनंद लेता था। सुबह के लगभग 9 बजे थे। वो महान द्वारका शास्त्री के कक्ष के बाहर के बरामदे में, जमीन पर बिछी चटाई पर बैठे थे।

मठ के कुछ युवा छात्र अपने पूजनीय मठाधीश, अपने पसंदीदा पुरोहित जी और अपने प्यारे विद्युत दादा के लिए नाश्ता परोस रहे थे।

जबकि द्वारका शास्त्री और पुरोहित जी चूड़ा-मटर का साधारण नाश्ता कर रहे थे, लेकिन उन्होंने जोर दिया था कि विद्युत के बनारस के सबसे मशहूर हलवाई की गर्मागर्म कचौड़ी और जलेबी लाई जाए। उसकी दिव्यता और शौर्य के बावजूद भी, उनके लिए तो विद्युत एक छोटा बच्चा ही था।

नाश्ता हो जाने पर, उन्हें गर्म औषधीय चाय दी गई और फिर द्वारका शास्त्री ने वो गंभीर चर्चा शुरू की, जो अभी तक अधूरी थी।

'हम सत्यव्रत मनु के वंशज हैं, विद्युत। क्या तुम इस नाम को जानते हो?'

विद्युत एक पल के लिए स्तब्ध रह गया। जिस भी मनुष्य को हिंदू पुराण की जानकारी होगी, उसने सत्यव्रत मनु का नाम सुना होगा—महान मुनि, मसीहा। वो समझ नहीं पा रहा था कि क्या प्रतिक्रिया दे। उसकी जिंदगी में कभी भी किसी बात ने उसके दिल को यूं गर्व और अभिभूति से नहीं धड़काया था।

'क्या....?' विद्युत के मुंह से बस इतना ही निकल पाया।

‘हां, विद्युत। तुम्हें याद है न मैंने तुम्हें विवास्वन पुजारी के बारे में बताया था, वो देवता जिसने 3,700 वर्ष पहले जन्म लिया था। वही देवता अब तुम्हारे रूप में पुनर्जन्म लेकर अपनी नियति को पूर्ण करने आया है। तुम्हें याद होगा कि मैंने तुम्हें हड़प्पा के अंतिम दिनों की भयानक कहानी भी सुनाई थी, और वहीं मैंने सूर्य के पुत्र, मनु का जिक्र किया था।’

‘हां... हां आपने बताया था, बाबा...’

‘विवास्वन पुजारी का वो पुत्र और कोई नहीं बल्कि अनश्वर सत्यव्रत मनु—विशाल नौका का निर्माता था, जिसका चयन मत्स्य ने किया था। वही शास्त्रों का रचयिता था... हम उसी के वंशज हैं, विद्युत।

हम उसी वैभवशाली पुजारी-राजा का वंश हैं, जिसने विनाशकारी प्रलय से मानवता की रक्षा की थी।’

‘न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के गुप्त भ्रातृसंघ का सबसे रहस्यमयी और भयावह पहलु हैं—आध्यात्मिक दुनिया की गहन और गंभीर समझ। जैसा कि मैंने पहले भी जिक्र किया था कि उनके समूह में दुनिया के कुछ सबसे प्रतिभावान व्यक्ति भी शामिल हैं। जिन्हें तुम विशिष्ट योग्य भी कह सकते हो। हालांकि वो केवल उन्हीं मायनों में प्रतिभाशाली नहीं हैं, जिन्हें तर्कवादी नास्तिक कहा जाता है, बल्कि भ्रातृसंघ के सदस्य पूरी तरह से दूसरी दुनिया की अच्छी-बुरी ताकतों और धरती पर पड़ने वाले उनके प्रभाव को समझते हैं।’

‘यह तो रहस्योद्घाटन है, बाबा। कौन यकीन करेगा कि नरसंहार करने वाले ये लोग ईश्वर को मानते हैं?’

मठाधीश ने असहमति में सिर हिलाया।

‘मैंने ये नहीं कहा कि ये लोग ईश्वर को मानते हैं, विद्युत। मैंने कहा कि उन्हें ईश्वर के अस्तित्व पर भरोसा है, क्योंकि वो भी सक्रिय रूप से स्वयं शैतान की मदद लेते रहते हैं। समय की शुरुआत से ही, अच्छाई और बुराई, दोनों ने सृष्टि के संतुलन में अहम भूमिका निभाई है। धरती पर जीवन और प्रेम की निरंतरता संकेत करती हैं

कि अच्छाई की ताकत बुराई से कहीं अधिक सक्षम है। लेकिन यह युद्ध शाश्वत है, विद्युत। और ऑर्डर सोचता है वो चीजों को अपने पक्ष में बदल सकता है।'

विद्युत द्वारका शास्त्री की बात समझने की कोशिश कर रहा था। लेकिन अच्छाई और बुराई, देव और दानव के बीच हमेशा चलने वाला संघर्ष... उसे यूं ही स्वीकार कर लेना इतना आसान नहीं था।

इससे पहले कि विद्युत इसकी और गहराई में जा पाता, बरामदे में बैठे सभी व्यक्ति, पुरोहित जी से लेकर युवा छात्र तक, सब बुरी तरह से चौंक गए। ऐसा लगा मानो जमीन के नीचे कुछ गर्जना हुई हो। मानो धरती के नीचे से कोई दहाड़ा हो। उस आवाज को सुनकर और पल दो पल को आए उस कंपन को महसूस कर सबके दिल जम गए। ऐसा लगा मानो मठ की धरती के नीचे कोई विशालकाय जीव हिला हो। उन्होंने परेशानी और दुविधा से एक-दूसरे को देखा। विद्युत ने ध्यान दिया कि बाबा जरा भी हैरान नहीं हुए थे।

द्वारका शास्त्री अपने परपोते के चेहरे पर जिज्ञासा भरी बेचैनी देख सकते थे। उन्होंने पुरोहित जी को भी देखा, जिसका चेहरा डर से पीला पड़ गया था।

'शांत रहो, तुम दोनों... तुम सब भी,' मठाधीश चिल्लाए, वो इस गर्जन की तरफ किसी का ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहते थे।

'जब किसी देव-राक्षस युद्ध का बिगुल बजता है, तो अच्छाई और बुराई, दोनों ही तरह की ताकतें पृथ्वी की गोद में शरण लेने आती हैं।'

卐

'जब विराट नौका आखिरकार प्रलय के बाद भी अपना अस्तित्व बचाए रख पाई, तो दैवीय मत्स्य-पुरुष,जिसे मत्स्य कहा जाता था, ने सत्यव्रत को प्राचीन रहस्य दिया। एक भविष्यवाणी जो हमारे समय, कलयुग से जुड़ी थी। विवास्वन पुजारी उस रहस्य के संरक्षकों में से एक थे, जिसे मत्स्य ने सत्यव्रत और उसके वंश को हमें सौंपा था।'

'वाह! क्या आपने फिर से मत्स्य कहा, बाबा? क्या आप भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार की बात कर रहे हैं? क्या आप कहना चाहते हैं कि मनु और मत्स्य की

पौराणिक कथा वास्तव में सच है??'

द्वारका शास्त्री मुंह दबाकर हंसे ।

'क्या ईसा मसीह की कहानी सच है, विद्युत? और पैगंबर मौहम्मद की? सिद्धार्थ गौतम या बुद्ध की? अगर हम इन सबमें भरोसा करते हैं, तो हमारे लिए प्रभु राम, कृष्ण या मत्स्य के अस्तित्व पर भरोसा करना इतना मुश्किल क्यों है?'

विद्युत ने ऐसा सवाल पूछने की शर्मिंदगी से सिर हिलाया, वो भी उस इंसान से जिसने अपना पूरा जीवन मत्स्य की भविष्यवाणी की रक्षा में बिताया।

मठाधीश विद्युत के मन की बात समझ सकते थे। वह जानते थे कि उनका परपोता किसी संशय या शक की वजह से ये सवाल नहीं पूछ रहा था। ये बस सच पर मुहर लगाने की जिज्ञासा थी। विद्युत को सहज करने के लिए, वो मुस्कुराकर बोले।

'कौन कह सकता है कि मत्स्य अवतार थे या मनुष्य? यहां तक कि जब ईश्वर धरती पर आते हैं, तो वो मनुष्य रूप लेकर ही आते हैं, फिर वो चाहे राम हों, या कृष्ण या बुद्ध। वह पवित्र दूत के रूप में आते हैं, वह इंसान के रूप में पैगंबर बनकर आते हैं। जब वो सूर्य पुत्र के रूप में आए, तब भी वो मनुष्य थे, जो स्नेह करता था, जिसका रक्त बहा, और जिसने दर्द सहा। नारायण और नर उतने अलग नहीं हैं, जितना हम उन्हें मान लेते हैं, विद्युत।

और न्यू वर्ल्ड ऑर्डर इसका ही लाभ उठाना चाहता है।'

आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व

विदित जग का सबसे भयंकर हथियार

‘कोई ऐसी जगह तो होगी, जहां कोई हमें न देख सके।’

प्रचंड दैत्यों और दस्यु कबीलों के बीच की सांठ-गांठ और नाव हथियाने के भारी षड्यंत्र की पूरी जानकारी मनु और ध्रुव को दे चुका था। उसने मनु को स्पष्ट कर दिया था कि अगर नर-मुंड अपनी योजना में सफल हो गया तो उसके पास रक्त पिपासुओं की इतनी बड़ी फौज होगी कि उन्हें रोक पाना असंभव हो जाएगा।

नौका की सुरक्षा में अपना समर्थन देने के साथ ही प्रचंड ने अपने आदमियों और उनके परिवारों के लिए नौका में स्थान सुरक्षित कर लिया था। अब प्रचंड मनु को एक ओर ले जाकर, गुप्त रूप से उसे कुछ बता रहा था।

‘अगर दैत्य और दस्यु एक साथ नौका पर आक्रमण करने आए, तो सूर्य पुत्र यह संभवत: आपके जीवन का सबसे विशाल युद्ध होगा। भले ही हड़प्पा की विशाल

फौज और ताकतवर मत्स्य प्रजाति के लोग, और मेरे भी योद्धा आपके झंडे तले लड़ें, लेकिन फिर भी हम उनके मुकाबले पांच की संख्या में एक ही होंगे।'

सत्यव्रत गंभीरता से सुन रहा था। दुराचारी होने के बावजूद, दैत्य और दस्यु भयावह योद्धा थे। जो परेशानियां प्रचंड बता रहा था, उनके अनुसार तो नौका को ऐसे जंगली लोगों के हाथों में पड़ने से बचाना बहुत मुश्किल प्रतीत हो रहा था। और अगर विशाल नौका चली गई तो मनु के मन में कोई शंका नहीं थी कि इस नाव के वासी या तो मारे जाएंगे या बेरहमी से बंदी बना लिए जाएंगे।

'ओ महान राजा प्रचंड, आपका क्या सुझाव है? यह युद्ध कैसे जीता जा सकता है? इसे जीता जाना बहुत जरूरी है!'

प्रचंड मुस्कुराया।

'सब ख़त्म नहीं होगा, सत्यव्रत। इसीलिए तो मैं आपसे एकांत में बात करना चाहता हूं। मैं आपके पिता का सिर्फ संदेश लेकर ही यहां नहीं आया हूं। मैं विदित जग का सबसे भयानक हथियार भी लेकर आया हूं।'

रत्नजड़ित, तांबे के संदूक के आसपास बारह लोग खड़े थे। मनु ने दिव्य सप्तऋषियों को विशेष रूप से आमंत्रित किया था। उनके अतिरिक्त वहां सतरूपा, सोमदत्त, ध्रुव, प्रचंड और पुजारी-राजा सत्यव्रत मनु स्वयं मौजूद था।

संदूक पर आकर्षक आकृति बनी हुई थी, जिन्हें आर्यवर्त के सबसे बहुमूल्य रत्नों से सजाया गया था। रत्नों की चमक से पता चल रहा था कि असुर इस अनमोल धरोहर को कितना संभालकर लाए थे। प्रचंड ने इस पवित्र माल के सम्मान में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

'वो अनुपम दृश्य अभी भी मेरे मनोपटल पर ताजा है, और हमेशा मेरे मन में वो गूंजता रहेगा। वो भयानक रात जहां विवास्वन पुजारी ने अकेले असुरों के सबसे ताकतवर योद्धाओं से संघर्ष किया था। वो गरजता आकाश, सप्तऋषियों का निर्मम वध, रक्त धारा का श्राप, मरते मुनियों की भविष्यवाणी, अलौकिक नीला प्रकाश और अंतिम युद्ध... वो सब बहुत वीभत्स और डरावना था...'

असुर राजा अचानक ही गहन विचारों में खो गया। मनु देख सकता था उस रात की घटना, और अपने विकराल राजा सुरा को याद करते ही वो पसीने से तर हो गया था। यकीनन, नीले प्रकाश वाली वो रात प्रचंड की आत्मा और मन पर एक स्थायी घाव छोड़ गई थी।

मनु ने आगे बढ़कर प्रचंड के कंधे पर भरोसे का हाथ रखा।

'सब ठीक है, ओ शक्तिशाली प्रचंड। वो सब अतीत की बात है। अब यहां हम साथ हैं और हमें आगे का कठिन सफर तय करना है। हमें आपके अनुभव, आपके ज्ञान और आपकी वीरता की आवश्यकता होगी, ओ महान राजा।'

प्रचंड ने मनु के सहयोग पर सहमति से सिर हिलाया। उसने उस शक्तिशाली हथियार की कहानी सुनानी शुरू की, जिसे वो प्रदर्शित करने वाला था।

'विवास्वन पुजारी बेशक अपने समय के महानतम योद्धा थे। हमने पहले भी उनसे युद्ध लड़ा था, और जल्द ही हार का सामना किया। फिर मैंने उन्हें कांसे और ईंट के पहाड़ से ठीक हड़प्पा सैनिकों के दल में छलांग लगाते देखा। वो इतना पराक्रमपूर्ण संघर्ष था कि कोई उसकी कल्पना तक नहीं कर सकता। वो सटीकता जिससे वो एक ही समय पर अनेकों तीर चलाते थे और सभी निशाने पर लगते थे। कोई साक्षी हुए बिना इस पर भरोसा नहीं कर सकता,' प्रचंड ने कहा।

'ओ प्रचंड, मैं उनका अनुयायी हूं। धनुष के साथ सूर्य की निपुणता इतने करीब से किसी ने नहीं देखी थी, जितनी मैंने देखी थी,' ध्रुव ने गर्वित होते हुए कहा।

अब तक मनु के लिए अपने आंसू रोक पाना मुश्किल हो चला था। वो अपने पिता के स्नेह, उनके आशीर्वाद के लिए तरस रहा था। उनकी वीरता और निपुणता की बातों से मनु को गर्व हो रहा था। महान विवास्वन पुजारी का पुत्र होना उसके लिए सम्मान और सौभाग्य की बात थी।

प्रचंड ने आगे कहा।

‘लेकिन नीली अग्नि की उस रात में, सूर्य घायल और टूटा हुआ था। और केवल शारीरिक रूप से ही नहीं। वह असहनीय पछतावे और वेदना से गुजर रहे थे। ऐसी अवस्था में जब वो पचास श्रेष्ठ असुर योद्धाओं से घिरे थे, मैंने मान लिया था कि वो उनके हाथों मारे जाएंगे।

और फिर कुछ हुआ।’

प्रचंड को देखकर लग रहा था मानो वो समय से पीछे चला गया था। उसकी आंखें कक्ष में मौजूद बड़ी सी खिड़की से बाहर, तूफानी क्षितिज पर टिकी हुई थीं।

बनारस, 2017
अंतिम समाधान

‘मत्स्य द्वारा मनु को दी गई भविष्यवाणी की सदियों तक रक्षा की गई, उसे काले मंदिर की श्रृंखलाओं के गर्भ में दबाकर, उसके रहस्य की रक्षा की गई। यह स्वयं ब्रह्मांड द्वारा की गई भविष्यवाणी थी, जिसे काली शक्तियों से बचाकर रखा जाना चाहिए था,’ द्वारका शास्त्री ने कहा।

विद्युत को अहसास हो रहा था कि वो आखिरकार काले मंदिर के रहस्य के करीब आ रहा था। वो अपने बाबा के चेहरे पर हर पल बढ़ती उत्सुकता को देख सकता था।

‘रहस्य को सुरक्षित रख पाना उससे कहीं मुश्किल था, जिसकी हमने कल्पना की थी। इसने सदियों के भय, रक्तपात, युद्ध और हत्याओं को बढ़ावा दिया। गुप्त भ्रातृसंघ ने महान कांस्टेंटाइन की मृत्यु के तुरंत बाद ही काले मंदिर की अबाध शक्ति और दिव्य उद्देश्य का पता लगा लिया। जैसा कि मैंने तुम्हें बताया, भ्रातृसंघ की आध्यात्मिक क्षेत्र में गहन मान्यता है। उनके काले जादूगरों, तांत्रिकों और शैतान-पूजकों ने जल्द ही आने वाले भविष्य की चेतावनी दे दी। वो जानते थे कि अगर न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के सपने को सच करना है, तो उन्हें जल्द से जल्द काले मंदिर के रहस्य का पता लगाकर उसे समाप्त करना होगा।’

और फिर न्यू वर्ल्ड ऑर्डर और विवास्वन पुजारी व सत्यव्रत मनु के वंशजों के बीच भयानक युद्ध की शुरुआत हुई। घातक साजिशों और हिंसा की इन सदियों के दौरान, हमारे पूर्वज, पंडित भैरव शास्त्री ने वर्ष 1253 ईस्वी में देव-राक्षस मठ की नींव रखी, और रहस्य की सुरक्षा के लिए काले मंदिर के संरक्षकों को एकत्र किया।’

द्वारका शास्त्री विद्युत के लिए कहानी के बिंदु जोड़ रहे थे, जो अब सच जानने के लिए बेसब्र था... पूर्ण सत्य।

तब पुरोहित जी ने आगे झुककर, सम्मान से कहा, 'गुरुदेव, अब समय आ गया है कि हम विद्युत को काले मंदिर का रहस्य बताएं, क्या आपको नहीं लगता? वो ही तो चयनित है, गुरुदेव।'

विद्युत के दिल की धड़कन रुक गई, जब उसने इस बात पर बाबा की प्रतिक्रिया जानने के लिए अपने बाबा को देखा। जिस पल की वो कब से प्रतीक्षा कर रहा था, वो अब आने ही वाला था।

द्वारका शास्त्री ने हां में सिर हिलाकर केवल एक ही शब्द कहा।

'कल।'

19वीं सदी में जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने हड़प्पा—जहां कहानी शुरू हुई थी—का फिर से दौरा किया तो घटनाएं अकल्पनीय ढंग से बदलने लगीं। दुनिया की सबसे प्रभावशाली कंपनियों में से एक, जिसके पास ब्रिटेन के शाही परिवार से भी बड़ी सेना थी, ईस्ट इंडिया कंपनी में गुप्त भ्रातृसंघ की घुसपैठ थी। उनका दोहरा लक्ष्य था। पहला, उन्होंने प्राचीन नगरी के अवशेषों को जला दिया, क्योंकि उन्हें लगा था कि वहीं पहला काला मंदिर होगा। वो तो उन्हें बाद में पता चला कि काला मंदिर हड़प्पा के समय निर्मित कोई एक मंदिर नहीं था, बल्कि उनकी पूरी श्रृंखला थी। और फिर उन्हें समझ आया कि हम प्रत्येक दो-एक सदी बाद एक नया काला मंदिर बना लेते थे। यह काली ताकतों को दूर रखने के लिए किया जाता था।

दूसरा, अब तक ईस्ट इंडिया कंपनी ने पूरे भारतीय उप-महाद्वीप को हड़पने का निर्णय कर लिया। जनमानस को नियंत्रित करने में दक्ष, भ्रातृसंघ के सर्वेसर्वा ने पहले भारतीयों के दिमाग को गुलाम बनाने का फैसला किया था। और ऐसे समय में पश्चिम पर हड़प्पा की श्रेष्ठता का उद्घाटन उनकी पूरी योजना पर पानी फेर देता। बाकी तो इतिहास है। आर्यों के आक्रमण के झूठे सिद्धांत की रचना कर, उन्होंने इसे उस स्कूली प्रणाली के माध्यम से प्रसारित कराया, जिसकी स्थापना स्वयं अंग्रेजों ने की थी। उन्होंने बार-बार इतिहासकारों के माध्यम से इसे लिखवाया कि

अंत में एक झूठ को सत्य मान लिया गया। ऐसा सच जिसका कोई साक्षी नहीं था, कोई दस्तावेज नहीं और कोई प्रमाण नहीं।

जनता के मन में यूरोपियन 'आर्यों' के आने की बात बिठाने के लिए पश्चिमी और भारतीय इतिहासकारों, पुरातत्ववेत्ताओं और संग्रहकर्ताओं की नियुक्ति ही उनकी अकेली योजना नहीं थी। बल्कि उनकी योजना में उन लोगों को भी रास्ते से हटाना शामिल था, जो इस सत्य को सामने लाने का प्रयास करते। कैप्टन वेन एश्ब्रूक न्यू वर्ल्ड ऑर्डर की ऐसी ही बलि था।'

'कैप्टन वेन एश्ब्रूक कौन था, बाबा?'

'एक नेक अंग्रेज जो हड़प्पा के सच को सामने लाना चाहता था। वह एक ईमानदार अफसर था, और काले मंदिर के संरक्षक लंबे समय से उस पर नजर रखे हुए थे। परिणामस्वरूप हमने उसे आदि-वैदिक समय में ऋषियों द्वारा लिखी पांडुलिपि सौंप दी, जिसमें आर्य हमलावरों की सचाई थी। उसने गहराई से इसकी जांच की और वह सबके सामने इस झूठ का खंडन करना चाहता था। यकीनन ऑर्डर इसकी आज्ञा नहीं दे सकता था। तो कैप्टन वेन एश्ब्रूक को कलकत्ता की गलियों में बेरहमी से मार दिया गया।'

'बाबा, अपनी स्पष्टता के लिए, क्या मैं एक बार अब तक की सारी घटनाओं को दोहरा दूं? मैं कहीं गलत हूं, तो कृपया टोक दीजिएगा। घटनाओं को सही क्रम में ग्रहण करना महत्वपूर्ण है।'

'हां, ठीक है, विद्युत,' ग्रैंडमास्टर ने जवाब दिया। 'चलो भ्रातृसंघ के हिंसक सफर और काले मंदिर की रूपरेखा तुमसे सुनते हैं।'

विद्युत ने गहरी सांस ली और अपने बाबा पर मुस्कुराया।

'ठीक है, तो शुरू करते हैं। इस सबका आरंभ हड़प्पा से हुआ, जहां हमारे महान पूर्वज विवास्वन पुजारी को छला गया और उनके मित्र और साले पंडित चंद्रधर और उसकी पत्नी प्रियम्वदा ने उन्हें दोषी ठहराया।

फिर रक्त वर्षा में विवास्वन पुजारी ने कैद से मुक्त होकर, राक्षस-राजा सुरा से हाथ मिलाकर अपना बदला लेने की ठानी। उनका घायल पुत्र मनु पंडित सोमदत्त की मदद से युद्ध क्षेत्र से बच निकला।

एक तरफ तो ईंट और कांसे के पर्वत पर, हड़प्पा का सूर्य महानगर की सेना को तबाह कर रहा था, तो दूसरी तरफ उसका पुत्र मनु तेजस्वी मत्स्य-पुरुष, मत्स्य से पहली बार मिला।

सप्तऋषियों के निर्मम वध का साक्षी बनने के साथ ही विवास्वन पुजारी को पता चला कि उसका पुत्र जीवित था, तो वो असुरों से युद्ध करके उनके राजा सुरा की हत्या कर देता है। इस दौरान, जलते मुनियों और रक्त धारा ने न केवल हमारे वंश को, बल्कि समग्र मानवजाति को अंतहीन हिंसा और पीड़ा का श्राप दिया। मुनि ने विवास्वन पुजारी को निर्देश दिया कि वो रत्न-मारू को मनु के पास भिजवा दे।

इस बीच मत्स्य मनु को पर्वत में बने काले मंदिर में ले गया। वहां उसने मनु को आने वाली प्रलय की चेतावनी दी । उसने मनु को यह भी बताया कि उसके पिता, हड़प्पा के सूर्य, काले मंदिर के संरक्षक थे। और आगे ये जिम्मेदारी मनु संभालेगा।

विवास्वन पुजारी विनाशकारी प्रलय में नष्ट हो गया और मनु ने मत्स्य के आदेश पर विशाल नौका का निर्माण करवाया, जिसमें वो ब्रह्मांड की शुद्धि के दौरान मानवजाति की रक्षा कर सके। तब से हमारा वंश ही काले मंदिर के रहस्य का रक्षक रहा।

फिर 325 ईस्वी में, रोम के सम्राट कांस्टेंटाइन ने न्यू वर्ल्ड ऑर्डर की नियुक्ति की, जिसके तहत वह एक-वैश्विक सरकार, एक-वैश्विक धर्म की स्थापना कर ऐसा संसार रचना चाहता था, जहां मनुष्यों के बीच आपसी मतभेद न हों। हमारे महान पूर्वज अद्वैत शास्त्री ने उन्हें ऐसा न करने की सलाह दी।

न्यू वर्ल्ड ऑर्डर जल्द ही एक कठोर भ्रातृसंघ में बदल गया, जो कांस्टेंटाइन के सपने को विकृत कर, ऐसे समाज के निर्माण में लग गए, जिस पर उनका पूर्ण अधिकार होता। नाइट्स टेम्पलर ऑर्डर का पहला सफल प्रयोग थे, जहां उन्होंने एक अजय फौज खड़ी कर ली और जिसे उन्होंने अपनी ख़ुशी से समाप्त भी कर दिया।

धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से ऑर्डर ने अपना जाल पूरी दुनिया में फैला लिया और इसके सदस्यों में दुनिया के सबसे सक्षम पुरुष और महिलाएं शामिल थे। उन्होंने छिपे रूप से दुनिया बदल देने वाली कुछ बड़ी घटनाओं को अंजाम दिया— फ्रेंच क्रांति, सोवियत यूनियन का गठन, महामंदी, नाज़ी जर्मनी, शीत युद्ध, अरब जगत की क्रांति और यहां तक कि 9/11... बैंकिंग संस्थान, सुरक्षा उपकरणों, राजनीति, दवाई, तेल, मीडिया, आतंकवाद, तकनीक इत्यादि पर जबरदस्त पकड़ से उन्होंने दुनिया को नियंत्रित किया।

ऑर्डर के सर्वेसर्वा केवल बहुत प्रतिभाशाली और विद्वत जन ही नहीं है। बल्कि उन्हें अध्यात्म और रहस्य की भी गहन जानकारी है और वो अच्छाई और बुराई की ताकतों से भी परिचित हैं। काले मंदिर में छिपा रहस्य पता लगाना गुप्त भ्रातृसंघ का सबसे बड़ा अभियान है, क्योंकि वो मानते हैं कि काले मंदिर का रहस्य ऑर्डर की घिनौनी योजना को बर्बाद कर सकता है। इसी वजह से, इस भ्रातृसंघ ने देव-राक्षस मठ से सदियों पुरानी जंग छेड़ रखी है।

वह गुप्त भ्रातृसंघ ही था जिसने ईस्ट इंडिया कंपनी में घुसपैठ की और हड़प्पा के अवशेषों में पहले काले मंदिर की तलाश करने गए। वो सभ्यता के वैभवशाली इतिहास से अच्छी तरह परिचित थे और जानते थे कि भारतीय ही इसके मूल निवासी थे। लेकिन उन्होंने आर्य आक्रमण के सिद्धांत का अविष्कार किया, क्योंकि इससे पहले तो उन्होंने उप-महाद्वीप के मानस पर कब्जा किया, और बाद में फूट डालो की नीति के जरिए भारतीयों में मतभेद उत्पन्न कर दिए।

'जो भी उनकी वैश्विक योजना और गणना के बीच खड़ा हुआ, उसे उन्होंने कुचल दिया। कैप्टन वेन एश्ब्रूक ऐसे ही कई लोगों में से एक थे। रोमी परेरा, बाला, त्रिजट कपालिक, ब्रह्मानंद... सब उसी गुप्त संस्था का हिस्सा थे। एक तरफ तो वो मुझे जीवित रखना चाहते थे क्योंकि मैं ही वो भविष्यवाणी में व्यक्त देवता हूं, जो उन्हें काले मंदिर के रहस्य तक ले जा सकूं। लेकिन दूसरी तरफ, रहस्य उनके हाथ लगते ही वो जल्द से जल्द मुझे मार देने के लिए तत्पर हैं।'

द्वारका शास्त्री ने धीरे से सिर हिलाया, चीजें ग्रहण करने में विद्युत की तत्परता से वो संतुष्ट थे।

'क्या अब हम शाम को अपनी बात शुरू करें, विद्युत? मुझे एक महत्वपूर्ण आगंतुक से मिलने जाना है,' उन्होंने कहा।

‘हां, बिल्कुल बाबा,’ विद्युत ने नम्रता से कहा, हालांकि वो सोच रहा था कि यह आगंतुक कौन था, जिसने द्वारका शास्त्री का ध्यान इतनी महत्वपूर्ण चर्चा से हटा दिया—वो भी इसके अंतिम चरण में।

‘शाम को 6 बजे तक आ जाना, बेटा। हमारे पास अब अधिक समय नहीं है। तारे जल्द ही एक रेखा में आने शुरू हो जाएंगे। मुझे अभी तुम्हें काले मंदिर, तुम्हारे पूर्वज, मार्कंडेय शास्त्री, अद्वैत शास्त्री, दुर्गादास शास्त्री के बारे में बहुत कुछ बताना है... और हां, यकीनन अपने प्यारे कार्तिकेय के बारे में।’

कार्तिकेय के नाम पर द्वारका शास्त्री ने आह भरी। विद्युत के मृत पिता के प्रति उनका गहन प्रेम स्पष्ट था।

‘मुझे तुम्हें गोवा खोज और पृथ्वीवल्लभ के बारे में भी बताना है और इस सबसे अधिक—ऑर्डर के *अंतिम समाधान* के बारे में।’

‘जी, बाबा...’ विद्युत ने जाने के लिए उठते हुए कहा।

द्वारका शास्त्री के कक्ष से बाहर पैर रखते समय भी वो अपने दिमाग से बाबा का कहा *अंतिम समाधान* नहीं निकाल पा रहा था। इसमें अजीब से अशुभ की आहट थी। कुछ ऐसा था कि उसे मुड़कर दोबारा बाबा से इस विषय में पूछना पड़ा।

‘एक और सवाल, बाबा। चाहे तो आप संक्षेप में ही इसका जवाब दे दीजिए। उनके मन में अंतिम समाधान क्या है, बाबा? किसका समाधान? पता नहीं क्यों, ये मुझे अधिक भयावह लग रहा है।’

द्वारका शास्त्री एक पल को खामोश रहे, और फिर उन्होंने सीधे विद्युत की आंखों में देखा। विद्युत का सहज बोध देखकर वो हैरान नहीं थे। उन्होंने सपाट कहा।

‘वो दुनिया की लगभग सात अरब जनसंख्या को दसवें हिस्से तक कम कर देना चाहते हैं, विद्युत।

अगर न्यू वर्ल्ड ऑर्डर सर्वसत्तावादी सरकार के अपने घिनौने उपक्रम में सफल हो गया, तो वो अब तक के सबसे बड़े नर-संहार को अंजाम देंगे।

वो छह अरब लोगों को मार डालेंगे।’

आर्यवर्त के दलदल, 1699 ईसापूर्व

रत्न-मारू

मनु के आग्रह पर, सप्तऋषि आगे आए।

प्रचंड ने बताया कि कैसे नीली लपट आसमान की तरफ बढ़ी, और एक तेज, गरजती हुई आवाज में सातवें सप्तऋषि ने विवास्वन को अपनी तलवार उस नीली

अग्नि में परिष्कृत करने के निर्देश दिए। उसने यह भी बताया कि किस तरह इसके बाद वो लड़ाई एक-तरफ़ा रह गई थी।

उस पल में, रत्न-मारू एक ब्रह्मांडीय अस्त्र बन गई थी—जिसे पराजित कर पाना असंभव था। इसकी पूर्व-शर्त यही थी कि यह अस्त्र स्वयं अपने धारक का चयन करता था, धारक स्वयं इसका चयन नहीं कर सकता था।

रत्न-मारू की नियति अंत में असाधारण योद्धा के हाथ में पहुंचने की थी।

वो योद्धा जिसे निर्णायक क्षण में मानवजाति की कमान संभालने के लिए चुना गया था।

कलयुग में।

उस कक्ष में अंधेरा था, जहां वो एकत्र थे। प्रलय आक्रमण के अंतिम कुछ महीनों और दिनों में वैसे भी सामान्य तौर पर अंधेरा रहा करता था। मशाल की झिलमिलाती रौशनी में, तांबे का वो वैभवपूर्ण बक्सा चमक रहा था।

मनु के लिए, उस संदूक में महज एक अलौकिक तलवार ही नहीं थी। उसमें वो सामान था, जिसे उसके पिता ने अंतिम समय में थामा था। इसी वजह से रत्न-मारू उसके लिए बहुमूल्य उपहार हो गया था।

सप्तऋषि अब तांबे के संदूक को घेरकर खड़े थे, उनके हाथ जुड़े हुए थे। प्रचंड और मनु से अधिक इस ईश्वरीय शस्त्र का उद्देश्य दिव्य मुनियों को पता था। वो जानते थे कि यह किसके लिए बनी थी। वो जानते थे कि मनु तो महज माध्यम था, जो इस तलवार को इसकी नियति तक पहुंचने में मदद करेगा।

सप्तऋषियों ने तुरंत ही भगवान विष्णु की प्रार्थना में मंत्रोच्चार किया। वो मंत्र जिसे उन्होंने तभी रचा था, जिसे सदियों तक लोग दोहराने वाले थे। भक्त किसी भी शुभ कार्य से पूर्व भगवान विष्णु का आशीर्वाद पाने के लिए इसका जाप करेंगे—

।। '*मंगलम भगवान विष्णु* ;
मंगलम गरुड़ ध्वज :

मंगलम पुण्डरीकाक्ष ;
मंगलाय तनो हरि' ।।

सातों मुनि फिर संदूक के करीब आए और अपनी हथेलियां उसकी चमकती सतह पर रखीं।

उसके बाद जो हुआ उसने सबकी सांस अटका दी।

सप्तऋषि की आंखें नीले प्रकाश से जगमगा उठीं। ऐसा लग रहा था मानो वो किसी अलौकिक शक्ति से संपर्क कर रहे थे। कुछ पलों तक, वो तांबे के संदूक से चिपके रहे, उनकी आंखों से निकलता नीला प्रकाश और भी चमकदार होता जा रहा था।

मनु, तारा, सोमदत्त, ध्रुव और प्रचंड अपनी जगह पर जड़ खड़े रहे, वो सामने घटित होती घटना से स्तब्ध थे।

शीघ्र ही सातों मुनियों ने अपने हाथ उठाए, और नीला प्रकाश धीरे-धीरे ख़त्म हो गया। सप्तऋषि एक-दूसरे को देखकर, ख़ुशी से मुस्कुराए। वो फिर मनु की तरफ मुड़े और उनमें से एक ने कहा।

'आगे बढ़ो और उत्कृष्ट रत्न-मारू को अनावृत करो, सत्यव्रत।'

मनु ने चमकते संदूक का भारी ढक्कन उठाया।

शानदार तलवार गहरे भूरे चमड़े के आवरण में रखी हुई थी।

सत्यव्रत इस आलीशान तलवार को अच्छी तरह पहचानता था। इसने दशकों तक उसके महान पिता के कमरबंध की शोभा बढ़ाई थी। उसने अपने पिता की स्मृति के सम्मान में अपने हाथ जोड़कर, आंखें बंद कीं और उस ताकतवर तलवार के सम्मुख सिर झुकाया, जिसने हड़प्पा के लिए असंख्य युद्ध जीते थे।

रत्न-मारू में कुछ भिन्न था। इसके रत्नजड़ित मूठ से चमकीला प्रकाश स्फुटित हो रहा था। इसकी अनिष्टसूचक फलक पर, नीले रंग से प्रज्वलित, गरुड़ पुराण की

भयानक पंक्तियां लिखी हुई थीं, जो नरक में दंड मिलने का वर्णन कर रही थी।

मनु मुस्कुराया।

मत्स्य का रंग। विष्णु का रंग।

'आगे बढ़ो, और इसे उठा लो, सत्यव्रत,' प्रचंड ने उकसाया। वो संतुष्ट था कि उसने विवास्वन पुजारी को दिया वचन पूरा करते हुए रत्न-मारू को सूर्य पुत्र तक पहुंचा दिया था।

सप्तऋषि और पंडित सोमदत्त ने हाथ उठाकर, अपने सामने सिर झुकाते मनु को आशीर्वाद दिया। फिर वो तारा की तरफ मुड़ा, जो प्रेम से उसे देखकर मुस्कुरा रही थी। उसकी नजरें ध्रुव पर गईं, जिसने आंख मारते हुए तलवार की तरफ सिर हिला दिया।

मनु ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर, दृढ़ता से रत्न-मारू का हत्था पकड़ लिया, और महाकाल की आराधना में एक प्रार्थना बुदबुदाकर, इस तलवार से मरने वाले लोगों की मुक्ति की विनती की।

फिर उसने अभ्यस्त हाथों से तलवार उठाते हुए, सबको ऊंचा करके दिखाया।

तभी आसमान में कान के पर्दे फाड़ देने वाली गर्जना हुई। ब्रह्मांड भी ख़ुशी प्रदर्शित कर रहा था!

सप्तऋषि, सोमदत्त, प्रचंड, तारा और ध्रुव महान योद्धा और उसकी अलौकिक तलवार को मुग्धता से देख रहे थे, तभी एक बार फिर से चमकती बिजली ने कक्ष को प्रकाशित किया।

सत्यव्रत मनु प्रकृति की ही शक्ति मालूम पड़ रहा था। हवा के तेज झोंके ने उसके लंबे बालों को उड़ाया, और कड़कती बिजली के प्रकाश में सबने देखा, उसकी आंखें विकराल तलवार को ही निहार रही थीं।

रत्न-मारू चमकदार नीले रंग से प्रज्वलित हो रही थी।

बनारस, 2017
अद्वैत, दुर्गादास व मार्कंडेय

विद्युत ने ठीक शाम के 6 बजे महान मठाधीश के दरवाजे पर दस्तक दी।

कक्ष में प्रवेश करते ही पहले तो वो अचंभित रह गया और फिर अनपेक्षित मेहमान को वहां पा ख़ुशी से झूम उठा।

'दामिनी!' विद्युत ने कहा, दामिनी ने उसकी तरफ बढ़कर, उसे बांहों में भर लिया।

'ओह, विद्युत...' वो बस इतना ही कह पाई।

विद्युत शर्म से सुर्ख हो गया, उसने शरमाते हुए अपने प्यार को गले लगा लिया। वह जानता था कि महान मठाधीश इस तरह के प्रेम प्रदर्शन के आदी नहीं थे। या शायद उन्हें यह अच्छा नहीं लगेगा।

कुछ ही पलों में दामिनी को भी इसका अहसास हुआ और वो पीछे हट गई, मठाधीश से आंख चुराते हुए।

देवता ने ख़ुशी और उत्सुकता भरी आंखों से अपने बाबा को देखा।

'बाबा... दामिनी... कैसे?' उसने ख़ुशी से मुस्कुराते हुए कहा।

द्वारका शास्त्री इस आकर्षक युगल को एक साथ देखकर प्रसन्न थे। वो दोनों एक-दूसरे के लिए बने थे।

‘दामिनी की उपस्थिति आवश्यक है, विद्युत। तुम जिसका सामना करने वाले हो, और काले मंदिर से जो प्रकट होने वाला है, उसके लिए तुम्हारी चेतना के हर कण को सजग होना पड़ेगा। तुम दामिनी के बिना अधूरे हो, ओ देवता। शक्ति के बिना शिव आधे हैं। संजना के बिना विवास्वन विवश था। संजना ने 3,700 वर्षों तक उसकी प्रतीक्षा की... सिर्फ इसलिए कि इस अंतिम पल में तुम्हारा साथ दे सके। उसकी जीवन-ऊर्जा, उसका निर्विवादित प्रेम, उसकी सुनहरी आत्मा... सब तुम्हारा साथ देंगे, जब तुम उसका सामना करोगे, विद्युत।

जब तुम लूसिफर का सामना करोगे!’

·||卐||·

अब समूह बढ़ने लगा था। द्वारका शास्त्री ने सबको बुला भेजा था। जो वो अब बताने वाले थे, वो सबको नहीं पता था—यहां तक कि पुरोहित जी या नैना को भी नहीं।

विद्युत और दामिनी को साथ-साथ, एक-दूसरे का हाथ थामे, बैठा देख, नैना को अपने गले में कुछ अटका सा महसूस हुआ। नैना को कमरे में आता देख, विद्युत ने अपना हाथ पीछे खींच लिया। वो उसे तकलीफ नहीं पहुंचा सकता था। लेकिन विद्युत पर नैना का ऐसा प्रभाव सकारात्मक वजह से था। वो वास्तव में असाधारण लड़की थी। वो विद्युत को देखकर मुस्कुराई, दामिनी को प्रेम से गले लगाया और द्वारका शास्त्री के पैरों के पास जाकर बैठ गई—अपने बाबा के स्नेह और सहजता की छांव तले।

उसका दिल रो रहा था। लेकिन उसका चेहरा मुस्कान से खिल रहा था।

‘वेन एश्ब्रूक की हत्या तो बहुत बाद की बात है। रक्तपात तो सदियों से चल रहा था। हमारे एक महान पूर्वज, नकाबपोश योद्धा-पुजारी, अद्वैत शास्त्री, जो महान कांस्टेंटाइन के विश्वस्त थे और जिन्होंने उसकी इस विशाल योजना से असहमति दर्शायी थी। उन्हें ऑर्डर के सत्तर नाइट्स ने घेर लिया था। ये नाइट्स बाद में औपचारिक रूप से आए टेम्पलर के शुरुआती प्रतिनिधि थे। अद्वैत शास्त्री का बेरहमी से वध किया गया। हालांकि इससे पहले उन्होंने अकेले, निहत्थे लड़ते हुए सत्ताईस टेम्पलर को मार डाला था। वो कहते हैं कि वो लड़ाई घंटों तक चली थी और सैकड़ों गज दूर तक की धरती रक्त से लाल हो गई। और वो नकाबपोश संत

सिर से पैर तक सत्तर नाइट्स के रक्त में भीग गया था। यह सब ख़त्म होने के बाद, ऑर्डर बचे हुए नाइट्स ने सम्मान से उसके क्षत-विक्षत शरीर के सामने सिर झुकाया। वो उसकी दक्षता और वीरता से प्रभावित थे। सैकड़ों सालों तक अद्वैत शास्त्री के शौर्य का वर्णन टेम्पलर के गुप्त दस्तावेजों में किया गया। उनकी युद्ध तकनीक को दर्ज कर, उसे आगे आने वाले टेम्पलर को अभ्यस्त करने में इस्तेमाल किया गया।

यह चौथी सदी में घटित हुआ था। कांस्टेंटाइन काले मंदिर का रहस्य जानता था। पूरी दुनिया को एक करने के अपने प्रयास में वो मान रहा था कि वो ईश्वर के आदेश का पालन कर रहा था। लेकिन उसकी मौत के साथ ही उसका समर्पण धूमिल पड़ गया, और भ्रातृसंघ पर निर्मम सदस्यों ने कब्जा कर लिया।'

कमरे में सन्नाटा पसरा हुआ था। विद्युत, दामिनी, पुरोहित जी, नैना, सोनू और बलवंत मठाधीश से उन रक्तरंजित पन्नों की कहानी सुनते हुए स्तब्ध थे, जिनसे शास्त्री वंश का इतिहास रंगा था।

‘हम प्रत्येक कुछ सौ साल बाद मंदिर बनाते रहे—कभी-कभी तो समर्पित राजाओं की मदद से भी। दूसरे अवसरों पर, हमने देव-राक्षस मठ के महत्वपूर्ण संसाधनों का उपयोग किया,' द्वारका शास्त्री ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

‘लेकिन केवल मंदिर ही क्यों, बाबा? रहस्य को किसी और स्थान पर क्यों नहीं छिपाया जा सकता था? जैसे कि किसी महल या फिर किसी समाधि के नीचे? सिर्फ काला मंदिर ही क्यों?' विद्युत ने पूछा।

‘अच्छा सवाल है, विद्युत। कल तुम्हें स्वयं ही इसका जवाब मिल जाएगा। काले मंदिर में छिपे रहस्य के अवर्णनीय तेज और अलौकिक गहनता को गृहीत करने के लिए उतने ही शक्तिशाली मंदिर की आवश्यकता होती है। प्रत्येक काले मंदिर के प्रतिष्ठापन के लिए न सिर्फ सैकड़ों सक्षम मुनियों ने मंत्रोच्चार किया, बल्कि प्रत्येक मंदिर की दीवारों, स्तंभ और छत पर भी शक्तिशाली मंत्रों को गोदा गया। इससे जरा भी कम ढांचा प्राचीन रहस्य के ओज से जल जाता।'

विद्युत ने मर्म समझते हुए सिर हिलाया। भले ही वो कितना ही वीर और आत्मविश्वासी क्यों न हो, लेकिन यह भी सच था कि वो घबराया हुआ था। काले मंदिर के रहस्य से वो भी कुछ व्यथित था। और उस नाम से भी जो उसे बार-बार उत्तेजित कर रहा था।

कोई ऐसा, जिसका उसे सामना करना था।

लूसिफर।

·||卐||·

'काला मंदिर अपना आकार, रूप और जगह बदलता रहा। बद्रीनाथ, सोमनाथ, विश्वनाथ, केदारनाथ जैसे पवित्र मंदिर... विभिन्न दिशाओं में काले मंदिर की लक्ष्य पूर्ति के लिए ही बनवाए गए थे। लेकिन एक मंदिर, जिसने सबसे लंबे समय तक रहस्य को सुरक्षित रखा, वो था एलोरा का भव्य कैलाश मंदिर,' द्वारका शास्त्री ने प्रकाश डाला।

दामिनी और विद्युत ने एक-दूसरे को देखा। उन्होंने अनेकों बार चट्टान काटकर बनाए गए अजंता और एलोरा मंदिरों के दर्शन की योजना बनाई थी, लेकिन कभी जा नहीं सके थे। और अब वो, कैलाश मंदिर की कहानी, अपने ही जीवन के अध्याय के रूप में सुन रहे थे।

'हमारे अनुपम पूर्वज, दुर्गादास शास्त्री ने पृथ्वीवल्लभ नाम से विख्यात, राजा कन्नेश्वर को 8वीं सदी में कैलाश मंदिर के निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया था। जिस तरह वो मंदिर बना, जिस तरह की वैविध्यपूर्ण तकनीक का इस्तेमाल किया गया, जो आज के आधुनिक समय में संभव नहीं है, यह एक अलग दिलचस्प कहानी है। अभी के लिए, इतना ही जानना पर्याप्त है कि एलोरा की सुरक्षा भी अधिक समय तक नहीं टिक पाई।

फिर बारी आती है गोवा पर आक्रमण की, और हमारे पूर्वज मार्कंडेय शास्त्री, जिन्होंने 16वीं सदी में पुर्तगाली शैतानों से लड़ाई लड़ी।

एलोरा के कैलाश मंदिर के बाद काले मंदिर के लिए कोई भी सुरक्षित जगह नहीं रह गई थी, क्योंकि हम पहले ही अनेकों बार स्थान बदल चुके थे। आखिरकार,

1572 ईस्वी में, हमारे पूर्वज मार्कंडेय शास्त्री ने इस बहुमूल्य, दिव्य रहस्य को अपने साथ हमारे देश के शांत प्रदेश, कोंकण में ले जाने का निर्णय लिया। और इसे गोवा के तटीय क्षेत्र में बने काले मंदिर में छिपा दिया।

अपनी सारी सतर्कता और ऑर्डर की पहुंच से रहस्य को सुरक्षित करने के प्रयत्न के बावजूद, वो पकड़े गए। उसके बाद उप-महाद्वीप के इतिहास की सबसे रक्तरंजित पारंपरिक शुद्धि की शुरुआत हुई—गोवा आक्रमण।'

विद्युत गोवा पर हुई चढ़ाई से अच्छी तरह परिचित था। उसने दामिनी को देखा और अपने बाबा की बात में जोड़ा—

'रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा किए गए गोवा आक्रमण के बारे में अजीब रूप से हमारे देश में बहुत कम जानकारी मिलती है, दामिनी। यह धर्मांतरण का एक वीभत्स रूप था। हजारों हिंदुओं और मुसलमानों को जिंदा जला दिया गया, कैद में भूखा मारा गया और उनकी खाल खींच ली गई—ये सब सिर्फ उन्हें उनके मूल धर्म और कोंकणी से दूर करने के लिए किया गया।'

दामिनी ये सब सुन व्यथित हो गई।

'मैंने मिशनरियों की हिंसा और गोवा में पुर्तगाली सिपाहियों के बारे में सुना है, विद्युत, लेकिन मैं नहीं जानती थी कि यह इतना भयावह रहा होगा,' उसने कहा।

'ओह, वो बदतर था,' विद्युत ने कहा, और तय किया कि यातना के बारे में और अधिक उसे नहीं बताएगा।

मठाधीश ने काले मंदिर की कहानी को आगे बढ़ाया।

'हालांकि, उस चढ़ाई का वास्तविक उद्देश्य काले मंदिर की तलाश था। पुर्तगाली राजा की सेना ने गोवा पर धावा बोल दिया। बेरहमी की सनक से मंदिरों को तबाह कर दिया गया। वो निश्चित करना चाहते थे कि उनसे कुछ छूट न जाए, यहां तक कि मस्जिदों को भी नहीं छोड़ा गया।'

द्वारका शास्त्री सांस लेने के लिए रुके। दामिनी ने इस अवसर का लाभ सूचना को समझने में उठाया।

‘मार्कंडेय की अंतिम लड़ाई तो त्याग और दिलेरी की अनुपम गाथा है। लेकिन आज हमारे पास उसके लिए समय नहीं है,’ द्वारका शास्त्री ने कहा।

‘हम समझते हैं, बाबा। लेकिन हम कैलाश मंदिर और साथ पंडित मार्कंडेय शास्त्री की कहानी भी कभी विस्तार से सुनना चाहेंगे,’ दामिनी ने कोमलता से जोर डाला।

‘हां, बिलकुल बिटिया। जब यह सब ख़त्म हो जाएगा, मैं तुम्हें विस्तार से सब बताऊंगा। तुम दोनों को उन भव्य इंसानों और उनके पराक्रम की कहानी पता होनी चाहिए। अभी के लिए, बस ये जान लो कि चाहे पंडित अद्वैत, मार्कंडेय या दुर्गादास हो, सभी ने काले मंदिर के रहस्य की सुरक्षा में अपने प्राणों की आहुति दी। और प्राचीन श्राप के अनुसार ही—उन सबको दर्दनाक, हिंसक मौत प्राप्त हुई।’

‘और मेरे पिता, कार्तिकेय शास्त्री की भी...’ विद्युत बुदबुदाया।

‘हां, मेरे बच्चे,’ द्वारका शास्त्री ने जवाब दिया। ‘लेकिन कार्तिकेय के मामले में जरा फर्क था।

कार्तिकेय ने एक ही बार में, सारे इल्यूमिनाती को जलाकर मारने की कोशिश की थी।’

आर्यवर्त के काले जंगल, 1698 ईसापूर्व

नर-मुंड

यहां तक कि अनुर्वर प्रदेशों के निष्ठुर दस्यु प्रमुखों का भी जी घबरा रहा था।

वो भयावह नर-मुंड के आमंत्रण पर दूर-दराज के देशों से सफर करके आए थे। जबकि वो सभी जानते थे कि दैत्य आदमखोर थे, लेकिन फिर भी स्याह जंगलों में कहरे तक पसरी दैत्यों की सत्ता पर भरोसा नहीं कर पा रहे थे।

भुनते इंसानी मांस की दुर्गंध असहनीय थी। खुले में भुनते मानव अंगों और टुकड़ों को देखकर दस्युओं के अनेकों योद्धा पहले ही उल्टी कर चुके थे और कुछ तो बेहोश हो गए थे। दैत्यों के बच्चे ताजी कटी खोपड़ियों से यूं खेलते फिर रहे थे, मानो वो कोई क्रीड़ा की वस्तु हो और दैत्य महिलाओं ने इंसानी मांस की हड्डी के बने आभूषण पहन रखे थे।

अपनी भलमनसाहत दिखाते हुए, नर-मुंड ने प्रत्येक अधिपति को अपने साथ सौ प्रहरी लाने की अनुमति दी थी। लेकिन जिस पल उन्होंने विशाल दैत्य कैंप में कदम रखे, तभी अधिपति समझ गए थे कि अब से वो दैत्य-स्वामी की रहमोकरम पर ही थे। उन लोगों ने पहली बार दैत्यों को उनके पूरे वैभव के साथ देखा था। उनका शरण स्थल मीलों दूर तक फैला था और उनकी विशाल संख्या आगंतुकों के पसीने छुड़ा रही थी।

वो सौ हजार से भी अधिक थे! नर-मुंड के लिए मरने को तैयार। मानव रक्त के प्यासे।

वो अब काले जंगलों के सम्राट के शिविर के सामने, अग्नि के गिर्द घेरा बनाकर बैठे थे।

उन सभी ने नर-मुंड के बारे में सुन रखा था। वास्तव में काफी सुन रखा था। उसके भीमकाय बदन के बारे में, उसकी बददिमाग क्रूरता के बारे में और उसके क्रोध के बारे में। अब वो उसके इस सड़े हुए परिसर में आने के अपने फैसले पर पछता रहे थे। वो तो अनियंत्रित प्रलय के हाथों निश्चित मौत की चिंता ने उन्हें यहां आने पर विवश किया था, जो अब स्वयं मौत से भी विकराल नजर आ रहा था।

वो जानते थे कि नाव के बिना वो वैसे भी डूब जाने वाले थे। और नर-मुंड ही वो एकमात्र आशा था, जो उन्हें शायद नाव में पहुंचा सकता था।

जो शिविर से बाहर निकला, वो मनुष्य नहीं था। वो एक दानव था।

नर-मुंड कद में लगभग आठ हाथ लंबा था और वो वहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति से विशाल नजर आ रहा था। शाहबलूत के तने सी मोटी कमर के साथ, वो किसी पौराणिक किरदार की भांति लग रहा था, जो सीधे पाताल की गहराइयों से निकलकर आया हो।

उसके डोले वहां उपस्थित अधिकांश आदमियों की कमर से भी मोटे थे। उसकी टांगें ऐसी लग रही थीं मानो गेंडे के ही अंग हों। उसके प्रत्येक कदम से धरती हिलती हुई जान पड़ रही थी। उसके बिना बाल के सिर पर लाल रंग पुता हुआ था, जो मनुष्य का बासी रक्त प्रतीत हो रहा था। वस्त्र के नाम पर उसने कमर पर घुटनों तक की लंबाई की, हाथी की खाल लपेट रखी थी। उसके बलिष्ठ, विकराल धड़ पर पुराणों में वर्णित भयावह दैत्यों के चेहरे गुदे हुए थे, जो अग्नि के नारंगी प्रकाश में बोलते से लग रहे थे।

लेकिन नर-मुंड के व्यक्तित्व का सबसे भयावह तत्व उसके चेहरे के भाव थे। अगर दर्द की कोई अभिव्यक्ति होती, तो वो यक़ीनन इस विशाल नर-भक्षी के चेहरे सी ही होती। उसका बड़ा सिर, उभरी हुई आंखें, सख्त होंठ, सूजे हुए गाल, हमेशा चढ़ी रहने वाली त्योरी और वो सर्दम स्थायी रूप से नशे में रहने वाली आंखें... उसे पीड़ा और मौत का संदेशवाहक बनाती थी।

वो था भी।

‘हमारे घर में आपका स्वागत है, दोस्तों!’ नर-मुंड ने अपनी बांह फैलाकर, नृशंस दैत्य की आवाज़ में चिल्लाकर कहा।

अधिपतियों के पास मुस्कुराकर, सिर हिलाने के अतिरिक्त कोई विकल्प ही नहीं था। उनमें से प्रत्येक अपने प्रांत का भयावह प्रमुख था। लेकिन आज, इस विशाल और बेरहम नर-मुंड के सम्मुख वो सब भीगी बिल्ली बने हुए थे।

दानव ने अपनी बात शुरू की।

‘आज हम यहां इतिहास का सबसे बड़ा सैन्य संगठन बनाने जुटे हैं। साथ मिलकर हम सब न सिर्फ विशाल नौका पर हमला कर, उस पर कब्जा करेंगे, बल्कि प्रलय खत्म हो जाने के बाद इस ग्रह पर शासन भी करेंगे। हमारी सेनाएं साथ में सशस्त्र विशाल समुद्र की तरह चलेंगी, और नाव निर्माताओं के दिल में भय उत्पन्न करेंगी।

मेरे झंडे तले अपना आत्म-समर्पण करने के लिए मैं तुम सबका आभार व्यक्त करता हूं। अब से तुम सब मेरी सुरक्षा में ही रहोगे और युद्ध करोगे।’

वहां सन्नाटा पसरा हुआ था। किसी भी अधिपति को संगठन बनाने का प्रस्ताव नहीं दिया गया था। संगठन तो बराबर के लोगों में बनता है। लेकिन नर-मुंड की योजना कुछ और ही थी।

‘और इस संगठन की शुरुआती रस्म के तौर पर, कृपया दैत्यों की तरफ से ये विनम्र भेंट स्वीकार करें,’ कहते हुए दानव ने अपने साथियों को संकेत दिया।

सभी अधिपतियों तक तश्तरी पहुंचा दी गई।

भुना हुआ इंसानी-मांस!

जबकि नर-मुंड की अविश्वसनीय ढिटाई से स्तब्ध होकर अभी अनुर्वर क्षेत्र के अधिपति एक-दूसरे को देख ही रहे थे, एक युवा अधिपति ने इसका विरोध करने का निर्णय लिया। वो वहीं बैठा था, जहां वो दैत्य दानव खड़ा था। वो स्वयं भी खासा मजबूत इंसान था।

'स्याह जंगल के राजा, आपके दूत ने हमें यह संदेसा नहीं दिया था। आपकी अधीनता स्वीकार करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। और आप ये इंसानी मांस कैसे हमारे लिए परोस सकते हैं? एक बार युद्ध समाप्त हो जाने के बाद, हम लोग आपस में निर्णय लेंगे कि कौन विशाल नौका का नेतृत्व करेगा। आप तो अपनी बात ऐसे रख रहे...'

इससे पहले कि युवा अधिपति अपनी बात पूरी कर पाता, नर-मुंड ने तीर की-सी तेजी से एक मुक्का उसके चेहरे पर मारा। मुक्के का प्रभाव पत्थर की किसी घातक मूसली से भी अधिक भयानक था। युवा अधिपति रक्त की उल्टियां करने लगा, उसके कुछ दांत मुंह से दूर जाकर गिरे और एक आंख की पुतली अपनी जगह से सरककर गाल के ऊपर लटक गई।

दर्द से बिलबिलाता हुआ वो जमीन पर गिरा पड़ा था।

नर-मुंड लापरवाही से छटपटाते हुए आदमी की तरफ बढ़ा, वो उसे संघर्ष करते हुए देख रहा था और उसने धीरे से अपना विशाल पैर उठाकर उस आदमी के सिर पर रख दिया।

आदमी मुक्के से ही अधमरा हो गया था, लेकिन वो जमीन पर गिरकर, दर्द से तड़पने के लिए जीवित था। छोड़ देने की विनती करते हुए वो पागलों की तरह अपने हाथ नर-मुंड के पैर पर पटकने लगा। पर दैत्य धीरे-धीरे उसकी खोपड़ी का चूरा बना रहा था।

दानव यहीं नहीं रुका, उसने कोई दया नहीं दिखाई। वैसे भी वो दया या रहम का मतलब नहीं जानता था। वो बस खंभे जैसे अपने मजबूत पैर से उसकी खोपड़ी को दबाता रहा, जिससे जल्द ही सिर का ऊपरी भाग खुल गया और उस आदमी का चिपचिपा, रक्त से सना मस्तिष्क जमीन पर निकल गिरा।

अधिपति उस दानव की क्रूरता पर भरोसा नहीं कर पा रहे थे। उनके दिल की धड़कन बंद हो गई और उनका रक्त अपनी नसों में जम गया। इससे तो कहीं बेहतर था अपने घर पर रहकर बाढ़ में डूब जाना। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। वो पहले ही उस दैत्य सम्राट के पंजे में फंस चुके थे।

नर-मुंड ने लाल नेत्रों से सबको देखा, वो अपनी खूंखार नजर प्रत्येक अधिपति के चेहरे पर टिका रहा था, जिससे इस क्रूरता का प्रभाव देख सके।

फिर वो किसी अजगर की भांति फुंफकारा।

'क्या कोई और है, जो नौका का नेतृत्व करना चाहता है?'

बनारस, 2017
काली मौत

अंधेरे कमरे में उसके फोन के अलार्म की तेज आवाज गूंजी।

विद्युत अपने बाबा के निर्देश पर, सुबह 4.30 बजे उठ गया था।

आज ही वो दिन था। वो दिन जिसके लिए शास्त्री वंश ने सदियों लंबी जंग लड़ी थी। वो दिन जिसकी चेतावनी रोमी परेरा ने सायनाइड खाने से पलभर पहले, विद्युत को दी थी। वो पल जिसके लिए बाला ने उसके साथ धोखा किया था। भविष्यवाणी में व्यक्त वो पल, जिस पल तक त्रिजट कपालिक ने विद्युत को जीवित रखने का वादा किया था, और एक आंख वाला राक्षस हंस रहा था।

रोहिणी नक्षत्र।

आज रात, लगभग मध्य-रात्रि में, उस नियत रोहिणी नक्षत्र का उदय आकाश में होगा—और उस दुर्लभ पवित्र पल की रचना करेगा। वो ग्रह जिनमें महान अवतार और महत्वपूर्ण मसीहा जन्म लेते हैं। सूर्य, चंद्र, ग्रह और आकाशगंगा, कुछ मिनटों के लिए एक दिव्य संयोजन में आएंगे और काशी को पवित्र कवच में बदल देंगे।

विद्युत अपने बाबा के सम्मुख, एक यज्ञ-कुंड के सामने पालथी मारे बैठा था। अभी दिन पूरी तरह नहीं निकला था और मठाधीश एक हवन करवा रहे थे, जिससे विद्युत को अगले बहत्तर घंटों तक संघर्ष की ताकत मिल सके। हवन काल-भैरव के सुंदर किंतु भयभीत करने वाले मंदिर में था, जो मठ के राक्षस-खंड के केंद्र में, भूतल में बना हुआ था। विद्युत ने इसे पहले कभी नहीं देखा था।

मंदिर की दीवारें काले पत्थर की बनी थीं और उन पर भगवान शिव के गण या अनुयायियों की आकृतियां तराशी हुई थीं। वहां शिव-गण कन्नप्पा की प्रतिमा थी। और पूसल की भी। लेकिन उन सबमें सबसे विकराल प्रतिमा थी भैरव की काली अर्धप्रतिमा, जो मंदिर के केंद्र में स्थापित थी। काशी के लोग मानते थे कि भैरव को सम्मान से पूजा जाना चाहिए, क्योंकि वो प्रभु शिव के द्वारपाल हैं।

देव-राक्षस मठ के अनेकों सक्षम पुजारी पवित्र यज्ञ की विस्तृत तैयारी में व्यस्त थे, द्वारका शास्त्री ने अपनी बात वहीं से शुरू की, जहां उन्होंने खत्म की थी।

'न्यू वर्ल्ड ऑर्डर को रोकना सिर्फ किसी बुरी संस्था को दुनिया पर नियंत्रण करने से रोकना ही नहीं है। गुप्त भ्रातृसंघ की दुनिया की समस्याएं सुलझाने की अपनी ही योजनाएं है, जैसे—आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी... सबकुछ उनके एजेंडे में है। लेकिन इसके लिए जो समाधान वो लागू करना चाहते हैं, वो इतना निर्मम है कि इतिहास में पहले ऐसा कभी नहीं हुआ। वो जनसंख्या विस्फोट को मानवजाति की सबसे बड़ी समस्या के रूप में देखते हैं। तो उनके अनुसार विश्व जनसंख्या की नब्बे प्रतिशत आबादी खत्म करके, वो मानवता की सबसे बड़ी सेवा करेंगे और उसे आगे इस हद तक बढ़ने देने से रोकेंगे।'

यह सब और घृणित होता जा रहा था। इतना विक्षिप्त कि विद्युत ने इसकी कल्पना तक नहीं की थी।

'लेकिन यह पागलपन है, बाबा! क्या ये लोग पागल हैं या प्रलय की चेतावनी देने वाले अंध भविष्यवक्ता? हां, इस ग्रह की कुछ समस्याएं हैं। हां, कुछ जरूरी काम करना चाहिए, इससे पहले कि हम सीमा पार कर जाएं, फिर वो चाहे बढ़ते भूमंडलीय ताप के विषय में हो या धर्म की मतांधता के लिए। लेकिन मानवता की चुनौतियों से मानवता को ही मिटाकर कैसे निबटा जा सकता है?!'

द्वारका शास्त्री ने हाथ उठाकर उन पुजारियों को आशीर्वाद दिया, जो भैरव मंदिर में प्रवेश करते हुए, उनके सामने सिर झुका रहे थे।

'तुम काली मौत या काले प्लेग के बारे में क्या जानते हो, विद्युत?'

देवता इस मध्यकालीन त्रासदी का अचानक नाम सुनकर चौंक गया।

'थोड़ा बहुत, बाबा। मैं जानता हूं कि वो दिल दहला देने वाली घटना थी। काली मौत या काला प्लेग या गिल्टी प्लेग 14वीं और 17वीं सदी के दौरान माहमारी की तरह फैला था। विशेषकर केंद्रीय एशिया और यूरोप में।'

'और लंदन, पेरिस जैसे प्रमुख नगरों में... यहां तक कि मॉस्को तक प्लेग का असर महसूस किया गया था,' दामिनी ने कहा। पुरोहित जी उसे बुला लाए थे। उसे हवन में देवता के साथ बैठना था, और वो भी विद्युत की तरह इतिहास की अच्छी ज्ञाता थी।

मठाधीश सुन रहे थे। विद्युत और दामिनी के रुकने के बाद, द्वारका शास्त्री ने वापस अपनी बात शुरू की।

'तुम सही कह रहे हो। फिर भी मैं कहूंगा कि तुम काली मौत के विषय में कुछ नहीं जानते। कोई नहीं जानता है!' अंतिम शब्द कहते हुए द्वारका शास्त्री उत्तेजित हो उठे।

मठाधीश की आंखें गुस्से से जल रही थीं।

卐

'लाखों जिंदगियां ख़त्म हो गईं। या मुझे कहना चाहिए—प्लेग से प्रभावित होने के बाद यूरोप और एशिया के दसियों लाख लोग मारे गए। यह अच्छी तरह दर्ज और स्वीकृत है कि हमारे इतिहास में ऐसी घटक महामारी और कोई नहीं हुई। आज लोग इससे प्रभावित हुए लोगों की संख्या पर यकीन नहीं कर पाते, लेकिन काले प्लेग ने यूरोप की सागर जनसंख्या में से लगभग तीस से साठ प्रतिशत लोगों का सफाया कर दिया था!'

विद्युत ध्यान से सुन रहा था। हालांकि उसने काले प्लेग के बारे में सुन रखा था और कैसे उसने सदियों तक दुनिया को खौफ में रखा था, लेकिन फिर भी उसे इतने बड़े जान-माल के नुकसान का अंदाजा नहीं था।

द्वारका शास्त्री ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

'मरने वालों की संख्या भयानक थी, आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि गिल्टी प्लेग के दौरान दुनिया किस दौर से गुजरी होगी। ऐसा अनुमान था कि 14वीं सदी में दुनिया की जनसंख्या 450 मिलियन से 350 मिलियन पर आ गई थी। तुम समझे विद्युत, लगभग 75 मिलियन से 200 मिलियन तक लोगों ने प्लेग के सामने घुटने टेक दिए थे। उस एक बीमारी ने दुनिया की जनसंख्या को 25 प्रतिशत तक कम कर दिया था! काली मौत ने पेरिस की आधी जनसंख्या साफ कर दी थी। मिस्र की चालीस प्रतिशत का सफाया। फ्लोरेंस की आधी। लंदन की साठ प्रतिशत। मॉस्को की एक तिहाई। सूची अंतहीन है। जबकि आज सुनने में ये महज आंकड़े लग रहे हैं, लेकिन क्या तुम उस समय की मानवजाति की तकलीफ और दर्द का अंदाजा लगा सकते हो? लाखों बच्चों ने अपने बेबस मां-बाप की बांहों में दम तोड़ दिया था। शहर की सड़कें सड़ी हुई लाशों से भरी पड़ी थीं। रोते हुए बच्चे अपने मां-बाप की लाशों पर घुटनों के बल रेंग रहे थे। दंगे, लूट, हत्या...'

दुनिया को इस आपदा से बाहर निकलने में लगभग दो सौ साल लगे।'

अब तक विद्युत का मुंह सूखने लगा था। वह समझ सकता था कि क्यों गिल्टी प्लेग को भयावह काली मौत का नाम दिया गया।

लेकिन अभी और भी सुनना बाकी था।

'सैकड़ों सालों तक यह माना जाता रहा कि काला प्लेग *येर्सिनिया पेस्टिस* बैक्टीरिया की वजह से हुआ, जो सिल्क रूट से होते हुए, मक्खियों और चूहों के माध्यम से एशिया और यूरोप में फैला। लेकिन काले मंदिर के संरक्षक जानते थे कि यह पूर्ण सत्य नहीं था। ये तो 1984 के अंत में प्राणी शास्त्री ग्राहम ट्विग ने इस सिद्धांत पर विरोध जताया। उसके तर्क के वैज्ञानिक तथ्य और विवरण के बिना, मैं तुम्हें उसका निष्कर्ष बता देता हूं।'

अंतिम देवता अब अपनी पलक भी नहीं झपक रहा था। वो पूरी तरह से अपने परदादा की बातों में जकड़ा हुआ था।

‘ट्विग ने निष्कर्ष निकाला कि गिल्टी प्लेग येर्सिनिया पेस्टिस की वजह से नहीं हुआ था, बल्कि वो एंथ्रेक्स का घातक रूप था।’

‘एंथ्रेक्स? क्या यह वही भयावह बैक्टीरिया तो नहीं जिसका इस्तेमाल जैविक-आतंकवाद में होता है?’ दामिनी ने पूछा।

‘बिलकुल सही, दामिनी। काला प्लेग मानव के इतिहास का सबसे बेरहम जैविक-आतंकवाद था। किसी ने जान-बूझकर, जनसंख्या घटाने की योजना के चलते, बेरहमी से लाखों लोगों को मौत के घाट उतार दिया।’

कुछ पल के लिए खामोशी रही, अब वहां सिर्फ हवन की तैयारी में बिछती चटाई और पूजा सामग्री को रखने की आवाज सुनाई दे रही थी। जो द्वारका शास्त्री ने बताया, उसका विद्युत पर गहरा प्रभाव पड़ा था। लेकिन उसके लिए इसकी पुनर्पुष्टि आवश्यक थी। ऐसा कोई कार्य उसकी सोच से परे और अक्षम्य था।

‘बाबा, क्या आप कह रहे हैं कि ऑर्डर ने मानवजाति को काले प्लेग का आघात दिया था?’ विद्युत ने पूछा, उसकी आंखें आतंक से लाल हो रही थीं।

‘मैं बिलकुल यही कह रहा हूं, विद्युत,’ द्वारका शास्त्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा। ‘और वो दोबारा ऐसा करने वाले हैं। इस बार, और भी बड़े स्तर पर।’

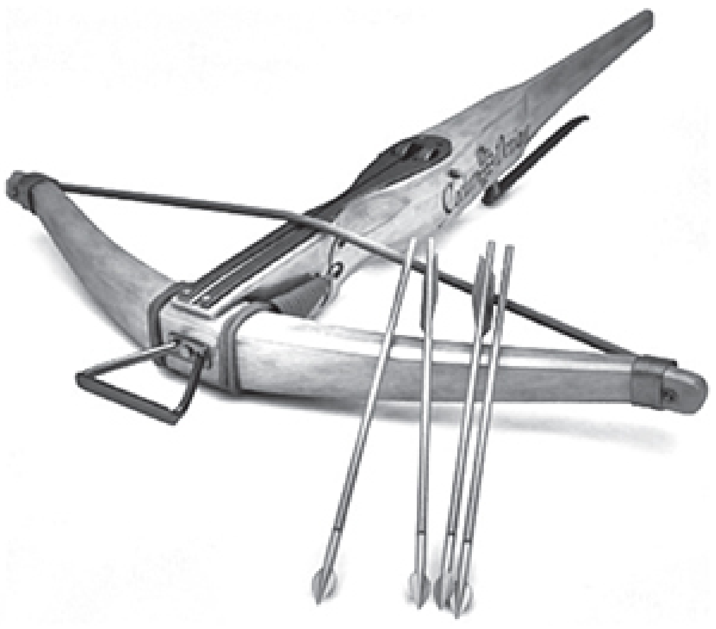

आर्यवर्त के दलदल, 1698 ईसापूर्व
लाखों तीर

प्रचंड को अपने आदमियों के साथ नौका निर्माण-स्थल पर पहुंचे कई सप्ताह बीत गए थे। असुर धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से विशाल नौका के निर्माण और युद्ध बल के लिए मददगार होते जा रहे थे। आर्यवर्त का आखरी आधार शिविर भी अब विशाल नौका पर आ चुका था।

असुर राजा के रूप में मनु को एक अनमोल साथी मिल गया था। प्रचंड को विशाल सेना को संभालने और निर्देशित करने का तीन दशकों का अनुभव था। उसकी दक्षता अब नौका की विभिन्न टुकड़ियों को सहेजने में काम आ रही थी। वहां हड़प्पा के दसियों हजार सैनिक थे। मत्स्य प्रजाति के योद्धा भी इससे कम नहीं थे, जिन्हें मत्स्य अपने प्रिय सत्यव्रत की सहायता के लिए छोड़ गया था। इस प्रभावशाली सेना में प्रचंड के सिपाहियों ने और कुछ हजार जोड़ दिए थे। और

अंत में ध्रुव और उसके कुछ चुनिंदा जांबाज—जिन्हें स्वयं विवास्वन पुजारी ने प्रशिक्षित किया था।

दस्यु अधिपतियों द्वारा नर-मुंड की अधीनता स्वीकार किए जाने की खबर भी मनु तक पहुंच गई थी। मनु उन हालात से भी परिचित था, जिनके तहत यह संगठन हुआ था। इससे मनु की चिंता और बढ़ गई थी। नर-मुंड उससे अधिक अपराजेय होता जा रहा था, जितने की उम्मीद की गई थी।

तो अब सब कुछ ही समय की बात थी। भयानक युद्ध होना ही था। बस देखना यह था कि दैत्यों की विशाल सेना कल आक्रमण करेगी या अगले महीने।

‘हमारा सबसे बड़ा फायदा है कि नौका के मीलों दूर तक हमारे पास समतल, निर्जन पसरा पड़ा है, जिसमें आंखें दूर तक देख सकती थीं,’ तारा ने एक तीर के माध्यम से विशाल नौका के आसपास की भूमि की ओर संकेत करते हुए कहा।

नाव के रक्षक, पूरे जोर-शोर से अवश्यंभावी युद्ध की तैयारी में लग गए थे। सभी सक्षम पुरुषों को नाव निर्माण के अंतिम चरण की जिम्मेदारी बुजुर्गों, महिलाओं और बच्चों पर छोड़कर, हथियार उठाने के लिए कह दिया गया था। दामिनी सेना में भी बड़े पैमाने पर महिलाएं भर्ती होकर, मनु की सेना में उल्लेखनीय रूप से बढ़ोतरी कर रही थीं। प्रकृति और मानव के बीच होने वाले इस ऐतिहासिक युद्ध में हर कोई पूरी जान लगाकर अपना योगदान दे रहा था। हर दिन सभाएं करके काम की प्रगति पर नजर रखी जा रही थी, और जहां संभव होता वहां सुरक्षा मानदंडों को बढ़ाया जा रहा था।

‘ये फायदा कैसे हुआ, तारा? समतल जमीन का मतलब तो है कि दुश्मन की सेना बिना किसी प्राकृतिक व्यवधान के हम तक पहुंच जाएगी। वो बिना समस्या के हम पर चढ़ाई कर देंगे,’ प्रचंड ने सवाल उठाया।

‘हां, ये हो सकता है। लेकिन तब नहीं, अगर हम बाणों की घनी वर्षा से उनका स्वागत करें, जिसमें समतल का एक इंच भी बाण से अछूता न रहे। हम उनके दल के इतने लोगों को मार गिराएंगे कि नौका तक पहुंचने का रास्ता दैत्यों और दस्युओं के लिए कब्रिस्तान बन जाएगा!’

मनु अपनी सुंदर, रूमानी, स्नेही तारा को शेरनी बनता देख मुग्ध था। वो पैदायशी अध्यक्ष थी।

'ठीक है, लेकिन इतनी संख्या में बाणों की वर्षा कैसे की जा सकती है? हमारे पास धनुर्धर तो हैं, लेकिन इतने भी नहीं की बाणों का तूफान आ जाए,' ध्रुव ने बीच में दखल दिया। अगर कोई धनुष और धनुर्धर की बात समझ सकता था, तो वह था।

'मैं जानती हूं। मेरे पास एक योजना है,' तारा ने हमेशा की तरह, पूरे आत्मविश्वास से जवाब दिया।

'दामिनी सेना में अभी हमारे पास पंद्रह हजार योद्धा हैं। हमारे दुश्मन की क्रूरता और व्याभिचार देखते हुए, मैं चाहूंगी कि दामिनी सेना की योद्धा जमीन पर न जाकर नौका से ही उन कसाईयों का सामना करें। और इससे हमें बड़ा तथ्यात्मक लाभ मिल सकता है। अगर हम पूरी सेना को तीन टुकड़ों में बांट दें, और एक समय पर एक ही टुकड़ी लड़े, तो हमारे पास नौका के शीर्ष से लड़ने के लिए पांच हजार धनुर्धर उपस्थित होंगे। और वो नौका परिसर के समस्त क्षेत्र को घेर लेंगी। इसके अलावा हमारे पास ध्रुव की टुकड़ी के और सात हजार धनुर्धर हैं, तो युद्ध के समय हमारे पास लगभग दस हजार धनुर्धर हर समय तैयार रहेंगे!'

तारा ने कमरे में इस उम्मीद से देखा कि शायद उसके प्रस्ताव पर कुछ सहयोग मिले।

'विवेकशून्य बातें मत करो, तारा,' ध्रुव ने अपने आसन से उठते हुए कहा।

वो तारा से इस तरह से बात कर सकता था। क्योंकि वो बचपन के मित्र थे।

'शायद तुम भूल गई हो कि तुम्हारी दामिनी सेना में कोई भी प्रशिक्षित धनुर्धर नहीं है। दैत्य और उनकी सेना दक्ष घुड़सवार हैं। वो बहुत तेज गति से दौड़ रहे होंगे और वो अस्थिर लक्ष्य होंगे। तो नौसिखिए धनुर्धरों से तुम उन्हें रोक पाने की कैसे उम्मीद कर सकती हो?'

‘काश तुम अपने दिमाग का थोड़ा और इस्तेमाल कर लेते, ध्रुव,’ तारा ने आंख चढ़ाते हुए विरोध जताया।

वो ध्रुव से इस तरह बात कर सकती थी। वो बचपन के मित्र जो थे।

‘हम धनुर्धरों को दो विभागों में बांट देंगे। प्रशिक्षित धनुर्धर, तुम्हारे धनुर्धर, नौका के निचले माले पर स्थित होंगे। दूसरी तरफ, दामिनी सेना नौका के ऊपरी माले पर रहेगी। उन्हें बस इतना करना होगा कि बाणों की खेप ऊपर आसमान में चलानी होगी, अपने बाणों को तोप के गोले की तरह चलाते हुए। उसके लिए अधिक प्रशिक्षण की जरूरत नहीं होगी, और बस उन्हें सामने के विस्तृत मैदान को नियंत्रित करना होगा। उनके बाण जहां भी गिरेंगे, अपना निशाना ढूंढ़ लेंगे। दुश्मन के जो घुड़सवार और पैदल सिपाही उनके बाणों से बच निकलेंगे और नौका की तरफ बढ़ेंगे, उन्हें तुम्हारे धनुर्धर चुनकर मार डालेंगे। क्या तुम्हें नहीं लगता ध्रुव, अपने धनुर्धरों की मदद से ही हम दुश्मन की आधी सेना का सफाया कर देंगे! फिर हमारे घुड़सवार और पैदल सिपाही बाकी के दुश्मनों से भिड़ जाएंगे!’ तारा ने अपनी आंखें चौड़ी कर, बांहें फैलाते हुए पूछा।

ध्रुव मुस्कुराया और उसकी प्रशंसा में भवें चढ़ाकर, मनु को देखा। मनु बस कंधे उचकाकर हंस दिया।

दक्ष धनुर्धर फिर तारा की ओर मुड़ा और नाटकीय अंदाज में कहा।

‘ठीक है, देवी... ऐसा ही करते हैं!’

‘धन्यवाद ध्रुव,’ तारा ने कहा। ‘अब केवल एक ही परेशानी है।’

ध्रुव ने त्योरी चढ़ाई। ‘और वो क्या है?’

‘हमें बहुत अधिक बाणों की आवश्यकता होगी।’

बनारस, 2017

‘कार्तिकेय ने इल्यूमिनाती को जलाने की कोशिश की’

जब पवित्र हवन पूर्ण हुआ, तो विद्युत ने अपने बाबा के पैर छूकर उनका आशीर्वाद लिया। सनातन धर्म या सामान्य हिंदू परिवारों में भी ये प्रचलन है कि बच्चे अपने बड़ों के पैर छूकर आशीर्वाद लें।

अगले दो दिन और दो रातों के लिए, देवता को अपने सारे आशीषों की आवश्यकता पड़ने वाली थी।

‘हम सबके जाने की प्रतीक्षा करेंगे, विद्युत,’ वृद्ध ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘अब समय आ गया है कि तुम अपनी नियति का सामना करो।’

दामिनी जाना नहीं चाहती थी, लेकिन वो भांप गई थी कि इस समय दोनों शास्त्री पुरुषों को एकांत चाहिए।

‘कृपया मुझे जाने की अनुमति दें, बाबा,’ उसने उठकर अपने हाथ जोड़कर, प्रणाम करते हुए कहा।

द्वारका शास्त्री ने मुस्कुराकर, हल्का-सा सिर झुकाकर दामिनी को अनुमति दी। विद्युत ने भी मुड़कर दामिनी को प्यार से देखा, और वो भैरव मंदिर से बाहर निकल गई।

‘बाबा...’ विद्युत ने कहा, ‘पुजारियों को पूजन समाप्त करने में अभी कुछ समय लगेगा। क्यों न हम उस कोने में बैठकर, अपनी बात शुरू करें? मैं अभी तक नहीं

जानता हूं कि आखिर क्यों मेरे पिता कार्तिकेय शास्त्री का वध किया गया, हालांकि मैं उस पल की कल्पना कर सकता हूं।'

काल-भैरव मंदिर में अभी भी हवन का धुआं फैला हुआ था। विद्युत को अगरबत्ती, गेंदे के फूल और कपूर की गंध से युक्त यज्ञ का ये धुआं हमेशा सुहाता था। यह उसे शांत भाव की अनुभूति कराता है। यह दिव्यता जैसा ही एक भाव था।

'काली मौत के बाद मठ और ऑर्डर के बीच की लड़ाई गहरा गई। प्लेग ने हम लोगों को बता दिया था कि गुप्त भ्रातृसंघ उससे कहीं अधिक अधम था, जितना हमने सोचा था। उस समय शास्त्री वंशजों ने लड़ाई को ऑर्डर के दरवाजे पर ले जाने का निर्णय लिया। और फिर हत्याओं की शुरुआत हुई...' मठाधीश ने कहा।

'किस प्रकार की हत्याएं, बाबा?'

'उसे जाने दो, विद्युत। हिंसा को लेकर मैं तुम्हारे विचार जानता हूं। त्रिजट के वध के समय मैंने तुम्हारी प्रतिक्रिया देखी थी। वैसे, बलवंत ने मुझे बताया कि तुमने एक-आंख वाले दानव ब्रह्मानंद को जाने दिया। वह एक बड़ी गलती थी, विद्युत। उसका तुम्हें एक दिन पछतावा होगा। खैर, हत्याओं में और गहराई से नहीं जाते। बस ये जान लो कि दोनों पक्ष एक दूसरे का शिकार कर रहे थे। और तुम्हारे शूरवीर पिता कार्तिकेय ने वही किया, जिसकी उनसे उम्मीद थी। जिसका उसे आदेश दिया गया था।

वैसे भी वो सब पूर्व निर्धारित था, विद्युत। रक्त धारा का अभिशाप याद है न। उसने मानवजाति को अनंत पीड़ा और हिंसा का श्राप दिया था। न्यू वर्ल्ड ऑर्डर भी उस अभिशाप का एक प्रारूप ही था।'

'उनकी कहानी बताइए, बाबा। हमारे पूर्वजों की शौर्यगाथा सुनना अपरिहार्य है—विवास्वन पुजारी, सत्यव्रत मनु, अद्वैत शास्त्री, दुर्गादास शास्त्री, मार्कंडेय शास्त्री... और फिर पापा। वो सब स्तब्ध करने वाला है, कृतज्ञ।'

द्वारका शास्त्री मुस्कुराए ।

‘क्या तुम जानते हो कि हमारे वंश में कौन सबसे महानतम होगा, विद्युत? वो तुम हो, मेरे बच्चे। तुम ही भविष्यवाणी में व्यक्त योद्धा हो। अंतिम देवता! हम सबसे कहीं अधिक महान!’

‘ओह प्लीज, बाबा...’ विद्युत ने शर्मिंदा होते हुए कहा। ‘मुझे नहीं पता कि क्यों आप, पुरोहित जी और मठ में सब लोग ये कहते हैं। मैंने तो अपने पूर्वजों की तुलना में कुछ भी महान कार्य नहीं किया है। क्यों, मैंने तो आपकी महानता को छू पाने तक के लिए कुछ नहीं किया है, बाबा।’

‘तुम सोचते हो कि उन किराये के हत्यारों से अकेले लड़ना महानता नहीं थी, विद्युत? क्या तुम किसी ऐसे इंसान को जानते हो, जो ये कर सके? रोमी परेरा का क्या, वो हत्यारा जो पिछले डेढ़ दशक के हाई-प्रोफाइल हत्याओं का छिपा चेहरा बना रहा? क्या तुम जानते हो कि मसान-राजा लगभग अपराजेय था? तुमने धरती के सबसे भयानक तांत्रिक को ख़त्म किया। और मत भूलो विद्युत, मैं अगर आज सांस ले रहा हूं और जीवित हूं, तो वो तुम्हारी ही दिव्यता थी, जिसने मेरी रक्षा की। स्वयं को कम मत आंको, मेरे बच्चे।’

विद्युत मुस्कुराया और विनम्रता से असहमति में सिर हिलाया।

‘मैं आपकी सहायता के बिना त्रिजट कपालिक को नहीं हरा पाता, बाबा। दूसरी दुनिया से आई डाकिनियों से मैं नहीं लड़ पाता। शिव-कवच पर जो आपकी पकड़ है, वो मेरी नहीं है। तो, वो सब मेरा अकेले का नहीं था बाबा। वो हमारा था।’

द्वारका शास्त्री प्रसन्नता से हंसे। उन्हें कुछ याद आ गया था।

‘तो अब तुम मानते हो कि देवता को मदद चाहिए होती है। उस तर्क से तो, ईश्वर को भी सहायता चाहिए होगी, है न विद्युत? तुम जानते हो न मेरे बच्चे... यह अच्छा है कि तुम कैसे टीमवर्क के बारे में बात करते हो, और कैसे उसकी सराहना करते हो!’ उन्होंने हंसते हुए कहा।

विद्युत कुछ भी समझ नहीं पा रहा था और उसने हैरान नजरों से बाबा को देखा, और वृद्ध की ख़ुशी पर अपनी भी हंसी नहीं रोक पाया।

‘विद्युत... तुम भी किसी की टीम में हो। इसीलिए तुम्हें भेजा गया है!’

देवता को समझ नहीं आया कि उसके बाबा ईश्वर की मदद या फिर उसे किसी की टीम का हिस्सा क्यों कह रहे थे। उसने विषय बदलकर, वो जानने का निर्णय लिया, जिसके लिए वो लंबे समय से उत्सुक था।

‘अब मुझे मेरे पिता के बारे में बताओ, बाबा।’

‘हां, मेरे बच्चे। मुझे उम्मीद है कि तुम अब तक समझ गए होंगे कि कार्तिकेय की हत्या के पीछे कौन था। ये वही काली ताकत थी जिसने अद्वैत, मार्कंडेय और दुर्गादास शास्त्री को ख़त्म किया—न्यू वर्ल्ड ऑर्डर! लेकिन जान लो, विद्युत—रक्त दोनों तरफ से बहा। इस परिवार का प्रत्येक पुत्र, जिसने काले मंदिर के रहस्य की सुरक्षा करते हुए जान दी, उसने ऑर्डर के बहुत से महारथियों को भी मिट्टी में मिलाया। जरूरत पड़ने पर हमारी तरफ से कई सनसनीखेज राजनीतिक हत्याएं भी की गईं। दूसरे अवसरों पर, तंत्र-मंत्र के स्तर पर भी मोर्चा संभाला गया। कुछ मौकों पर छिटपुट लड़ाइयां भी काम आईं।

हमारा पलड़ा तब भारी हुआ जब आखिरकार कार्तिकेय ने संयुक्त राज्य अमेरिका में घुसकर उनसे लोहा लेने का निर्णय लिया। उस समय ऑर्डर को शास्त्री वंश के बहे हर रक्त की बूंद का हिसाब देना पड़ा। लेकिन इल्यूमिनाती और दूसरे गुप्त संस्थानों ने साथ में जो न्यू वर्ल्ड ऑर्डर तैयार किया था, वो कार्तिकेय पर भी हावी रहा। उन्होंने आखिरकार अपने सबसे बड़े दुश्मन को ढूंढ़ निकाला, और उसे घेरकर बरसात की एक रात में, सेन फ्रांसिस्को में मार डाला। उस क्षत-विक्षत और अर्ध-मृत अवस्था में भी, मेरे पोते और तुम्हारे पिता, शूरवीर कार्तिकेय शास्त्री ने, अंतिम काले मंदिर का स्थान उन्हें नहीं बताया।’

विद्युत वहां स्तब्ध बैठा था। वो फूट-फूटकर रोना चाहता था, लेकिन वो कर न सका। क्रोध और बदले से उसके दिमाग की नसें फटने को तैयार थीं।

‘तो, तुमने देखा, बेटा,’ द्वारका शास्त्री ने भारी आवाज में अपनी बात आगे बढ़ाई, ‘प्रत्येक मायनों में यह एक युद्ध है। वो युद्ध जो सैकड़ों सालों से चला आ रहा है। और हम, शास्त्री वंश, हमने इस सफर में अपना सबकुछ गवां दिया है।

लेकिन मैं तुम्हें भरोसा दिलाता हूं, विद्युत, ऐसे हालात में भी हमने कभी किसी निर्दोष के प्राण नहीं लिए हैं। कभी भी हम मानवजाति के कल्याण से इतर किसी से नहीं लड़े। सैकड़ों सालों में एक बार भी, हमारे पूर्वजों ने औचित्य और धर्म का त्याग नहीं किया।'

अब जाकर विद्युत को युद्ध की वास्तविक प्रकृति का अहसास हुआ। विद्युत को तो बस अपने पिता, कार्तिकेय शास्त्री मृदु-भाषी, हमेशा मुस्कुराते रहने वाले, सज्जन के रूप में याद थे, जो रात में विद्युत को परियों की कहानी पढ़कर सुनाया करते थे। और यहां यह कड़वा सच था। हत्याएं, साधना, तंत्र, ऑर्डर के माहिरों को मारना... यह और भी जटिल होता जा रहा था, इतना जटिल कि उसने कभी अपने मन में सोचा भी नहीं था। जब भी द्वारका शास्त्री सदियों पुराने रक्त संघर्ष की बात करते, विद्युत का दिल इसके वास्तविक मायने जानता था। बस उसके लिए यह स्वीकार करना मुश्किल था कि उसके पिता, उसके दादा और उसके सारे पूर्वजों के हाथ रक्त से रंगे थे, फिर वो रक्त चाहे नेकी की राह में ही क्यों न बहाया गया हो।

विद्युत के पास विकल्प था। वो अभी यहां से सबकुछ छोड़कर निकल सकता था, मानो यह कोई डरावना सपना हो और अपने परदादा की तरफ से पीठ फेर लेता, और मठ के हजारों साल पुराने आतंक और हिंसा की कहानी भुला देता... चला जाता यहां से कभी न लौटने के लिए। वो जाकर अपने आलीशान पेंटहाउस में दामिनी के साथ एक शानदार, महानगरीय जिंदगी जी सकता था, पूरे ऐशोआराम से।

या फिर वो युद्ध का मार्ग अपनाकर, अपने पूर्वजों की हिंसक विरासत का हिस्सा बन, उस प्राचीन भविष्यवाणी को पूर्ण करता।

उसी पल, विद्युत ने अपनी नियति को स्वीकार किया। उसने उन नजरों से द्वारका शास्त्री को देखा, और वृद्ध को अपना जवाब मिल गया। देवता ने अपने दांत भींचे, आंखें बंद की और गर्व से अपने पूर्वजों की विरासत को उनके वास्तविक रूप में स्वीकार किया। उसने कुछ पल के लिए अपने उन महान पूर्वजों के सम्मान में सिर झुकाया, जिन्होंने मानवता की वेदी पर एक के बाद एक अपनी बलि चढ़ाई। जब उसने अपनी आंखें खोलीं, वो कोई और था।

वो कलयुग के सबसे बड़े रहस्य का अंतिम संरक्षक था।

काले मंदिर के रहस्य का।

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व
नरभक्षी पिशाच

नौका ऐसी प्रतीत हो रही थी मानो धरती पर सबसे स्याह रात उतर आई हो। लंबाई और ऊंचाई में मीलों तक फैली वो नौका शक्तिशाली हिमालय पर्वत से भी बड़ी थी, और दूर से देखने पर यह बहुत बड़ी काली चट्टान नजर आ रही थी।

उस पर प्रकाश के छोटे से कण को भी अनुमति नहीं थी। कहीं भी एक मशाल तक नहीं जल रही थी। मनु, ध्रुव, तारा और प्रचंड ने अंधेरे को एक रणनीति के रूप में उपयोग करने का निर्णय लिया था। नौका के दसियों हजार निवासियों तक यह संदेश भिजवा दिया गया था—उन्हें पूरा दिन और रात अंधेरे में ही बितानी थीं।

कारण स्पष्ट था। दस्युओं की भारी संख्या के साथ दैत्यों का हमला अब कभी भी हो सकता था। नौका के आसपास, कुछ ही मील की दूरी पर, अचानक ही दैत्यों के सैकड़ों शिविर प्रकट हो गए थे। यह स्पष्ट हो चुका था कि नरभक्षी और दस्यु नाव को दसों दिशाओं से घेर रहे थे।

नौका के निवासी और योद्धा न्यायसंगत रूप से घबराए और डरे हुए थे, लेकिन वो बिना तैयारी के नहीं थे। वास्तव में, अब पूरा जहाज एक विशालकाय किला बन चुका था, जो किसी भी पल दुश्मन से लोहा लेने के लिए तैयार था।

गहन अंधेरे में, हमलावर नौका के शीर्ष पर खड़े हजारों, युद्ध के लिए तैयार धनुर्धरों को नहीं देख पा रहा था। मच्छलू प्रजाति की बड़ी सी घुड़सवार और पैदल

सेना भी रात के समय ही एकत्र होकर, गुप्त कक्षों में बैठकर प्रतीक्षा कर रही थी। इसकी कल्पना दैत्य अपने सपने तक में नहीं कर सकते थे।

नौका के मध्य में बड़ी सी, अस्थायी रसोई बनाई गई थी। वो इतनी गहराई में थी कि खाना पकाने की अग्नि नौका के बाहर किसी को दिखाई नहीं पड़ रही थी। ये इसलिए किया जा रहा था, जिससे युद्ध के लिए तैयार खड़े हजारों योद्धाओं को समय-समय पर गर्म सब्जी और चावल दिया जा सके। मांस की गाढ़ी तरी और चावल भी लगातार बड़ी-बड़ी देग्चियों में पकाए जा रहे थे। ये असुर सिपाहियों के लिए था, जिससे वे आगे आने वाले मुश्किल समय का सामना कर सकें।

विशाल नौका के प्रत्येक माले पर, कुछ ही सप्ताह पहले पहुंचे नए सामान का भार था। बाण। और जैसा कि तारा ने योजना बनाई थी—लाखों बाण। प्रत्येक धनुर्धर के पास इस समय एक हजार से अधिक बाण थे, जिन्हें मारने का अवसर किसी भी पल मिल सकता था।

लेकिन युद्ध के लिए की गई दूसरी तैयारियों से बढ़कर, मनु उस शस्त्र पर अधिक निर्भर था, जो अलौकिक नीलवर्णी, मत्स्य ने जाने से पहले उसे दिया था।

'इसका उपयोग तब करना, जब लगे सब समाप्त हो गया है,' मत्स्य ने कहा। 'और अग्नि देव तुम्हारी सहायता के लिए आ जाएंगे।'

उसने इसका प्रदर्शन सत्यव्रत और ध्रुव को एक गुप्त स्थान पर करके दिखाया था, और उसके बाद उस रसायन के अनेकों डिब्बे उसे दे दिए थे।

गंधक।

सोमदत्त अपना आहार लेते समय असामान्य रूप से चिंतित दिखाई दे रहा था, और वो प्रत्येक निवाले के बीच कई पल व्यतीत कर रहा था। उसके पास बैठा मनु, शांति से अपना चावल का रस पी रहा था। अब तक उनके नेत्र अंधेरे में देखने के अभ्यस्त हो गए थे। इसीलिए, अंधेरे कक्ष में भी सत्यव्रत ने अपने विश्वसनीय सलाहकार की चिंता को भांप लिया था।

‘कोई बात शायद आपको परेशान कर रही है, सोमदत्त जी...’ मनु ने पूछा।

वह जानता था कि सोमदत्त उन लोगों में सा था, जो मानवजाति के भविष्य में निर्धारित भूमिका निभाएंगे। उसके बिना यह विशाल नौका, इस अद्वितीय जहाज का निर्माण नहीं हो पाता। इस असाध्य कार्य को पूर्ण करने के लिए, पिछले कुछ महीनों से साथ काम करते हुए, उनके बीच का स्नेह और एक-दूसरे के प्रति सम्मान और बढ़ गया था। लेकिन इससे भी अधिक, सोमदत्त को देख मनु को उसके पिता विवास्वन पुजारी की याद आती थी। वो एक पल के लिए भी भुला नहीं पाया था कि उस मुश्किल समय में उसके पिता के साथ अकेले सोमदत्त ही खड़ा था, जब उसके पिता की परछाई तक ने उसका साथ छोड़ दिया था। मनु हड़प्पा और नौका के मुख्य अभियंता को अपने पिता समान ही स्नेह करता था। विवास्वन, संजना और मत्स्य के चले जाने के बाद सोमदत्त ही उसका एकमात्र अभिभावक था। बदले में, मुख्य अभियंता भी इस युवा पुजारी-राजा को अपने पुत्र के समान ही चाहता था।

‘हां, मैं परेशान हूं, मनु। मैं अपने आसपास युद्ध की तैयारी देख रहा हूं और यह वास्तव में दिल को छू लेने वाला है। हड़प्पा सेना, अनुपम मत्स्य-प्रजाति के योद्धा और असुर सैनिकों को मिलाकर हमारे पास छोटा ही सही, लेकिन आसपास खड़े नरभक्षियों से भिड़ने का वास्तविक अवसर है। तुम, ध्रुव, तारा और प्रचंड जैसे दक्ष योद्धा इस अंतिम युद्ध का नेतृत्व करोगे, जो प्रलय से पहले इस धरती पर छिड़ने वाला है।’

‘आपसे ये शब्द सुनकर मुझे भरोसा मिला, सोमदत्त जी। लेकिन फिर ऐसी क्या परेशानी है कि आप अपने सादा किंतु स्वादिष्ट भोजन तक नहीं ले पा रहे?’

सोमदत्त ने मुड़कर मनु को देखा। सारे अंधेरे के बाद भी, मनु मुख्य अभियंता के चेहरे पर पसरा डर साफ़ देख पा रहा था।

‘नर-मुंड, मनु... हम उस दानव नर-मुंड से लड़ने के लिए तैयार नहीं हैं!’

·||卐||·

‘तुम सब नहीं समझते हो... वो इंसान नहीं है!’ नौका के युद्ध-कक्ष में बैठे व्यक्तियों से चिल्लाकर सोमदत्त ने कहा।

भोजन के दौरान उसने मनु को जब अपनी चिंता बताई थी, तो उसके तुरंत बाद मनु ने युद्ध अध्यक्षों के साथ एक तत्कालीन सभा बुला ली थी। उसके करीबी और विश्वस्त मित्र, ध्रुव, तारा और प्रचंड वहां उपस्थित थे। और सप्तऋषि भी।

'नर-मुंड का जन्म किसी प्राकृतिक प्रजनन में नहीं हुआ है। मैं नहीं जानता कि वो जो है, वो कैसे बना, लेकिन उसमें जरूर कोई जैविकीय भिन्नता है।'

युद्ध-कक्ष में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ध्यान से सोमदत्त को सुन रहा था।

'क्या तुमने कभी सोचा है कि महान विवास्वन पुजारी और बुद्धिमान पंडित चंद्रधर ने क्यों हड़प्पा के प्रशासन को आर्यवर्त के स्याह जंगलों से दूर रखा था? सोचो जरा इस बारे में। यहां तक कि हड़प्पा के झंडे तले विशाल सेना, और अपनी दिव्य वीरता के बाद भी मेरे मित्र विवास्वन पुजारी ने कभी उन भयावह जंगलों में कदम नहीं रखा था,' सोमदत्त ने आगे कहा।

उपस्थित जनों को अब धीरे-धीरे वास्तविकता का आभास हो रहा था। यकीनन, हड़प्पा का सूर्य अपने महानगर को किसी चीज से बचाने की कोशिश कर रहा था। उन स्याह जंगलों में कुछ तो भयानक था। सोमदत्त ने अब इस सत्य से पर्दा उठाया था।

'यहां तक कि हड़प्पा के सूर्य, शक्तिशाली दानव-राजा सुरा का वध करने वाला, सेना का विध्वंसक, अपराजेय विवास्वन पुजारी भी उस नरभक्षी पिशाच नर-मुंड से भिड़ंत नहीं चाहता था!' बुद्धिमान अभियंता ने अपनी बात समाप्त की।

इस अंतिम, अनजान सूचना ने मनु को चिंतित कर दिया था।

अत्यधिक चिंतित।

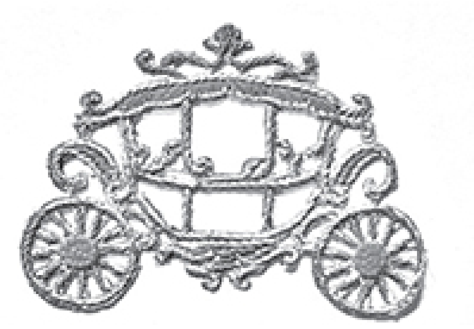

बनारस, 2017
रोहिणी नक्षत्र

‘पवित्र नक्षत्र बस अब शुरू होने ही वाला है, गुरुदेव!’ भैरव मंदिर के सफ़ेद दाढ़ी वाले एक वयोवृद्ध पुजारी ने घोषणा की। विद्युत और द्वारका शास्त्री को देख उसकी आंखें ख़ुशी से भर आई थीं।

मठाधीश ने आंखें बंद कर, प्रभु विष्णु की स्तुति में एक प्रार्थना बुदबुदाई और वृद्ध पुजारी की तरफ सिर हिलाया। ‘नियत समय के लिए तैयार हो जाइए, महंत योगराज। देवता तैयार हैं!’

देव-राक्षस मठ के दो पुरुषों के संवाद से विद्युत कुछ हैरान था। इससे पहले कि वो कुछ पूछ पाता, भगवा वस्त्रधारी दर्जनों पुजारियों ने काल-भैरव मंदिर में प्रवेश किया, और वो सब संयुक्त स्वर में मंत्रोच्चार करने लगे और मुट्ठियों में भरकर मंदिर के प्रत्येक कोने में हवन सामग्री और पुष्प चढ़ाने लगे। पवित्र पुजारी इतनी लय में प्रार्थना बुदबुदा रहे थे, मानो वो एक ही व्यक्ति हों। इसका परिणाम स्पष्ट था, मंदिर की प्रत्येक दीवार, प्रत्येक स्तंभ और प्रत्येक कण सकारात्मक ऊर्जा से पूर्ण था।

‘मेरे साथ चलो, विद्युत। समय आ गया है, मेरे बच्चे। वो पल जिसकी प्रतीक्षा ये पृथ्वी कब से कर रही थी। वो पल जिसके लिए हम सदियों तक रक्त बहाते रहे।

मत्स्य की भविष्यवाणी का पल। काले मंदिर का रहस्य तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है, ओ देवता!’ तेज मंत्रोच्चार के बीच, द्वारका शास्त्री ने चिल्लाकर कहा, और विद्युत को पीछे आने का संकेत दिया।

उसी पल दामिनी ने सम्मानित मंदिर में प्रवेश किया, वो पुजारियों को आश्चर्य से देख रही थी। मठाधीश द्वारा बाहर भेजे जाने के बाद से कई घंटे बीत गए थे। उसी के पीछे दूसरे लोग भी थे—पुरोहित जी, नैना, गोवर्धन, बलवंत, सोनू और मठ के दूसरे वरिष्ठ पुजारी। अब तक आरती में बहुत से शंखों और घंटियों का इस्तेमाल हो रहा था। वो उन आवाजों को पवित्र मंत्रोच्चार के साथ उठा रहे थे।

विद्युत स्वयं एक सक्षम योगी और तांत्रिक था। उसने अब उस तेज, मुग्ध करने वाले मंत्रोच्चार पर ध्यान लगाया और तुरंत ही उसे पहचान गया।

पुजारी संयुक्त रूप से प्रभु शिव की प्रार्थना, रूद्र पथ गा रहे थे!

देवता को अब एक बात तो स्पष्ट थी। जिस मंदिर में वो खड़े थे, उसे मठाधीश और पुजारियों ने किसी असाधारण कार्य के लिए ही तैयार किया था। किसी अलौकिक कार्य के लिए।

किसी अधिदैविक कार्य के लिए।

विद्युत मठ के इस भाग में कभी नहीं आया था। सच पूछो तो वो जानता भी नहीं था कि राक्षस खंड में ऐसी घुमावदार गलियां और गलियारे भी हो सकते हैं। द्वारका शास्त्री उसे प्रभु काल भैरव की प्रभावशाली अर्धप्रतिमा के पीछे बने काले गलियारे में ले गए। विद्युत उस प्रतिमा के पीछे बने प्रवेशद्वार को देखकर हैरान रह गया। यह दरवाजा मंदिर के किसी भी कोने से दिखाई नहीं पड़ता था।

वो अब उसके अंदर जा रहे थे, भूल-भुलैया जैसे बने पत्थर के बरामदे में मुड़ गए। उनके आगे-आगे बलवंत चल रहा था, जो हाथ में मशाल लिए उस अंधेरे गलियारे को रौशन कर रहा था। भैरव मंदिर के प्रांगण से आती मंत्रोच्चार और शंखनाद की आवाज अब जरा धूमिल पड़ गई थी। विद्युत समझ पा रहा था कि यह स्याह गलियारा अब धीरे-धीरे नीचे उतर रहा था, उन्हें राक्षस-खंड के भूतल में ले जाते

हुए। द्वारका चलते-चलते मंत्रोच्चार कर रहे थे, जबकि पुरोहित जी और गोवर्धन सुगंधित सामग्री और पुष्प वर्षा कर रहे थे।

क्रमश: मद्धम होते प्रकाश में, विद्युत का ध्यान किसी चीज पर गया। देवता दामिनी की ओर मुड़ा, जो उसके दाहिनी तरफ थी, और खामोशी से गलियारे की दीवारों और छत की तरफ संकेत किया। गलियारा अब किसी सुरंग की तरह प्रतीत हो रहा था।

दामिनी समझ नहीं पाई कि विद्युत क्या कहने की कोशिश कर रहा था। उसने अपनी भवें उठाकर, अपनी उलझन जताई।

‘प्रत्येक कुछ कदमों बाद पत्थरों का रंग और गहरा होता जा रहा है,’ वह बुदबुदाया।

‘और...?’ दामिनी ने भी फुसफुसाकर कहा।

‘वो काले होते जा रहे हैं।’

वो लंबा गलियारा था। कई मिनट गुजर गए थे और वो अभी भी भूतल में बनी इस पथरीली भूल-भुलैया में भटक रहे थे, देव-राक्षस मठ की गहराई में। बलवंत, पुरोहित जी और स्वयं मठाधीश बड़ी निश्चिंतता से कदम रख रहे थे। विद्युत ने अपने मन में सोचा।

ऐसा लग रहा था कि वो सर्पीली राह पर बढ़े जा रहे थे।

सर्पीली।

विद्युत को कोई अंदाजा नहीं था कि वो उस अद्भुत सच के कितना करीब पहुंच गया था, जो उनका इंतजार कर रहा था!

‘बाबा, उन तीनों रोमी, बाला और फिर त्रिजट ने कहा था कि ऑर्डर ने मुझे इतने सालों तक जिंदा रखा था। अगर मैं उनके लिए इतनी बड़ी चेतावनी था, अगर मैं ही भविष्यवाणी में व्यक्त वो देवता था, जो उनकी विशाल परियोजना के आड़े आने

वाला था, तो उन्होंने मुझे पहले ही क्यों नहीं मार दिया? अगर वो सालों पहले मेरी कंपनी में, मेरे घर में बाला को भेजने में कामयाब रहे, अगर वो अंतर्राष्ट्रीय नेताओं और सैन्य तानाशाहों को अपने रास्ते से हटा देते थे, अगर वो नागरिक युद्ध छिड़वा सकते थे और क्रांतियों को फंड दे सकते थे—तो उन्होंने बचपन में ही मुझे क्यों नहीं मारा? या फिर उसके बाद?'

'मुझे उम्मीद थी, विद्युत कि तुम ये सवाल पूछोगे,' द्वारका शास्त्री ने बिना मुड़े जवाब दिया। वह सुरंग की श्रवण संबंधी क्षमता जानते थे, और उन्होंने इतनी ही तेज आवाज में जवाब दिया था कि उनका प्रतिभाशाली परपोता, और उनके साथ आया हुआ छोटा सा दल वो बात सुन सके। वो सब राक्षस-खंड के उदर में जा रहे थे। उनमें से प्रत्येक मठ का और जघन्य ऑर्डर के विरुद्ध युद्ध के लिए विश्वसनीय स्तंभ थे।

'जवाब स्पष्ट है, विद्युत—काले मंदिर का रहस्य तुम्हारे बिना नहीं खोला जा सकता। या दूसरे शब्दों में कहें, तुम ही वो अकेले इंसान हो जो इस दिव्य रहस्य पर से पर्दा उठा सकते हो। तुम्हारे सारे पूर्वजों, कार्तिकेय को भी, इसीलिए यातना देकर मारा गया क्योंकि ऑर्डर काले मंदिर का स्थान पता करना चाहता था। लेकिन तुम... तुम उनके लिए बहुत कीमती थे। तुम आज भी हो!'

वो कुछ और पल शांति से चले, दूर चल रहे रूद्र पथ का उच्चार अभी भी सुरंग की मोटी दीवारों से होते हुए उनके कानों में पहुंच रहा था।

'लेकिन बाबा ये मानना मुश्किल है कि अगर यही बात थी तो रोमी, फिर बाला और फिर त्रिजट ने मुझे मारने की कोशिश क्यों की?' विद्युत ने पूछा।

नैना ने मठाधीश की जगह से जवाब दिया।

'उनमें से कोई भी तुम्हें मारने नहीं वाला था, विद्युत। वो तुम्हें गंभीर रूप से घायल करके, बंदी बना लेना चाहते थे... और तुम्हें इस पल तक जीवित रखते... रोहिणी नक्षत्र तक। तुम्हें क्या लगता है, रोमी, जो दुनिया का सबसे खतरनाक और सबसे शिष्ट हत्यारा था, उसका निशाना बस ऐसे ही चूक गया, जबकि तुम उसके इतने करीब थे? क्या बाला, प्रशिक्षित एक्स-आर्मी कमांडो, पॉइंट ब्लेंक रेंज से तुम्हें मार

नहीं पाया? त्रिजट कपालिक ने तुम्हें जंजीरों से क्यों बांधा, जबकि बेहोशी में वो तुम्हें आसानी से मार सकता था? सोचो जरा इस बारे में।'

इससे पहले कि विद्युत नैना की बात पर कोई प्रतिक्रिया दे पाता, धरती बहुत बुरी तरह से हिली। दामिनी ने घबराकर विद्युत की बांह पकड़ ली, और सुरंग की छत से रेत गिरने लगी। ये वैसा ही कंपन था, जो एक दिन पहले उन लोगों ने मठाधीश के बरामदे में महसूस किया था।

बस इस बार ये कंपन और करीब से महसूस हो रहा था।

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व

'वो आ रहे हैं...'

उनकी सभा पिछले दो घंटों से चल रही थी... बीच-बीच में उस नीरव खामोशी में बादलों की तेज गरज से व्यवधान पड़ जाता था। नर-मुंड से होने वाला अपरिहार्य सामना अब कक्ष को भयभीत कर रहा था। उन्हें इसका कोई समाधान नहीं नजर आ रहा था।

'हड़प्पा के गुप्तचर-दल ने हम नगर-परिषद् के सदस्यों को बताया था कि नर-मुंड की चमड़ी को सामान्य तलवार, तीर या भाले से नहीं भेदा जा सकता था। यहां तक कि बिलकुल सही समय पर, खूब तेजी से जाता हुआ बाण भी उसे बस सामान्य सा घाव दे पाता है। वो कहते हैं कि उसके एक जोरदार मुक्के से किसी घोड़े तक की खोपड़ी टूट सकती है! वो अपने नंगे हाथों से अपने बदकिस्मत दुश्मन की छाती और पसलियां चीरकर, उसका धड़कता दिल खा जाता है। ये उसके लिए असामान्य नहीं था, क्योंकि वो आधा-मनुष्य, आधा-पशु था।'

जब सोमदत्त ने अपने ये अंतिम शब्द, क्रूर शब्द कहे तो कमरे में घोर सन्नाटा छा गया।

यहां तक की वीर और साहसी, सुंदर सतरूपा भी अपने आंसू नहीं रोक पाईं। वो चिंता की वजह से सुबकने लगीं, जबकि कक्ष में उपस्थित पुरुषों को अपने गले में कुछ अटकता सा महसूस हुआ।

मनु भी उन लोगों से कम डरा हुआ नहीं था। वो भी उस दैत्य से आमने-सामने के मुकाबले के विचार से घबराया हुआ था। लेकिन मुसीबत के समय ही एक

वास्तविक नेता—भौतिक लालच से परे, व्यक्तिगत सोच से परे और अपनी जान की परवाह किए बिना खड़ा होता है। मत्स्य ने यूं ही नहीं सत्यव्रत मनु को मानवप्रजाति के भविष्य का राजा और संरक्षक चुना था।

'मैं उसका सामना करूंगा, हड़प्पा के महान अभियंता,' मनु ने घोषणा की।

'नहीं, तुम नहीं करोगे!' तुरंत मनु की तरफ दौड़ते हुए, तारा चिल्लाई।

एक पल के लिए मनु नर-मुंड का सामना करने से अधिक, उस सुंदर हमलावर को सामने पा डर गया।

·||卐||·

'तुम्हारी परेशानी क्या है, ओ सूर्य पुत्र??' उसने सत्यव्रत से सवाल किया। वो उससे थोड़ी ही दूर खड़ी थी और सीधे उसकी आंखों में देख रही थी। गुस्से और भय से उसकी सांस भारी हो गई थी।

'सतरूपा सही कह रही है, सत्यव्रत,' सोमदत्त ने बीच में कहा। हम सब तुम्हारे शौर्य से परिचित हैं और उसकी सराहना करते हैं। हमने देखा कि तुमने न सिर्फ रंगा, बल्कि बाद के समय में सैकड़ों अन्य दुश्मनों का सामना किया। लेकिन अबकी बार बात अलग है। नर-मुंड अकेले दस रंगाओं के बराबर हैं। असंभव को संभव बनाने की कोशिश करने में कोई समझदारी नहीं है, सूर्य पुत्र।'

मनु नौका के मुख्य अभियंता की तरफ मुड़ा।

'असंभव...? आप कहना क्या चाहते हैं, सोमदत्त जी? क्या आप युगल का परिणाम प्रतियोगिता से पहले ही घोषित कर रहे हैं? क्या आपको याद है कि तब भी ऐसी ही भविष्यवाणियां की जा रही थीं, जब मैं कंकोली के विकराल योद्धा से उसके अपने क्षेत्र में लड़ रहा था? क्या मैंने धोलावीरा के उस वीभत्स सेनापति को पराजित नहीं किया था, जिसने नगर को खाली कराने में बाधा उत्पन्न की थी? मैं तब निहत्था था, जब मैंने हमारे कारवां पर हुए दैत्य हमले को नाकाम...'

सत्यव्रत मनु सोमदत्त के कक्ष में उपस्थित किसी अन्य व्यक्ति से बात नहीं कर रहा था। वह स्वयं से बात कर रहा था... अपने भय पर काबू पाते हुए, अपनी

इच्छाशक्ति को मजबूत करते हुए—जिससे वो उस साहस को जुटा सके, जिसकी आवश्यकता उसे दानव नर-मुंड का सामना करने के लिए पड़ने वाली थी।

लेकिन कक्ष में उपस्थित लोगों तक उसकी बात इस आशय से नहीं पहुंच पाई।

सोमदत्त ने आह भरी। लगभग पिछले एक साल में मनु को करीब से जानते हुए और उसके साथ काम करते हुए, आज सोमदत्त को पहली बार उस युवा पुजारी-राजा की बात में अहंकार का अहसास हुआ।

‘देखो मनु, जिस जंग में हार सुनिश्चित हो, उसमें कूदने को बहादुरी नहीं कहा जाता है। हमें कुछ और सोचना...’

‘आप अपने शब्दों को क्यों रोक रहे हैं, सोमदत्त जी? खुलकर कहिए आप क्या कहना चाहते हैं!’ मनु चिल्लाया।

सोमदत्त ने भी अपना नियंत्रण खो दिया। उसे चिंता हो रही थी कि मनु हठी बालक की तरह बर्ताव करते हुए, वास्तविकता देखना ही नहीं चाह रहा था। महान अभियंता मनु को वो अपने पुत्र समान मानता था, और वो अपने प्यारे पुत्र को मौत के जबड़े में जाता नहीं देख सकता था। उसने सारी कूटनीति को परे हटा, इस युवा को कड़वी सचाई बताने का निर्णय लिया।

हड़प्पा के अभियंता ने मनु की आंखों में देखते हुए, सामान्य से ऊंची आवाज में कहा।

‘अगर तुमने विकराल नरभक्षी से आमने-सामने की लड़ाई लड़ी, तो वो तुम्हें चीरकर, तुम्हारा गर्म मांस खा जाएगा!’

सत्यव्रत मनु अपने कक्ष में रखे लकड़ी और चमड़े के आसन में धंस गया। वो आगे को झुककर बैठा था, उसका माथा उसके हाथों में छिपा था, उसकी उंगलियां उसके चेहरे पर गिरते बालों को पीछे की और थामे थीं।

वह डरा हुआ नहीं था। न ही वो, सोमदत्त जी द्वारा कुछ पल पहले बोले, कड़वे सच को सुनकर परेशान था। वो बस चिंतामग्न था। अगर *वो* नर-मुंड का सामना

कर, उसे पराजित नहीं कर सकता था, तो और कौन ऐसा कर सकता था। ये एकमात्र तथ्य इतिहास की धारा बदल सकता था। क्या मानवजाति प्रलय के बाद निकली सूर्य की किरण का स्वागत आजाद, उदार और सभ्य लोगों के साथ करेगी? या तब तक वो एक कट्टर, निष्ठुर संप्रदाय के गुलाम बन चुके होंगे?

सोमदत्त को भी बहुत बुरा महसूस हो रहा था। उसे लगा कि उसने शायद जबरन मानवजाति की रक्षा में खड़े इकलौते व्यक्ति को हतोत्साहित कर दिया था। अपने प्यार को इस टूटी अवस्था में देख तारा का दिल रो रहा था। लेकिन उसे कहीं एक राहत भी थी। शायद सोमदत्त जी द्वारा कही अंतिम बात मनु को इस आत्मघाती योजना से दूर रख पाए।

केवल ध्रुव ही मनु की वास्तविक पीड़ा समझ सकता था। बचपन का मित्र और ऐसा व्यक्ति, जो मनु के मन और दिल को गहराई में जाकर पढ़ सकता था, उस दक्ष धनुर्धर ने आगे बढ़कर मनु के कंधे पर हाथ रखा।

‘हम उसे पराजित कर सकते हैं, मनु। हम उसे मार सकते हैं। लेकिन जो मैं अभी कहने वाला हूं, वो शायद तुम्हें पसंद नहीं आए,’ ध्रुव ने कहा।

उस ठंडे और तेज हवा से भरे कक्ष में हर कोई उसकी बात ध्यान से सुन रहा था। मनु का सुझाव शायद जीत और मौत के बीच अंतर ला सकता था।

‘बताओ...’ मनु ने बिना नजरें उठाए कहा।

‘उस जानवर को हराने का एक ही तरीका है कि हमारे बीस श्रेष्ठ योद्धा एक ही समय पर उसे घेर लें। और उस आक्रमण का नेतृत्व मैं स्वयं करूंगा।’

मनु ने हैरानी से ऊपर देखा। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि सबसे विश्वसनीय, सबसे भरोसे का मित्र कायरता का मार्ग सुझा रहा था।

‘तुमने मुझे निराश किया, ध्रुव। तुम्हारे जैसा असाधारण योद्धा ये प्रस्ताव रख रहा है...’

इससे पहले कि मनु अपनी बात पूरी कर पाता, मत्स्य प्रजाति का एक सिपाही सीधे उनके कक्ष में घुस आया, दरवाजे पर दस्तक के साथ ही, झटके से उसे खोलते हुए।

सिपाही बुरी तरह हांफ रहा था, एक तो युद्ध-कक्ष के लंबे गलियारे की वजह से और दूसरा नौका के शीर्ष से उसने जो देखा था, उसकी वजह से।

वो बस कुछ ही शब्द बोल पाया, लेकिन उन्होंने ही उसका संदेश पहुंचा दिया।

'वो आ रहे हैं, सत्यव्रत... जनसैलाब के रूप में।'

बनारस, 2017
देवता से मिलने का समय आ गया है...

मास्केरा बिआंका ने ताजे कटे फलों और ग्रीक योगर्ट के नाश्ते की अपनी प्लेट से नजर उठाकर असलम बाइकर को देखा, जो उसके प्रेजिडेंशियल सुईट के आलीशान डाइनिंग रूम में आ रहा था।

'गुड मॉर्निंग, मास्केरा,' घबराए हुए असलम ने कहा।

वाइट मास्क नम्रता से मुस्कुराया। पिछली रात होटल के जिम में दिखे भयानक शैतान से वो बिल्कुल अलग नजर आ रहा था। उसके नाजुक हावभाव वापस आ चुके थे। कमरा उसके महंगे कोलोन की महक से भरा था। जैल लगे उसके भूरे बाल और नुकसानरहित उसकी मुस्कान लंबी टेबल से परे चमक रही थी।

दुनिया के सबसे निर्दयी इंसान ने अधिक शिष्टतावश पूछा।

'देवता के बारे में कोई खबर, असलम, मेरे दोस्त? क्या वो पहाड़ों के लिए निकल गए हैं?'

मास्क को उसके सामान्य, सभ्य और स्टाइलिश रूप में देखकर मुंबई के डॉन ने राहत की सांस ली।

'नहीं, मास्केरा। वो अभी भी यहीं हैं। देव-राक्षस मठ में ही हैं।'

मास्क के चेहरे पर तनाव आ गया।

‘ये तो अजीब है। अब तक तो उन्हें केदारनाथ के लिए निकल जाना चाहिए। कुछ तो गड़बड़ है...’

बड़ी सी स्क्रीन जीवंत हो उठी।

अत्याधुनिक तकनीक से सुरक्षित इस वीडियो कॉल पर दुनिया के तीन सबसे शक्तिशाली आदमी एक-दूसरे से संपर्क कर पा रहे थे।

जब भी वो डिजिटली या व्यक्तिगत रूप से एक-दूसरे से मिलते, संसार के इतिहास में नाटकीय रूप से परिवर्तन आता। कोई नागरिक युद्ध, कोई घातक महामारी, हत्याओं की श्रृंखला, कोई बड़ा आतंकवादी हमला, किसी न्यूक्लियर पॉवर-प्लांट में लीकेज, किसी यात्री हवाई जहाज का बीच हवा में खो जाना...

ये तीनों आदमी न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के सर्वेसर्वा थे।

उनमें से एक बाकी दो से अधिक ताकतवर था।

‘वो अभी भी यहीं हैं, योर होलीनेस,’ मास्केरा ने कहा। वो दोनों स्क्रीन के सामने लगी एक लंबी सी मेज के कोने पर बैठा था।

रोम का बिग मैन इस खबर से खुश नहीं था। वो अच्छी खबर की उम्मीद कर रहा था।

फ्रैंक स्टोनफेलर को ऐसे लगा मानो उसे किसी एक्सप्रेस ट्रेन ने धक्का मारा हो। इस समय असफलता का मतलब होगा ऑर्डर और उससे जुड़ी हर चीज का भयानक अंत। दूसरी तरफ, जीत का मतलब होगा पूर्ण वैश्विक नियंत्रण और समग्र मानवजाति पर निर्विवादित सत्ता। दांव कभी इतना बड़ा नहीं रहा था।

‘लेकिन... लेकिन उन्हें तो अब तक निकल जाना चाहिए था। वो खतरनाक संयोग कुछ ही घंटों में आकाश में प्रकाशित हो जाएगा। वो कैसे देवता को समय पर वहां पहुंचा पाएंगे??’ बिग मैन ने पूछा।

‘यहां कुछ तो गड़बड़ है, मास्केरा,’ दूसरी एलईडी स्क्रीन से, स्टोनफेलर के वंशज ने कहा। उसकी आवाज बर्फ की तरह ठंडी थी। ‘केदारनाथ अंतिम काला मंदिर है। देवता को आज रात उसमें प्रवेश करना चाहिए। यही तो सदियों पुरानी भविष्यवाणी है...’

‘अगर...’ वाइट मास्क फुंफकारा।

एक पल ठहरकर, फ्रैंक स्टोनफेलर ने सीधे पूछा, ‘अगर क्या, मास्केरा?’ वो जानता था कि दांव पर क्या लगा था, लेकिन उसकी आवाज मजबूत थी। वैसे वो दुनिया के सबसे ताकतवर गुप्त भ्रातृसंघ का एकमात्र सर्वेसर्वा नहीं था।

‘अगर... केदारनाथ अंतिम काला मंदिर हो ही न!’ वाइट मास्क ने कहा, उसकी हरी आंखें मेज के पार दोनों स्क्रीन को घूर रही थीं।

चालाक द्वारका शास्त्री के उन्हें चकमा दे देने की संभावना भी असंभव नहीं थी। वो बूढ़ी लोमड़ी ऐसा पहले भी कई बार कर चुकी थी। लेकिन इस बार ऑर्डर को पूरा भरोसा था कि वो अंतिम काले मंदिर तक पहुंच चुके थे। सालों तक उत्तराखंड के केदारनाथ मंदिर में वो रहस्य दबा रहा। भविष्यवाणी भी उसी पवित्र परिसर में पूरी होनी थी।

उनकी योजना साधारण थी। वो रोहिणी नक्षत्र के उदय और नियत समय तक प्रतीक्षा करने वाले थे। सदियों पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार देवता को वहां जाना था। भ्रातृसंघ तब तक प्रतीक्षा करेगा, जब तक विद्युत काले मंदिर के रहस्य को उद्घाटित न कर दे। फिर वे धरती से अंतिम देवता का नामोनिशान मिटा देंगे और उस रहस्य को प्राप्त कर लेंगे, जिसकी उन्हें सदियों से तलाश थी।

लेकिन अब साफ था कि अंतिम पल में कुछ बदलाव किया गया था। अगर विद्युत अभी भी देव-राक्षस मठ में था, वो भी उस पवित्र संयोजन से कुछ घंटे पहले—तो वो कैसे सही समय पर केदारनाथ पहुंचकर भविष्यवाणी को सच करेगा?

‘हा... हा... हा...!’

वाइट मास्क जोर से हंसते हुए, कुर्सी से उठा और अपना सिर पीछे फेंका।

स्क्रीन पर उपस्थित दोनों आदमी ख़ामोशी से देख रहे थे। वो जानते थे कि मास्क को कुछ अनपेक्षित पता चल गया था। उसकी ऐसी प्रतिक्रिया वो पहले भी देख चुके थे। वो ये भी समझ गए थे कि मास्क ने अपने अगले कदम की योजना भी बना ली थी।

मास्केरा अपने में ही खोकर, सिर हिलाकर कुछ बड़बड़ाए जा रहा था। एक मिनट बाद, उसने स्वयं को शांत करना शुरू किया, और साफ रूमाल से अपनी आंखों से आते आंसू पोंछे।

फिर वो वापस से स्क्रीन की तरफ मुड़ा और एक कॉर्पोरेट सीईओ की उत्कृष्टता के साथ बोला।

'जेंटलमैन, मैं नहीं जानता कैसे, लेकिन हमारी नाक के नीचे से, रहस्य को केदारनाथ से हटा दिया गया है। अब वह वहां पहुंच गया है, जहां उसका पहुंचना लिखा था—अंतिम काले मंदिर में।'

इस खबर को सर्वेसर्वा हल्के में नहीं लेने वाला था। बिग मैन का चेहरा गुस्से से बिगड़ा। फ्रेंक स्टोनफेलर ने गुस्से से थूक निगला। लेकिन उनमें से कोई भी अपना गुस्सा मास्केरा के सामने नहीं दिखा पाया।

आखिरकार, स्टोनफेलर वंशज ने आंकलित चिढ़ से कहा।

'तुमने हमें भरोसा दिलाया था कि भारत में तुम्हारा आदमी हमारा भरोसा नहीं तोड़ेगा, मास्केरा।'

'हां, मैंने कहा था... हां, मैंने कहा था...' मास्क ने जवाब दिया और अचानक रिमोट कंट्रोल से दोनों स्क्रीन को बंद कर दिया।

वो हालात का जायजा लेते हुए, कुछ पल ख़ामोशी से बैठा रहा। यह अंतिम प्रहर था।

मेरा देवता से मिलने का समय आ गया है...

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व

अंतिम युद्ध—भाग I

ये वो दृश्य था जो निडर आदमी का भी रक्त जमा दे।

इतनी बड़ी सेना इससे पहले कभी इस धरती पर नहीं चली थी। और न ही फिर कभी ऐसा होगा। वो सेना आकार में इतनी बड़ी थी कि महायुद्धों के लेखक और कवि भी उसकी कल्पना नहीं कर सकते थे। योद्धाओं की यह सेना दसराजन के प्राचीन महायुद्ध में एकत्र हुई सेना से भी कई गुणा बड़ी थी। आर्यवर्त में जीवित कोई भी व्यक्ति यह नहीं सोच सकता था कि इतनी अधिक संख्या में लोग एकत्र होकर, एक साथ चल सकते हैं।

सूखे मुंह और धड़कते दिलों के साथ, नौका के सेनाध्यक्ष अपने शत्रु को, रेंगते सांप की तरह, दसों दिशाओं से बढ़ता हुआ देख रहे थे। दृश्य को देख वो स्तब्ध थे। कुछ मील की दूरी पर जलती हुई लाखों मशालें, प्रकाश की नदी के समान प्रतीत हो रही थीं। दैत्यों और दस्युओं की पहली पंक्ति की सेना अब शायद विशाल नौका से एक ही घंटे की दूरी पर थी। लेकिन इस विशाल सेना की अंतिम लहर अभी तक दिखाई नहीं दे रही थी। दुश्मन की सेना बहुत विशाल थी, इतनी विशाल की नंगी आंखों से उसका विस्तार तक दिखाई नहीं पड़ रहा था।

जो दूत युद्ध कक्ष में आया था, वो सही कह रहा था।

यह वास्तव में एक सागर था, एक तूफान था जो नौका पर हमला करने आ रहा था। इसे डुबोने के लिए।

रक्त में।

‘कितने... तुम्हें क्या लगता है, सत्यव्रत, वो संख्या में कितने होंगे?’ प्रचंड बुदबुदाया, उसे अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हो रहा था।

मनु नौका के ऊपरी भाग पर बुत बना खड़ा था, बारिश उसे और उसके साथियों को सिर से पैर तक भिगो रही थी। रात के अंधेरे में, दैत्य सेना की मशालें उसकी आंखों के सामने ऐसे बिछी पड़ी थीं, मानो प्रकाश के कंबल ने पूरी धरती को ढक लिया हो। वो वास्तव में अनगिनत थे।

‘ऐसा लगता है मानो यहां से लेकर विंध्य तक के दस्युओं ने नर-मुंड के साथ हाथ मिला लिया है। गुप्तचरों ने बताया कि विनाशकारी प्रलय कुछ ही दिनों में भूमि पर बचे लोगों का सफाया कर देगी। इस ग्रह पर बचा प्रत्येक अंतिम पुरुष, महिला और बच्चा अब एक बात तो निश्चित रूप से जानता है,’ ध्रुव ने कहा, वो एक पल के लिए भी अपने नजरें नरभक्षियों की सेना से नहीं हटा पा रहा था।

‘और वो क्या है, ध्रुव?’ सोमदत्त ने पूछा।

ध्रुव एक पल को शांत रहा, और फिर अपने तरकश से चमकता तीर निकालकर उसे अपने शक्तिशाली धनुष पर रखा।

‘नौका ही बचने की अंतिम उम्मीद है। और उसे चुरा लिया जाना चाहिए।

तैयार रहो, नौका के संरक्षकों। दुश्मन अंतिम सांस तक लड़ने वाला है।’

इन शब्दों के साथ ध्रुव ने अपने विशेष बाण का सिरा, पास की मशाल से जलाया, और आसमान में छोड़ दिया। यह उसकी सेना के लिए एक संकेत था।

उसने खुले युद्ध की घोषणा कर दी थी।

दस्यु भीड़ की रणभेदी रक्त जमा देने वाली थी।

वो अब इतने करीब आ गए थे कि उनकी आवाज विशाल नौका के वासियों और योद्धाओं को सुनाई दे रही थी। वो एक सुर में चिल्ला रहे थे, वो संख्या में दसियों हजार थे, और उनकी चिंघाड़ जलते नरक की आवाज से भी अधिक उन्मादी थी।

वो वहशी, दक्ष, उन्मत्त, और सबसे अधिक... अधीर थे।

'क्या तुमने ध्यान दिया, ध्रुव,' मनु ने कहा, 'कि इस सारी अग्रिम पंक्ति में दैत्यों का एक भी सिपाही नहीं है?'

ध्रुव दबी हंसी हंसा।

'मुझे इसकी उम्मीद थी, मनु। वो बदमाश नर-मुंड पहले दस्युओं को ही मरवाएगा, उनके इस्तेमाल से वो हमारी सुरक्षा को कमजोर करेगा, और फिर उसकी विकराल दैत्य सेना नौका पर हमला बोल देगी।'

'रुको...' तारा ने आदेश दिया।

नौका के ऊपरी भाग को घेरे हुए, नौ हजार धनुष बाणों की पहली वर्षा के लिए एकदम तैयार थे।

उनके पीछे, निचले तल से बाण चलाने के लिए और तीन हजार दक्ष धनुर्धर प्रतीक्षा में खड़े थे।

दस्यु योद्धाओं की हाहाकार करती हुई अग्रिम पंक्ति अब नौका पर हमले के लिए तैयार थी। वो घंटे भर से विशाल नौका की तरफ से किसी प्रकार के प्रतिरोध की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन कुछ नहीं हुआ था। तो अब अपना सब्र खोकर और

भयंकर आक्रमण की गर्मी में, वो अब अपनी दोधारी तलवार और नौका पर चढ़ने के कांटे उठाकर, हमले के लिए तैयार थे।

बेचैनी भरे कुछ पल गुजारने के बाद, वो हांफते हुए हमलावर नौका से करीब हजार कदम की दूरी पर आ चुके थे।

तब आकर्षक तारा ने मां दुर्गा की स्तुति में एक प्रार्थना दोहराई, और शेरनी की तरह दहाड़ते हुए कहा।

‘अब!’

थाक!

आधे पल बाद

थाक!

आधे पल बाद।

थाक!

दामिनी सेना के धनुर्धरों की बाण उठाने, उसे अपने धनुष पर रखने और अपने लक्ष्य की ओर छोड़ने की गति अनुपम थी। कुछ ही पलों में लगभग बीस हजार बाण अपने निशाने की ओर बढ़ चले थे।

नौका और भूमि की लड़ाई शुरू हो चुकी थी।

बनारस, 2017
काला मंदिर

'हम कहां जा रहे हैं, बाबा? हमें चलते हुए कई मिनट हो गए हैं...'

दामिनी अपनी उत्सुकता रोक नहीं पाई। वो एक ओर जहां बुरी तरह घबराई हुई थी, वही अनियंत्रित रूप से उत्साहित भी थी। भैरव-मंदिर में हो रहे मंत्रोच्चार की ऊर्जा अपना असर दिखा रही थी। छिपा हुआ गलियारा, रहस्यमयी सुरंग, अवर्णनीय गरज और एक हजार सालों में होने वाला ग्रहों का दिव्य संयोजन... सब कुछ दामिनी के नसों को फड़का रहा था।

इस बार बुजुर्ग मुड़े। वो दामिनी की तरफ मुस्कुराए, विद्युत को देखा और वापस मुड़कर, काले पत्थर की उस भूलभुलैया में चलने लगे।

'क्या तुम जानती हो, बिटिया कि भैरव को क्यों सम्मान से पूजा जाता है?' मठाधीश ने पूछा। उनकी आवाज तंग गली में गूंज रही थी।

'उम्म... पूरी तरह तो नहीं, बाबा... क्षमा कीजिए,' दामिनी ने विद्युत को देखकर, झेंपते हुए, अपनी जीभ काटकर, जवाब दिया। वो अपने कम ज्ञान और ग्रैंडमास्टर

की उम्मीद पर खरा नहीं उतरने से शर्मिंदा थी।

विद्युत मुस्कुराया। वह उसे बहुत प्यार करता था!

'उन्हें पूजा जाता है क्योंकि वो देवों के देव, स्वयं प्रभु शिव के द्वारपालक हैं,' मठाधीश ने समझाया।

'जी, बाबा...' दामिनी ने जवाब दिया। उसे कोई अंदाजा नहीं था कि इसके जरिए द्वारका शास्त्री क्या समझाना चाह रहे थे।

'इसीलिए उनके माध्यम से ही, दामिनी, कोई नीलकंठ शिव से मिलने जा सकता है।'

अब विद्युत को सच का अहसास हुआ। भैरव-मंदिर, रूद्र-पथ का जाप, छिपा हुआ गलियारा, रोहिणी-नक्षत्र, काले पत्थर की सुरंग, अवर्णनीय गर्जना... और अब द्वारका शास्त्री का उन्हें प्रभु शिव का द्वारपाल कहना।

ये सब उसे पहले क्यों नहीं सूझा?

अंतिम काला मंदिर कहीं दूर नहीं है। वो यहीं है... काशी में।

वह देव-राक्षस मठ के तहखाने में है!

कुछ और पल गुजरे और मठ का दल अब एक रहस्यमयी अंत पर जा पहुंचा, जिसके आगे पत्थर काटकर बनाई गई, घुमावदार सीढ़ियां थीं। वो सीढ़ियां नीचे अंधेरी गुफा में उतर रही थीं।

उन घुमावदार सीढ़ियों पर उतरने से पहले पुरोहित जी ने मुड़कर अपने और द्वारका शास्त्री जी के पीछे आते समूह से कहा।

'आप सब जो देखने वाले हैं उसकी शायद आपने अपने सपने में कल्पना नहीं की होगी। बस याद रखना कि भले ही वह दृश्य आपको कितना ही भयानक क्यों न लगे, लेकिन आप ही हो वो, जिनका चयन इस पुण्य अवसर के लिए किया गया

है। एक बार जब आप सब इन सीढ़ियों से उतर जाएंगे तो आपका जीवन, आपकी आत्मा, जन्म-मरण का आपका सफर... कुछ भी पहले जैसा नहीं रहेगा।'

सब ख़ामोशी से सुन रहे थे। गुफा से निकलती एक अनजान शक्ति ने अभी से उनके मन पर काबू करना शुरू कर दिया था। उनमें से कोई भी भयभीत नहीं था। वो सब मानवजाति के भविष्य में अपनी निर्धारित भूमिका निभाने के लिए उत्सुक थे।

वो तैयार थे।

·||卐||·

विद्युत, दामिनी और समूह के सभी लोग भव्य काले मंदिर को देख स्तब्ध थे।

कठोर, चट्टान काटकर बनाई गई छत हजारों सालों पहले निर्मित जान पड़ रही थी। काले पत्थर की दीवार पर बनाई गई आकृतियां अत्यधिक सुंदर और जटिल थीं। इस आलीशान मंदिर का विशाल आकार मंत्रमुग्ध कर देने वाला था। बलवंत, नैना, सोनू, गोवर्धन और दूसरे पुजारियों के लिए यह भरोसा कर पाना मुश्किल था कि इतना वैभवपूर्ण काला मंदिर देव-राक्षस मठ के तल में बना हुआ था। वो सालों से आश्रम में रहते आए थे और फिर भी उनमें से किसी को भी इतने भव्य मंदिर के अस्तित्व के बारे में नहीं पता था।

द्वारका शास्त्री ने विद्युत को कुछ समय दिया कि वो भूतल में बने इस विशाल मंदिर को देख सके, और इसी के साथ उन्होंने अन्य साधुओं को पवित्र अनुष्ठान शुरू करने के निर्देश भी दे दिए। भगवान शिव की एक तेजमयी प्रतिमा मंदिर के केंद्र में स्थापित थी। पुजारियों ने शिव के चरणों में अग्नि प्रज्वलित की और एक बार फिर से रूद्र-पथ का उच्चारण शुरू कर दिया। अपने पिता के निर्देश पर सोनू ने मंदिर की दीवार में लगी मशालों को एक-एक कर जलाना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे, मंदिर परिसर में नारंगी रंग का प्रकाश प्रज्वलित हो गया।

'अब जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हूं, विद्युत, उस पर भरोसा कर पाना बहुत मुश्किल होगा। लेकिन भरोसा रखना, मेरे बच्चे। मेरी कही बात का प्रत्येक शब्द सत्य है।'

‘हां, बाबा। यह मंदिर वैसे भी बहुत पवित्र है, मानो इसमें स्वयं भगवान के चरण पड़े हों। सौभाग्य से मैंने भारत में बने शिव के लगभग सभी मंदिरों के दर्शन किए हैं। मैंने सभी बारह ज्योतिर्लिंगों पर प्रभु रूद्र के दर्शन किए हैं। पिछले कुछ दिनों में मैंने काशी के सभी मंदिरों से आशीर्वाद प्राप्त किया है। लेकिन फिर भी इतनी दिव्यता मैंने कहीं और महसूस नहीं की। यहां कुछ अलग और संवेदनशील ऊर्जा है, बाबा।’

बुजुर्ग मुस्कुराए ।

‘कुछ नहीं, विद्युत।

कोई।’

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व
अंतिम युद्ध—भाग II

दैत्य विशाल नौका से एक मील दूर खड़ा, आक्रमण का निरीक्षण कर रहा था। अपनी अग्रिम पंक्ति पर हो रही बाणों की वर्षा से नर-मुंड स्तब्ध था। उसने पहले ही कड़े प्रतिरोध की उम्मीद की थी, लेकिन इतने असंख्य युद्धों में भाग लेने के बावजूद भी, उसने कभी धनुर्धरों की इतनी बड़ी संख्या नहीं देखी थी।

हालांकि उसे अधिक चिंता नहीं हो रही थी, क्योंकि पहली पंक्ति में केवल दस्यु प्रजाति के योद्धा थे। उनकी जिंदगी की उसे रत्तीभर परवाह नहीं थी। उसके लिए वो इंसानी ढालों के अतिरिक्त कुछ नहीं थे, जिनका इस्तेमाल उसे प्रारंभिक आक्रमण के लिए ही करना था। वैसे भी, वो उनमें से किसी को भी नौका पर ले जाने की योजना नहीं बना रहा था। इस मार-काट के बाद भी जो बच जाने वाला था, उसे वो प्रलय से पूर्व, इस नौका पर सवार होने से पहले स्वयं मार देने वाला था।

‘ऐसे नहीं चल सकता, स्वामी,’ दैत्य सेनापति डूंडा ने कहा। ‘ऐसा लग रहा है मानो नौकावासियों के पास तीरों की अनंत आपूर्ति है। यकीनन, उन्होंने इस युद्ध की तैयारी हमारी कल्पना से भी अधिक की है।’

‘हम्म...’ नर-मुंड गुर्राया, वो बाणों की वर्षा में सैकड़ों दस्यु योद्धाओं को भेंट चढ़ते देख रहा था।

‘ओ बलशाली मुखिया, जल्द ही सारे दस्यु मर जाएंगे। इसके बाद की पंक्ति में हमारे दैत्य होंगे।’

'या शायद नहीं...' नर-मुंड ने कहा, और उसने मुड़कर, कुटिल मुस्कान से डूंडा को देखा। उसके जहर बुझे दांतों पर रक्त के धब्बे थे।

दैत्य सेनापति तुरंत समझ गया कि इस विकराल नरक-दूत ने कोई निष्ठुर, दुर्लभ योजना बना ली थी।

'वो मारे जा रहे हैं, मनु!' सोमदत्त ने चिल्लाते हुए कहा, दामिनी सेना के धनुर्धरों को मिली शुरुआती सफलता के उत्साह को वो छिपा नहीं पा रहा था। वो विशाल नौका के ऊपरी तल से सारी कार्यवाही देख रहे थे।

'अब तक हमने हजारों को मार गिराया है। दुश्मन का एक भी सिपाही नौका में कांटा फंसा पाने में सफल नहीं हो पाया है,' प्रचंड ने जोड़ा।

उसके जैसे अनुभवी योद्धा ने भी कभी इस अकल्पनीय स्तर पर बाणों का उपयोग होते नहीं देखा था। नौका के आसपास के दलदलीय क्षेत्र का रत्तीभर भाग भी बाण की उस बरसात से अछूता नहीं रहा था। दामिनी-सेना द्वारा छोड़े गए बाण बरसात की बूंदों के समान बरस रहे थे।

मनु खामोश रहा। मन ही मन वो शत्रु सेना पर नौकावासियों के प्रभुत्व से प्रसन्न था। लेकिन यह तो बहुत आसान था। और यही विचार युवा पुजारी-राजा को परेशान कर रहा था। नर-मुंड अधिक देर तक इस हत्याकांड को चलने नहीं देने वाला था।

'वो पीछे हट रहे हैं!' नौका के एक सिपाही ने युद्ध पंक्ति की ओर संकेत करते हुए कहा।

विशाल नौका पर खड़े सभी दर्शक युद्ध क्षेत्र का बारीकी से मुआयना करने के लिए, लकड़ी की बाड़ से आकर सट गए। सिपाही सही कह रहा था। कुछ ही घंटों में हजारों सिपाहियों की मृत्यु के बाद, हमलावर अब पीछे हट रहे थे।

'दामिनी सेना को आराम दो और ध्रुव के धनुर्धरों को स्थान संभालने का निर्देश दो,' सत्यव्रत मनु ने चिल्लाकर आदेश दिया। 'रसोई में बोल दो कि इन

वीरांगनाओं के लिए गर्म भोजन उपलब्ध कराया जाए। घंटों तक तरकश खींचने की वजह से उनमें से बहुतों की उंगलियां छिल गई होंगी। उनके हाथों से रक्त निकल रहा होगा। उन्हें तुरंत वैद्य के पास ले जाओ! रात के प्रहरी सचेत और सावधान रहने चाहिएं। यह युद्ध अभी शुरू ही हुआ है। कल दैत्य दोगुनी ताकत और निश्चित रूप से नई रणनीति के साथ हमला करेंगे।'

मनु कल्पना नहीं कर सकता था कि कल दैत्य किस योजना के साथ आएंगे।

यहां तक कि अब भी वो नर-मुंड की क्रूरता को कम आंक रहा था।

'अंधेरी और तूफानी रात में, दैत्य अपने मृत और घायल सैनिकों को उठाकर ले गए,' तारा ने अगले दिन की योजना बनाते हुए बताया।

कक्ष में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति युद्ध के पहले घंटे की कार्यवाही से संतुष्ट था। अनगिनत दस्यु योद्धा दामिनी सेना के तीरों से मारे गए थे। मारकाट इतना भयानक था कि कक्ष में उपस्थित कुछ लोगों को लग रहा था कि युद्ध पहले ही समाप्त हो गया था। तांबे के इन बाणों का सामना करने के लिए अगले दिन कौन आने वाला था?

'दैत्यों को कबीले वासियों की कोई चिंता नहीं है, तारा,' ध्रुव ने जवाब दिया।

'फिर वो मृत और घायलों को उठाकर क्यों ले गए? मैं मानती हूं कि वो मृतकों का अंतिम संस्कार और घायलों का इलाज कराएंगे...'

'वो आदमियों को नहीं ले जा रहे हैं, तारा। वो मांस ले जा रहे हैं। विकराल दैत्य सेना मृतकों को ही खाएगी।'

तारा को उबकाई आती सी महसूस हुई। ध्रुव ने जो कहा उसका विचार भर भी कितना घिनौना था।

'कल वो इतने कमजोर नहीं होंगे। आज हमारी ताकत देखने के बाद, वो पूरी रात बचाव प्रणाली पर काम करेंगे। इसके लिए वो अपने आदमियों को मोटे, मजबूत कवच भी दे सकते हैं...' मनु ने सोचते हुए कहा।

‘ऐसा नहीं हो सकता, मनु। भले ही वो ऐसे कवच इकट्ठे करने शुरू कर दें, लेकिन इतनी विशाल सेना में सबको कवच देने में महीनों नहीं तो सप्ताह तो लग ही जाएंगे। बाढ़ अब किसी भी दिन आती होगी।’

‘तुम सही कह रहे हो, भाई। लेकिन वो कुछ न कुछ लेकर तो वापस आएंगे... भगवान ही जाने वो क्या होगा।’

बनारस, 2017
नाग राज

‘पंडित भैरव शास्त्री, देव-राक्षस मठ के संस्थापक और निर्माता दूरदर्शी थे। वो समझ सकते थे कि अनेकों आदमी अंतिम काले मंदिर की तलाश में होंगे। वो ये भी जानते थे कि शक-संवत के इस साल में, रोहिणी नक्षत्र के तुरंत बाद, ऑर्डर काले मंदिर के रहस्य को हासिल करने की कोशिश करेगा।’

मठाधीश विद्युत और दामिनी को काले मंदिर के तहखाने में ले जा रहे थे।

‘सैकड़ों सालों तक केदारनाथ मंदिर में इस रहस्य को छिपाया गया था। लेकिन हमारा पीछा करते हुए, ऑर्डर ने जल्द ही जान लिया था कि जिसे वो सदियों से तलाश रहे थे, वो रुद्रप्रयाग के पवित्र मंदिर में छिपा था। फिर उस स्याह भ्रातृसंघ ने मुंबई के एक डॉन असलम बाइकर को केदारनाथ पर नजर रखने के काम पर लगा दिया।’

‘असलम बाइकर? भगवान! वो तो जघन्य अपराधी है, जो ड्रग और अवैध हथियारों का धंधा करता है। कौन सोच सकता है कि वो न्यू वर्ल्ड ऑर्डर से जुड़ा हुआ हो सकता है?’ दामिनी चौंकी। वो एक पत्रकार थी। वो असलम बाइकर के बारे में सब जानती थी।

‘हां, वही कुख्यात गैंगस्टर। वैसे इन दिनों वो वाराणसी में ही है। खैर हम जून 2013 में आई बाढ़ के दौरान, रहस्य को वहां से निकाल लाए थे। मंदिर के मुख्य-पुजारी, महंत भवानीशंकर ने नैना के साथ काम करते हुए, उस दिव्य रहस्य को यहां देव-राक्षस मठ में भिजवा दिया। यह भूमिगत मंदिर 1253 ईस्वी में ही बन गया था, जिसे कलयुग में अंतिम काला मंदिर बनना था। आज तुम्हारे साथ इसकी नियति पूर्ण होगी, विद्युत।’

‘ना.....गग...’

दामिनी नश्वर भय से जड़ रह गई, जब उसे काले मंदिर की गुफा से फुंफकार सुनाई दी।

‘क्या तुमने वो सुना, विद्युत?’ उसने पूछा, उसने डर से देवता की बांह पकड़ ली थी।

‘हां, मैंने सुना, दामिनी,’ उसने जवाब दिया। वो भी स्तब्ध था।

वो अब लंबी सुरंग के अंत पर खुले मुहाने तक पहुंच गए थे, जो मंदिर को और काले भाग तक ले जा रहा था। विद्युत सुरंग से आते हुए चुंबकीय आकर्षण को महसूस कर सकता था। उसे लग रहा था कि उसके शरीर का रोम-रोम आनंदित था, और इस रहस्यमयी बरामदे के पार जो ताकत थी, उससे मिलने के लिए उत्सुक था।

‘ना.....गगग...’

एक बार फिर से, वो तेजस्वी गुफा उस भयानक हुंकार से भर गई। इस बार आवाज और तेज थी। एक अनजानी ताकत किसी विशेष शक्ति की उपस्थिति की

घोषणा कर रही थी।

'तुम यहां बलवंत और नैना के साथ प्रतीक्षा करो, बिटिया,' द्वारका शास्त्री ने दामिनी के सिर को आशीर्वाद के रूप में थपथपाते हुए निर्देश दिए। 'विद्युत की अलौकिक आध्यात्मिक साथी के रूप में, यहां काले मंदिर में तुम्हारी उपस्थिति आवश्यक है। लेकिन अभी के लिए, सही होगा कि तुम यहां शिव प्रतिमा के सामने प्रतीक्षा करो। यहां से आगे का सफर देवता को अकेले ही तय करना होगा।'

'जी, बाबा...' दामिनी ने जवाब दिया, और नैना ने अपना विश्वस्त हाथ उसके कंधे पर रख दिया।

'तुम सोच सकते हो कि यह सम्मोहन है। तुम जो अब देखने वाले हो वो वास्तव में एक मंत्रमुग्ध अवस्था ही है। जिस प्राचीन मुनि से अब तुम मिलने वाले हो वो दुनिया के सबसे समर्थ योगियों में से एक हैं। तन के ऊपर उनकी मन और आत्मा की शक्ति लगभग अप्राकृतिक है। वो कहते हैं कि उनकी आयु हजारों वर्ष है और उन्होंने तब से इस ग्रह को नहीं छोड़ा है, जब लगभग चार हजार साल पूर्व मत्स्य अवतार का समय था,' द्वारका शास्त्री ने समझाया, वो अपने अलौकिक अतिथि से मिलने जा रहे थे।

अंधेरे में, विद्युत को पहले कुछ दूरी पर हरे रंग का प्रकाश दिखाई दिया। उसे भय के साथ भक्ति की अद्भुत अनुभूति हो रही थी। मानो वो जानता हो कि वो अतिथि किसी दूसरे स्थान, किसी दूसरे समय से आया था।

धीरे-धीरे, देवता की नजर फर्श और छत पर रेंगते असंख्य सांपों पर पड़ी। विद्युत चलते-चलते रुका, और उसने स्तब्ध हो अपने बाबा को देखा।

'यहां सांप हैं, बाबा... हमें खतरा नहीं लेना चाहिए,' उसने कहा, काले-चमकते सांपों के दृश्य से वो नजर नहीं हटा पा रहा था।

'वो हमें नुकसान नहीं पहुंचाएंगे, विद्युत। ये हमारे दिव्य अतिथि के साथ आए हैं। पिछले एक सप्ताह से मैं हर रात यहां आ रहा हूं। मेरा भरोसा करो।'

वे धीरे-धीरे आगे बढ़े और आखिरकार चट्टान काटकर बनाए हुए उस कक्ष तक पहुंचे, जहां उनका असामान्य मेहमान ठहरा हुआ था।

वो देखने में तो मनुष्य था, लेकिन उसका आकार असाधारण था। वो पत्थर की गुफा के केंद्र में दुबककर बैठा था, जो आगंतुक की त्वचा से निकलते हरे प्रकाश से प्रज्वलित थी। काले मंदिर के अंधेरे में, विद्युत का ध्यान किसी अनोखी बात पर गया।

उकड़ूं से बैठे उस मनुष्य का चेहरा उसके घुटनों में छिपा था। चेहरे पर उसकी लंबी सफ़ेद लटाएं फैली थीं, और उसका बदन पड़पड़ाया हुआ था! चमकते हरे और नीले रंग की सांप की छाल से। हालांकि वो दृश्य पूरी तरह से अप्राकृतिक था, लेकिन विद्युत भयभीत नहीं था। उसका अंतर्मन उससे कह रहा था कि इस अद्भुत अतिथि के पैरों पर गिर जाए। समस्त काला मंदिर इस ताकतवर, जादुई, मोहक नाग-पुरुष के सम्मोहन से भर गया था!

बुजुर्ग मठाधीश ने अब अपने हाथों को जोड़, प्रकट भक्ति से कहा।

'दर्शन दें, सर्प-राज!'

विशालकाय मनुष्य द्रवित हो उठा। उसकी त्वचा की चमक और बढ़ती हुई प्रतीत हुई। उसके बाद जो हुआ उसने विद्युत को अविश्वास से भ्रम में डाल दिया।

अलौकिक मेहमान का आकार बढ़ने लगा, उसके बदन से निकलता प्रकाश अब अपने तेज से आंखें चुंधिया रहा था। देवता को अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हुआ, जब उसने हरे-नीले प्रकाश में उस विशाल सर्प-मनुष्य के सिर को अनेकों सिरों में बंटते देखा।

दरअसल सिर नहीं।

फण।

वो आदिकालीन सर्प अब कद में बीस फीट बड़ा हो, उस गुफा मंदिर के अंधेरे में अपने दस फणों को लहरा रहा था।

विद्युत के लिए यह सब एक सपना था।

उसके बाद जो द्वारका शास्त्री ने कहा, उसकी गूंज बहुत दूर से आती सुनाई पड़ रही थी। वो ऐसे शब्द थे जिसे न तो कभी देवता ने और न ही कभी किसी दूसरे मनुष्य ने सुना था।

‘स्वागतम, नाग-राज!’

‘स्वागतम, शेष-नाग!’

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व

‘इससे पहले कि वो नौका में चढ़ना शुरू करें, हमें नीचे उतर जाना चाहिए’

हालांकि अब सवेरा हुए काफी समय बीत गया था, लेकिन काले बादलों ने सूरज को पूरी तरह ढक रखा था। वैसे भी हड़प्पा के डूबने के बाद से, आर्यवर्त का प्रत्येक दिन अंधेरे से भरा ही था। बादलों के पार जो आसमान कभी दिखाई पड़ता था, वो पूरी तरह लाल था... मानो धरती के साथ जो होने वाला था, उसके लिए स्वयं को तैयार कर रहा हो। बेरहम बरसात लगातार बरस रही थी, अपना वेग बढ़ाते हुए। निरंतर गरजते बादल वास्तविकता का अहसास करा रहे थे।

विनाशकारी प्रलय की लहरें अब कुछ ही दिन दूर थीं।

इस दलदलीय क्षेत्र को निगलने के लिए प्रलय बस आने ही वाली थी।

और इसी के साथ, ये सारी परिचित धरती पानी में डूब जाएगी।

दैत्य भी अब अधीर हो रहे थे। उन्हें नौका हथियानी ही थी, नहीं तो वो सब मारे जाने वाले थे। ये अब उन बर्बर प्राणियों की जिंदगी-मौत का सवाल था, और वो किसी तरह की क्रूरता से बाज नहीं आने वाले थे।

दैत्य वापस आ चुके थे। एक बार फिर से भयावह संख्या में। दूर से यह दिख नहीं पा रहा था कि हमले का नेतृत्व कौन कर रहा था, लेकिन भयानक युद्धोन्माद से पता चल रहा था कि अग्रिम पंक्ति की कमान स्वयं दैत्यों ने संभाल रखी थी।

वो बिना हिले हुए, एक मील की दूरी पर खड़े थे। फिर कुछ असामान्य घटित हुआ। एक घुड़सवार दैत्यों की पंक्ति से निकलकर, अकेले नौका की तरफ बढ़ा। तारा ने मनु को सवालिया नजरों से देखा, ये पूछते हुए कि क्या घुड़सवार को धनुर्धरों द्वारा रोका जाना चाहिए।

मनु ने ना में सिर हिलाया।

‘उसे आने दो। वो दूत हो सकता है।’

जैसे ही घुड़सवार पास आया, नौका पर सवार प्रत्येक व्यक्ति ने कुछ अजीब सी चीज देखी। यकीनन वो दक्ष घुड़सवार था, दैत्य योद्धा, जो घोड़े की कमान को अपने दांतों से थामे आ रहा था। उसके दोनों हाथों में दो, जलती हुई, बड़ी मशालें थीं।

सत्यव्रत मनु और तारा नौका के ऊपरी भाग पर थे और वो घुड़सवार को स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रहे थे। वो अब नौका के काफी करीब आकर रुक गया था। मानो स्वयं को दिखाकर, बाण मारने का निमंत्रण दे रहा हो। वह अपनी नजरों से नौका के निचले माले पर खड़े धनुर्धरों को चुनौती दे रहा था। कोई बाण नहीं चलाया गया।

फिर उसने मुड़कर, अपनी मशाल दैत्य सेना की तरफ लहराई। बीस और घुड़सवार अपनी श्रृंखला तोड़कर, नौका की तरफ बढ़े।

मनु और तारा समझ नहीं पा रहे थे कि क्या हो रहा था।

‘वह दूत नहीं है। ध्रुव हमारी तरफ बढ़ते घुड़सवारों पर बाण क्यों नहीं चला रहा है?’ मनु ने कहा, वो समझ नहीं पा रहा था कि नरभक्षियों ने क्या दांव चला था।

लेकिन उसे जानने के लिए अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।

ध्रुव मनु की तरफ दौड़ता आया। वो कई माले चढ़कर ये अजीब खबर लेकर आ रहा था।

‘उन्होंने कवच बना लिया है, मनु। लेकिन उससे नहीं जो हमने सोचा था।’

‘तुम कहना क्या चाहते हो, ध्रुव?’

‘इन दैत्यों ने कवच के स्थान पर जीवित, रोते हुए शिशुओं को बांध लिया है।’

‘वे उन हजारों दैत्यों के बच्चे हैं, जो कल मारे गए,’ ध्रुव ने समझाया। ‘दैत्य योद्धाओं ने अपने धड़ पर, सामने की तरफ एक बच्चे को बांधा हुआ है। उन बेशरम लोगों ने इंसानी ढाल के सबसे शर्मनाक रूप का इस्तेमाल किया है। वो हमारी परीक्षा ले रहे थे। पहले, एक घुड़सवार के साथ। फिर बीस के साथ। अब वो समझ गए हैं कि हम बाणों की बरसात नहीं करेंगे। उनका यह दांव हम पर भारी पड़ेगा, मनु।’

‘बदजात!’ मनु अपनी मुट्ठी लकड़ी की बाढ़ पर मारते हुए चिल्लाया। ‘कमीने कायर!’

‘इसने हमारी पूरी दामिनी सेना को बेकार कर दिया, मनु। हम अब एक भी तीर नहीं चला सकते, नहीं तो हमें बच्चों को मारना होगा।’

‘तुम्हारे धनुर्धरों का क्या, ध्रुव? वो सब तो प्रशिक्षित हैं और संख्या में तीन हजार भी हैं। क्या वो दुश्मन को एक-एक कर नहीं मार सकते, बच्चों को नुकसान पहुंचाए बिना?’

‘ये अच्छा विचार नहीं है, सत्यव्रत। वो अचल लक्ष्य हैं। इस बरसाती मौसम में सिर पर निशाना साधना असंभव होगा।’

एक ही रात में हालात इतने नाटकीय ढंग से बदल गए थे कि मनु ने इसकी उम्मीद तक नहीं की थी। लेकिन फिर, अपने सपने में भी वो इतना नीचे नहीं गिर सकता था, जिस पर दैत्य आ गए थे।

‘इस सबमें एक अच्छी बात है, मनु,’ तारा ने कहा, जो शांति से दुश्मन दल का निरीक्षण कर रही थी।

‘और वो क्या है?’ मनु ने पूछा, किसी ऐसी खबर की उम्मीद में जो उसका दिन बचा सके।

और उसे निराश नहीं होना पड़ा।

‘क्या तुमने ध्यान दिया कि जिस फ़ौज ने हमें घेर रखा है, उसमें एक भी शत्रुओं का झंडा नहीं है?’ तारा ने पूछा।

मनु ने दुश्मन की ओर देखा। तारा सही कह रही थी।

‘लेकिन तारा, साफ़ दिखाई नहीं दे रहा है और शायद कल की लड़ाई के बाद आज दस्यु आराम कर रहे हों,’ मनु ने कहा।

‘मुझे ऐसा नहीं लगता, मनु। निर्जन क्षेत्र के कबीले भले ही कितने ही निर्मम क्यों न हों, लेकिन उनमें से कोई भी दैत्यों को अपने मरे साथियों के शिशुओं का इस तरह से, इस्तेमाल करने की आज्ञा नहीं देगा।’

सभी तारा की बात को समझने की कोशिश कर रहे थे। उसने आगे कहा।

‘उनके समर्थ योद्धाओं की बड़ी संख्या के मारे जाने पर वैसे भी दस्यु प्रजाति नर-मुंड के किसी काम की नहीं रही थी। रात के अंधेरे में शायद दैत्यों ने बचे हुए दस्युओं को भी मार डाला होगा। तो इसका मतलब है कि हमारे शत्रुओं की संख्या महत्वपूर्ण रूप से कम हो गई है।’

अगर तारा जो कह रही थी, वो सच था तो वास्तव में यह बात नौका के संरक्षकों के पक्ष में जाती थी।

मनु इस पर निर्भर रहना नहीं चाहता था, लेकिन उसने बेहतर की उम्मीद में तारा की बात पर सिर हिला दिया। वह ध्रुव की तरफ मुड़ा।

‘फिर अब यह हमारे ऊपर है, ध्रुव। तुम, मैं और राजा प्रचंड को अब हमारे पैदल दस्ते का नेतृत्व करते हुए युद्ध क्षेत्र में उतारकर, उन नर-भक्षियों का सामना करना होगा।

इससे पहले कि वो नौका पर चढ़ना शुरू करें, हमें नीचे उतर जाना चाहिए।’

बनारस, 2017
शेषनाग

विद्युत मुग्धावस्था में शिव प्रतिमा के सामने बैठा था।

उसने जो देखा था, उसके सम्मुख अपने घुटनों के बल गिर गया था। उसने अपने हाथ जोड़कर, सिर झुकाया था। वो उस आदिकालीन सर्प की पीली और काली आंखों के अलौकिक तेज से नजर नहीं मिला पा रहा था—और वो तो दस जोड़ी आंखें थीं!

ये ऐसा था मानो वो दिव्य नाग विद्युत को पलभर के लिए ही अपना वास्तविक रूप दिखाना चाहता था। कुछ पल बाद ही वो विकराल, दस फणों वाला सर्प, जादुई रूप से आकार में सिकुड़ने लगा, उसका नीला-हरा तेज भी अपने आप में सिमटने लगा। जब आखिरकार विद्युत ने अपना सिर उठाकर उसे देखा, तो शेषनाग साधना में बैठा एक वृद्ध साधु बन चुका था। उसकी उम्र सैकड़ों वर्ष जान पड़ रही थी, उसकी पपड़ीदार त्वचा अभी भी सांप की छाल का भ्रम उत्पन्न कर रही थी। सर्प-राजा के आसन मुद्रा में बैठे होने के बावजूद भी, देवता भांप सकता था कि वो असामान्य रूप से लंबा और ताकतवर था।

‘आज का तुम्हारा दर्शन पूर्ण हुआ, विद्युत। महान शेषनाग फिर दोबारा तुम्हें बुलाएंगे,’ द्वारका शास्त्री देवता के कानों में फुसफुसाए, और फिर उन्होंने सर्प-राजा के पैर छूकर, जाने की अनुमति ली।

जब विद्युत काले मंदिर के केंद्र में वापस लौटा तो वो अवाक था। उसने जिंदगी के सबसे अलौकिक, आध्यात्मिक पल को महसूस किया था।

लेकिन वो नहीं जानता था कि ये तो महज शुरुआत थी।

‘हिमालय के कुछ साधुओं ने दावा किया कि उन्होंने हिमालय की चोटियों पर अक्सर शेषनाग को साधना करते हुए देखा है। वो कहते हैं कि बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद से कई संन्यासियों ने उन्हें दूर-दराज के क्षेत्रों में देखा। उन्हें पहलगाम से लगभग बत्तीस किलोमीटर दूर, पवित्र अमरनाथ के मंदिर के रास्ते में पड़ने वाली शेषनाग झील के आसपास देखा गया था।’

विद्युत हर शब्द सुन रहा था, लेकिन देखने से लग रहा था मानो वो अभी भी किसी और दुनिया में था।

दूसरे लोग भी स्तब्ध बैठे थे। उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि वो वास्तव में शेषनाग, स्वयं भगवान विष्णु के अलौकिक साथी के बारे में सुन रहे थे! वो जानते थे कि भगवान राम के समय में, उनके भाई लक्ष्मण को उस अनश्वर सर्प का अवतार माना गया था। जब विष्णु ने कृष्ण के रूप में जन्म लिया था, तो उनके बड़े भाई बलराम कोई और नहीं बल्कि शेषनाग का अवतार ही थे।

और यहां, महान मठाधीश द्वारा उन्हें बताया जा रहा था कि पौराणिक कथाओं का वो दिव्य सर्प यहां देव-राक्षस मठ में रह रहा था... जहां वो बैठे थे, उससे कुछ ही दूर।

‘तो, काले मंदिर का रहस्य यह है!’ अचानक दामिनी ने निष्कर्ष निकाला। ‘ऑर्डर सदियों से इसके पीछे पड़ा था? शेषनाग! वो उसे मारना चाहते हैं क्योंकि शेषनाग जैसा अवर्णनीय रूप से ताकतवर और अनश्वर उनकी घिनौनी योजना में बाधा बन सकता है?!’

सभी बुजुर्ग की तरफ मुड़े, उनकी नजरें हैरानी से फ़ैल रही थीं। दामिनी शायद सही कह रही थी। शेषनाग ही शायद काले मंदिर का रहस्य था।

'बताइए न, बाबा... क्या शेषनाग ही काले मंदिर का रहस्य हैं?' नैना ने जोर दिया।

द्वारका शास्त्री ने उन्हें प्रसन्न नजरों से देखा।

'बिलकुल नहीं।'

पुरोहित जी अपने सामने महा-पंचांग फैलाए बैठे थे।

कुछ पलों तक इसके अध्ययन के बाद, उन्होंने द्वारका शास्त्री की तरफ देखा।

'वो शुरू हो गया है, गुरुदेव... रोहिणी नक्षत्र लग गया है।'

जैसे ही उसने अपना वाक्य पूरा किया, तो सैकड़ों शंख एक साथ बज उठे, जिन्हें काले मंदिर में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने सुना। यद्यपि वे जमीन की काफी गहराई में थे, और चारों तरफ पत्थर की बनी मोटी दीवारें थीं, लेकिन काशी के अनेकों पंडितों द्वारा बजाए शंखों की मधुर ध्वनि उन्हें सुनाई पड़ रही थी।

'यह क्या है, बाबा? यह शंख-नाद कहां से सुनाई पड़ रहा है?' विद्युत ने पूछा।

द्वारका शास्त्री, पुरोहित जी और मठ के दूसरे पुजारियों ने भी अब शंख बजाना शुरू कर दिया था। दूसरे लोग मंदिर की घंटी बजाने लगे थे।

'शुभ समय आ पहुंचा है, ओ देवता! अपने पूर्वजों का ध्यान करो! अपने पूर्वजों—विवास्वन पुजारी, सत्यव्रत मनु, अद्वैत शास्त्री, दुर्गादास शास्त्री, भैरव शास्त्री, मार्कंडेय शास्त्री और अपने पिता, कार्तिकेय शास्त्री के सम्मान में हाथ जोड़ो!

उन सबने युद्ध किया और अपने प्राणों की आहुति दी कि तुम आज इस पवित्र दिन में यहां खड़े हो सको—और वही करो जो करने के लिए ब्रह्मांड ने तुम्हें भेजा है!'

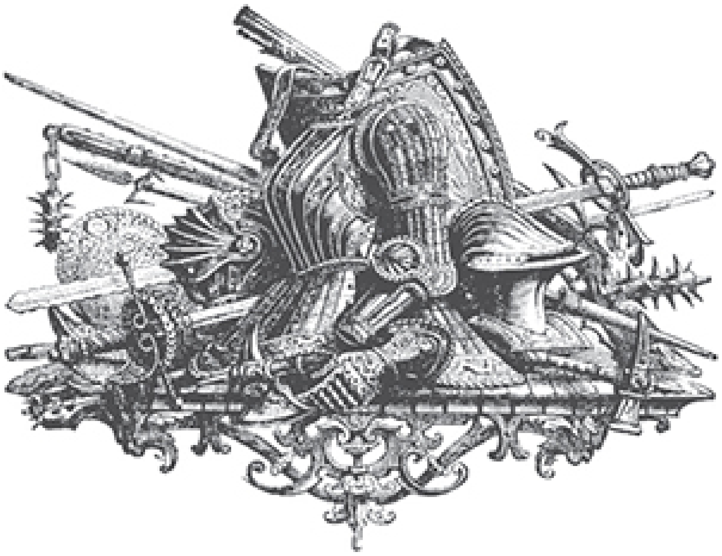

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व

अंतिम युद्ध—भाग III

नौका का तल भारी ढालों और हथियारों की झंकार से गूंज रहा था। विशाल नौका के दसियों हजार संरक्षक दैत्य हमलावरों पर आक्रमण की तैयारी कर रहे थे। उनमें से प्रत्येक यह जानता था कि दस्यु प्रांत के ख़त्म हो जाने के बाद भी वो दैत्यों से संख्या में तीन के मुकाबले एक थे।

‘दामिनी सेना अब भी हमारे बड़े काम आ सकती है, तारा,’ मनु ने कहा, एक सहयोगी भारी कवच को उसके कमर पर बांधने में उसकी मदद कर रहा था।

‘हम युद्ध के लिए तैयार हैं, मनु,’ तारा ने जवाब दिया। ‘मेरी योद्धा किसी से कम नहीं हैं।’

‘हां, तारा, मैं जानता हूं। इसलिए उन्हें पीछे रक्षित सेना, नौका सुरक्षा की अंतिम पंक्ति के रूप में रखा गया है। अगर हम दैत्यों की तलवार से हार गए, तो वो नौका पर चढ़ आएंगे। तब दामिनी सेना को विशाल नौका के मासूम निवासियों को बचाना होगा। लेकिन तब तक, एक और काम है, जो वो कर सकते हैं।’

‘और वो क्या है?’

‘जो दैत्य हमारे सिपाहियों द्वारा मारे या घायल किए जाएंगे, उनके बदन पर शिशु बंधे होंगे। उन छोटे बच्चों को अगर समय पर नहीं बचाया गया, तो वो दोनों तरफ की सेनाओं के पैरों तले कुचल जाएंगे। जैसे ही दैत्य सेना में घुसेंगे, दामिनी सेना पीछे से आकर शिशुओं को बचा लेगी और उन्हें सुरक्षा से नौका पर ले आएगी।’

‘तुम ही वास्तव में चयनित हो, सत्यव्रत,’ सोमदत्त ने कहा, जो कुछ ही दूरी पर अपना कवच बांध रहा था। वो मनु और तारा की बात सुन पा रहा था।

‘सिर्फ तुम ही हो जो अपने दुश्मन तक के बच्चों की सुरक्षा के बारे में सोच सकते हो, वो भी ऐसे कठिन हालात में। मत्स्य ने कोई गलती नहीं की, ओ सूर्य पुत्र। तुम्हारे जैसे व्यक्ति पर हमेशा प्रभु पशुपति का हाथ रहता है!’

‘किसी भी कीमत पर मैं आपको उस रक्त-संघर्ष में उतरने नहीं दे सकता, सोमदत्त जी।’

जब सोमदत्त ने मनु की प्रशंसा की, तब ही पुजारी-राजा ने ध्यान दिया कि महान अभियंता अपना कवच पहन रहे थे। वो दृढ़ निश्चयी था कि अपने स्वर्गवासी पिता के वफादार मित्र को दैत्य आक्रमण का सामना नहीं करने देगा। यद्यपि सोमदत्त स्वयं समर्थ योद्धा था, लेकिन कहीं न कहीं मनु जानता था कि अभियंता उन नरभक्षियों का सामना नहीं कर पाएगा।

उसने जिन दुश्मनों का पहले सामना किया था, उनसे ये दैत्य अधिक निर्मम और अधिक दक्ष थे।

'वह आपकी जगह नहीं है, सोमदत्त जी। हमें आपकी आवश्यकता है। नौका को आपकी आवश्यकता है! भगवान माफ करें, लेकिन अगर आपको कुछ हो गया, तो हम सब अनाथ हो जाएंगे!' सत्यव्रत ने जोर दिया।

'जी, सोमदत्त जी, कृपया आप उस अग्नि में उतरिए जो हमारी प्रतीक्षा कर रही है। जैसा कि आपने देखा, इन दैत्यों की निर्ममता का पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता। वो किसी भी हद तक जा सकते हैं। आप स्वयं को खतरे में मत डालिए,' ध्रुव ने कहा, वो भी सोमदत्त को युद्ध की तैयारी करता देख उतना ही चिंतित था।

बुद्धिमान अभियंता ने अपना हाथ उठाकर, अपना कवच बांध रहे आदमी को रुकने का संकेत किया। वो उन दो मनोहर युवकों की ओर मुड़ा, जो मानवजाति का भविष्य थे।

'देखिए, मनु, मेरे प्रति आपकी चिंता की मैं सराहना करता हूं। लेकिन जब अंतिम समय मैंने आपके पिता को देखा था, जब मैंने आपको अपनी मां संजना को बांहों में भरे, युद्धक्षेत्र से बाहर जाते देखा था, तभी मैंने स्वयं से वादा किया था कि मैं अपनी अंतिम सांस तक आपकी रक्षा करूंगा। अगर आपको लगता है कि मैं उस पागलपन में आपको अकेले जाने दूंगा, तो ये आपकी भूल है।'

'लेकिन, सोमदत्त जी...'

'बस, सत्यव्रत। हम अपना बहुमूल्य समय नष्ट कर रहे हैं। शत्रु हमारे दरवाजे पर खड़ा है। उनके सिपाहियों ने नौका के पहले माले पर चढ़ना भी शुरू कर दिया है। हमें अब निकलना चाहिए। बस ये याद रखना, मनु... मैं आपको अपने पुत्र के समान ही स्नेह करता हूं।'

ये बुद्धिमान बुजुर्ग सुनने को तैयार ही नहीं था। मनु ने कुछ और नहीं कहा।

यही तो समस्या है, सोमदत्त जी। मैं भी आपको पिता के समान ही प्रेम करता हूं।

·||卐||·

नौका रक्षकों द्वारा किए गए जवाबी-हमले का स्तर और तीव्रता ताकतवर दैत्यों के लिए भी हैरान कर देने वाली थी। विशालकाय नौका के ऊपरी माले से, सैकड़ों

रस्सियों के माध्यम से उतरते हजारों हड़प्पा सैनिकों को देख दैत्य स्तब्ध थे। काले बादलों की वजह से नौका का ऊपरी माला दिखाई नहीं पड़ रहा था। तो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि नौका के योद्धा सीधे आसमान से उतर रहे थे!

धातुओं की टकराहट दिल दहला देने वाली थी, हड़प्पा के सैकड़ों सैनिकों ने जमीन पर आए बिना ही, अपनी तलवार खींचकर नौका की ऊंची दीवारों से सीधे दैत्य योद्धाओं पर छलांग लगा दी।

पहले वार से ही ये मुकाबला जिंदगी और मौत का था। दैत्य हथियार के रूप में किसी भी चीज का उपयोग कर रहे थे। तलवार, भाले, छुरा, कृपाण, पशुओं के पंजे, जहरीले कांटे, उनके अपने नाख़ून, जोड़ और दांत। हड़प्पा सिपाहियों के लिए ये इंसानी भिड़ंत से अधिक भूखे भेड़ियों से लड़ने के समान था।

नौका से उतरने वाली अगली टुकड़ी प्रचंड के नेतृत्व में असुरों की थी। वो नौका से उतरने के लिए रस्सी की सीढ़ियों और लताओं का इस्तेमाल करके, नीचे रक्त संघर्ष में कूद रहे थे।

और फिर, आसमान से गिरते धूमकेतु की तरह, दो विकराल योद्धा दैत्य बल पर टूट पड़े। यद्यपि हड़प्पा के प्रशिक्षित सिपाहियों ने नौका की दस से पंद्रह हाथ ऊंची दीवारों से छलांग लगाई थी, लेकिन ये तेजस्वी योद्धा सीधे चालीस हाथ ऊंची दीवार से कूदे थे।

दोनों ने लंबी और चौड़ी ढाल थाम रखी थी, जिससे वे दैत्य दल के भालों, कवच और तलवारों का सामना करते हुए, जमीन पर उतरने से पहले ही कईयों को कुचल चुके थे। दोनों योद्धा इस बढ़त का उपयोग करते हुए, नरभक्षियों की अंतिम पंक्ति को तोड़ कर आगे बढ़ गए।

उनमें से एक ने शानदार धनुष पकड़ा हुआ था। उसके पास तीरों से भरे हुए चार तरकश थे, जिसमें से दो उसने अपनी दो जांघों और दो को कमर पर बांध रखा था। वह दुनिया का सबसे विकराल धनुर्धर था।

वह ध्रुव था।

दूसरा योद्धा कांसे और चमड़े से बने हथियारों से ढका था। उसके लंबे बाल पीछे एक चोटी में बंधे थे। उसने अपने हाथों में एक ढाल और एक लंबी तलवार पकड़

रखी थी, जबकि दो छोटी तलवारें उसकी कमर के दोनों ओर बंधी थीं। वो कभी किसी लड़ाई में पराजित नहीं हुआ था। उस योद्धा का मुकाबला कोई भी दैत्य नहीं करना चाहता था। वो वही था, जिसकी प्रतीक्षा नर-मुंड कर रहा था।

वो मनु था।

दोनों शेरों ने **लकड़बग्घाओं** के झुंड पर छलांग लगा दी थी।

बनारस, 2017
रूद्र प्रतिमा

‘पूरा काशी ख़ुशी मना रहा है, बाबा!’

सोनू सर्पीली सीढ़ियों से भागा हुआ सा आया। उसे उसके पिता, बुद्धिमान पुरोहित जी ने मठ की छत पर भेजा था, जिससे वो रात के आसमान का निरीक्षण कर सके। लेकिन वो अत्यधिक जानकारी के साथ वापस आया।

वो हांफते हुए, किंतु प्रसन्न मुद्रा में पास आया।

‘नक्षत्र आसमान में वैसे ही चमक रहे हैं, जैसा आपने बताया था। लेकिन कुछ और भी बात है। इस पवित्र समय में पूरी काशी हमारे साथ है, बाबा! हजारों मंदिरों में भगवान विष्णु की आरती हो रही है। सैकड़ों आश्रमों से हवन का पवित्र धुआं निकल रहा है। देर रात की पूजा के लिए अनेकों पुजारी गंगा घाट पर जुट आए हैं। पूरा काशी रोहिणी नक्षत्र का स्वागत कर रहा है, बाबा!’

द्वारका शास्त्री ने अपनी आंखें बंद कर ईश्वर का आभार व्यक्त किया।

‘वो नक्षत्र का स्वागत नहीं कर रहे हैं। वो उसका स्वागत कर रहे हैं जो आने वाला है।’

‘लेकिन, बाबा, इतने लोगों को इस नक्षत्र के बारे में कैसे पता है? मुझे तो लगा था कि यह छिपी हुई बात थी। क्या वो सब रहस्य से अवगत हैं, बाबा?’

‘नहीं, विद्युत। लेकिन उन सबको देव-राक्षस मठ की तरफ से संदेसा भिजवा दिया गया था। ये वही पुजारी हैं जिन्होंने रोम के बिग मैन की तांत्रिक लड़ाई में मेरा साथ दिया था, जब उसने तुम्हारी आत्मा को कैद करने की कोशिश की थी। मैंने उन तक संदेश भिजवा दिया था। वो जानते हैं कि कुछ दिव्य घटित होने वाला था। लेकिन केवल शेषनाग, पुरोहित और मैं जानते हैं कि वो क्या है। और अब से, तुम भी ये जान जाओगे, मेरे बच्चे।’

इसी के साथ मठाधीश ने अपना शंख उठा लिया और अपने होंठों से लगाकर, पूरे वेग से उसे बजाने लगे। दूसरे साधुओं ने भी शंख, मंजीरे और घंटियां बजाकर उनका साथ दिया। शिव प्रतिमा के चारों ओर अगरबत्ती जलाकर, कपूर के दीये प्रज्वलित किए गए और एक बार फिर से शक्तिशाली मंत्रों का जाप शुरू हो गया।

विद्युत ने ध्यान दिया कि इस बार वो रूद्र-पथ का जाप नहीं कर रहे थे। उसने फिर से मंत्रों पर ध्यान दिया—

।। *शांताकारं भुजगशयनं*
पद्मनाभं सुरेशं;
विश्वाधारं गगनसदृशं
मेघवर्णं शुभाङ्गम्... ।।

विद्युत तुरंत ही उस शक्तिशाली मंत्र को पहचान गया।

विष्णु शांताकारं मंत्र! वो मंत्र जो भय को दूर कर, उच्चारण करने वालों को शौर्य, साहस और विजय देता है।

दामिनी आई और अपने देवता के पास खड़ी हो गई। काले मंदिर का वातावरण अब आध्यात्मिक ऊर्जा से कंपायमान था। अनेकों शंखों के नाद, विष्णु शांताकारं का मंत्रोच्चार, मंजीरे और घंटियों की गूंज, गेंदे के फूल और कपूर की महक... काला मंदिर संक्रामक, भ्रमित, और सम्मोहित कर देने वाली ऊर्जा से गुंजायमान था!

जबकि दूसरे पुजारी स्वरोच्चार को संभाले हुए थे, द्वारका शास्त्री विद्युत के पास आए। उन्हें देवता के कान के पास आकर, अपनी आवाज उठाते हुए बोलना पड़ा।

‘आओ, विद्युत... समय आ गया है!’ उन्होंने ये कहकर, अपने परपोते की कलाई पकड़ी।

द्वारका शास्त्री, विद्युत की बांह थामे उसे मंदिर के केंद्र में बनी, भगवान शिव की मनोहर प्रतिमा के सामने ले गए। वो प्रतिमा अब कपूर के दीये से प्रकाशित थी।

मठाधीश ने प्रभु रूद्र की छोटी सी प्रार्थना कही। और तभी एक झटके से उन्होंने शिव का, भारी तांबे का त्रिशूल खींच लिया, जो नीचे पक्की जमीन में गड़ा था।

एक पल बाद, नीलकंठ को उस विशाल प्रतिमा के पीछे से एक ख़ास किस्म के घर्षण की आवाज आई। वो हल्की आवाज थी, जो उस सारे मंत्रोच्चार के बीच केवल विद्युत और द्वारका शास्त्री ही सुन सकते थे। खींचे गए त्रिशूल ने बहुत से छिपे यंत्रों, उत्तोलकों और चरखी की श्रृंखला को छेड़ दिया था।

सबको मुग्ध करते हुए, वो शिव प्रतिमा अपने स्थान से हिली। आराम से घूमते हुए उस प्रतिमा ने एक सौ अस्सी डिग्री का घेरा पूर्ण किया, और अब शिव की कमर मंदिर के केंद्र के सामने थी। कुछ पल बाद, शिव प्रतिमा का पृष्ठ भाग केंद्र से लेकर कंधों तक खुल गया। शिव उस प्रतिमा में बैठी हुई मुद्रा में थे। उसके अंदर लगी पत्थर की अनेकों प्लेटें रीढ़ की हड्डी की तरह खुलने लगीं और प्रतिमा के अंदर, अधोलंब में खोखला स्थान दिखाई दिया।

और फिर वो अद्भुत नीला प्रकाश दिखाई दिया, और उसकी लंबाई में गुदी हुई गरुड़ पुराण की पंक्तियां, वो साक्षात मौत के प्राचीन दूत के समान दिखाई पड़ रही थी।

विख्यात तलवार।

रत्न-मारू!

विद्युत के चेहरे पर तलवार से निकलता नीला प्रकाश प्रतिबिंबित हो रहा था। रत्न-मारू शिव के धड़ के साथ, लंबाई में रखी हुई थी। उसका रत्नजड़ित मूंठ अब देवता की पहुंच में था। उसे लगा कि वो उस पत्थर की म्यान से उस तलवार को निकाल ले।

'यह दिव्य तलवार है, विद्युत। जब विवास्वन पुजारी ने इसे असुरों से हुई अंतिम लड़ाई में इस्तेमाल किया था, तब इस तलवार को दिव्य शक्तियों ने अपना आशीर्वाद दिया था। उसके बाद इसे उनके पुत्र, अनश्वर पुजारी-राजा, सत्यव्रत मनु को सौंप दिया गया। ये तलवार उस विशाल नौका की सबसे बहुमूल्य वस्तु थी, जो प्रलय में फंसी थी और लगभग दो सालों तक उससे नहीं निकल पाई थी। उसके साढ़े तीन सदी बाद तक, इस दिव्य तलवार की रक्षा हमारे पूर्वजों द्वारा की गई।

यह अपराजेय हथियार है, विद्युत। जो भी इसे उठाता है, वो अपराजित हो जाता है। हालांकि, ये ऐसी सवारी है, जो स्वयं अपना सवार चुनती है, न कि सवार को इसे चुनने का अधिकार होता है।'

पुजारियों ने अपना पवित्र मंत्रोच्चार जारी रखा। दामिनी, नैना, बलवंत, पुरोहित जी, गोवर्धन और सोनू अब देवता के गिर्द आकर खड़े हो गए थे।

'और आपको लगता है ये मुझे चुनेगी, बाबा?' विद्युत ने पूछा, वो निश्चिंत नहीं था कि उससे क्या उम्मीद की जा रही थी।

'शायद ये चुने, विद्युत। शायद न चुने। लेकिन ये कोई मायने नहीं रखता है। विख्यात तलवार तुम्हारे लिए नहीं बनी है, मेरे बच्चे...' मठाधीश ने जवाब दिया।

विद्युत एक पल को शर्मिंदा हुआ। पिछले कुछ सप्ताह से उसके कंधों पर जो अंतिम देवता होने का भार था, वो द्वारका शास्त्री की इस अंतिम पंक्ति से उतर गया था!

द्वारका शास्त्री अब अपने परपोते की तरफ मुड़े, उनके चेहरे पर अविश्वास का भाव था।

'तुम अभी तक काले मंदिर का रहस्य नहीं समझ पाए हो न, विद्युत?'

देवता का चेहरा भावशून्य था। वृद्ध स्नेह से हंस दिए, वह अपने प्यारे विद्युत की मासूमियत पर मोहित थे।

द्वारका शास्त्री ने सीधे पूछा।

‘तुमने लिखी हुई पंक्तियां पढ़ीं, विद्युत।

क्या तुम नहीं जानते कि वास्तव में कौन रत्न-मारू का स्वामी बनने वाला है?’

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व

मत्स्य-प्रजाति के घुड़सवार

अफरा-तफरी का माहौल था।

नौका रक्षकों और नर-भक्षी दैत्यों के बीच होने वाले दूसरे दिन के युद्ध में इतना रक्तपात हुआ कि पृथ्वी का ह्रदय भी कांप उठा। न ही उसने कभी इतनी निर्दयता से अपने बच्चों को एक-दूसरे का रक्त बहाते देखा था।

दैत्य एक पर पांच के समूह में हमला कर रहे थे, बिलकुल भूखे भेड़ियों की तरह। एक चाकू मारता, जबकि दो लोग अपने विरोधी के हाथ और पैर पकड़ लेते। चौथा अपने दुश्मन की आंखें नोंचने की कोशिश करता, तो पांचवां हमलावर अपने दांत से दुश्मन का मांस फाड़ देता।

यद्यपि हड़प्पा के योद्धा और असुर बल भी अपराजेय ताकत रहे थे, लेकिन यहां उनकी कम संख्या और युद्ध के अपारंपरिक तरीकों की वजह से दैत्यों का पलड़ा भारी हो रहा था। हालांकि जहां भी सैकड़ों की संख्या में मर रहे थे, लेकिन नौका रक्षकों की तरफ से हजारों वीरों के शव मैदान में पड़े थे।

‘इस तरह तो हम किसी भी हालत में जीत नहीं पाएंगे, मनु!’ अपने तीर से एक नर-भक्षी का सीना चीरते हुए ध्रुव चिल्लाया।

‘आज का दिन लड़कर देखते हैं, ध्रुव... अभी तो शुरुआत ही है!’ मनु ने अपने आसपास के हिंसक उत्पात को देखते हुए कहा। वो घोड़ों से गिरते हुए अपने सैनिकों और उन पर झपटते दर्जनों दैत्यों को देख रहा था।

‘अगर ऐसा ही और कुछ घंटों तक और चला, तो कोई शुरुआत या अंत नहीं बचेगा, मनु!’ मनु को वास्तविकता का अहसास कराने की कोशिश करते हुए मनु चिल्लाया।

नौका का नेता नरम पड़ा। वह जानता था कि ध्रुव सही कह रहा था। लेकिन वो ये भी जानता था कि अभी से अपने विशिष्ट दल को बुलाना बहुत जल्दी हो जाएगी।

‘ठीक है, ध्रुव... ऐसा ही करो!’

कुशल धनुर्धर ने हां में सिर हिलाया और सिर घुमाकर एक तीर निकाला। उसने उस तीर के सिरे को कठोर जमीन पर रगड़कर, उसमें अग्नि उत्पन्न की। ध्रुव ने उसे हवा में, नौका की तरफ उछाला।

वह एक संकेत था।

तारा ने आसमान में लाल रेखा देखी। जल्दी मिले इस संकेत से वो भी हैरान थी, और तुरंत ही समझ गई कि वो लोग युद्ध हार रहे थे।

वो निचले तल पर ठहरी हुई थी। नौका की शेरनी ने दामिनी सेना की अपनी एक अध्यक्ष को चिल्लाकर आदेश दिया।

‘अब!’

कुछ पल बाद, दैत्यों ने जो सुना और देखा, वो जम गए। नौका की तली से मोटी लकड़ी के बड़े-बड़े तल खुलने लगे। नौका की तली के पल्ले शक्तिशाली जंजीरों के माध्यम से खुल रहे थे, और उनमें छिपे विशालकाय कक्ष दिखाई पड़े। नरभक्षियों की टुकड़ी को भयभीत करते हुए, प्रत्येक कक्ष से नौका की सबसे दक्ष सेना के सैकड़ों घुड़सवार बाहर निकले।

शक्तिशाली मत्स्य प्रजाति की सेना!

वो तूफ़ान के जैसे बढ़े आ रहे थे, अपने रास्ते में आने वाली प्रत्येक वस्तु को उखाड़ते हुए। जब वो अपने विशिष्ट, एक-रूपीय हाव-भाव से बढ़ रहे थे, तो उनके

घोड़ों की टापों तले की धरती हिल रही थी।

मत्स्य-प्रजाति के योद्धाओं को रोका नहीं जा सकता था। उनकी तलवारें ऐसी मिश्रित धातु की बनी थीं, जो पहले कभी किसी ने नहीं देखी थीं। उनकी ढाल जब भी किसी वस्तु से टकराती, तो उससे निकलने वाली कौंध से शत्रु की आंखें चुंधिया रही थीं। पलभर में ही लगा कि हवा का रुख बदल गया था। मत्स्य प्रजाति के वार से दैत्यों के सिर कटकर हवा में उड़ रहे थे। फिर मत्स्य प्रजाति की सेना श्रृंखला तोड़कर, पांच भिन्न दिशाओं से नरभक्षी दल में घुसी और अपने हमले से उन्हें तितर-बितर करने लगीं।

युद्ध में अचानक आए इस बदलाव से हड़प्पा सैनिकों और असुरों को मनोवैज्ञानिक बढ़त हासिल हुई। नौका की सेना अब नई ऊर्जा से हमला कर रही थी। हालांकि अभी भी वो संख्या में कम थे, लेकिन मत्स्य प्रजाति के आगमन से अभी के लिए हालात बदल गए थे।

‘गर्ररआआअह्ह्ह्हह...!’

अचानक भीषण युद्ध के बीच, मानो दस शेरों के दहाड़ने की आवाज आई। दूरी पर जो उन्होंने देखा, उससे मनु, ध्रुव, सोमदत्त और प्रचंड की रीढ़ में सिहरन दौड़ गई।

नर-मुंड किसी दूसरी दुनिया के पिशाच की तरह दहाड़ रहा था, अपने सिर को पीछे झटका देकर, दोनों हाथ फैलाए, अपनी कोहनियां मोड़कर वो अपनी फटने को तैयार फूली हुई मांसपेशियां दिखा रहा था।

‘ऊऊर्ररगर्ररआआअह्ह्ह्हह...!’

वो फिर से दहाड़ा, इस समय और दानवीय रूप से, वो अपना सिर घुमाकर अपने शत्रुओं को देख रहा था।

बहुत से लोगों के दिल धड़कना बंद हो गए और रक्त नसों में जम गया। दोनों पक्षों के योद्धाओं के बीच, वो विकराल दैत्य की तरह खड़ा था। वो घोड़े पर सवार योद्धाओं से भी ऊंचा नजर आ रहा था। जब उसकी दूसरी गरज सुनाई दी, तो कुछ पल के लिए युद्ध थम गया। दोनों तरफ के योद्धाओं ने अपने ईष्ट का स्मरण किया।

मनु और ध्रुव ने एक-दूसरे को देखा। यद्यपि उन्होंने अपने दुश्मन, काले जंगल के सम्राट के बारे में अनेकों कहानियां सुनी थीं, लेकिन वो उन भयानक कहानियों से भी अधिक भयावह था।

'मैंने तुम्हें बताया था, सत्यव्रत। यह कोई मनुष्य नहीं है। यह नरक द्वारा अस्वीकृत बदन में उतरा शैतान का अवतार है! हमें उसे घेर लेना चाहिए। हमें उसे घेरकर मारना चाहिए!'

'नहीं, ध्रुव! चाहे वो जो भी हो, जैसा भी हो... वो हमारे दुश्मन का नेता है। और उसके साथ सम्मानसहित लड़ा जाना चाहिए।'

'सम्मान? क्या तुमने सम्मान कहा? वो आदमी जो बाणों से बचने के लिए नवजात शिशुओं को ढाल बनाकर उतरा? वो आदमी जिसने सोते में अपने ही साथियों को मार दिया? तुम ऐसे हैवान के साथ सम्मान की सीमा में लड़ना चाहते हो, सत्यव्रत मनु??' ध्रुव ने चिढ़कर विरोध किया, वो अपने मित्र और राजा के कठोर आदर्श से स्तब्ध था।

मनु शांति से, दूर खड़ा अपने अजेय शत्रु को देख रहा था।

उसने अपनी तलवार खींच ली, और जहां नर-मुंड बरगद की तरह खड़ा था, उस और बढ़ने से पहले ध्रुव से कहा।

'वचन दो, ध्रुव... चाहे जो हो जाए, तुम मेरे और नरभक्षी राजा के युगल मुकाबले में दखल नहीं दोगे।'

'लेकिन मनु...' ध्रुव ने विरोध किया।

मनु ने अपना निर्देश दोहराया।

'याद रखना, ध्रुव... चाहे जो हो जाए।'

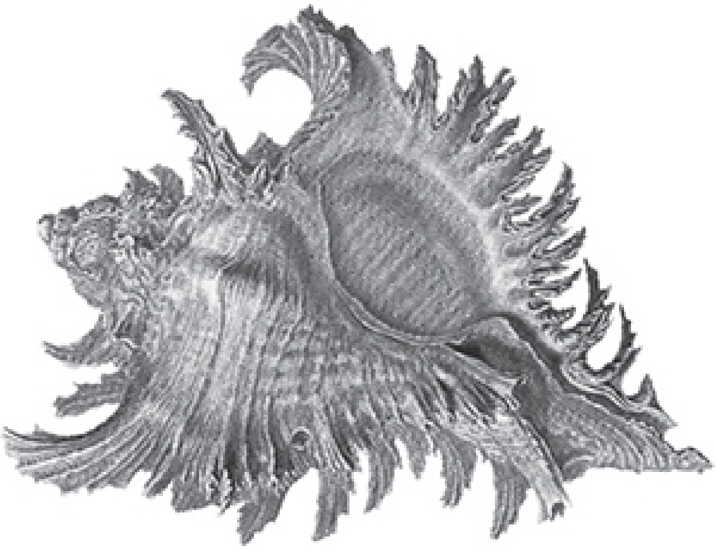

बनारस, 2017

‘पदार्पणम कुरु, प्रभु!’

विद्युत स्तब्ध खड़ा था, नीली तलवार की शक्ति के सम्मोहन में, उसकी अशुभ धार से प्रकाश उत्पन्न हो रहा था।

उन पलों में देवता ने अपने दिमाग पर जोर डालने की कोशिश की कि क्या उसने पहले कहीं रत्न-मारू के विषय में सुना था।

कुछ याद नहीं आया।

‘क्षमा कीजिए, बाबा... मुझे कुछ याद नहीं आ रहा कि कहीं मैंने इस शक्तिशाली हथियार के विषय में कुछ पढ़ा हो। कृपया इस पर प्रकाश डालिए। यह तलवार किस तक पहुंचनी है? काले मंदिर का यह रहस्य क्यों सदियों तक छिपा रहा?’

द्वारका शास्त्री ने अपने परपोते की आंखों में देखते हुए सिर हिलाया, वो मान नहीं पा रहे थे कि क्यों अब तक विद्युत रहस्य को समझ नहीं पाया था।

‘यह तलवार काले मंदिर का रहस्य नहीं है, विद्युत।

वह है!’

हर कोई देखने के लिए मुड़ा कि ग्रैंडमास्टर की उंगली किस ओर संकेत कर रही थी।

शिव की प्रतिमा और चमकती रत्न-मारू के नीचे बना लकड़ी का एक बक्सा देखने में उतना प्रभावशाली तो नहीं लग रहा था।

विद्युत और उसके साथियों ने उस संदूक को ध्यान से देखा, उनमें से कोई भी उसे छूने का साहस नहीं कर पा रहा था।

‘आगे बढ़ो, मेरे बच्चे। केवल तुम ही इसे उठा सकते हो, विद्युत। इस धरती का अंतिम देवता ही मानवजाति के सबसे बड़े रहस्य से पर्दा हटा सकता है।’

द्वारका शास्त्री ने विद्युत को लकड़ी के संदूक से उस अजीब सी दिखने वाली वस्तु को उठाने के लिए बुलाया।

देवता ने स्वत: किसी प्रेरणा से उस वस्तु के सम्मान में हाथ जोड़े और आगे आकर उसे उठाने के लिए हाथ बढ़ाया। जैसे ही विद्युत की उंगलियों ने उस मुड़े हुए ढांचे को छुआ, एक तेज आवाज ने विद्युत के कानों के परदे को चीर दिया। मानो एक प्राचीन सर्प उसके मन और आत्मा को भेद गया हो। किसी और को कुछ सुनाई नहीं दिया।

विद्युत ने उस वस्तु से पीछे हटने के लिए, तुरंत अपने हाथ हटा लिए।

‘क्या हुआ, विद्युत?’ मठाधीश ने पूछा।

'मैं... मैं कह नहीं सकता, बाबा। ऐसा लगा मानो एक आदिकालीन समुद्र-दानव मेरे दिल में गरज रहा हो...'

वे अब उस टुकड़े को सावधानी से पढ़ रहे थे। वो सब उसे देखने मात्र से मोहित थे। उस मुड़े हुए टुकड़े में कुछ ऐसा था, जिसने उनके मनोबल को बढ़ा दिया, उनकी आत्मा को शुद्ध कर दिया।

'ऐसा लगता है कि ये किसी विशाल प्राणी का सींग है,' दामिनी ने कहा, उसकी आवाज अवर्णनीय भक्ति से भारी हो रही थी।

'हां... लेकिन यह विशाल शंख की तरह मुड़ा हुआ लग रहा है। यह किसी समुद्री दानव के सींग के समान है!' विद्युत ने कहा, वह अपनी कही हुई बात पर ही यकीन नहीं कर पा रहा था।

'तुम सही कह रहे हो, विद्युत। यह सत्यव्रत मनु को दिया गया मत्स्य का उपहार था। यह एक सायरन, एक तुरही था, जिसे पुजारी-राजा को तब बजाना था, जब प्रलय के समय उसे विशाल नौका बचाने के लिए प्रभु की मदद की आवश्यकता पड़े।'

'इस मुड़े हुए शंख के अंदर देखो, बेटा,' द्वारका शास्त्री ने कहा।

फिर उसने मुड़कर, बाकी सभी को पीछे हटने का निर्देश दिया, जिससे देवता को एकांत मिल सके। विद्युत को अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ी। उसने शंख की भीतरी बनावट में झांका और तुरंत ही उसे वो मुड़ा हुआ पन्ना दिखाई दे गया। उसने उसे बाहर निकाल लिया।

वो पन्ना पीले-भूरे रंग का था। वह विद्युत की अब तक देखी गई हर वस्तु से पुराना लग रहा था। यह ऐसी धातु से बना था, जो देवता ने कभी नहीं छुई थी। यह विद्युत का थामा हुआ सबसे ताकतवर सामान था। ऐसा लग रहा था कि वो पन्ना स्वयं देवता से बात कर रहा था।

‘यह एक प्राचीन पत्र है जिसे 3,700 सालों से पीढ़ी दर पीढ़ी सौंपा जाता रहा, विद्युत। इसे हमारे महान पूर्वज सत्यव्रत मनु ने फिर से हड़प्पा की लिपि में लिखा था। ये काम उसने स्वयं मत्स्य के आदेश पर किया था!’ देव-राक्षस मठ के ग्रैंडमास्टर ने घोषणा की।

विद्युत सम्मोहन में था। उसे अब गहराई से महसूस हो रहा था कि वो किसी प्रागैतिहासिक कहानी का हिस्सा रहा था। अपने हाथों में पत्र को थामे हुए, जीवन में पहली बार, देवता को महसूस हुआ कि वो वही था, जो बाकी लोग उसे कहते थे।

आधा-मनुष्य, आधा-भगवान!

‘तुम्हें वो पत्र पढ़ना होगा, विद्युत। समय आ गया है, मेरे बच्चे...’

‘लेकिन, बाबा... आपने बताया कि यह हड़प्पा लिपि में है। मैं ही नहीं, दुनिया में कोई भी उस आदिकालीन लिपि को समझ नहीं पाया है,’ देवता ने झिझकते हुए कहा।

मंत्रोच्चार और शंखनाद की बहरा कर देने वाली आवाज लगातार आ रही थी। पुजारी और साधु अब उन्मुक्त हो चुके थे, वो कलयुग के सबसे पवित्र पल का आनंद ले रहे थे। द्वारका शास्त्री ने एक बार फिर से अपना शंख उठाया, और तेज, ऊर्जावान आवाज में कहा—

‘इसे खोलो, पढ़ो और मानवजाति के सबसे भव्य और नेक रहस्य को उद्घाटित करो!
पत्र स्वयं तुम्हारे सामने उद्घाटित होगा, ओ देवता! यह नियत है!
इसे पढ़ो, और नई सुबह का स्वागत करो!
इसे पढ़ो, और रक्त धारा के श्राप को समाप्त कर दो।
इसे पढ़ो, ओ शक्तिशाली देवता, और काले मंदिर के प्राचीन रहस्य से पर्दा हटा दो!’

द्वारका शास्त्री अब स्वयं अपनी बांहों को फैलाते हुए चिल्लाए, मानो वो किसी दिव्य शक्ति का आह्वान कर रहे हों, अबाध भक्ति से—

‘पदार्पणम कुरु, प्रभु!’

देव-राक्षस मठ के उपस्थित पुजारियों और साधुओं ने भी एकसुर में उनकी बात दोहराई—

‘पदार्पणम कुरु, प्रभु!’
‘ओ देवों के देव, उपस्थित हों!’

विद्युत ऐसी दिव्यता और ऊर्जा महसूस कर रहा था, जो उसने पहले कभी अनुभव नहीं की थी। वो ईश्वर के साथ एकत्व महसूस कर रहा था।

प्राचीन भविष्यवाणी को सच साबित करते हुए, रोहिणी नक्षत्र के संयोजन में, धरती के अंतिम देवता ने... प्राचीन पत्र को खोल दिया।

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व

गंधक!

नौका के तल पर ही जुगाड़ू चिकित्सालय बना लिया गया था, क्योंकि विशाल नौका पर पहले से बने औषधालय में इतनी संख्या में घायलों का इलाज नहीं किया जा सकता था। घायल, क्षतिग्रस्त और अंगभंग सिपाहियों का रुंदन असहनीय होता जा रहा था। यद्यपि दूसरे दिन अचानक हुए मत्स्य-प्रजाति के हमले से युद्ध का समीकरण बदल गया था, लेकिन तब तक पहले ही उनके बहुत से आदमी मारे गए थे।

पहला दिन नौकावासियों के नाम रहा था। दूसरे दिन दैत्य हावी रहे थे।

सब समझते थे कि यह युद्ध तीसरे दिन से अधिक नहीं चलेगा।

अगली बार जब दुश्मन आमने-सामने होंगे, तो वो आर-पार की लड़ाई होगी। आने वाले कल में इस युद्ध का विजेता घोषित हो जाएगा। इससे भी अधिक युद्ध में दैत्यों की दक्षता और क्रूरता को देखकर, मनु जान गया था कि अगर वो अगले दिन असफल रहे, तो दामिनी सेना महज कुछ घंटों तक ही उन ताकतवर दैत्यों को नौका में आने से रोक सकती थी।

नौका के हजारों पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के नर-मुंड के क्रूर हाथों में पड़ जाने का ख्याल की पुजारी-राजा को चिड़चिड़ा, हताश बना रहा था। इससे भी ऊपर, अब दो बातें नौका की ताकतों के विरुद्ध थीं।

मत्स्य-प्रजाति का आश्चर्यजनक तत्व जा चुका था। अगले दिन दैत्य उनके लिए तैयार होकर आएंगे।

और नौका के सिपाहियों ने नर-मुंड को उसके पूरे वैभव के साथ देख लिया था। परिणामस्वरूप, उनका नैतिक बल पूरी तरह टूट चुका था।

कोई भी नौका के नेता से कुछ नहीं कह रहा था।

लेकिन फुसफुसाहट साफ थी।

नर-मुंड अपराजेय था।

वे एक-दूसरे से आधे मील की दूरी पर खड़े थे।

गरजते, दहाड़ते, नर-भक्षी दैत्य एक तरफ।

घायल, संख्या में कम, नौका का दृढ़ बल दूसरी तरफ।

यह अंतिम दिन था। अंतिम युद्ध भी। और फिर विनाशकारी प्रलय आकर सब लील जाएगी। बाढ़ का पानी अब नौका के दलदलीय क्षेत्र में पहुंचने लगा था। दोनों सेनाएं घुटने-भर पानी में खड़ी थीं। संकेत स्पष्ट था।

प्रलय अब कुछ ही घंटे दूर थी।

विशालकाय लहरों की गरज अब कानों में पड़ने लगी थी। हवा तेज गति से चल रही थी, मानो वो उस जल-पर्वत का अशुभ दूत हों, जो पहले ही लगभग समग्र आर्यवर्त को निगल चुका था।

दोनों सेनाएं अंतिम सांस तक युद्ध के लिए तैयार थीं। इसीलिए नहीं कि वो किसी राजा या साम्राज्य को बचाने के लिए लड़ रहे थे। न ही अपनी देशभक्ति या माल लूटने की वजह से।

दोनों पक्षों के आदमियों के पीछे उनके बच्चे, पत्नी और वृद्ध माता-पिता थे। अब पराजय कोई विकल्प नहीं थी। क्योंकि हार का मतलब स्वयं उनका अंत नहीं होगा, बल्कि अपने प्रियजनों की निश्चित मृत्यु भी होगा।

और इसी सबसे बड़ी, पागलपन भरी प्रेरणा ने दोनों तरफ की सेनाओं को तैयार खड़ा किया था।

यह हर तरह से रक्त-स्नान होना था।

सोमदत्त के निर्देश पर, मत्स्य-प्रजाति घुड़सवारों की एक टुकड़ी नर-मुंड की तरफ बढ़ी।

इस मुकाबले से घंटों पहले नौकावासियों ने एक बात का निर्णय कर लिया था—नर-मुंड को रोकने का। जिस युद्ध संघर्ष का वो सामना करने वाले थे, नर-मुंड जैसा एक राक्षस उसका रुख बदल सकता था। वो अकेले ही सुरक्षा पंक्तियों को चीर सकता था, वो चाहे तो विशाल नौका के सेनाध्यक्षों को एक ही बार में मार सकता था, वो रक्षकों का रक्त जमा सकता था और साथ ही अपने साथियों को कभी न हारने वाला आत्मविश्वास दे सकता था। युद्ध के उसके निर्मम तरीके से दुश्मनों को लकवा मार जाता था, और आत्मा जम जाती थी।

मनु, तारा, ध्रुव, सोमदत्त और प्रचंड ये बात अच्छी तरह जानते थे कि अगर उस दिन नर-मुंड जीवित रह जाता हैं, तो नौका हमेशा के लिए हाथ से निकल जाएगी।

वह मीलों दूर से दिखाई पड़ रहा था। नौका के सिपाहियों को चीरते हुए, उन्हें हवा में उछालता, उनके सिर खा जाता, अपने विशालकाय पैरों तले उन्हें कुचलता। उसके आसपास की जमीन इंसानी मांस और रक्त से गंधलाए दलदल से कम नहीं लग रही थी।

मत्स्य-प्रजाति के योद्धा स्याह जंगल के सम्राट की तरफ दौड़े जा रहे थे, उनका एक ही लक्ष्य और चुनौती था, उसे ख़त्म करना। वो अतीत में कभी पराजित नहीं

हुए थे। लेकिन मत्स्य-प्रजाति के चुनिंदा योद्धाओं ने भी उस नरभक्षी मुखिया की ताकत और निर्दयता को कम आंक लिया था।

जब वो उसके पास पहुंचने और उसे घेरने में सफल हो गए, तो वो शैतान पागलों की तरह हंसने लगा... अपने ही सिर पर थप्पड़ बरसाते हुए वो अदम्य निडरता का प्रदर्शन कर रहा था। अगले ही पल उसके उल्लसित चेहरे पर कट्टरता आ गई, और उसने एक हाथ गहरे पानी में से, जहां वो सब खड़े थे, एक बड़े पेड़ का तना उठा लिया!

ये नौका के सेनाध्यक्षों की कल्पना से परे था कि कोई शाहबलूत के तने को सामान्य लाठी की तरह घुमा रहा हो। नर-मुंड की नसें उसकी मांसपेशियों के भार तले फड़क रही थीं, जब वो मोटे पेड़ के तने को किसी दातून की तरह हिला रहा था। तने के एक सहज वार से उसने मत्स्य-प्रजाति के बीस घुड़सवारों का सफाया कर दिया। पलभर में ही उनके सीने और पसलियां टूट गई थीं। मत्स्य-प्रजाति के योद्धाओं की खोपड़ी और कंधे की हड्डियां चूरे की तरह मसल गई थीं।

कुछ ही पलों में, नरभक्षियों के राजा ने मत्स्य-प्रजाति के दस्ते में कोलाहल मचा दिया। उसके विचित्र हथियार ने मत्स्य-प्रजाति के योद्धाओं के घोड़े के पैर भी उसी तरह तोड़ दिए थे, जैसे उनके कवच।

जल्द ही सबको स्पष्ट हो गया था। मत्स्य-प्रजाति के योद्धाओं के रक्त से वो लिखा जा चुका था।

राक्षस नर-मुंड नरक का दूत था।

वो विशाल नौका का अगला राजा था।

वो ही धरती के भविष्य का स्वामी था।

'गंधक की ज्वाला को ये भी नहीं रोक पाएगा, ध्रुव...'

ध्रुव पूरी तरह से रक्त से पुता हुआ था, कुछ तो अपने घावों से निकले रक्त से और बाकी उन दुश्मन दैत्यों के रक्त से, जो उसकी तलवार और बाणों की भेंट चढ़ रहे थे।

दो तेजस्वी आदमी, जो पिछले साल भर से मानवजाति के अस्तित्व को संभालने की हरसंभव कोशिश कर रहे थे, वो अब बुरी तरह से हताश थे। अब उनके पास उस घातक हथियार का इस्तेमाल करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था, जो उनके पास सुरक्षित था।

विध्वंस विनाश का हथियार, जो मत्स्य ने उसे सौंपा था।

गंधक।

बनारस, 2017
‘वो यहां है...’

विद्युत को ऐसा प्रतीत हुआ मानो वो अंतरिक्ष, समय, अनेक ग्रहों, कई जन्म और मृत्यु, युद्ध और अकाल, क्रांति और पुनर्जागरण, शैतान और संत से मुलाकात, परिवार और भविष्य से गुजर रहा था। किसी दूसरी दुनिया में जीवित होने से पहले वह कई बार मरा था, उसे कई मांओं की महक याद आ रही थी, बहुत से प्रेमियों के चुंबन, अपने बच्चों की हंसी, अपनों के बिछड़ने का गम। उसे खुशहाल घर याद आ रहे थे, तो विषाद शमशान भी, राजा के दरबार उसकी आंखों से गुजर रहे थे, तो संन्यासियों के कुटीर भी।

उसकी चयनित आत्मा समय, संसार और दूरी की सीमाओं से परे कई ब्रह्मांडों में भटक रही थी।

और ये सब तब हो रहा था, जब उसकी नजरें उस प्राचीन पत्र पर टिकी थीं, जो उसने अपने कांपते हाथों में थाम रखा था।

‘मैं... मैं... कुछ समझ नहीं पा रहा, बाबा...’ उसने आह भरी।

तेज प्रार्थना के बीच द्वारका शास्त्री अपने प्यारे परपोते की आवाज नहीं सुन पा रहे थे। लेकिन वो समझ गए। उन्होंने आंखों से इशारा किया, देवता को और ध्यान से, और करीब से देखने के लिए प्रेरित किया।

‘अपने मन की आंखों से पढ़ो, विद्युत...’

मठाधीश ने कुछ नहीं कहा था। लेकिन विद्युत ने अपने मन में यह शब्द सुने।

विद्युत ने एक बार फिर से पत्र को देखा, आध्यात्मिक ऊर्जा ने उसे पूरी तरह से स्तब्ध कर दिया था।

उसके दिमाग में अजीब से दृश्य बिजली की तरह से कौंधे। उसने एक विशाल प्रलय में शानदार नगर को डूबते हुए देखा। वो एक मरती हुई महिला की धूमिल मुस्कान देख रहा था, जिसके शरीर में तीर धंसे हुए थे। उसने स्वयं को गुर्राते हुए योद्धाओं के बीच देखा, जिनके बदन पर राख मली हुई थी। साथ में खीर-पूरी खाता एक खुशहाल परिवार दिखाई दिया। एक आलीशान भवन से उतरती हुई अनुपम नृत्यांगना। उसने तीन अंधे काले-जादूगरों को देखा, जो किसी भयावह गुफा में शैतानी मंत्रों का जाप कर रहे थे। *'पूर्व की तरफ जाओ... वहां काले मंदिर की तलाश करो'* चिल्लाता हुआ एक आदमी। शिव की विशाल प्रतिमा वाला एक खोखला पहाड़। उसने स्वयं को एक चट्टान से छलांग लगाते देखा, ईंट और कांसे के बने पर्वत के बीच तीर चलाते हुए। उसने स्वयं को रक्त, पसीने और थूक से लथपथ देखा, उसे किसी प्रागैतिहासिक स्थल पर लोगों की भीड़ के बीच प्रताड़ित किया जा रहा था। नशे में धुत्त जजों से युक्त एक न्यायालय। एक सींग वाले बैल की मुहर। श्मशान से बदतर मृत कारावास में चिल्लाते हुए लोग। लपलपाती नीली अग्नि। एक विशाल नौका, इंसानी सोच से परे। धातु के दांतों वाले दो पुर्तगाली जल्लाद। रोम का शक्तिशाली सम्राट।

और फिर उसने *उसे* देखा।

एक सुदर्शन चेहरा, इतना आकर्षक कि वो कल्पना भी नहीं कर सकता... आनंद से मुस्कुराता हुआ। एक अवर्णनीय मनुष्य, जिसकी त्वचा सुनहरे-नीले रंग की मत्स्य के समान थी! विद्युत ने उस भव्य मत्स्य-पुरुष को शिव के काले मंदिर में, अपने साथ यूं विनोद करते देखा, मानो वो परम मित्र हों। जलती आग के गिर्द, एक परिवार की तरह पोहा खाते हुए। विनाशकारी प्रलय की घोषणा करते हुए, 'प्रलय एष्यति...!' किसी सख्त मार्गदर्शक की तरह। फिर उसने उस नीले मत्स्य-पुरुष को ऊंची चट्टान के शीर्ष पर खड़े देखा, गरजते आसमान की पृष्ठभूमि में, एक मसीहा के रूप में उदित।

अंतिम देवता ने अपनी आंखें खोल दीं। उसने प्राचीन पत्र को देखा।

उसकी आंखों से आंसू बह निकले, जब उसने शब्दों को जादुई रूप से जीवंत होते देखा।

अब देवता को सब समझ आ रहा था।

3,700 साल बाद, इस नियत दिन में...

...विद्युत के सामने काले मंदिर का रहस्य उद्घाटित हो गया था।

वो अब घुटनों के बल गिरकर, शिव प्रतिमा के सम्मुख अपना सिर झुका रहा था। देवता अबाध रूप से रो रहा था, और फिर भी वो ध्यानावस्था में खोया हुआ था।

काशी में अब जश्न मनाया जा रहा था। वो नहीं जानते थे कि वो क्या और किसका स्वागत कर रहे थे, लेकिन रोहिणी नक्षत्र अपने चरम पर था, और बनारस के पवित्र आदमी जानते थे कि देव-राक्षस मठ में खुशियां मनाई जा रही थीं... सदियों बाद!

और इसका एक ही मतलब था।

मसीहा आ गया था!

दामिनी अब विद्युत से और अलग नहीं रह पाई। उसने उसके पास जाने, उसे थामने, उसका बोझ उठाने का निर्णय लिया। जैसे ही वो आगे बढ़ी, किसी चीज ने

उसके पैर जमा दिए। जाने कहां से एक वृद्ध किंतु रहस्यमयी योगी विद्युत के सामने आकर, खड़ा हो गया था। वह भयावह और स्नेही था। उसकी त्वचा पर ध्यान जाते ही दामिनी की सांस अटक गई। उसकी त्वचा सर्प की खाल जैसी थी!

लेकिन उसका भय तब भांप बनकर उड़ गया, जब उसने उस विचित्र, विकराल और सांप की परत वाले आदमी को विद्युत के सिर पर प्यार, लाड़ और आशीर्वाद से हाथ फिराते देखा। नाग-मानव की आंखें कोमल थीं, मानो वो अपने बच्चे को देख रहा हो।

'यहां आओ, बिटिया...' थके हुए किंतु संतुष्ट दिखाई देते द्वारका शास्त्री ने कहा।

उनके जीवन का कार्य पूर्ण हो गया था।

卐

'वो यहां हैं, दामिनी... वो यहां हैं...' विद्युत ने अपने जीवनसाथी के कान में कहा, जब वो उसके करीब आई।

'हां, विद्युत... ठीक है... मुझे बताओ तुम कब...' दामिनी ने जवाब दिया। उसके लिए, विद्युत का स्वस्थ होना दुनिया के किसी भी रहस्य से अधिक महत्वपूर्ण था।

'मैं इसे पहले क्यों नहीं समझ पाया, दामिनी...?' देवता ने आगे कहा, उसका सिर झुका हुआ था, उसकी आंखों से आंसू शिव के चरणों में गिर रहे थे।

'क्या नहीं समझ पाया, विद्युत...? यहां कौन हैं, जान...?' उसने पूछा। वो समझ सकती थी कि विद्युत उससे काले मंदिर का रहस्य साझा करना चाहता था।

'वो यहां हैं, दामिनी... पलभर पहले... नक्षत्र के चरम पर...

विष्णु...'

सुंदर दामिनी समझ नहीं पा रही थी कि विद्युत क्या कहने की कोशिश कर रहा था। उसने उससे फिर से पूछा, विनम्रता से।

'यहां कौन हैं, मेरे देवता? काले मंदिर का रहस्य क्या है, विद्युत?'

विद्युत ने उसे देखा। उसकी आंखें भिन्न नजर आ रही थीं। वो प्रकाशित थीं!

उसने बहुत कम शब्दों में जवाब दिया, जो उसके मुंह से निकल सके।

'कल्कि...

पापियों के संहारक, भक्तों के तारक... विष्णु के दसवें अवतार आ पहुंचे हैं, दामिनी।

कल्कि अवतार का जन्म हो चुका है।'

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व

युद्धविराम

इस पृथ्वी पर रहने वाले किसी भी जीव ने इससे पहले कभी इतनी अग्नि नहीं देखी थी।

सबकुछ जल रहा था। नरभक्षी सिपाही लपटों में थे। उनके घोड़े झुलस गए थे। दुश्मनों की तलवार पिघल गई थी। उस ताप की तुलना सूरज से ही की जा सकती थी, उनमें से बहुतों को उस समय यही लगा था।

अंधेरी, तूफानी रात में ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो कुछ पल के फासले पर आसमान के तारे धरती पर विस्फोट कर रहे थे। दैत्य भयभीत थे और युद्ध क्षेत्र में मच रहे उस कोहराम में बेतरतीब दौड़ रहे थे। उन्होंने इससे पहले कभी अग्नि की ऐसी वर्षा नहीं देखी थी। न ही कभी नौका के निवासियों और अध्यक्षों ने ऐसा दृश्य देखा था। यह विचित्र और अविश्वसनीय था।

आग के कुंड नाव के तले से निकलकर, सीधे आकाश में जा रहे थे, और फिर तेज आवाज के साथ दैत्यों के झुंड पर फट रहे थे। इससे एक ही बार में सैकड़ों दैत्य जलकर मर जाते। कुछ पल के लिए नर-मुंड और उसका युद्ध-अध्यक्ष डूंडा को भी मानो लकवा मार गया था, वो समझ नहीं पा रहे थे कि ये क्या हो रहा था। अग्नि के ये गोले कैसे एक-एक कर नौका से निकल रहे थे और फिर फटकर उनकी सेना के परखच्चे उड़ा रहे थे?

एक घंटे से भी कम समय में, एक बार फिर से युद्ध का पलड़ा बदल गया था, वो अब वापस से संतुलन में आ गए थे।

अभी के लिए, यह युद्ध कोई भी जीत सकता था।

और खेल बदल सकने वाला एक तथ्य नौका के संरक्षकों के सामने स्पष्ट हो गया था।

वो आग से बहुत भयभीत थे।

दैत्य अनपेक्षित, असामान्य रूप से आग से डरे हुए थे!

मत्स्य यह जानता था। उसी ने नौकावासियों को गंधक दिया था, जिसके बारे में समग्र आर्यवर्त में से किसी ने सुना तक नहीं था। उसने मनु और ध्रुव को बड़े-बड़े कुंड बनाने के लिए प्रशिक्षित किया था, जिनमें भरकर गंधक दुश्मन सेना पर किसी गोले के समान फेंके जा सकते थे।

पहली बार मत्स्य ने विशाल नौका और उसके निवासियों की रक्षा की थी।

लेकिन यह अंतिम बार नहीं था।

·||卐||·

स्याह जंगलों के उस विकराल सम्राट को स्वयं को शांत करने में अधिक समय नहीं लगा, और जल्द ही वो अपने, रक्तपिपासु रूप में वापस आ गया। अपनी भयानक आवाज में, जो शेर की दहाड़ और हाथी की चिंघाड़ का मिश्रण लग रही थी, उसने अपनी नर-भक्षी सेना को लड़ने के लिए वापस बुलाया।

सेनाओं ने फिर से एक-दूसरे पर हमला किया, इस बार नए पागलपन से। धातु की रगड़, तलवार का तलवार पर वार, भाले का कवच से, कुल्हाड़ी का ढाल से संघर्ष कानों को बहरा बना देने वाला था।

‘हमें नर-मुंड के पास एक दूत भेजना चाहिए, जो युद्ध-विराम का प्रस्ताव लेकर जाए,’ मनु ने सोमदत्त से कहा, जो मनु के पास ही एक घोड़े पर सवार था। वो दोनों युद्ध में हुए रक्तपात का निरीक्षण कर रहे थे।

‘क्या?’ ध्रुव ने दखल दिया, सत्यव्रत मनु के घोड़े के पास ही खड़ा था। ‘क्या तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है, मनु? तुम उस दानव के साथ युद्ध विराम पर बात

करना चाहते हो?!'

'देखो, ध्रुव, मेरे मित्र, मैं जानता हूं कि उस जानवर से किसी भी सभ्य प्रत्युत्तर की उम्मीद करना पागलपंती है। लेकिन भले ही हालात जो भी हों, हमें शांति का एक अवसर तो देना ही चाहिए। इस समय, वो अपने साथियों के गंधक की अग्नि में समाने से बौखलाया हुआ है। यह अवसर शायद हमारे पक्ष में जा सकता है। अगर वो शांति से बात करने को राजी हुआ, तो हम उन दैत्यों और उनके परिवार के साथ हजारों लोगों की जिंदगी बचा पाएंगे।'

ध्रुव जानता था कि मनु सही कह रहा था। अभी उनके युद्ध जीतने के अवसर धूमिल ही थे। शांति का एक समाधान इस बुरे स्वप्न को तुरंत ही समाप्त कर देगा। लेकिन फिर भी वो सहमत नहीं हो पा रहा था। वो जानता था कि नर-मुंड तर्क या मैत्री वाला इंसान नहीं था। वो तो इंसान ही नहीं था।

दूसरी तरफ, सोमदत्त को मनु के प्रस्ताव में संतुलन नजर आया। उसने पुजारी-राजा के पक्ष में अपनी बात रखी।

'दस्युओं के जाने और दैत्यों की आधी सेना ख़त्म हो जाने के बाद, उनकी संख्या भारी रूप से कम हो गई है। हमारे भी हजारों सैनिक मारे गए हैं। इन नए हालात में, हम बचे हुए दैत्यों को अपनी नौका पर शरण दे सकते हैं।'

ध्रुव अब मनु के घोड़े के सामने आया और दोनों घुड़सवारों के सामने खड़ा हो गया। उसका संदेह प्रत्यक्ष था।

'उन्हें शरण दे दें? क्या मैंने आपके मुंह से शरण सुना, सोमदत्त जी?'

सोमदत्त और मनु, दोनों शांत थे। ध्रुव ने अपनी बात आगे बढ़ाई, उसने अपने साथी नौकावासियों को यह समझाने की बहुत कोशिश की कि युद्धविराम जैसे प्रयास व्यर्थ थे, और कि उन दैत्यों को नौका पर स्थान देने का परिणाम क्या हो सकता था।

'बुद्धिमान सोमदत्त जी, क्या आप भूल गए हैं? वे नरभक्षी हैं!' वो हैरानी से चिल्ला रहा था कि कोई उसके तर्क समझ नहीं पा रहा था। 'वो आपके और मेरे जैसे लोगों को खाते हैं! जो आप कह रहे हैं, वो ऐसा लग रहा है मानो बछड़ों के झुंड में जंगली कुत्तों को रहने की जगह दे दी जाए!'

तीनों आदमी खामोश थे। ध्रुव, मनु और सोमदत्त के घोड़ों के आगे बेचैनी से चक्कर लगा रहा था, और युद्ध की कार्यवाही देखते हुए, उनके निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था।

‘मैंने इस बारे में सोच लिया है,’ कुछ पल विचारमग्न रहने के बाद मनु ने कहा।

‘हम नर-मुंड को महिलाओं, बच्चों और घायलों को नौका के मुख्य तल पर रखने का प्रस्ताव देंगे। जहां तक उसके योद्धाओं का सवाल है, उन्हें अपने हथियार हमें सौंपकर कैद में रहना होगा। इस तरह हम अपने लोगों को बचा लेंगे, दैत्यों की निर्दोष महिलाओं और बच्चों को बचा लेंगे, और दैत्य योद्धाओं को बंदी बना लेंगे। बदले में, दैत्यों को प्रलय से बचने का अवसर मिलेगा, अगर विशाल नौका वास्तव में प्रलय से बच पाई तो।’

सोमदत्त ने मनु की तरफ देखकर संतोष से सिर हिलाया। ध्रुव ने नजरें फेर लीं, वो इस भयानक निर्णय को किसी भी तरह पचा नहीं पा रहा था।

बहुत सोच-विचार के बाद यह तय किया गया कि सोमदत्त दैत्य-राजा से बात करने जाएगा। मनु, ध्रुव और प्रचंड के विरोध के बावजूद, बुद्धिमान अभियंता ने दबाव दिया था कि वो दूत के तौर पर शांति वार्ता करने जाएगा। किसी छोटे ओहदे का आदमी ये नहीं संभाल पाएगा। नर-मुंड किसी अप्रभावशाली व्यक्ति की बात सुनने को तैयार नहीं होगा।

ध्रुव हैरान रह गया, जब नर-मुंड भी बात करने के लिए तैयार हो गया। दोनों सेनाएं पीछे हट गईं और अब एक-दूसरे के सामने खड़ी होकर हांफने लगीं। कहीं न कहीं, मैदान में उपस्थित प्रत्येक आत्मा, फिर वो चाहे दैत्य शिविर की हो या नौका की चोटी की, लेकिन हर कोई शांति की उम्मीद कर रहा था। युद्ध अब तक इतना हिंसात्मक और विनाशकारी रहा था कि अब शायद उसमें सौदेबाजी के लिए कुछ बचा ही नहीं था। बहुत कम समय में, बहुत से आदमी दर्दनाक मौत मारे गए थे। हजारों घायल असहनीय पीड़ा से कराह रहे थे। बाढ़ किसी भी पल बस आने ही वाली थी।

हर कोई उम्मीद कर रहा था कि सोमदत्त और नर-मुंड के बीच होने वाले इस युद्ध पर विराम लगा दे।

नर-मुंड मैदान में आया, वैसे ही अकड़कर, जैसा दैत्य वो था। उसके पास कोई हथियार नहीं था। और सब बहुत हैरान रह गए, जब वो अपने साथ दस बालकों को लेकर आया। उनमें से किसी की भी उम्र आठ-नौ साल से अधिक नहीं थी। नेकी और परस्पर सौहार्द्र के ऐसे भाव की उम्मीद उस दैत्य सम्राट से बिलकुल भी नहीं की जा सकती थी।

सोमदत्त, जो नरभक्षी-सम्राट से मिलने जा रहा था, ध्रुव की तरफ मुड़कर विनम्रता से मुस्कुराया। नर-मुंड बच्चों के साथ आया था।

शांति का वास्तव में एक मौका था।

मनु और सोमदत्त दोनों भूल चुके थे।

वो दोनों रक्त धारा का श्राप भूल चुके थे!

“ ईश्वर कभी तुम्हें तुम्हारी नफरत भरी नियति से मुक्त नहीं करेंगे। हिंसा और रक्त-संघर्ष का सांप कभी भी मानवजाति को अपनी पकड़ से निकलने नहीं देगा, जो उसी ईश्वर के नाम पर ही एक-दूसरे का वध करते रहेंगे, जिसे उन्होंने आज धोखा दिया है! कभी भी विध्वंस और मार-काट तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगी। यह मेरा अभिशाप है, ओ पतित देवता! मानवजाति अपने अंत तक असीमित वेदनाओं को झेलेगी!

मैं तुम्हें अभिशाप देती हूं! मैं तुम सबको अभिशाप देती हूं!’”

बनारस, 2017
‘वो तुम्हारे पीछे आ रहे हैं, विद्युत’

वे भगवान शिव के चरणों में अनुष्ठानिक अग्नि के गिर्द बैठे थे। विद्युत, दामिनी, द्वारका शास्त्री और उन सबसे लंबा और विकराल शेषनाग। नैना, पुरोहित जी, सोनू, बलवंत और गोवर्धन कुछ दूरी पर बैठे थे, उनके हाथ सम्मान में जुड़े हुए थे। मठ के बहुत से दूसरे विश्वसनीय साधु भी ख़ामोशी से, अपनी आंखें बंद किए बैठे थे। काले मंदिर में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति अब पवित्र अवतार के स्नेही और सर्वशक्तिमान स्वरुप में खो गया था।

विद्युत के हाथ में वो प्राचीन पत्र था। छोटी किंतु बहुमूल्य सूचना, जो उसमें मनु और मत्स्य ने छिपाई थी, वो अब विद्युत की आत्मा पर गढ़ गई थी। अब वो समझ गया था कि क्यों न्यू वर्ल्ड ऑर्डर ने रहस्य की तलाश में सदियां बिताई थीं।

द्वारका शास्त्री और शेषनाग हवन में आहुति चढ़ा चुके थे। वो ऐसे मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे, जो विद्युत और पुरोहित जी जैसे सक्षम योगी व तांत्रिकों ने भी नहीं सुने थे। ये रहस्यमयी, अत्याधुनिक श्लोक थे, जिनकी जानकारी दुनिया के दो सबसे वृद्ध व्यक्तियों को ही थी। और वो दोनों ही अनुष्ठानिक अग्नि के गिर्द बैठे थे। मंत्र इतने शक्तिशाली थे कि उनके शब्द हवनकुंड से कपूर के धुएं में लिपटकर उठते प्रतीत हो रहे थे, और वो सीधे बैकुंठ, भगवान विष्णु के अलौकिक धाम जा रहे थे।

‘उस पवित्र पत्र को अब अग्नि के सुपुर्द कर दो, विद्युत,’ द्वारका शास्त्री ने निर्देश दिए।

विद्युत झिझका। जो कुछ पल उसने उसके साथ गुजारे थे, उसमें देवता को उस पत्र और उसके सुनहरे शब्दों से एक मोह सा हो गया था।

'इसकी यही परिणति है, विद्युत... जहां से यह आया था। अब सिर्फ काले मंदिर का रहस्य तुम्हें पता होगा। वास्तव में अब से तुम ही काले मंदिर के रहस्य हो विद्युत!'

दामिनी बहुत दुविधा में थी। उसने विद्युत को अपार भक्ति में टूटते और कल्कि का नाम बुदबुदाते हुए देखा। लेकिन उसे अभी भी स्पष्ट नहीं हो पा रहा था कि पत्र में क्या लिखा था। मठाधीश दामिनी के चेहरे पर दुविधा के भाव देख पा रहे थे।

'विद्युत दामिनी को ये जानने का अधिकार है, कि सदियों से इस पत्र में कौन सा राज समाहित था।'

विद्युत ने हां में सिर हिलाया। वह मुस्कुराकर अपनी जीवनसाथी की तरफ मुड़ा। मन ही मन वो सोच रहा था कि क्या दामिनी उसकी कही बात पर भरोसा करेगी।

'जैसा की मैंने तुम्हें बताया, दामिनी, भगवान विष्णु का बहुप्रतीक्षित अवतार, कल्कि कुछ मिनट पहले, यहां से कहीं दूर जन्म ले चुका है। भविष्यवाणी में नियत रोहिणी नक्षत्र और कुछ नहीं प्रभु कल्कि के धरती पर उतरने का समय था।'

दिल्ली की आकर्षक पत्रकार इन शब्दों को सुनकर मुग्ध थी। उसने विष्णु के दसवें अवतार, कल्कि के बारे में सुन रखा था, जिसे कलयुग में धरती पर पाप और पापियों के सफाए के लिए आना था। लेकिन वो यकीन नहीं कर पा रही थी कि अब वो उस पवित्र उद्देश्य का हिस्सा थी।

'तो पत्र में यही लिखा था, प्रभु कल्कि के आने का समय?'

विद्युत ने मुस्कुराकर जवाब दिया, 'हां, लेकिन उसमें... कुछ और भी था।'

दामिनी ने कोमलता से अपनी भवें उठाकर, विद्युत को अपनी बात पूरी करने के लिए उकसाया।

'और क्या, विद्युत?' उसने पूछा।

‘पत्र में सिर्फ कल्कि के जन्म का समय ही नहीं था, दामिनी...

...इसमें उनके जन्म का स्पष्ट स्थान भी था।

अब मैं जानता हूं कि वो कहां हैं!’

जब वे लोग शेषनाग से आशीर्वाद प्राप्त कर, उन्हें विदा करके काले मंदिर से बाहर निकले, तो लगभग सूर्योदय का समय हो चुका था। रहस्यमयी, शक्तिशाली सर्प-राजा भैरव मंदिर के तहखाने में अधिक समय तक नहीं रहने वाला था। उनका अपने स्वामी के पास उपस्थित रहना आवश्यक था। इस दिन की उन्होंने दो हजार वर्ष से अधिक प्रतीक्षा की थी।

जब वो द्वारका शास्त्री के कुटीर की छत पर बैठे, तो वो काशी में होने वाली परंपरागत सुबह की आवाजें सुन सकते थे। सोनू सबके लिए चाय लेकर आया था, और वो लोग सेंटर टेबल के आसपास बिछी कुर्सियों पर बैठे थे। वृद्ध द्वारका शास्त्री अब स्पष्ट रूप से थक चुके थे, वो बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रहे थे। और फिर भी उनके चेहरे पर सबसे अधिक संतोष था। लेकिन वो जानते थे कि अभी उनका कार्य पूर्ण नहीं हुआ था।

या स्पष्ट कहें तो, विद्युत का कार्य अभी पूर्ण नहीं हुआ था।

चाय के कुछ घूंट और चंद बिस्किटों ने सब पर जादुई प्रभाव दिखाया था। वो सब एक लंबी, अत्यधिक ऊर्जावान और आध्यात्मिक रात बिताकर आए थे।

‘बलवंत, मठ के सारे योद्धाओं को दोगुनी ताकत से आश्रम की सुरक्षा में लगा दो। तुम स्वयं हर द्वार और हर मुंडेर का निरीक्षण करोगे। नैना, दामिनी को ले जाओ और इनकी सुरक्षा तुम्हारा कर्तव्य होगा। इन्हें अब विद्युत के आसपास नहीं आना चाहिए, कम से कम अब से कुछ समय के लिए तो।’

बलवंत ने बुजुर्ग के सम्मुख सिर झुकाया और तुरंत ही अभी मिले आदेशों के पालन हेतु चल दिया। सोनू भी उसके पीछे हो लिया, उसे अपने देवता के लिए एक और लड़ाई लड़नी थी।

‘अब क्या, बाबा? क्या आपको लगता है कि ऑर्डर अब मेरे पीछे आएगा?’

द्वारका शास्त्री हैरानी से विद्युत की ओर मुड़े।

‘तुमने क्या कहा, मुझे *लगता* है, विद्युत? मैं हैरान हूं कि तुम ये सवाल पूछ रहे हो। इसे जान लो, मेरे बच्चे... काले मंदिर का रहस्य, जिसे ऑर्डर किसी भी कीमत पर हासिल करना चाहता है, वो अब तुम्हारे दिल में छिपा है।

तो अपने मन में कोई संदेह मत रखो।

वो तुम्हारे पीछे आ रहे हैं, विद्युत।’

‘कांस्टेंटाइन कल्कि अवतार के बारे में जानता था। उसके जैसे शक्तिशाली राजा के दरबार में दुनिया के सबसे सक्षम रहस्यवादी सलाहकार थे। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि अतीत के दूसरे दिव्य दूतों, पैगंबरों और अवतारों की तरह ही, भगवान कल्कि का आना भी निश्चित है। वह यह भी जानता था कि उनके आने का सही समय, स्थान काले मंदिर की पवित्र संरचना में छिपा था। न्यू वर्ल्ड ऑर्डर बनाने के पीछे उसकी वास्तविक मंशा दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने की ही थी, जो मानवजाति के लिए शांति और न्याय लाने में कल्कि की सहायता कर सके। लेकिन उसका अनुमान बुरी तरह गलत निकला। प्रभु का सक्षम सेवक बनने के बजाय, उसने मानव इतिहास के सबसे जघन्य दानव का निर्माण कर दिया था।’

द्वारका शास्त्री के आसपास उपस्थित लोग ध्यान से उनकी बात सुन रहे थे। वो काले मंदिर के रहस्य की अंतिम परत उतार रहे थे।

‘जैसा कि मैंने पहले भी बताया है कि न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के गुप्त भ्रातृसंघ को अलौकिक और आध्यात्मिकता का गहन ज्ञान है। उनकी सेवा में सबसे भयावह शैतान पूजक खड़े रहते हैं। उनके पास अपने रहस्यमयी, तांत्रिक और काले जादूगर हैं। सफर की शुरुआत में ही इन शैतान पूजकों ने उन्हें कल्कि के आने और कलयुग की समाप्ति के विषय में बता दिया था। ऑर्डर के सर्वेसर्वा को बता दिया गया था कि सिर्फ कल्कि ही उनको रोक सकता था। उसे सलाह दी गई थी कि उसका जन्म तारों के उस पवित्र संयोजन में होगा, और अगर वह तेरह साल तक

जीवित रह गया, तो ऑर्डर का अंत निश्चित है। तो यद्यपि गुप्त संगठन युद्ध कराता रहा, तानशाह को पोषित किया, संक्रामक बीमारियों को उत्पन्न किया और सदियों तक दुनिया की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करता रहा, लेकिन उनका मुख्य उद्देश्य काले मंदिर के रहस्य का पता लगाना ही था और यह जानना कि अवतार का जन्म कहां होगा। वो पत्र हासिल करने के लिए ही अबाध रूप से देव-राक्षस मठ से लड़ते रहे।'

विद्युत जान गया था कि यह जंग अभी ख़त्म नहीं होने वाली थी। वास्तव में अभी तो जंग की शुरुआत हुई थी।

'बाबा, अब यह ऑर्डर क्या चाहता है? वो विद्युत के पीछे क्यों आएंगे? सैकड़ों सालों के रक्तपात और हिंसा के बावजूद, कल्कि अवतार ने तो जन्म ले लिया है। क्या अब उन्हें अपनी हार स्वीकार नहीं कर लेनी चाहिए?' नैना ने पूछा।

'नैना, तुम शायद ऑर्डर को पूरी तरह समझ ही नहीं पाई हो,' ग्रैंडमास्टर ने जवाब दिया। 'वो कभी पीछे नहीं हटेंगे। उनके पास दुनिया के सबसे सक्षम, सबसे महत्वाकांक्षी और अब तक के सबसे खतरनाक आदमी हैं।

वो वही करने की कोशिश करेंगे जो ईसा के जन्म पर राजा हेरोड ने किया था। वो वही करना चाहेंगे जो कृष्ण जन्म पर राजा कंस ने किया था।

वो कल्कि को मारने का हरसंभव प्रयास करेंगे... जबकि वो अभी शिशु ही होगा।'

जाने कैसे नैना का फोन वाइब्रेट होने लगा।

उसने फोन निकाला और हैरानी से उसकी स्क्रीन देखने लगी।

'ये तो अजीब बात है। यह नंबर महंत भवानीशंकर के अलावा और किसी के पास नहीं था, और उनका फोन तो अभी आना नहीं था,' उसने दूसरों से कहते हुए फोन उठाया।

पलभर में ही उसका चेहरा पथरा गया। तीस सैकंड से भी कम समय में उसने फोन रख दिया। फोन करने वाला व्यक्ति फोन काट चुका था।

बोलते हुए उसने दांत पीसे।

‘ये प्रोफेसर त्रिपाठी या वो एक-आंख वाला शैतान ब्रह्मानंद था। वो पागलों की तरह हंस रहा था।’

सब स्तब्ध थे। विद्युत ने अपनी आंख बंद कर ली, वो नहीं सुनना चाहता था कि नैना क्या कहने वाली थी। सबकी मर्जी के विरुद्ध, उसने ब्रह्मानंद को छोड़ने का निर्णय लिया था।

नैना ने भयावह सन्नाटे से कहा।

‘महंत भवानीशंकर को मार दिया है।

किसी वाइट मास्क नाम वाले व्यक्ति ने आज दोपहर विद्युत को घाट पर बुलाया है।’

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व

काली का युग

वो कानों की पहुंच से दूर थे, उस जगह से लगभग तीन सौ कदम दूर, जहां मनु, ध्रुव और प्रचंड बड़े मन से पूरी कार्यवाही देख रहे थे और मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे। सोमदत्त उस विकराल दैत्य के सामने बैठा था। छोटे दैत्य बालक नर-मुंड के गिर्द छोटे स्तंभों की तरह खड़े थे। उन्हें नहीं पता था कि क्या होने वाला था।

सब कुछ ठीक ही प्रतीत हो रहा था। सोमदत्त अपने हाथ बगल में दबाए, निडरता से अपनी बात रख रहा था। वो नर-भक्षी को समझाने की कोशिश कर रहा था कि अगर तुरंत ही युद्ध बंद नहीं किया गया तो आगे क्या तबाही और रक्तपात हो सकता है। दोनों सेनाएं, उनके अध्यक्ष इत्यादि सब हैरान थे और कुछ के मुंह से तो अविश्वास की कराह भी निकली जब शक्तिशाली नर-मुंड ने हाथ जोड़कर, बुद्धिमान अभियंता के सम्मान में सिर झुकाया।

क्या आखिरकार युद्ध समाप्त हो गया था? बहुत से लोगों के मारे जाने और हजारों घायलों के असहनीय पीड़ा में तड़पने और लगातार हो रही बारिश से बेहाल, दोनों तरफ के योद्धा आशा से देख रहे थे।

हर कोई शांति चाहता था।

·||卐||·

अत्यधिक उल्लास के साथ सोमदत्त अपने दल और अध्यक्षों की तरफ मुड़ा। इतनी दूरी से भी मनु बुद्धिमान अभियंता के चेहरे पर मुस्कान देख पा रहा था। नर-

मुंड ने युद्धविराम का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था!

दोनों तरफ के सिपाही निर्णय के समर्थन में अपने हथियार और कवच बजा रहे थे। नौका की सेना ने सोमदत्त के निडर प्रयास की ख़ुशी में अपने तलवार और भाले उठाकर उसे सलामी दी, और सोमदत्त ने अपने दल की तरफ चलना शुरू किया। हड़प्पा के मुख्य अभियंता, विवास्वन पुजारी के सबसे विश्वसनीय मित्र और मनु के लिए पिता-समान सोमदत्त ने राहत की सांस लेकर अपने साथियों की तरफ हाथ हिलाया।

हर कोई शांति चाहता था।

सिवाय नरभक्षियों के सम्राट के।

एक सहज दांव के साथ, वो विशालकाय दानव आगे झुका। इससे पहले की प्रत्यक्षदर्शी अपनी आंख तक झपका पाते, नर-मुंड ने सोमदत्त की गर्दन पीछे से पकड़कर उसे उठा लिया। अपने बाएं हाथ से ही उसने उस वृद्ध को हवा में इतना ऊंचा उठा लिया था कि सब उसे देख सकें, और फिर उसने गरजती आवाज में कहा!

'तुम्हें शांति चाहिए??'उसने नौका की सेना की तरफ दहाड़कर पूछा, वो बेरहमी से उस लटकते हुए आदमी को प्रदर्शित कर रहा था।

'तुम्हें शांति चाहिए??' वो फिर से गुर्राया, इस बार अपने सैनिकों से, उसकी आंखों में क्रोध से रक्त उतर आया था।

फिर उसने मुड़कर सीधे नौका के राजा, सत्यव्रत मनु को देखा।

अब तक जकड़े हुए अभियंता ने अपनी तलवार खींच ली थी और झूलते हुए ही हाथ-पैर मारकर, उसे नरभक्षी की भुजा तक पहुंचाने की कोशिश कर रहा था।

उसके संघर्ष से नर-मुंड को कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। दानव अभी भी मनु को देख रहा था, जिसे ध्रुव और प्रचंड ने पकड़ रखा था, जिससे वो युद्ध भूमि में कूदकर, नौका के अभियंता को बचाने न पहुंच जाए।

‘तुम्हें शांति चाहिए, सत्यव्रत मनु?’ विशालकाय दानव ने तीसरी बार चिल्लाकर कहा।

अगले ही पल, नर-मुंड ने सोमदत्त को खरगोश की तरह मोड़ा, उसे पास लाए और उसके गले में अपने विशाल जबड़े धंसा दिए। दिल दहला देने वाली क्रूरता से, उसने अपने नुकीले दांतों से सोमदत्त का गला फाड़ दिया।

जब उसने सोमदत्त की रक्तरंजित अंतड़ियां कच्ची ही चबा लीं, तो अपने दुश्मन का अभी भी जीवित शरीर मैदान के एक कोने में फेंक दिया।

नर-मुंड के साथ आए दस बच्चे कई दिनों से भोजन नहीं मिल पाने की वजह से भूखे थे। आज शैतान ने उन्हें दावत खिलाने का वादा किया था। एक ही झटके से वो छोटे लगड़बग्गे की तरह रक्तरंजित अभियंता पर टूट पड़े।

हजारों सैनिकों के सामने, नौकावासियों के सामने, मनु, ध्रुव और प्रचंड के सामने हड़प्पा के मुख्य अभियंता को जिंदा खा लिया गया।

‘घेर लो उसे! उस हैवान को घेर लो! ध्रुव... अपने श्रेष्ठ आदमियों को भेजो!’ सत्यव्रत मनु चिल्लाया, उसकी आवाज क्रोध और नफरत से कांप रही थी!

उसे अभी भी ध्रुव समेत दस आदमियों ने पकड़ रखा था। वो जानते थे कि मनु असहनीय दुख और यातनामयी पछतावे से गुजर रहा था। अगर उन्होंने उसे छोड़ दिया, तो वो नर-मुंड की तरफ दौड़ जाएगा—और शायद यह उसके लिए निश्चित पराजय और मौत होगी। उस नरभक्षी के सामने सोमदत्त को शांति दूत के रूप में जाने देने का निर्णय उसी का था। ध्रुव ने उसे ऐसा न करने के लिए समझाया था, लेकिन फिर भी उसने ऐसा किया। शांति की उसकी चाह ने उसे जोखिम उठाने को मजबूर किया। इसके लिए वो अंधा हो गया था।

नौका की सेना में से किसी ने भी कभी ऐसी अमानवीय क्रूरता नहीं देखी थी। नर-मुंड ने परपीड़न की सारी सीमा पार कर दी थीं, उसने क्रूरता की हर हद तोड़ दी थी। मनु अब समझ गया था कि उसे किसी भी तरह इस हैवान को धरती से मिटाना होगा। भले ही उसके लिए सम्मान के कितने ही नियम क्यों न तोड़ने पड़ें।

तेज सुबकते हुए और सांस न ले पाते हुए, मनु अपने करीबी और ख़ास मित्र की तरफ मुड़ा।

‘हमें उसे मारना होगा, ध्रुव। रस्सी ले आओ। अपने श्रेष्ठ योद्धाओं को बुलाओ। तुम और मैं उनका नेतृत्व करेंगे, और हम इस बुराई के दानव का विनाश कर देंगे—भले ही इसके लिए हमें जो करना पड़े! हम उसकी पीठ में छुरा घोपेंगे, उसे घेर लेंगे, उसके हाथ बांधकर, उसके टुकड़े-टुकड़े कर देंगे!’

और किसी ने नहीं बल्कि स्वयं पवित्र, तेजस्वी और नेक मनु ने आदर्श को छोड़ने का निर्णय लिया... हिंसा, पतन और कलह का दौर शुरू हो चुका था।

काली का दौर आ गया था।

कलयुग की शुरुआत हो गई थी!

बनारस, 2017
शैतान!

फाइव-स्टार होटल में भगदड़ मची हुई थी। उत्तर प्रदेश पुलिस ने फाइव स्टार होटल के परिसर को घेरा हुआ था और होटल के प्रत्येक कर्मचारी से पूछताछ जारी थी। उस दिन लगभग दोपहर के करीब एक बजे हाउसकीपिंग महिला को एक कमरे में लाश मिली थी।

हत्या बेरहमी से की गई थी। शरीर में किसी नुकीली धातु से पैंतीस बार छेद किए गए थे, जिसमें कनपटी और आंखें भी शामिल थीं। मरे हुए आदमी के हाई प्रोफाइल की वजह से, प्रेस भी घटनास्थल पर पहुंच गई थी। वो मुंबई का खूंखार डॉन, असलम बाइकर था। शुरुआती जांच से पता चल रहा था कि हत्या का वो नुकीला औजार शायद कोई पेंचकस रहा होगा।

पैसा, हथियार और सुरक्षा जो वो असलम बाइकर को मुहैया कराते थे, उसके बदले उसे ऑर्डर के प्रति एक महत्वपूर्ण कर्तव्य निभाना था। उसे सुनिश्चित करना था कि अगर काले मंदिर के रहस्य को केदारनाथ मंदिर से बाहर निकाला जाता, तो उसे उसकी अगली जगह तक उसका पीछा करना था।

लेकिन गैंगस्टर इस कर्तव्य में असफल रहा। रहस्य केदारनाथ से एक नए और अनजाने काले मंदिर में पहुंचा दिया गया था, और इसकी कोई खबर ऑर्डर को नहीं मिली थी। असलम बाइकर ने उन्हें निराश किया था।

और जो भी वाइट मास्क को निराश करता था, उसकी नियति यही थी।

‘तुम मुझसे मजाक कर रहे हो, विद्युत!’ दामिनी ने कहा।

द्वारका शास्त्री की उपस्थिति में पहली बार दामिनी ने अपना नियंत्रण खोया था। विद्युत ने ठान लिया था कि वो वाइट मास्क से मिलने जाएगा।

‘बाबा, प्लीज इस आदमी के दिमाग में कुछ तो समझ डालिए। वह जानता है कि अब वह कातिल भ्रातृसंघ का मुख्य लक्ष्य है। आपने हमें बताया था कि विद्युत को पकड़कर भगवान का जन्मस्थान निकलवाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। तो ऐसे में यह मठ से बाहर निकलने की सोच भी कैसे सकता है?’

इससे पहले कि द्वारका शास्त्री कुछ कह पाते, देवता बोल उठा।

‘मैं जो कर रहा हूं, उसे समझने की कोशिश करो, दामिनी। वह आदमी जो भी है, वो ही महंत भवानीशंकर की हत्या के पीछे है। उसने ही शायद असलम बाइकर को भी मारा है, जिसके बारे में आज सुबह हमने अखबार में पढ़ा। ब्रह्मानंद भी इसी का गुलाम है। यकीनन यह वाइट मास्क गुप्त भ्रातृसंघ के पदानुक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऑर्डर किसी न किसी तरह तो मेरे पास आएगा ही। कम से कम इस आदमी के सामने जाने से, मैं ये तो जान पाऊंगा कि दुश्मन कौन है! कब तक हम एक अदृश्य शत्रु से लड़ते रहेंगे? मैं उस दुश्मन से कब तक छिपा रह सकता हूं, जिसकी मैं शक्ल तक नहीं जानता?’

‘लेकिन, विद्युत...’ दामिनी ने विरोध जताया, अपने दुखते माथे को अपने हाथ से दबाते हुए।

‘मुझे जाने दो, जान। यह आदमी बनारस तक पहुंच गया है। वह जानता है कि मैं मठ की चारदीवारी में हूं। अगर वह महंत भवानीशंकर और मुंबई डॉन जैसे सक्षम लोगों को मार सकता है, तो मठ के प्रहरी उसे रोक नहीं पाएंगे।’

विद्युत ने दामिनी का माथा चूमा।

‘मुझे जाना होगा, दामिनी। मुझे कुछ नहीं होगा।

भगवान कल्कि आ गए हैं। वो हमारी रक्षा करेंगे।’

जब देवता ने झुककर अपने बाबा के पैर छुए, तो देव-राक्षस मठ के ग्रैंडमास्टर ने विद्युत को आशीर्वाद दिया।

‘याद रखना, विद्युत, यह आदमी रोमी परेरा, डाकिनी, किराये के हत्यारों या यहां तक कि त्रिजट कपालिक और ब्रह्मानंद से भी अलग है। मैं दामिनी के सामने यह नहीं कहना चाहता था, लेकिन वाइट मास्क या मास्केरा बिआंका, जो भी उसका नाम है, उसमें कुछ खतरनाक बात है।’

विद्युत ने ध्यान दिया कि उसके बाबा ने मास्केरा के बारे में बात करते हुए *कुछ* का इस्तेमाल किया, बजाय *कोई* के।

‘बाबा, नैना ने मुझे बताया था कि महंत भवानीशंकर ने काशी में लूसिफर या स्वयं शैतान के आने की बात कही थी। मैं मसान-राजा की यज्ञ-शाला में शैतान की प्रतिमा देखकर भयभीत था। क्या वाइट मास्क स्वयं लूसिफर का अवतार है, बाबा?’

‘नहीं, विद्युत। वो लूसिफर नहीं है। और हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि क्या लूसिफर और शैतान एक ही ताकत है। ग्रंथों में इस विषय में स्पष्ट नहीं लिखा गया है। हमारे संप्रदाय के बहुत से लोगों का मानना है कि मास्क स्वयं शैतान का रूप

है। महंत भवानी भी ऐसा ही मानते थे। लेकिन मुझे विश्वास है कि वो शैतान नहीं है।

भगवान माफ करे, लेकिन जब शैतान आएगा, तो पूरी दुनिया जान जाएगी, विद्युत। वो अपने साथ समस्त सृष्टि की काली ताकतें लाएगा। और तुम या ताकतवर शेषनाग भी उसकी राह में खड़े नहीं हो पाएंगे। हम ब्रह्मांड से प्रार्थना करते हैं कि ऐसा तब तक न हो, जब तक कल्कि उसका सामना करने को तैयार न हों।'

देवता को लूसिफर की विशाल अर्धप्रतिमा याद आई, जो उसने मृतक-नाथ, त्रिजट कापालिक की यज्ञ-शाला में लाशों और हवनकुंड के मध्य देखी थी।

'तो फिर ये वाइट मास्क कौन है, बाबा?'

द्वारका शास्त्री के चेहरे पर पहली बार चिंता की लकीरें दिखाई दीं।

'मास्केरा बिआंका शैतान का दूत है, विद्युत। अधिक स्पष्टीकरण के लिए, मैं कह सकता हूं वो...

...आधा-मनुष्य, आधा-दानव है!'

कीमती, महीन लिनन की सफेद कमीज उसकी कसी हुई मांसपेशियों पर लहरा रही थी।

मास्केरा बिआंका किसी हॉलीवुड फिल्म स्टार से कम नहीं लग रहा था।

विद्युत पवित्र गंगा के घाट पर खड़ा था, उसने काली टी-शर्ट पहन रखी थी, जो उसकी बलिष्ठ मांसपेशियों को सहला रही थी।

देवता रोम-रोम से वही ईश्वर नजर आ रहा था, जो वो था!

दोनों आदमियों की कमीज के रंग उस ताकत से पूरी तरह भिन्न थे, जिनका वो प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

‘हेल्लो, विद्युत,’ मास्केरा ने कहा, उसके चेहरे पर शिष्ट मुस्कान थी।

देवता असलम बाइकर नहीं था। वो उसके शिष्ट मुखौटे के भुलावे में नहीं आने वाला था।

‘मैं तुम्हें क्या कहकर पुकारूं, मेरे दोस्त?’ जब दोनों ने हाथ मिलाए, तो विद्युत ने पूछा।

‘वैसे, मैं निश्चिंत हूं कि तुम मेरा नाम जानते हो, विद्युत,’ मास्क ने अपना काला चश्मा उतारते हुए जवाब दिया। उसने विद्युत को अपनी ओजस्वी हरी आंखों से देखा।

देवता नरम नहीं पड़ा।

‘मैं लोगों का नाम जाने बिना उनसे बात नहीं करता।’

वाइट मास्क खुशी से हंसा। उसने अपना चश्मा मोड़कर, अपनी जेब में रख लिया। उसने अपनी डिजाइनर गुलाबी पेंट ऊपर खींची और घाट की सीढ़ियों पर बैठ गया। उसने विद्युत को भी पास आकर बैठने का संकेत दिया। कुछ-कुछ वैसे ही जैसे रोमी और देवता उन पत्थरों की सीढ़ियों पर बैठे थे।

‘तुम जानते हो, विद्युत... कभी किसी समय में, तुम मुझे विंस्टन पुकार सकते थे। या जोसफ। या अडोल्फ़ भी।

लेकिन अभी के लिए, तुम मुझे मास्केरा पुकार सकते हो... मेरे मित्र।’

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व

अंतिम युद्ध—भाग IV

मनु की आंखें क्रोध से चमक रही थीं, उनमें आंसू और नफरत भरी थी।

ध्रुव ने पहले कभी अपने मित्र का ऐसा क्रूर रूप नहीं देखा था। सत्यव्रत मनु हत्यारे दानव के रूप में बदल गया था, और अपने व नर-मुंड के बीच आने वाले दैत्य योद्धाओं को काटे जा रहा था।

दोनों सेनाएं एक बार फिर से एक-दूसरे पर अपनी तेज तलवारों, भालों, मुट्ठियों और दांतों से प्रहार कर रही थी। बदकिस्मत अभियंता के साथ ही शांति की आखरी उम्मीद भी ख़त्म हो गई थी और अब दोनों पक्षों के आदमी एक-दूसरे के रक्त के प्यासे थे। हर गुजरते पल के साथ बाढ़ की गड़गड़ाहट और तेज होती जा रही थी। हवा अब तेज चक्रवात की तरह चल रही थी, जिससे योद्धाओं के लिए संतुलन बनाना मुश्किल होता जा रहा था।

अब साफ था। बाढ़ अब एक-दो घंटे ही दूर थी। जो समय पर नौका में चढ़ जाएंगे, वो ही अगला दिन देखने के लिए जीवित रहेंगे। जो नौका पर नहीं चढ़ पाएंगे वो सागर की लहरों में कीटों के समान बह जाएंगे।

जब नौका का पुजारी-राजा उस नरभक्षी की तरफ बढ़ने लगा, तो ध्रुव और उसके साथी भी उसके साथ ही थे। उन्हें अब मनु की अनुमति मिल गई थी। वे सब अब स्याह जंगल के सम्राट को घेरने जा रहे थे और उसे अब अपने पापों की सजा

भुगतनी ही होगी। ध्रुव के प्रत्येक घुड़सवार के पास एक रस्सी का फंदा था। वो जानते थे कि जब तक नर-मुंड के हाथ-पैर आजाद रहेंगे, उस जानवर को हरा पाना असंभव होगा। उसमें दस आदमियों की ताकत थी, और उसे उसके बनाने वाले के पास भेजने से पहले जकड़ना जरूरी था।

ध्रुव सबसे पहला घुड़सवार जिसने किसी बवंडर की तरह उस विशाल दैत्य को घेर लिया। इससे पहले कि नर-मुंड अपने शाहबलूत के तने से ध्रुव को उसके घोड़े से किसी खिलौने की तरह गिरा पाता, ध्रुव ने अपनी रस्सी की गांठ को घुमाकर उस दैत्य के गले और कंधों पर डाल दिया।

नर-मुंड के कुछ भी समझने से पहले, पांच दूसरी गांठों ने उसे चारों तरफ से घेर लिया। ध्रुव के घुड़सवार अब नरभक्षी के चारों ओर चक्कर लगाते हुए रस्सी को मजबूती से लपेट रहे थे। पलभर में ही दक्ष घुड़सवारों ने धातु की कड़ियों वाली लता की रस्सी नर-भक्षी के टखनों की तरफ फेंकी। कुछ ही पलों में, उन्होंने नर-मुंड को कंधों से लेकर पैर तक रस्सियों और लताओं के जाल में घेर लिया।

एक पल के लिए, घुड़सवारों की आंखें चमक उठीं। नर-मुंड तेज हवा और गरजते बादलों के बीच, अपने अंग नहीं हिला पाने की वजह से चिल्ला रहा था।

लेकिन वो चमक आई और उसी पल चली भी गई।

·||卐||·

नर-मुंड पलक के कुछ देर झपकने तक शांत रहा क्योंकि वो अपनी सारी शैतानी ताकत का आह्वान कर रहा था।

ध्रुव के घुड़सवारों को हैरान और आतंकित करते हुए, नर-मुंड ने अपने विशाल, बलिष्ठ टांगों को लताओं से यूं आजाद कराया, मानो वो सूत के धागे से बंधी हों।

दानव फिर से गुर्राया, और उसकी गुर्राहट से युद्ध क्षेत्र में खड़े आदमियों की रीढ़ में सिहरन पैदा हो गई। अपने अजगर जैसी गुर्राहट को अपने पक्ष में इस्तेमाल करते हुए, नर-मुंड ने अपने से बंधी रस्सियों को पकड़ लिया। अपनी मजबूत पकड़ में चार या पांच रस्सियों को पकड़ते हुए, उसने उन्हें अमानवीय बल से खींचा। अगले

ही पल, ध्रुव के दर्जनों घुड़सवार रक्त से सने उस दलदल में खदेड़े जा रहे थे। नर-मुंड किसी जंगली हाथी से भी अधिक ताकतवर था!

इस असफल प्रयास से हताश हो, ध्रुव ने स्वयं उस शैतान से निबटने का फैसला किया। उसने सरपट दौड़ते अपने घोड़े से छलांग लगा दी और अपनी तलवार निकालकर नरभक्षी की तरफ बढ़ने लगा। ध्रुव को अपनी तरफ आता देख वो शैतान किसी पिशाच की तरह खिलखिलाया। जैसे ही वो दक्ष धनुर्धर पास आया, नर-मुंड धीरे से झुका और उसने एक चमकती हुई, विशाल कुल्हाड़ी उठा ली। ध्रुव के दिमाग में उस निर्दयी नर-भक्षी को हराने की कोई ठोस योजना नहीं थी। वह यह भी जानता था कि उसकी तलवार नरभक्षी की कुल्हाड़ी के एक भी वार का सामना नहीं कर पाएगी। वो बस स्वयं को ख़त्म करने जा रहा था।

तभी अचानक, ठीक उसके पीछे से, ध्रुव ने एक आवाज सुनी। ऐसे समय में उसकी पसंदीदा आवाज।

‘मुझे पकड़ो, ध्रुव!’

धनुर्धर ने मुड़कर देखा कि सत्यव्रत मनु घायल शेर की तरह बढ़ा आ रहा था, उसके दोनों हाथों में दो तलवार थीं। वह फिर से चिल्लाया।

‘पकड़ो मुझे...!’

ध्रुव तुरंत झुका और अपने दोनों हाथों की अंजुली बना ली। मनु ने सीधे ध्रुव पर छलांग लगाई, अपना एक पैर अपने मित्र के हाथों में रखा, दूसरा उसके कंधे पर और स्वयं को सीधे नर-मुंड की तरफ ऊपर हवा में उछाल दिया।

जो भी देख रहा था वो सूर्य पुत्र की वीरता पर स्तब्ध रह गया। मनु काले और लाल आसमान की पृष्ठभूमि में कुछ गज उड़ा, और अपनी छोटी तलवार से एक गहरा घाव दानव के कंधे पर किया। निर्दयी दानव तेज पीड़ा से गुर्राया। पूरे युद्ध में यह पहला घाव नर-मुंड को मिला था।

ध्रुव ने अपने राजा और मित्र को निडर युवा तेंदुए की तरह छलांग लगाते देखा। उसके लिए एक पल को समय मानो ठहर गया था।

मानवजाति का भविष्य, विशाल नौका का निर्माता और रक्षक, तेजस्वी सत्यव्रत मनु युद्ध मैदान में आ चुका था!

बनारस, 2017
देव-राक्षस

‘सिगरेट?’

विद्युत ने ध्यान दिया कि मास्केरा उसे भारतीय ब्रांड की सिगरेट ऑफर कर रहा था। मास्क ने देवता की आंखें देखीं और मुस्कुराया।

‘तुम्हारा दोस्त बाला मुझे हर महीने इनका एक कार्टन भेजा करता था। ये शर्म की बात है कि यूरोप में कोई सिगरेट इस भारतीय ब्रांड की तुलना नहीं कर सकती।’

विद्युत क्रोध से भभक रहा था। वह जानता था कि मास्केरा बिआंका उसे ताना मार रहा था। बाला मास्क के लिए किसी खिलौने से अधिक कुछ नहीं था। विद्युत के लिए यह सोच भी असहनीय थी कि किस तरह से ऑर्डर ने सालों पहले उसकी जिंदगी में दखलंदाजी की थी। कैसे वो उसके काम, उसके घर, उसकी भावनाओं... के साथ खेल रहे थे, और आज भी यह हरी-आंखों वाला आदमी विद्युत के सामने क्रूरता, निडरता से बैठा था।

‘तुम क्या चाहते हो, मास्केरा? हम यहां क्यों आए हैं?’

वाइट मास्क हंसा। उसने अपनी सिगरेट सुलगाई और अपने होंठों के बीच की हल्की दूरी से, बेफिक्री से धुआं निकाला। फिर वो विद्युत की तरफ मुड़ा, वो अभी भी मुस्कुरा रहा था।

‘मैं तुम्हें अरबपति बनाना चाहता हूं, विद्युत। मैं चाहता हूं कि तुम दामिनी से शादी करो। तुम्हारे सुंदर बच्चे हों। मैं चाहता हूं कि तुम एक लंबा और खुशहाल जीवन जियो। बस मैं तो यही चाहता हूं, देवता।’

अब हंसने की बारी विद्युत की थी। उसे मास्केरा का प्रस्ताव हास्यकर लगा। वह जानता था कि वे समय बर्बाद कर रहे थे। और दामिनी का नाम उस शैतान के मुंह से सुनकर एक बार को तो विद्युत को मधुमक्खी के काटने की चुभन महसूस हुई थी।

'ये तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी,' विद्युत ने कहा। 'और क्या मैं पूछ सकता हूं कि बदले में मुझे क्या करना होगा?'

मास्क ने दांत दिखाए और वो पवित्र गंगा के दूर छोर पर देखने लगा। उसने सिगरेट से दूसरा कश खींचा।

वो दोनों जानते थे कि मास्क क्या चाहता था।

'तुम इसका दोष मुझ पर नहीं डाल सकते, विद्युत, है न? हालांकि मैं जानता हूं कि शानदार जीवन जीने का मेरा प्रस्ताव तुम्हें तुम्हारी नियति से नहीं डिगा सकता।'

विद्युत सुन रहा था। वो इस आदमी के बारे में और अधिक जानना चाहता था। वो समझना चाहता था कि वाइट मास्क जैसे निष्ठुर आदमी का दिमाग कैसे काम करता था।

'मुझे बताओ, विद्युत। मैंने काशी विशु मंदिर में हजारों श्रद्धालु देखे थे...'

'काशी विश्वनाथ,' विद्युत ने उसकी सहायता की।

'हां, वही। मैंने वहां लोगों का हुजूम देखा, जो पूजा कर रहे थे, मंत्रोच्चार, सिर झुका रहे थे... अपनी ही भक्ति में डूबे हुए। लेकिन उनमें से अधिकांश बहुत गरीब थे। वो असहनीय पीड़ा से गुजर रहे थे। वो कुम्हलाए थे, बीमार थे, शोकग्रस्त थे और निर्धन... और फिर भी वो इस तरह तुम्हारे भगवान को चाहते थे मानो वो तंगी उनके लिए कोई मायने नहीं रखती थी। ऐसा क्यों?'

'*तुम्हारा* भगवान?' विद्युत ने अपनी भवें उठाकर पूछा। 'तो फिर, तुम्हारा भगवान कौन है, मास्केरा?'

मास्क हंसा और न में सिर हिलाया।

‘मैं हैरान हूं कि तुम्हें इस सबकी कितनी कम जानकारी है, और फिर भी तुम उनके लिए जान गंवाने को तैयार हो! क्या तुम नहीं देख सकते, विद्युत—अच्छाई और बुराई, ईश्वर और शैतान, प्रकाश और अंधेरा... ये सब एक ही शक्ति का निर्माण है, जो चाहती है कि अरबों मनुष्य जिंदगी भर दुखी रहें, और अपने भगवान के सामने सिर झुकाएं और अंत में अपने बनाने वाले से मिलने की उम्मीद में मर जाए? क्या यही तुम्हारा भगवान नहीं देता है—दर्द, तकलीफ, आंसू, दुख, बीमारी... मृत्यु?’

वाइट मास्क विलक्षण स्पष्टता से बोल रहा था। शायद इसी बददिमाग जुनून में ये लोग धर्म के नाम पर बुराई, आतंक और हिंसा फैलाते थे। ईश्वर के नाम पर। वही विध्वंसी, अमानवीय और मूर्ख अवधारणा।

‘मैं नहीं जानता कि ईश्वर क्या देता है। लेकिन मैं तुम्हारा अंतिम समाधान जानता हूं, मास्केरा। करोड़ों लोगों को ख़त्म कर देना... प्रणालीगत तरीके से, बेरहमी से? क्या तुम वैकल्पिक रूप से यही देने वाले हो?’

‘मानवजाति को ख़त्म किया जाना जरूरी है क्योंकि पूरे ब्रह्मांड में अधिकांश संख्या मूर्खों की है। तुम अपने बच्चों को इस दुनिया में लाते हो, ये जानते हुए भी कि यह जगह पीड़ा, बीमारी और नफरत से भरी है।

तुमने शादी जैसे संस्थान की स्थापना की, और महिला व पुरुष दोनों अपनी जिंदगी स्वयं को शुद्ध दिखाते हुए काटते हैं, जबकि उनके मन में दूसरे महिला व पुरुषों के लिए आकांक्षा रहती है।

आज तुम कहते हो कि मानवों को ख़त्म करना गलत है। लेकिन अब से सौ सालों से भी कम समय में प्यास, गर्मी और बीमारी से मरते ये सात अरब लोग जल्द ही नर-भक्षी लाशों में बदल जाएंगे—वो मांस के भूखे होंगे क्योंकि और कुछ खाने के लिए बचेगा ही नहीं। वो खून के प्यासे होंगे क्योंकि पीने के लिए और कुछ नहीं होगा! तब तुम्हारा भगवान कहां होगा, देवता?

क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता, विद्युत? तुम बुराई हो। तुम्हारा भगवान सबसे बड़ी स्याह ताकत है—एक झूठे, चमकते प्रकाश के पीछे छिपा हुआ। जबकि हम सच हैं, नेक... और भविष्य!

एक पत्थर को क्या चीज ताकतवर बनाती है? या एक मंदिर को? या किसी किताब को या किसी मूर्ति को? तुम... तुम इंसान! तुम इन बेजान चीजों को पूजते हो और अपनी ब्रह्मांडीय, लाखों की संयुक्त आध्यात्मिक ऊर्जा को सालों से, और प्राकृतिक तरीके से उन्हें देते हो, जिससे वो दिव्य बन जाती हैं। और ये तुमसे मिली शक्ति से ही, तुम्हारे ऊपर शासन करने लगते हैं! और तुम्हें मोक्ष के नाम पर दर्द, दुख और द्वेषपूर्ण प्रवृति देते हैं!'

मास्क ने एक और सिगरेट निकालकर सुलगा ली। उसने लंबा कश लिया, धुएं को अंदर खींचा और कुछ पल तक उसे अंदर ही रखा। फिर उसने विद्युत की तरफ कंधे उचकाए, उसका जवाब जानने के लिए। लेकिन इससे पहले कि विद्युत कुछ कह पाता, मास्केरा ने अपनी रुखी, हरी आंखों से देवता को देखते हुए, धमकी दी।

'आज ही काशी से चले जाओ, विद्युत।

मैंने तुम्हारे जैसे बहुत से युवाओं को मारा है। मैं अपनी सूची में तुम्हारा नाम शामिल करना नहीं चाहता।'

विद्युत मास्क की बात में 'तुम इंसानों' को नहीं भूल पाया था। उसने यह ऐसे कहा था मानो वो स्वयं इंसान नहीं था।

देवता उसकी बात का जवाब देने को मजबूर हुआ।

'मुझे तुम पर दया आती है, मास्केरा बिआंका या जो भी तुम्हारा नाम है। तुम तो मानवीय चेतना की चमक से पूरी तरह अनजान हो। हम इस दुनिया में बच्चों को लेकर आते हैं, इसलिए नहीं कि वो दर्द और बीमारी सहें, बल्कि इसलिए कि वो प्यार से जी सकें! जिससे वो स्नेही ईश्वर के असीमित स्नेह का आनंद ले सकें—मां की गोद का सुख ले सकें, बाप की उंगली पकड़कर चल सकें, प्रेमी के न भुलाए जा सकने वाले स्पर्श को महसूस कर सकें, महत्वाकांक्षा की अग्नि को जी सकें,

उपलब्धियों का जश्न मनाएं, ठंडी हवा में सांस ले सकें, मंदिर की शांति को जियें, और बेटे-बेटियों की हंसी में पल बिताएं, और दोस्ती की लापरवाह भावना को जी सकें... इसलिए हम अपने बच्चों को लेकर आते हैं।

शादी के बारे में तुम्हारे दयनीय विचारों को सुनकर तो मुझे हंसी आ रही थी। मानता हूं कि महिला और पुरुष अपनी असीमित आकांक्षाओं का गला नहीं घोंट सकते। लेकिन फिर भी उनमें से अधिकांश अपनी जिंदगी अपने जीवन-साथी के समर्पण में बिताते हैं, उसके प्रेम में डूबे हुए—उनमें इतना प्यार होता है कि वो सहजता से अपनी लालसाओं से ऊपर उठ जाते हैं। और इस पवित्र संस्थान का यही सबसे बड़ा बल है। वो साथ जो आत्माओं को सिर्फ इसी जन्म में ही नहीं, बल्कि जन्म-जन्म तक बांधे रखता है, यह इतना पवित्र है कि तुम्हारी काली शक्ति इसकी तुलना भी नहीं कर सकती।

हां, हम मंदिर बनाते हैं। हां, हम अपने ईश्वर के सम्मुख अपने सबसे शुद्ध भावों को व्यक्त करते हैं। ये बस उस राह की विनम्र अभिव्यक्ति है, जिससे हम अपनी सीमित समझ में उसकी उपस्थिति को महसूस कर सके। लेकिन जैसा कि ग्रंथों में लिखा है, "अहम् ब्रह्मास्मि" या "मैं ब्रह्म हूं" या और सहजता से कहें तो "मेरे अंदर ईश्वर वास करता है"—यह प्रत्येक व्यक्ति और भगवान के बीच के संबंध को समझने का आसान तरीका है। इस धरती पर आने वाला प्रत्येक पुरुष या स्त्री ईश्वर का एक जीता-जागता मंदिर है। तुम कहते हो कि वह हम पर शासन करता है। सत्य से ऊपर कोई नहीं हो सकता। ईश्वर कभी जीने के हमारे चयनित मार्ग में दखल नहीं देता, और फिर भी वो हमें हंसते, रोते, संघर्ष करते, समाधान निकालते और आनंदित होते देखता है। वो नास्तिकों से प्रेम करता है, और उतनी ही देखभाल आस्तिकों की भी करता है।

जहां तक सात अरब आदमियों के नरभक्षी हो जाने की बात है... तो तुमको अधिक चिंता नहीं करनी चाहिए। नकारात्मकता और प्रलय की चेतावनी करने वाले तुम्हारे जैसे बहुत से लोग आए और चले गए—जिन्होंने मानव प्रजाति के लचीलेपन को कम करके आंका। तुमने देखा न कि हम अभी भी यहां हैं। हालांकि जलवायु परिवर्तन की समस्या हमारे द्वारा ही उत्पन्न की गई है, लेकिन वो भी हम ही हैं सूर्य और हवा से ऊर्जा लेकर हमारे शहरों तक रौशनी पहुंचा रहे हैं। हालांकि प्रदूषित हवा और समुद्र भी बेशक हमारी ही करनी है, लेकिन वो भी हम ही हैं, जो इनका मुकाबला करने के लिए ग्रीन कार और ग्रीन बिल्डिंग बना रहे हैं। और वो शानदार

प्रजाति भी हम ही हैं मंगल जैसे ग्रहों पर जीवन की तलाश करते हुए, इसे बहु-ग्रह सभ्यता बनाने जा रहे हैं!

हम यहां कल्याण के लिए हैं, मास्केरा।

हमें अकेला छोड़ दो।

और अपने मालिक से भी ऐसा ही करने को बोलो।'

देव और राक्षस की मुलाकात अब ख़त्म हो गई थी।

विद्युत जाने को उठा, और मास्केरा बिआंका अपने दांत भींचते हुए दूर क्षितिज में देखने लगा।

जाने के लिए मुड़ने से पहले देवता ने अपनी भूरी आंखें उस शैतान से मिलाते हुए, धमकी दी।

'आज ही काशी से चले जाओ, मास्केरा।

मैंने कभी अपने जीवन में किसी इंसान को नहीं मारा है। इसे बदलने के लिए मुझे मजबूर न करो।'

विद्युत मुड़ा और घाट की सीढ़ियां चढ़ते हुए, धीरे-धीरे गंगा से दूर चला गया। वह बार-बार अपनी अंतिम बात के विषय में सोच रहा था।

अगर यह हरी आंख वाला दानव इंसान नहीं था... तो उसे उसके पापों की सजा देने में कुछ गलत नहीं होगा।

उसी के शब्दों में कहें तो।

विशाल नौका के आसपास का दलदल, आर्यवर्त, 1698 ईसापूर्व

नर-बलि

बाकी का युद्ध धीरे-धीरे थम गया।

दोनों तरफ के योद्धा सांस थामे वो रक्तरंजित प्रतियोगिता देख रहे थे। मानव और नरभक्षी के बीच होने वाला यह युद्ध ही नौका और धरती के बीच हो रही जंग का निर्णायक पल होगा।

भय से कांपती हुई तारा नौका के शीर्ष पर खड़ी थी। वो देख चुकी थी कि नर-मुंड क्या कर सकता था। वह महान अभियंता की दर्दनाक नियति की भी साक्षी बनी थी। उसने देखा था कि किस तरह नरभक्षियों के राजा ने मत्स्य प्रजाति के घुड़सवारों को मसल दिया था। उसके दिल की धड़कन थम गई थी, जब उसने एक ही बार में बारह घुड़सवारों को उनके घोड़े से उतारकर, खदेड़ते हुए देखा था। और अब उसका मनु, उसका प्यारा मनु उस शैतान से अकेले लड़ रहा था।

उसने आंखें बंद कर उसकी प्रार्थना की, जिस पर उसे यकीन था कि वो सत्यव्रत को कुछ नहीं होने देगा।

उसने मत्स्य से प्रार्थना की।

अपने कंधे के घाव से पलभर के लिए लड़खड़ाने के बाद, नर-मुंड वापस खड़ा हो गया था, पहले से भी अधिक ताकत से। उसने मनु को उठाकर, दूर पटक दिया। उसके वार में इतना दम था कि मनु उससे बीस फूट दूर जाकर गिरा। लेकिन जैसे ही मनु के शरीर ने जमीन को छुआ, वो संघर्ष करते हुए वापस अपने पैरों पर खड़ा हो गया, और दोबारा उस दानव पर हमले के लिए तैयार था।

जब मनु अपने विशाल दुश्मन के करीब पहुंचा, तो नरभक्षी राजा ने विशाल बरगद सा अपना पैर उठाकर मनु के सीने और पेट पर मारा। एक बार फिर से, सूर्य पुत्र बहुत दूर जाकर गिरा, इस जोरदार वार की वजह से वो सांस नहीं ले पा रहा था। लेकिन एक बार फिर से, जैसे ही उसके शरीर ने दलदली जमीन को छुआ, वो फिर से हमले के लिए खड़ा हो गया।

मनु एक घायल शेर की तरह विशाल जंगली हाथी से लड़ रहा था। किसी भी तरह पीछे हटने को तैयार नहीं, और न ही डरा हुआ!

तीसरी बार जब मनु ने नरभक्षी पर हमला किया, तो जहां वो उसकी विशाल कुल्हाड़ी के वार से बचा, तो वहीं उसने दानव के घुटने को अपनी छोटी तलवार से चीर भी दिया। सत्यव्रत मनु का वार इतना सटीक था कि वो किसी साधारण मनुष्य के पैर को तो दो टुकड़ों में काट ही देता। लेकिन नर-मुंड की खाल गेंडे जैसी मोटी थी। उसे बस एक इंच गहरा जख्म ही मिल पाया। दैत्य गुर्राया और मनु उसके आसपास दूसरे अवसर के इंतजार में घूमने लगा।

नर-मुंड और मनु दोनों ही उस बरसाती रात में बुरी तरह से हांफ रहे थे, दोनों का ही काफी पसीना बह चुका था। ऐसा लग रहा था मानो वो अनंत समय से लड़ रहे

थे। नरभक्षी राजा को युवा पुजारी-राजा के हाथों कई घाव मिल चुके थे, लेकिन उनमें से कोई भी घातक नहीं था। वो किसी भी तरह पराजित नहीं होने वाला था।

हर गुजरते पल के साथ, मनु के पास युद्ध के लिए दांवों, विचारों और सांसों की कमी होती जा रही थी। अपनी अधीरता में, उसने पहली गलती कर दी। शैतान के गले तक पहुंचने की कोशिश में, मनु उसके विशाल हाथ के वार की सीमा में आ गया। नर-मुंड ने मौका नहीं गंवाया और नौका के संरक्षक पर अपने शक्तिशाली घूसे से वार किया। उसका जोरदार मुक्का एक दीवार को तोड़ देने के लिए भी पर्याप्त था। मनु ने तुरंत ही रक्त की उलटी की और वो घुटनों के बल ढह गया। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा, और उसे अपने लंबे बालों पर विशाल हाथ की पकड़ महसूस हुई।

उसके बाल खींचते हुए, नर-मुंड ने मनु को पूरे मैदान में खदेड़ा, जिससे हर कोई उसे देख सके। तारा फूट-फूटकर रोने लगी और अपनी तलवार निकालकर, नौका की लकड़ी की बाड़ के पास लटकी रस्सी की सीढ़ी की तरफ भागी। उसे दामिनी सेना की बहुत सी योद्धाओं ने पकड़कर रोका, वो अब जानती थीं कि अब अंतिम लड़ाई में उन्हें विशाल नौका को संभालना होगा।

राक्षस ने फिर मनु को अपने से कुछ दूर फेंक दिया। उसने मुड़कर अपने सिपाहियों को विजयी भाव से देखा। उसकी प्रतिक्रिया में, दैत्यों ने चिल्लाकर अपने अपराजेय शासक का अभिवादन किया, और अपने हथियार उठाकर जीत का जश्न मनाया। फिर नर-मुंड ने नौका रक्षकों की तरफ देखा, उसकी आंखों की क्रूरता संकेत दे रही थी कि उनकी कैसी नियति उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। फिर वो धीरे-धीरे सूर्य पुत्र की तरफ बढ़ा। अपनी सामान्य शैली में, उसने अपना विशाल पैर मनु का सिर कुचलने के लिए उठाया।

अपने योद्धा के चेहरे पर दबाव बढ़ाने से पहले वो पिशाच की तरह चिल्लाया।

वो मनु की खोपड़ी कुचलकर, उसका गूदा निकालने वाला था।

विशाल दानव नहीं जानता था कि किस चीज ने उसके पैर को चीर दिया था। मूर्ख लड़ रहा था कि वो किससे भिड़ रहा था। अपने अपरिपक्व जश्न में वो भूल गया

था कि विवास्वन पुजारी का पुत्र घायल हुआ था। वो मरा नहीं था।

दानव के पैर में छोटी तलवार घुसी रहने के बावजूद, मनु ने अपनी बड़ी तलवार निकाल ली थी। अपने बदन की सारी बची-खुची ताकत लगाकर, उसने नर-मुंड की पिंडली में उसे घुसा दिया। पलभर में मनु ने दानव के पैर को चीर डाला, शैतान की पिंडली की मांसपेशी बाहर निकल आई थी और अब उसके टांग की हड्डी दिखने लगी थी।

नर-मुंड असहनीय पीड़ा से चिल्लाया। जब दानव सदमें और गहन पीड़ा से जूझ रहा था, तो सत्यव्रत मनु वापस अपने पैरों पर खड़ा हो गया। हालांकि वो नरभक्षी के निर्मम प्रहार से वास्तव में हिल गया था, लेकिन सूर्यपुत्र तब बेहोश नहीं था, जब वो खदेड़ा जा रहा था। नौका का रक्षक सही समय की प्रतीक्षा कर रहा था, कि वो वापस इस लड़ाई को अपने हाथ में ले सके। दानव अब पागलों की तरह अपनी कुल्हाड़ी घुमा रहा था, वो जंगली जानवर की तरह गुर्रा रहा था, और उसका संतुलन नहीं बन रहा था। सत्यव्रत मनु अब एक बार फिर से उस रक्तरंजित नरभक्षी के चक्कर लगा रहा था। इस बार वो धीरे-धीरे चल रहा था। नौका का राजा सोमदत्त के टुकड़े किए जाने के भयानक दृश्य को अपनी आंखों से नहीं निकाल पा रहा था। उसके दिमाग में स्पष्ट था। यह जानवर किसी रहम का हकदार नहीं था।

जैसे ही दानव मुड़ा और पुजारी-राजा पर हमला करने के व्यर्थ प्रयास में अपनी कुल्हाड़ी घुमाई, मनु ने अचानक एक छलांग लगाई। इससे पहले कि दानव समझ पाता क्या हो रहा था, मनु पीछे से नरभक्षी के विशाल कंधों पर चढ़ गया।

‘यह मेरे पिता के अंतिम मित्र के लिए, नर-मुंड! यह हड़प्पा के अभियंता के लिए! यह पंडित सोमदत्त के लिए!’ मनु दानव के कान में चिल्लाया।

अगले ही पल, सूर्य पुत्र ने दैत्य की गर्दन में अपनी छोटी तलवार घुसा दी, और उसे नीचे मरोड़ते हुए, नरभक्षी का गला चीर दिया।

सोमदत्त की निर्मम हत्या का बदला उसी क्रूरता से लिया जाना था।

नर-मुंड के गले से रक्त फव्वारे की तरह फूट निकला, और विशाल दानव अपने घुटनों के बल ढह गया। यकीनन अब नरभक्षी रक्त बहने से मर जाएगा। हालांकि

वो गुस्से से भभक रहा था, फिर भी मनु ने शैतान की पीड़ा ख़त्म करने का निर्णय लिया।

स्याह सम्राट की कुल्हाड़ी उठाकर, मनु ने उसकी भारी धार से एक सहज वार किया। वो दैत्य राजा का अंत था।

नर-मुंड का बड़ा सा सिर हवा में उछला, और उसका सिर विहीन धड़ दलदल में ढह गया।

एक दैत्य मरता है तो दूसरा जी उठता है।

'दैत्यों को बंदी बना लो! और नौका के पीछे डाल दो! पीछे डाल दो!' मनु अपनी सेना के सामने चिल्लाया।

गरजते बादलों को चीरते हुए, अपने उठान से चमकती बिजली को शांत कराते हुए, अपने विनाशकारी परदे से आधे आसमान को आधा ढकते हुए... वो प्रकट हुई।

प्रलय!

विनाशकारी प्रलय की अनर्थकारी लहरें नौका की तरफ लपकीं।

बनारस, 2017

इतिहास के सबसे घातक हत्यारे

‘वो आ गए हैं, विद्युत दादा!’

ऑर्डर ने बिलकुल समय बर्बाद नहीं किया। वे काले मंदिर का रहस्य जानते थे, कल्कि अवतार का जन्मस्थान, उनके नश्वर अभिभावकों का नाम... सबकुछ अब देवता के दिल में दबा था। रोहिणी नक्षत्र के दौरान उस प्राचीन पत्र को पवित्र अग्नि में जला दिया गया था।

गुप्त भ्रातृसंघ के पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। उनका अस्तित्व और न्यू वर्ल्ड ऑर्डर की परिकल्पना अब शिशु कल्कि को ढूंढ़ने और उसके वध पर टिकी थी। वो वही गलती दोहरा रहे थे, जो अतीत में भी तानाशाहियों ने अपनाई थी। कंस, मथुरा के राक्षस राजा ने सारे शिशुओं का वध करा दिया था, जब भगवान कृष्ण धरती पर आए थे। जुडिया के सम्राट हेरोड ने ऐसा ही ईसा मसीह के जन्म पर किया था। और अब ऑर्डर भी उसी जघन्यता की कोशिश कर रहा था।

अब विद्युत ही काले मंदिर का रहस्य था!

ऑर्डर को स्पष्ट था।

विद्युत को पकड़ना जरूरी था। उसे यातना देनी थी। जो सूचना उसके पास थी, उसे किसी भी कीमत पर निकलवाना था। और कल्कि अवतार को उसके बचपन में ही ख़त्म करना था!

सोनू ने आधी रात के बाद विद्युत के दरवाजे पर दस्तक दी।

‘आप इस पर यकीन नहीं करोगे, दादा... लेकिन वे मठ पर हमला कर रहे हैं,’ वह फुसफुसाया, जब देवता ने दरवाजा खोला।

‘सब कहां हैं?’ विद्युत ने पूछा। ‘और हमलावर कितने हैं?’

सोनू ने एक लंबी सांस लेकर स्वयं को शांत कराया और फिर जवाब दिया।

‘कह नहीं सकते, दादा। वो...’

उसके शब्द गुम हो गए। विद्युत ने उसकी आंखों में देखा।

‘वो क्या, सोनू?’

‘मैं नहीं जानता क्या कहूं, विद्युत दादा। लेकिन उन्होंने काले कपड़े पहन रखे हैं और वो ऐसे चल रहे हैं, जैसे कोबरा, जाने कैसे हवा में गायब हो जाते हैं! उनके चेहरे पर पड़े नकाब में से सिर्फ उनकी आंखें दिख पा रही हैं, और उनके पास अजीब से हथियार हैं। छत पर मठ के तीन प्रहरी मृत मिले हैं, और उनके गले पीछे से काटे गए हैं।’

विद्युत ने अब सोनू की बांह पकड़ी और वो उस विंग की तरफ बढ़ा जहां दामिनी और नैना ठहरे हुए थे। वो तुरंत ही समझ गया था कि मास्केरा के हमलावर कौन थे, और यह बुरी खबर थी।

वो दुनिया के इतिहास के सबसे घातक योद्धा और हत्यारे थे।

निन्जा।

‘अब तक शेषनाग प्रभु तक पहुंच गए होंगे, तो अभी के लिए कल्कि सुरक्षित रहेंगे,’ नैना ने कहा।

वे अब मठ के भूतल में बड़े से सभा कक्ष में जा रहे थे, सारे दरवाजे लोहे की भारी छड़ों से बंद थे और प्रत्येक द्वार पर आश्रम के दर्जनों योद्धा खड़े थे। निन्जा हमले के कुछ ही मिनट बाद मठ के अनेकों योद्धा मारे जा चुके थे। द्वारका शास्त्री, विद्युत, बलवंत और नैना मठ के सारे निवासियों और योद्धाओं को कक्ष की अस्थायी सुरक्षा में ले आए थे।

देव-राक्षस मठ के निवासी, युवा छात्र और बच्चे घबराए हुए थे। वो किसी भी तरह से कमजोर कड़ी नहीं थे। न ही वो युद्ध और हिंसा से नितांत अपरिचित थे। लेकिन उन काले-भूतों द्वारा जो युद्ध रणनीति अपनाई जा रही थी, उसके बारे में न तो उन्होंने देखा था, और न ही सुना था। गुप्त हमलावर धीरे-धीरे शमन करते हुए, आश्रम के प्रत्येक प्रकाश स्रोत को ख़त्म कर रहे थे—प्रत्येक बल्ब, प्रत्येक ट्यूब-लाइट, प्रत्येक सोडियम वेपर लैंप और यहां तक कि पूजा के लिए जलाया गया मिट्टी का दीया भी। धीरे-धीरे पूरे मठ में अंधेरे की चादर पसर गई। टेलीफोन लाइन भी कट गई थी और आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल से मोबाइल सिग्नल भी जाम कर दिया गया था। द्वारका शास्त्री के मन में कोई संदेह नहीं था कि गुप्त भ्रातृसंघ ने स्थानीय प्रशासन को भी खरीद लिया था, और निश्चित किया था कि कुछ घंटों के लिए वो मठ से दूर रहें, भले ही जो हो जाए। दूसरे शब्दों में, मठाधीश और उनके समर्पित अनुयायी की बात निश्चित रूप से जानते थे।

आज रात, उन्हें अपने दम पर ही निकालनी थी।

‘तुम सही कह रही हो, नैना बिटिया... यह बहुत बड़ी ताकत है,’ वृद्ध ने जवाब दिया। ‘मैं खुश हूं कि दिव्य सर्प-राजा प्रभु के साथ हैं। लेकिन अब हमें अपनी पूरी ताकत से विद्युत और दामिनी की सुरक्षा करनी है!’

सभी ने सहमति में सिर हिलाए, हालांकि कोई नहीं जानता था कि आगे क्या करना था। एक मिनट की खामोशी के बाद, जो तहखाने के कक्ष में एकत्र हुए लोगों को एक साल के समान प्रतीत हुआ, द्वारका शास्त्री बलवंत और विद्युत की तरफ जवाब के इंतजार में मुड़े। वह जानते थे कि वो ऐसे दुश्मन से नहीं लड़ सकते थे, जिसे वो जानते भी नहीं थे।

‘ये कैसे हमलावर हैं, जो यूं बेईमानी से पीछे से वार कर रहे हैं, विद्युत? ये जघन्य हत्यारे कौन हैं, बलवंत? मैंने ऐसा छल पहले कभी नहीं देखा!’ वृद्ध ने कहा, वो सुरक्षा के प्रति-हमले की कोशिश में बोले।

विद्युत जल्दी से अपने परदादा और मठ के उपस्थित योद्धाओं को घातक निन्जाओं के बारे में सबकुछ बता देने वाला था, तभी उसने तहखाने की रौशनदान की खिड़की पर काली परछाई को देखा।

‘वो यहीं हैं, बाबा...’ विद्युत फुसफुसाया। ‘हम सब यहां नहीं रह सकते। वो आखिरकार तोड़कर अंदर आ ही जाएंगे। वो और अधीर होकर किसी तरह की जहरीली गैस का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। उनके मोबाइल जैमर बस उनके अत्याधुनिक पद्धति का एक छोटा सा संकेत हैं। अगर जरूरत पड़ी तो वाइट मास्क मठ के प्रत्येक आदमी, महिला और बच्चे को मारने से भी बाज नहीं आएगा।’

‘ये लोग कौन हैं, विद्युत?’ दामिनी ने पूछा, उसकी आंखें भय से फैल रही थीं।

‘वो निन्जा हैं, दामिनी। हत्यारों का एक मध्ययुगीन संप्रदाय, जिसकी उत्पत्ति जापान में हुई थी। अपनी क्रूरता और अमान्य तरीकों की वजह से *समुराई* से गौण माने जाने वाले निन्जा की युद्ध पद्धति 19वीं सदी में पश्चिम तक पहुंच गई थीं। वो सबसे घातक हत्यारे हैं।’

निर्मम सन्नाटा एक बार फिर से छा गया, और कई लोग ठंडे पसीने से नहा गए।

‘तो... तो इसका क्या मतलब है, विद्युत?’ बलवंत ने पूछा।

‘मतलब आप मान लीजिए वो किराये के हत्यारे जो रोमी परेरा के साथ आए थे, वो अगर दक्ष योद्धा थे...

...तो निन्जा वास्तव में अपराजेय थे।’

विनाशकारी प्रलय, 1698 ईसापूर्व
‘म...त्स्य!’

‘वो सब मरने वाले हैं...’ मनु स्वयं से बुदबुदाया। ‘और मैं भी उनके साथ मर जाऊंगा।’

ये बेचैन आत्माएं, ये युवा पुरुष और महिलाएं, शिशु, वृद्ध और निराश्रित, ये समस्त प्रजाति जिनकी सुरक्षा का मैंने वचन लिया था, चीटियों की तरह मसल जाएंगे।

मनु को अब पहली बार उस कठोर वास्तविकता का अहसास हुआ था, जिसका उसके कंधे पर भार था। सच के इस भयानक पल से पहले तक, वो समुद्री-प्रजाति के रहस्यमयी प्रमुख के विचित्र किंतु दुर्भाग्यपूर्ण आदेश को पूरा करने में डूब गया था।

इस अव्यवस्थित, जुगाडू शिल्पकारिता का तेजस्वी युवा नेता विशाल जहाज को एक तरफ झुकता देख जड़ रह गया। उसे जूट और वृक्षों की लताओं से निर्मित बीस हजार मजबूत रस्सियों से बांधा गया था, लेकिन ये भी उसे पकड़ पाने में सक्षम नहीं थीं। समुद्र रूपी नदी की हिंसक, दानवीय लहर मानवजाति के बनाए सबसे बड़े जहाज पर भारी पड़ रही थी। और भयानक बाढ़ इसे भी डुबोने वाली थी।

क्या यह घातक बाढ़ जानती है कि इस अंतिम नाव में क्या महत्वपूर्ण सामग्री रखी है?

यह कोई छिपी हुई बात नहीं थी कि ब्रह्मांड को ख़त्म कर देने वाली, विनाशकारी बाढ़ आने वाली थी। धरती पर छाए स्याह, लाल-बैंगनी बादल ऐसे लग रहे थे मानो किसी उन्मादी दिव्य चित्रकार ने पुराने रक्त से आसमान को रंग दिया हो। इंद्र के बादलों की पागल कर देने वाली दहाड़ और हिंसक बरसात ने प्रलय, दुनिया के अंत की घोषणा कर दी थी। बाघ के दांत की तरह नुकीली बूंदें आसमान से गिर रही थीं, जो मनु और उसके समर्पित अनुयायियों पर बाणों की वर्षा के समान बरस रही थीं। मनु-शिष्यों या मनुष्यों की त्वचा पर पड़ती प्रत्येक बूंद अदृश्य भाले के तरह उन्हें भेद रही थी। वीर पुरुषों और महिलाओं की यह सेना कोलाहल भरे जल में जिस चीज पर संतुलन बनाने की कोशिश कर रही थी, वो कोई सामान्य नाव नहीं थी।

यह अंतिम नाव थी। किसी बंदरगाह की अंतिम नाव नहीं। न ही किसी सेना की अंतिम नाव। न ही उस विशेष ऋतु में तट से निकलने वाला अंतिम जहाज और न ही उस रात किसी जहाज का अंतिम फेरा।

यह स्वयं सृष्टि की अंतिम नाव थी। यह वो नौका थी, जहां स्वयं पृथ्वी शरण लेने जा रही थी। अपने साथ अपने समुदाय के बीज लिए।

यह महान योद्धा, पुजारी, मुनि, दार्शनिक और राजा मनु का पराक्रम था।

यह उसकी नाव थी।

मनु की नाव।

एक जहाज के विरुद्ध सौ हज़ार पुरुषों और महिलाओं का यह निर्भीक संघर्ष इतना बहुमूल्य था कि ईश्वर तक इसकी कल्पना नहीं कर सकता था। यह ऐसा दृश्य था जो इससे पहले कभी इस ग्रह पर नहीं देखा गया था। और न ही फिर कभी देखा जाएगा, समय के अंत तक भी नहीं। मनु की विशाल नौका का आकार किसी भव्य नगर के समान था। लेकिन इसका उद्देश्य इतना महान था कि मानवजाति कभी इसकी थाह भी नहीं ले पाएगी।

यह एक प्रवेश मार्ग था। निरंतरता का इकलौता पुल। एक पतनशील पुराने संसार से... पुनर्निर्माण के नए सवेरे में। यह महायुद्ध प्रकृति के साहस और मनुष्य के अस्तित्व बचा पाने की कोशिश के बीच था। मानवता बिना संघर्ष किए हार मानने वाली नहीं थी— ऐसा संघर्ष जिसे स्वर्ग भी याद रखेगा। लेकिन इस साहसिक प्रयास के बावजूद बहुत कुछ तबाह हो जाने वाला था। मानवजाति द्वारा युगों में प्राप्त किया गया बहुमूल्य और अचल ज्ञान इस नौका के माध्यम से आगे नहीं जाने वाला था। प्राचीन रसायन, औषधि, विमानन, तंत्र-विज्ञान, शिल्प, औजार और आध्यात्मिकता, सब हमेशा के लिए लुप्त हो जाने वाले थे, महान बाढ़ के परिणामस्वरुप, वो सब समुद्र की तली में दब जाने वाले थे।

और फिर भी यह नाव, जैसा कि आर्यवर्त इसे जानता था, जीवन की अंतिम आशा थी। मनुष्य चाहे जितना ही भगवान के बनाए हुए अद्भुत तारों, आकाशगंगा और ज्योतिपुंजों को देखकर हैरान हो जाए, लेकिन वास्तव में भगवान की बनाई सर्वश्रेष्ठ कृति जिंदगी ही है। शानदार, लचीली... जिंदगी। जीव जो दर्द महसूस करते हैं, जन्म देते हैं, आंसू बहाते हैं और असीमित प्रेम करते हैं। जीव जो स्वयं ईश्वर का प्रतिबिंब होते हैं। और इस कृति को बचाया जाना आवश्यक था।

सबसे बढ़कर।

मोटी, गुथी हुई, भीगी रस्सियां और लताएं अब मनु की सेना की बांहें, गले और मांस काट रही थीं। नगर जैसी बड़ी नाव को संतुलित रखने के लिए बांधी गई मजबूत रस्सियों का बल अब उनकी उंगलियों को काट रहा था, कंधे तोड़ रहा था और बांहों की मांसपेशियां फट रही थीं। पुरुष, महिलाएं और बच्चे सब मिलकर अपने अदृश्य, अकल्पनीय, अपराजित शत्रु से संघर्ष कर रहे थे। वे सब नश्वर हाड़-मांस के बने थे, जबकि नौका भारी लकड़ी, प्रबलित कांसे और चट्टानी पत्थर की बनी थी—यह इतनी विशाल थी कि रस्सी खींचने वाले लोग भी इस विशाल जहाज की पूरी झलक नहीं देख पाए थे, भले ही वो अपना सिर उठाकर आसमान में कितना ही देखने का प्रयास क्यों न करें।

नौका सुमेरु पर्वत से ऊंची और उस मैदान से भी अधिक चौड़ी थी, जहां दसराजन का प्राचीन युद्ध हुआ था।

मनु लगातार अधीर हो रहा था। उसने शंख बजाकर खतरे का संकेत दिया। यह शंख तभी बजाया जाना था, जब कोई भीषण आपदा हो। और वो समय आ पहुंचा था। अपने समर्पित अनुयायियों की मौत से अधिक पीड़ादायक और कुछ नहीं हो सकता था। मनु ने अपना चेहरा, अपनी कलाई पर बंधे चमड़े से पोंछा, गहरी सांस ली और फिर से शंख बजाया, जिसकी तेज आवाज़ तूफानी आसमान में दबकर रह गई।

एक सुनसान और डरावनी चट्टान, जो लाल आसमान के सम्मुख कोयले-सी स्याह दिख रही थी, पर खड़ा हुआ मनु अपनी आंखों पर खुली हथेलियों से ओट बनाते हुए दूर क्षितिज में देखने की कोशिश कर रहा था। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। हर गुजरते पल के साथ उसकी हताशा बढ़ती जा रही थी। वह पराजय के अपने आंसू रोकने की बहुत कोशिश कर रहा था, और एक बार फिर से, अपना पूरा दम लगाते हुए उसने शंख बजा दिया। चीखते हुए शंख की ध्वनि क्रोधित अजगर का क्रंदन सुनाई पड़ रही थी, और मनु के दसियों हजार साथियों को लगा मानो उनके कानों में पिघलता हुआ लोहा उतर गया हो।

मनु आंखें सिकोड़कर, ऊंची लहरों के पार, क्षितिज में देखने का प्रयास कर रहा था। उसे उम्मीद थी कि उसे उसकी परछाई दिखाई देगी, जिसे उसने सच्चा मसीहा माना था।

उसे कुछ नहीं दिखाई दिया।

·||卐||·

'म...त्स्य!' आगे को निकली हुई चट्टान पर बेचैनी से चक्कर लगाते हुए मनु चिल्लाया। यह चट्टान उसका नियंत्रण स्थल थी, जहां से वो विशाल नौका के निर्माण का निरीक्षण करता था। उसके क्लांत, भयभीत और आशावान नेत्र भीषण प्रलय के परे क्षितिज पर टिके थे। बारिश उसके मनोहर किंतु युद्ध-चिन्ह से सुशोभित चेहरे पर वार कर रही थी। अपने महत्वाकांक्षी प्रयास पर मंडराते खतरे को देखकर वो संभवत: रोने वाला था। हताशा का एक भाव इस अप्राकृतिक तूफान से लड़ने के उसके जज्बे को तोड़ रहा था।

क्या उस इकलौते इंसान ने उसे धोखा दिया था, जिस पर वो अपने प्रिय पिता—महान विवास्वन पुजारी, जितना ही भरोसा करता था? क्या उसके मित्र,

मार्गदर्शक, सलाहकार, उपचारक... ने उसका साथ छोड़ दिया था?

क्या उसके प्यारे मत्स्य ने उसके साथ छल किया था?

'म..........त्स्य...!' ऊपर कड़कती बिजली को देखते हुए मनु चिल्लाया, उसकी बांहें फैली हुई थीं और फेफड़े फटने को तैयार थे, मानो वो आसमान तक अपनी अधीर विनती पहुंचाना चाहता था!

और फिर उसे वो दिखाई दिया। सब ख़त्म कर देने वाली बाढ़ में, समुद्र को चलाता हुआ, वो उसे दिखाई दिया।

लोक-नास , सबसे बड़ा समुद्री दैत्य, जिसका जिक्र कभी शक्तिशाली *ब्रह्मा* ने किया था, दूर लहर के साथ अपना सिर आगे निकाले बढ़ रहा था। मनु ने पहली बार उस विकराल पशु की धुंधली सी छवि देखी थी।

और वो वहीं था, अनेकों फण वाले सर्प की चमकती आंखों के बीच, निर्भीकता से खड़ा हुआ।

मत्स्य।

बनारस, 2017

‘यहां तक कि मृत्यु भी वाइट मास्क से भय खाती हैं!’

फैसला हो चुका था। विद्युत, बलवंत और नैना प्रति-हमले का नेतृत्व करेंगे। वो ही अकेले थे जो अपराजेय निन्जाओं के सामने टिक सकते थे। मठ के तीस चुनिंदा योद्धा नजदीक से उनके पीछे चलेंगे। उनके पास तलवार, भालें और बंदूक थीं। सोनू को दामिनी, द्वारका शास्त्री, पुरोहित जी और मठ के बाकी निवासियों की सुरक्षा के लिए छोड़ दिया गया, जो अभी भी तहखाने में ही शरण लिए हुए थे। देव-राक्षस आश्रम के बीस और योद्धा सोनू के साथ रुके थे।

‘इसे रखिए, विद्युत,’ बलवंत ने कहा और चमकती बेरेटा 92 सेमीऑटोमेटिक पिस्तौल देवता को पकड़ाई। ‘मैं जानता हूं कि आप मेरे युद्ध के तरीकों को अनुमति नहीं देते, लेकिन यह तब काम आएगी, जब कुछ और काम नहीं करेगा।’

विद्युत ने नम्रता से सिर हिलाया, और प्रस्ताव ठुकरा दिया।

‘अगर आपका आशीर्वाद मेरे साथ है, तो मुझे इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी, बलवंत दादा। बाबा ऐसे हालात में कभी भी मुझे निहत्था बाहर नहीं जाने देंगे, है न? वैसे भी आप तो हमेशा मेरे साथ हैं ही।’

इतना कहकर विद्युत ने अपना हाथ वरिष्ठ योद्धा के कंधे पर रख दिया और मुस्कुरा दिया। बलवंत को ऐसा लगा मानो उसके सीने से कोई बड़ा बोझ उतर गया हो। उसके प्यारे विद्युत ने आखिरकार उसे माफ़ कर दिया था!

‘सही-सलामत वापस आना, बेबी,’ अपने देवता को विदा करते हुए दामिनी फुसफुसाई, उसकी आवाज भावनाओं से भारी हो रही थी। ‘हमें दूसरी दुनिया में एक साथ जाना है, याद है न?’

‘साथ में,’ विद्युत ने जवाब दिया और उसकी आंखों में प्यार से देखते हुए, अपना माथा उसके माथे से सटा दिया।

देवता जानता था कि वो अपने जीवन की सबसे कठिन लड़ाई पर जा रहा था, ऐसी लड़ाई जिससे शायद वो कभी वापस न आए। और उसे सबसे अधिक चिंता उन घातक निन्जाओं की नहीं थी। वो तो उन्हें लेकर परेशान था, जो निन्जाओं के बाद आने वाले थे।

मास्केरा बिआंका। शैतान का दूत।

अब चोटिल होने की बारी निन्जाओं की थी। तीन दिशाओं में बंटकर, विद्युत, नैना और बलवंत देव-खंड के अलग-अलग दिशाओं में बढ़ रहे थे। दक्ष योद्धा होने की वजह से उन्हें अंधेरे से अभ्यस्त होने में अधिक समय नहीं लगा। जैसे ही उनकी आंखें अभ्यस्त हुईं वो अंधेरे कोने में घूमती परछाइयों को देख पाए और पलटकर वार भी कर पाए। जोरदार प्रहार।

विद्युत एक जापानी तलवार के हमले से बचा जो उसके कानों के पास से होते हुए, आंखों से एक मिलीमीटर की दूरी पर चमकी। तुरंत ही, हमलावर की दिशा और दूरी को भांपते हुए विद्युत ने निन्जा के गले में जोरदार घूसा मारा—इजरायली क्राव मागा का एक बढ़िया दांव। काले कपड़ों में छिपा हमलावर कुछ पल के लिए अपनी सांस के लिए तड़पता रहा, अपने हाथों से अपने गले को पकड़कर, वो दर्द से तड़पते हुए सीढ़ियों से गिर गया।

दो और निन्जाओं को ऐसे ही अंजाम पर पहुंचाकर, विद्युत अब एक खुले बरामदे में आ गया था, जहां से देव-खंड का बागीचा दिखाई दे रहा था। जो उसने देखा, उससे उसकी रीढ़ में सिहरन हो आई।

बाबा!

द्वारका शास्त्री अब सात निन्जाओं से घिरे खड़े थे, उन्होंने तलवार निकाल ली थी, उनके मुक्के उनके कानों तक उठे हुए थे, उनकी कोहनियां उनके कंधों तक उठी थीं—वो निन्जा की पारंपरिक मुद्रा में थे। वृद्ध ग्रैंडमास्टर ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो एक बूढ़ा शेर जंगली कुत्तों के झुंड में घिर गया हो। मठाधीश उस समय छिपकर नहीं बैठ सकते थे, जब उनका प्यारा परपोता खतरनाक सेना से लड़ रहा हो। महान और निडर द्वारका शास्त्री ने बाहर जाने का निर्णय लिया था और अपने चमकदार त्रिशूल से जो मदद वो कर सकते थे।

बदकिस्मती से, 108 वर्षीय वृद्ध महातांत्रिक का मुकाबला दुनिया के सबसे दक्ष व्यवसायी हत्यारों के साथ था।

पलक झपकते ही उनकी प्रशिक्षित तलवारें मठाधीश के टुकड़े कर देने वाली थीं।

॥卐॥

देवता उन पर किसी टूटते पहाड़ की तरह गिरा। निन्जाओं को पता नहीं चल पाया था कि किसने उन पर ऊपर से इतना तेज प्रहार किया था, जब तक उन्होंने विद्युत को आगे घास भरे मैदान पर लुढ़कते हुए नहीं देखा, वो रुककर उन्हें ऐसे देख रहा था, जैसे चीता अपने शिकार को घूरता है। विद्युत ने पहली मंजिल के बरामदे से, पूरी ताकत से अपने दुश्मन पर छलांग लगाई थी। उसकी ईमानदार आंखें अब क्रोध और नफरत से चमक रही थीं। जो भी विद्युत के प्यारे परदादा को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता था, वो तुरंत ही उसका सबसे बड़ा दुश्मन बन जाता था।

और जो भी देवता के क्रोध का भागी होने की गलती करता—वो बड़ा बदकिस्मत साबित होता।

भयंकर रूप से बदकिस्मत।

छह निन्जा विद्युत पर हमला करने के लिए आगे बढ़े, जबकि सातवें ने अपनी तलवार मठाधीश की तरफ बढ़ाई। इस पकी उम्र में होने के बावजूद भी महान द्वारका शास्त्री ने अपने त्रिशूल की मदद से उसकी तलवार को रोक दिया, दोनों हथियारों के आपस में रगड़ने पर तेज आवाज आई। जैसे ही विद्युत उन आधे दर्जन निन्जाओं पर हमले के लिए तैयार हुआ, तभी एक तेज रौशनी के साथ

हेलीकॉप्टर के पंखों की आवाज सुनाई दी, और पूरा देव-खंड सुनहरे प्रकाश से जगमगा उठा।

देव-राक्षस मठ के ऊपर लटके, उस विशाल रजत पक्षी से एक मैटल की रस्सी लटकी और उस पर से सफ़ेद चेहरे वाला काला शैतान उतरने लगा।

उसकी हरी आंखें जिस चीज पर भी पड़तीं उसे लगभग जला देतीं, मास्केरा बिआंका देव-राक्षस मठ के बड़े से मैदान पर उतरा।

·||卐||·

मास्क ने अपने हाथ उठाकर, अपने काले नाइट्स को अलग हटने को कहा। वो बागीचे के केंद्र की तरफ बढ़ा और विद्युत से लगभग दस मीटर की दूरी पर खड़ा हो गया। नैना और बलवंत भी हेलीकॉप्टर की तेज आवाज को सुनकर दौड़े आए थे।

'तुम वास्तव में असाधारण हो, विद्युत... बिग मैन सही कहता था!' मास्क चिल्लाया, जब उसका सिकोर्स्की पक्षी मठ से उड़कर, काशी के रात्रि आकाश में खो गया।

मास्क ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

'मैंने सुना था कि कैसे तुमने अकेले ही दस प्रशिक्षित रूसी हत्यारों को पराजित कर दिया था, लेकिन मैंने उम्मीद नहीं की थी कि तुम निन्जाओं को भी पटक...'

'वो बारह थे।'

मास्केरा दुविधा में था।

'क्षमा करना, क्या?'

'वो बारह थे, किराये के हत्यारे... दस नहीं,' विद्युत ने विरोध स्वरुप कहा, एक बार फिर हरी आंखों वाले दानव की आंखों में निडरता से देखते हुए।

मास्क हंसा, और बाकी के निन्जा भी उस क्षेत्र में आ गए। लगभग उसी समय मठ के बहुत से योद्धा-पुजारी भी लड़ाई के केंद्र में जुट आए।

'तुम्हारे पास अभी भी समय है, विद्युत। मुझे बता दो कि वो तुम्हारा सर्वशक्तिमान कल्कि कहां मिलेगा। बस इतना ही करना है, मेरे मित्र। और मैं तुम्हें जाने दूंगा। मैं इस वृद्ध को भी जाने दूंगा। और मैं तुम्हारी उस सुंदर जीवनसाथी को भी छोड़ दूंगा। लेकिन अगर तुमने ऐसे ही जिद ठानकर रखी, तो मैं यह समस्त परिसर जला दूंगा, और आज रात इस आश्रम में सबको जिंदा जला दूंगा।'

विद्युत ने नफरत से अपनी मुट्ठी भींची।

'उन सबको जाने दो, मास्केरा। तुम्हारे ब्लैक नाइट्स, मेरे योद्धा-संत... सबको। इस मसले को हम दोनों के बीच निबटाते हैं। तुम और मैं। यहां और अभी।'

मास्केरा का चेहरा बदल गया। विद्युत को अपनी आंखों पर यकीन नहीं हुआ। ऐसा लगा मानो इटैलियन डॉन की आंखों का सारा रंग उतर गया था... वो झक सफेद हो गई थीं।

सफेद आंखों वाले शैतान ने विद्युत को घेरे खड़े निन्जाओं को देखा, और अपना सिर हिला दिया। तुरंत ही विद्युत को अपने कंधे पर एक जोरदार प्रहार का अहसास हुआ। जैसे ही विद्युत उस कायर को देखने के लिए मुड़ा, जिसने उस पर पीछे से हमला किया था, उसकी जांघ पर तलवार का एक और वार हुआ। इस खुले हुए घाव के बावजूद, विद्युत ने जिउ जित्सू के सधे हुए वार से एक तलवारबाज की ठुड्डी पर लात से प्रहार किया। देवता के तेज वार से वो आदमी घूमकर, पांच फीट की दूरी पर जाकर गिरा। लेकिन कायरों की तरह बिना बताए किए गए हमले ने देवता को दर्दभरा सदमा दिया था। असहनीय दर्द और हवा में उड़ते अपने ही रक्त के बीच, विद्युत को एक आवाज सुनाई दी। वो जानता था कि यह आवाज किसकी थी।

'तुम मूर्ख हो, ओ देवता!' मास्केरा बिआंका ने कहा। 'तुम उनसे लड़ रहे हो, जिन्हें तुम पराजित नहीं कर सकते। तुम अपने भ्रामक ढिटाई द्वारा मुझसे नजरें मिला रहे थे, मुझे यह दिखाने के लिए कि तुम निडर हो। क्या तुम नहीं जानते, गुस्ताख लड़के...?

कि मृत्यु भी वाइट मास्क से भय खाती हैं!!

विद्युत पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि वो कहां थे, लेकिन इस बीच उस पर जापानी चाकुओं के और वार हो चुके थे। तलवार और मुक्कों के वार के बीच विद्युत होश में रह पाने के लिए काफी संघर्ष कर रहा था, और वो अपनी बांहें फैलाकर वृद्ध तक जाने का असफल प्रयास कर रहा था। फुसफुसाते हुए उसके होंठों से सिर्फ एक ही शब्द निकल पाया।

'बाबा........ अआह!'

वाइट मास्क अब ठीक मठाधीश के पीछे खड़ा था।

उसकी आंखें मौत की तरह सर्द थीं।

विनाशकारी प्रलय, 1698 ईसापूर्व
लोक-नास!

विशाल नौका अब खतरनाक तरीके से झुक रही थी, और वो विकराल लहरों के साथ संतुलन नहीं बिठा पा रही थी। स्थूलकाय नौका का भार किसी पर्वत से भी अधिक था, और वो तैरता हुआ नगर अब डूबने की कगार पर था।

जहाज के विशालकाय ढांचे पर दैत्याकार लहरों से इतना बल पड़ रहा था, मानो करोड़ों व्हेल मछलियां उसे सरका रही हों। बरसात और ओलावृष्टि इतनी जबरदस्त थी कि नौका के विभिन्न तलों पर बहुत पानी भर गया था। हजारों आदमी और औरत लगातार प्रयास करके पानी को बाहर निकालने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन कोई फायदा नहीं हो रहा था। तूफानी बरसात के संयुक्त प्रहार से वो लहरें अब नौका को डुबाने ही वाली थीं।

अब कुछ ही पलों की बात लग रही थी, और विशाल नौका पर सब घबराने लगे। बच्चों को थामे मांएं, विष्णु से अथक रूप से प्रार्थना कर रही थीं, उनसे आकर बचाने की विनती कर रही थीं। पक्षियों और पशुओं की हजारों प्रजातियां अब संयुक्त रूप से हिनहिना, दहाड़, कराह, चीख और चिंघाड़ रहे थे। कैद किए हुए दैत्य कांसों की सलाखों पर अपने हाथ, शरीर और सिर पटक रहे थे, जिनमें वो कैद थे। वो आजाद होने की विनती कर रहे थे, क्योंकि नौका पर बाढ़ आने की स्थिति में यह उनके लिए निश्चित रूप से मौत का शिकंजा बन जाता। रस्सियों से लटके हजारों पुरुष और महिलाएं पलटती नौका को थामने की कोशिश कर रहे थे, वो असंभव दुश्मन से लड़ते हुए, नौका का संतुलन वापस लाने का असफल प्रयास कर रहे थे। नौका के बहुत से बदकिस्मत निवासियों के पैर अब उखड़ने लगे थे और वो चिल्लाते हुए हजारों मीटर नीचे गिरकर तूफान के जबड़ों में समां रहे थे।

मनु का अंतिम प्रेक्षण स्थल भी बाढ़ की चपेट में आ गया था और वो डोंगी में बैठकर, मृत्यु से लड़ते हुए वापस नौका पर आ गया था। जब वो सांस रोके प्रतीक्षा कर रहा था, तब उसने विशाल लहरों को डूबती हुई काष्ठ नगरी की तरफ बढ़ते देखा।

विशालकाय समुद्री जीव का अस्तित्व वास्तव में है। वो किस्सों का पात्र भर नहीं है। और मत्स्य उसका स्वामी है!

मनु का ये अद्भुत भ्रम जल्द ही असाधारण वास्तविकता से टूट गया।

वो शायद दसियों हजार थे। मत्स्य की त्वचा वाले, चमकते कपड़े पहने हुए, वो सब एक ही ताल से आगे बढ़ रहे थे। सत्यव्रत मनु, सतरूपा, ध्रुव, प्रचंड और बाकी नौकावासी उस तैरते नगर को विशाल नौका के पास आता देख स्तब्ध रह गए।

मत्स्य प्रजाति के लोग पानी के अंदर से, लताओं इत्यादि के माध्यम से जुड़ी, छोटी नौकाओं पर सवारी कर रहे थे। यह समूह कुछेक मील तक फैला हुआ था। हल्की डोंगियों में मकड़ी के जाल की संरचना के रूप में, बड़ा सा क्षेत्रफल घेरे ये बस्ती वास्तव में डूब नहीं सकती थी। उन सबने मत्स्य और सांप की त्वचा वाले कपड़े पहन रखे थे, जो चमकती बिजली के बीच मीलों दूर से दिख जाते थे। मत्स्य प्रजाति के इस कबीले का नेतृत्व स्वयं मछली की नौका कर रही थी। एक चौड़ा-सा फट्टा, जिसके दोनों तरफ सैकड़ों चप्पू लगे थे, इसके सामने के दोनों किनारे पर, दो बड़ी, गोलाकार चमकती हुई ढाल लगी थीं। समुद्री-युद्ध के दौरान सूरज या चमकती बिजली के प्रकाश से आंखें चुंधिया देने वाली ये विशाल ढाल किसी विकराल सांप की आंखों के समान लग रही थीं!

इसी तरह उस दैत्याकार समुद्री-दानव की कहानियां प्रचलित हुई थीं। मत्स्य प्रजाति के हजारों लोगों की चमकती हुई मत्स्य समान त्वचा, उनकी अभ्यस्त, एक क्रम से चली हुई चाल उन्हें संयुक्त रूप से एक सांप दिखाती है, और सामने लगी दो चमकती ढाल उसकी दो आंखें— वास्तव में लोक-नास कोई जलजंतु नहीं था। वो तो मत्स्य-प्रजाति की तैरती हुई नगरी थी!

ऐसा लगा मानो मत्स्य-प्रजाति की कश्तियों से बहुत से फंदे और मत्स्य बरछी निकलीं। फेंकी गई अनगिनत वस्तुएं, विशाल नौका की अकल्पनीय लंबाई में पूरी तरफ नौका के निचले तल की खिड़कियों और बाढ़ में आकर अटक गईं। अद्भुत नील-वर्णी और उसके अनुयायियों की समुद्र पर सत्ता और दक्षता अब मनु और उसके आदमियों के सामने स्पष्ट थी। नौका में अटके फंदों और बर्छियों के माध्यम से, अब तैरती बस्ती के वासी नौका की रस्सी को उसके झुकाव से दूसरी तरफ खींच रहे थे।

मत्स्य-प्रजाति का प्रत्येक सदस्य सटीक समय के साथ, पूरे बल से अपने चप्पू चला रहा था। कश्तियों की एक जटिल और गूढ़ श्रृंखला चप्पू चलाने वालों के लिए सहायक का काम कर रही थी। नाविकों ने सावधानी से, तेज हवा को विशाल नौका के पक्ष में इस्तेमाल किया।

वो धीरे-धीरे अपना प्रभाव दिखाने लगे। दसियों हजार भुजाओं और सैकड़ों नाविकों की दक्षता ने उस पहाड़ को भी पानी पर चला दिया था।

विशाल नौका धीरे-धीरे सरकी, और फिर उसने उन मीलों ऊंची लहरों के मध्य अपना सुरक्षित संतुलन हासिल कर लिया।

विष्णु ने उनकी प्रार्थनाओं का जवाब दे दिया था।

मानवजाति इस प्रलय से बच जाने वाली थी!

बनारस, 2017
‘बाबा.......!’

‘हम फिर मिलेंगे, विद्युत, मेरे बच्चे... हम दोबारा किसी और जन्म में मिलेंगे...’ द्वारका शास्त्री ने हांफते हुए कहा, जब मास्केरा बिआंका ने अपने पसंदीदा हथियार से मठाधीश के पेट को चीर दिया था।

अब तक विद्युत अपने घुटनों पर ढह गया था, और उसके शरीर पर लगे कई गहरे घावों से रक्त बह रहा था, उसकी बंद होती आंखों के सामने या तो अंधेरा छा रहा था या वो अपने सामने हो रही हिंसा का सपना देख रहा था। उसके मुंह से काफी सारा रक्त निकला और गहन संताप से पसीने में भीग गया।

‘बाबा...’ होश में रहने का संघर्ष करते हुए, वो फिर से फुसफुसाया।

लेकिन तेज दर्द से तड़पते हुए भी, उसने वो तेज, भयानक आवाज सुनी... ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो वो किसी और दुनिया से आ रही थी।

रक्त-धारा का अभिशाप!

जिस तरह से, इस अभागी रात में, तुमने दिव्य मुनियों को एक-एक कर जलता देखा, नियति भी तुम्हारे वंश को ऐसी ही हिंसा में ख़त्म होते देखेगी। पुत्र दर पुत्र, पीढ़ी दर पीढ़ी।

मैं तुम्हें और तुम्हारे समग्र वंश को अभिशाप देती हूं, ओ पतित देवता...

वाइट मास्क के दूसरे वार ने द्वारका शास्त्री का दिल चीर दिया, लंबे पेचकस का लाल रंग का हत्था वृद्ध के सीने में यूं घुपा हुआ था, मानो सूली पर चढ़ाने के लिए कील ठोकी गई ही। महान मठाधीश के मुंह से तब रक्त का फव्वारा फूट गया, जब वो अपने इष्ट से मिलने के लिए अंतिम बार प्रार्थना कर रहे थे। इस अंतिम समय में, वह गर्वित और संतुष्ट व्यक्ति थे। काशी के इस महातांत्रिक ने अपनी दिव्य नियति पूर्ण की थी।

अपने इस अंतिम पल में, देव-राक्षस मठ के वृद्ध मठाधीश को भी रक्त-धारा की वो हिंसक भविष्यवाणी सुनाई दे रही थी, जिसे स्वीकृत करने के लिए उन्होंने समर्पण में अपनी आंखें बंद कर लीं।

तुम्हारे वंश का प्रत्येक पुत्र उसी हिंसक मौत मरेगा, जो आज भयानक रात में तुमने देखी है!

मैं तुम्हें अभिशाप देता हूं! और तुम्हारे समग्र वंश को!

यह अभिशाप समय के अंत तक रहेगा!'

'मैं आपको बचा लूंगा, बाबा...' विद्युत अपनी आखरी ताकत और दृढ़ता का आह्वान करते हुए बुदबुदाया। उसकी जगह कोई और मनुष्य तो अब तक दर्द के सामने घुटने टेक चुका होता। लेकिन विद्युत सिर्फ मनुष्य नहीं था। वह देवता था!

वापस पैरों पर खड़े होने का संघर्ष करते हुए उसने अपने हाथों से, अपने चेहरे से रक्त पोंछा। लेकिन उसने बहुत देर कर दी थी। जब उसने अपनी आंखें खोलीं, और देखा कि वास्तव में क्या हो रहा था, तो तब तक भव्य द्वारका शास्त्री के जीवन का अंत आ गया था। विद्युत की आंखों के सामने ही, उसके प्रिय परदादा का शरीर मास्केरा के घातक पेचकस से गुदा पड़ा था।

प्राचीन अभिशाप को सत्य करते हुए, शास्त्री वंश के एक और पुत्र का हिंसक और क्रूर अंत हो चुका था।

'नहीं........!' विद्युत चिल्लाया, वो उस आतंक का ताप नहीं सह पा रहा था!

बेरहम मास्क की आंखें अब पूरी तरह सफ़ेद हो चुकी थीं। उसने ग्रैंडमास्टर का क्षत-विक्षत शरीर फेंका और विद्युत को देख हिंसक तरीके से मुस्कुराया, उसे

आपस की लड़ाई के लिए आमंत्रित करते हुए।

·|卐|·

रक्तरंजित रात के अंधेरे में बेरेटा से निकले शॉट की आवाज सुनाई दी।

अपने प्रिय मठाधीश के अमानवीय वध से आहत हो, बलवंत और नैना अब अपना क्रोध रोक नहीं पा रहे थे। अच्छाई और बुराई, सही और गलत के ख्याल को त्यागते हुए उन्होंने अपनी खतरनाक बंदूक से निन्जाओं पर गोली चलानी शुरू कर दी। बलवंत ने मास्केरा बिआंका पर भी निशाना साध लिया था, मास्क उस घातक वार से बच निकला। बलवंत की गोली ने शैतान की जांघ को निशाना बना लिया था। हालांकि इस घाव से मास्क मरने नहीं वाला था, लेकिन यह उसे युगल युद्ध में जरूर सीमित कर देता।

और यह अंतर भी गंभीर रूप से घायल हुए, विद्युत के लिए बदले का अच्छा अवसर था।

विद्युत अब क्रोध का मूर्त रूप था। इस घायल अवस्था में भी वो मास्केरा पर लपका। मास्क ने एक जोरदार मुक्के से विद्युत का स्वागत किया, जो सीधे देवता के जबड़े पर लगा। विद्युत की ठोड़ी फट गई और तुरंत ही एक रक्त बहता घाव नजर आया। सफेद-आंखों वाले दानव का मुक्का कठोर था। लेकिन मास्क को अविश्वास में डालते हुए, विद्युत अब भी उसकी तरफ बढ़ रहा था। बिना एक पल भी झिझके।

अब विद्युत की बारी थी। उसने अपनी बंधी मुट्ठी इतालवी डॉन के पेट में मार दी। वार इतना जोरदार था कि मास्क भी वेदना से खांसने लगा। विद्युत ने फिर से वार किया, इस बार अपने घुटने से, और मास्केरा की पसलियों में वार किया। मास्क की हड्डियां चरमराई और वो कल्पना से परे के उस वार से जमीन पर ढह गया।

लेकिन वह भी शैतान का दूत था। वो इतनी आसानी से हार नहीं मानने वाला था।

अगले ही पल, मास्केरा बिआंका उठा, और अब वो पहले से भी ज्यादा डरावना नजर आ रहा था। उसकी त्योरियां अजीब तरीके से चढ़ी हुई थीं। उसके दाहिने हाथ में उसका घातक हथियार था।

पेचकस जो अभी भी शास्त्री जी के रक्त से सना हुआ था।

मास्केरा बिआंका देख सकता था कि विद्युत का रक्त तेजी से बह रहा था। पहले जब वो मठ में आया था, तो वो देवता को मारना नहीं चाहता था। लेकिन विद्युत तो उससे भी बड़ी चुनौती साबित हो रहा था, जितना की शैतान के दूत ने सोचा था। देवता के मुक्के के वार से तड़पते हुए, मास्क अब अपना उद्देश्य भुला बैठा था। गुस्से में वो भूल बैठा था कि विद्युत का जीवन ऑर्डर के लिए कितना महत्वपूर्ण था। लेकिन इससे भी अधिक, वो देवता की आंखों में रक्त की प्यास देख पा रहा था।

मास्क ने जल्दी से परिणाम निकाल लिया था। या तो वो आज देवता को मार देगा। या विद्युत आज उसे मठ से जीवित बाहर नहीं जाने देगा।

‘भाड़ में जाए अवतार, विद्युत... तुम आज मेरे हाथों से मरोगे, अपने बूढ़े दादा की सड़ी हुई लाश के पास ही!’ वाइट मास्क फुफकारा।

इन्हीं शब्दों के साथ, दानव आगे बढ़ा और विद्युत के चेहरे पर एक जोरदार लात मारी। प्रहार घातक था। देवता ज्यादा देर तक खड़ा नहीं रह सकता था और वो बेहोश होते हुए जमीन पर गिरने लगा।

मास्क ने अब विद्युत पर छलांग लगाकर उसे नीचे गिरा लिया। दानव ने अपनी बाईं बांह देवता के गले में फंसा ली, धीरे-धीरे उसका दम घोंटते हुए। उसके सीधे हाथ में उसका पसंदीदा हथियार था, पेचकस, घोंपे जाने के लिए तैयार। उसने हथियार को विद्युत की पुतली से लगभग छुआ दिया और फुफकारा। उसका चेहरा देवता के चेहरे से महज एक इंच दूर था।

‘मूर्ख, मुझे कल्कि का जन्म-स्थान बता दो... और मैं तुम्हें आराम से मार दूंगा। अगर तुमने अब भी जिद नहीं छोड़ी, तो मैं तुम्हें तुम्हारे दादा से भी अधिक दर्दनाक मौत मारूंगा.. और यहां उपस्थित हर व्यक्ति को मार डा...’

इससे पहले की शैतान अपनी धमकी पूरी कर पाता. विद्युत ने उसे टोका।

‘मैंने तुमसे कहा था न मास्केरा, बनारस से चले जाओ।’

इसके बाद जो नैना, बलवंत, निन्जा और मठ के योद्धाओं ने देखा, वो उसे कभी भुला नहीं पाएंगे।

मास्केरा बिआंका यूं चिल्लाया मानो किसी अजगर को तीर लग गया हो, उसका सिर पीछे की तरफ मुड़ गया और उसके गले की नसें फटने को तैयार थीं। असहनीय दर्द की वजह से उसके मुंह से जीभ बाहर निकल आई थी, और उसकी भयानक आंखों में रंग चढ़ने लगा था। दानव के पेट को चीरता हुआ, देवता का पंजा मास्केरा की कमर से निकला।

‘आआअररररगग्गह्ह्ह्ह...!’ देवता चिल्लाया, जब उसने अपना हाथ दानव के पेट में घुसाया, अपने प्रिय बाबा के रक्तरंजित शरीर को याद करते हुए।

विद्युत ने मास्क के शरीर को क्रूरता से फाड़ दिया। जब उसकी रक्त से सनी उंगलियां और बांह दानव की पीठ से निकलीं, तो उन पर एक प्राचीन हथियार, जिसका इस्तेमाल मल्लयुद्ध में किया जाता था।

बाघ-नख !

ये वही तांबे के नाखून थे, जिनका इस्तेमाल मनु पुजारी ने शैतान रंगा को हराने के लिए किया था। इन्हीं नखों का इस्तेमाल मार्कंडेय शास्त्री ने मध्ययुगीन गोवा में, पुर्तगाली हत्यारे अगोस्तिन्हो को मारने के लिए किया था।

बाघ-नख अपने योग्य परपोते को दिया द्वारका शास्त्री का अंतिम उपहार था। इसी वजह से विद्युत ने बलवंत की दी बेरेटा पिस्तौल को मना किया था।

‘आआअररररगग्गह्ह्ह्ह...!’

‘यआआअररररगग्गह्ह्ह्ह...!’

‘बाबा........!’

अपनी भुजा अभी भी शैतान के शरीर में घुसाए हुए, विद्युत अपने बाबा का नाम लेकर चिल्ला रहा था।

विनाशकारी प्रलय, 1698 ईसापूर्व
विद्युत

'जब हम पहली बार मिले थे, मैंने तुम्हें बताया था... पानी की वो बूंदें... ऋण रहेंगी मुझ पर, सत्यव्रत!'

मत्स्य हंसा जब मनु ने दौड़कर उसे कसकर गले लगा लिया। नील-वर्णी ने भी सूर्य-पुत्र को गले लगा लिया। यह कहना मुश्किल था कि किसने किसको अधिक याद किया था। क्या मनुष्य ने अपने ईश्वर को याद किया था? या ईश्वर ने अपने नश्वर भक्त को?

'तुम मुझे छोड़कर क्यों चले गए थे, मत्स्य? क्यों?!' मनु ने जोर दिया, वो मत्स्य-प्रजाति के नेता को छोड़ने के लिए ही तैयार नहीं था।

'मैंने तुम्हें कभी नहीं छोड़ा, मनु। एक पल के लिए भी नहीं। तुम्हारे बिना मेरा अस्तित्व ही क्या, मेरे मित्र, मेरे भाई? मैं तुम्हें देख रहा था। जब तुम अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना नगर खाली करा रहे थे, मैं वहीं था। जब तुम इस अनश्वर नौका का निर्माण करा रहे थे, ऐसी नौका जिसका निर्माण ईश्वर के लिए भी

असंभव था, मैं वहीं था। जब तुमने नर-मुंड का वध किया, मैं वहीं था, मनु। मैं हमेशा तुम्हारे साथ था।'

'तो आपने मुझे स्वयं को दिखाया क्यों नहीं, ओ दिव्य मत्स्य? आपने मुझे अपने दर्शन का आशीर्वाद क्यों नहीं दिया, प्रभु?'

'प्रभु? मैं देख रहा हूं कि तुम बड़े-बड़े शब्द इस्तेमाल करने लगे हो, श्री सत्यव्रत मनु? क्या तुम्हारे जीवन में जो लड़की है, वो ये बदलाव लेकर आई है? ओ ताकतवर योद्धा, क्या तुम अब पिघलने लगे हो?' मत्स्य ने परिहास किया।

'तो मेरे जीवन में आई उस लड़की की डांट खाने के लिए तैयार हो जाओ, श्री मत्स्य। वो भी आपसे उतनी ही नाराज है, जितना मैं,' मनु ने जवाब दिया।

'हम्म... ये तो मुझे प्रलय की भीषण लहरों से भी अधिक खतरनाक लग रहा है!' नीले व्यक्ति ने कहा।

दो दोस्त, प्रभु और उनका भक्त, भगवान का अवतार और मनुष्यों का नायक, किन्हीं पुराने मित्रों की तरह खिलखिला रहे थे।

'क्रूर रंगा, मैसोपोटामिया के तीन काले जादूगर, अप, शा, गुन, सुंदर किंतु अधम प्रियम्वदा, राक्षस-राजा सुरा और नर-मुंड भी... इनमें से कोई भी इतना बुरा नहीं था, जितना बुरा समय अब इस धरती पर आने वाला है, मनु। हम काली के युग में प्रवेश कर रहे हैं, जहां दुनिया हिंसा, पतन, छल, धोखे, मृत्यु और विनाश के कोलाहल से भर जाएगी। बेशक तुम मानवजाति को बचाकर एक नए सवेरे में लेकर जा रहे हो। लेकिन प्रलय के दूसरी तरफ, जो दुनिया तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है, एक-दूसरे के विरुद्ध युद्ध छेड़ेगी, प्रकृति मां के विरुद्ध हो, जंगलों को तबाह करेगी, नदियों को सुखाएगी, आसमान में जहर मिलाएगी और जहर के हथियार बनाएगी। नर-मुंड एक समय पर एक आदमी को मारता था... और वो भी अपना और अपने कबीले के अस्तित्व के लिए। लेकिन कलयुग में इंसान एक ही बार में हजारों औरतों, बच्चों, मासूमों को मौत के घाट उतार देगा... बस किसी की सिंहासन की लालसा पूरी करने के लिए।'

वो नौका के ऊपरी तल पर खड़े थे, और मत्स्य-प्रजाति की बनाई विशेष मदिरा पी रहे थे। मत्स्य विशेष रूप से इसे अपने मित्र के लिए लेकर आया था। तारा भी उनके साथ थी। कुछ दिन गुजर गए थे और वो उन्मत्त तूफान शांत होने लगा था, बरसात अभी भी लगातार हो रही थी, लेकिन वो भी उतनी हिंसक नहीं थी। नौका के नेता ये जानते थे कि उन्हें अभी भी बड़ी चुनौतियों का सामना करना था। लेकिन उन सबको उम्मीद थी कि सबसे बदतर समय अब ख़त्म हो चुका था।

'हमारे लिए आपका क्या आदेश है, मत्स्य? ऐसे काले समय को रोकने के लिए मैं और तारा क्या कर सकते हैं?' मनु ने पूछा।

मत्स्य मुस्कुराकर मनु और तारा की तरफ मुड़ा, और अपनी कमर तल की बाड़ से टिका ली। उसके चेहरे पर हल्की फुहार पड़ रही थी। जब उसने अपनी सीप से घूंट भरा, तो वो अवर्णनीय रूप से अद्भुत लग रहा था।

'तुम्हारे कंधे पर बहुत-सी जिम्मेदारियां हैं, तुम दोनों के कंधों पर,' मत्स्य ने कहा। 'तुम्हारे बच्चे और उनके बच्चे मानवजाति की अंतिम किरण का प्रतिनिधित्व करेंगे।'

अपनी मदिरा का घूंट भरते हुए, सतरूपा शरमाई।

'आपसे किसने कह दिया, मत्स्य कि मैं इस बुद्धू से शादी करूंगी, बच्चे तो दूर की बात है?' उसने शरारत से मनु पर व्यंग्य किया।

मसीहाओं का मसीहा ख़ुशी से हंसा, सतरूपा और मनु की इस शरारत का आनंद लेते हुए।

'मैं भी मानता हूं, इस अधीर इंसान से शादी मत करो, तारा,' मत्स्य ने कहा। 'ये कुछ अधिक ही गंभीर है न?'

वो तीनों एक-दूसरे के साथ ऐसे हंस रहे थे, जैसे सबसे विश्वसनीय मित्र हंसते हैं। मत्स्य और तारा, दोनों जानते थे कि तारा मनु को इतना प्यार करती थी, जिसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता था।

‘सत्यव्रत, रत्न-मारू की सुरक्षा करना। अपने वंश की सुरक्षा में इसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपते रहना। यह ब्रह्मांडीय हथियार भगवान विष्णु के अंतिम अवतार के हाथों में पहुंचेगा, जब वो बुराई को समाप्त करने के लिए धरती पर जन्म लेंगे। तुम और तुम्हारे वंशज इसकी तब तक सुरक्षा करेंगे, जब तक कलयुग के चरम में कल्कि अवतार धरती पर जन्म नहीं ले लेंगे।’

तारा और मनु ने एक-दूसरे को देखा। कल्कि के नाम से ही उन्हें कुछ हुआ था।

‘जैसा आप कहें, मत्स्य। इस दिव्य तलवार की सुरक्षा में हम कोई कमी नहीं छोड़ेंगे। क्या मानवजाति को उसके काले भविष्य से बचाने में हम कुछ कर सकते हैं?’

मत्स्य ने सिर हिलाकर उन विकराल लहरों को देखा, जिनसे नौका जूझ रही थी।

‘तुम इसे नहीं बदल सकते, मनु। लेकिन मुझे गलत मत समझना। लेकिन कई मायनों में प्रलय के बाद की यह दुनिया मानवजाति के लिए एक सुनहरा युग भी होगी। उसी युग में मनुष्य आकाश को जीतकर, उसमें पक्षी के समान उड़ सकेगा। तब इंसान सागर का सीना चीर उसकी गहराई में जाएगा, और पानी में चलने वाले रथ बनाएगा। धन और बुद्धि की कोई सीमा नहीं होगी और विज्ञान वो हासिल कर लेगा, जिसकी आज कल्पना तक नहीं की जा सकती। मनुष्य ऊंची छलांग लगाएगा, यहां तक कि वो चांद और मंगल तक को छू लेगा। और जब संपन्नता और ज्ञान, गरीबी और हिंसा, बीमारी और तरक्की अपने चरम पर होंगे... तब हड़प्पा का सूर्य, महान विवास्वन पुजारी दोबारा जन्म लेगा। तुम्हारे वंशज के रूप में, मनु।

वो तुम्हारे वंश में सबसे महानतम होगा।’

·||卐||·

‘काले मंदिर का जो पत्र तुमने दोबारा से हड़प्पा की लिपि में लिख दिया है, मनु, वो कलयुग का सबसे बड़ा रहस्य होगा। इसे सुरक्षित रखना। काले मंदिर बनवाना और इस बहुमूल्य पत्र की रक्षा करना। क्या तुम जानते हो जब प्रलय ने समस्त ज्ञात आर्यवर्त और उसके परे भी सबको निगल लिया है, तब भी एक पवित्र नगरी है, जिसे प्रलय छू तक नहीं पाई है?’

‘छू नहीं पाई है? मुझे तो लगा था कि प्रलय ने समस्त धरती को निगल लिया है!’

मत्स्य फिर से हंसा और फिर कुछ पल शांत रहकर, अपनी आंखें बंद कर लीं। ऐसा लग रहा था कि अगले शब्द बोलने से पहले वो किसी की आराधना कर रहा था।

‘उस नगर को कौन डूबा सकता है, जो शिव के त्रिशूल पर स्थित है, मनु? काशी को कौन डूबा सकता है? विनाशकारी प्रलय के उतरने के बाद वहां जाना। आज से हजारों साल बाद, उसी काशी नगर में तुम्हारे महान पूर्वज, तुम्हारे भव्य पिता का पुनर्जन्म होगा, जो काले मंदिर के रहस्य को उद्घाटित कर, कल्कि का दुनिया में स्वागत करेंगे। वो ही कल्कि की तेरह वर्ष के होने तक सुरक्षा करेंगे और उन्हें रत्न-मारू सौंप देंगे। उसी दिव्य कार्य के लिए उस तेजस्वी देवता को इस धरती पर भेजा जाएगा।’

वहां कुछ पल के लिए ख़ामोशी रही। फिर तारा मत्स्य की तरफ मुड़ी और उससे वो पूछा जो उसके मन में चल रहा था।

‘हमारे इस महान वंशज के बारे में हमें कुछ बताओ, मत्स्य। जो कलयुग में, काशी में रहस्य पर से पर्दा हटाएगा। वो दिखने में कैसा होगा?’

मत्स्य मुस्कुराया और अपने पात्र से बची हुई मदिरा ख़त्म की। लड़कपन में उसने खाली सीपी को समुद्र में उछाल दिया, तारा को बेचैन करते हुए। नौका पर प्रत्येक चम्मच को गिना जाता था।

‘मैं क्या कह सकता हूं, तारा? वो असाधारण होगा। वो बाकी मनुष्यों में हीरे के समान होगा। एक योद्धा, एक योगी, एक प्रेमी, एक मोहक और एक नेता। वह आधा-मनुष्य, आधा-भगवान होगा!’

एक पल रुककर, मत्स्य ने अपने वर्णन में और कुछ जोड़ा।

‘तुम कह सकती हो बिजली की सी ताकत वाला होगा।

वह विद्युत होगा।’

बनारस, 2017
विद्युत

राख पवित्र जल की सतह पर तैर गई। यह तेजस्वी द्वारका शास्त्री का नियोज्य अंत था, जब उनकी आत्मा किसी दूसरे जीवन में प्रवेश कर गई। वह त्रयंबकेश्वर, प्रभु शिव की नगरी में मृत्यु को प्राप्त हुए थे। ऐसा माना गया है कि काशी में मृत्यु प्राप्त करने वालों के कानों में स्वयं शिव निर्वाण का मंत्र फूंकते थे।

विद्युत ने अपने बाबा के अवशेषों के अंतिम कण तक का पवित्र गंगा में घुल जाने की प्रतीक्षा की।

पुरोहित जी और देव-राक्षस मठ के दूसरे सहयोगियों के मार्गदर्शन में, उसने महान मठाधीश का अंतिम संस्कार किया था। छोटी-छोटी बातों को याद कर उसका दिल फूट-फूटकर रो रहा था। उसके धुंधले से बचपन में महातांत्रिक विशाल रूप से खड़े थे। उसे मठाधीश की पहली याद उसी पल की थी, जब वो दो दशक बाद मठ में आया था। उसे याद आ रहा था कि किस तरह उसके बाबा ने प्यार से उसे खाना खिलाया था। कैसे द्वारका शास्त्री मानते थे कि विद्युत ने ही उन्हें उस घातक मारकेश लग्न से बचाया था।

विद्युत गहरी उदासी में घिरता जा रहा था। बचपन में ही अपने माता-पिता को खो देने के बाद, पिछले दो दशकों में हुई यह उसकी सबसे बड़ी क्षति थी। उसके पास परिवार के नाम पर बस द्वारका शास्त्री ही तो बचे थे। उसे लगा मानो वो अचानक अनाथ हो गया था।

एक बार फिर से।

‘हमें अब चलना चाहिए, बेटा।’

काफी समय गुजर जाने के बाद, पुरोहित जी आए और देवता के कंधे को थपथपाया।

‘उन्हें शांति के इस क्षेत्र में रहने दो, विद्युत। जितना तुम शोकाकुल रहोगे, उतना ही इस दुनिया के पार जाना उनके लिए मुश्किल हो जाएगा।’

‘हां, पुरोहित जी... मैं समझता हूं,’ विद्युत ने जवाब दिया, और अपने बाबा के धुंधलाते अवशेषों से अंतिम बार हाथ जोड़कर विदा ली।

‘अब क्या, पुरोहित जी?’ विद्युत ने पूछा।

वे दशाश्वमेध घाट की सीढ़ियों पर बैठे थे, पवित्र गंगा से आती तेज हवा उनके चेहरे और बालों को सहला रही थी।

‘ऑर्डर पीछे हटने के लिए मजबूर हो जाएगा... कम से कम अभी के लिए तो, विद्युत। कुछ ही दिनों में, रोमी, त्रिजट और मास्केरा के खात्मे से तुमने उन्हें बहुत हानि पहुंचाई है। उन्हें दोबारा से समूह बनाने में समय लगेगा, और वो जरूर बनाएंगे। वे हमेशा ऐसे ही करते हैं। धैर्य का दामन वो कभी नहीं छोड़ते। लेकिन जब भी वो पलटवार करेंगे—तो वो अधिक कड़ा और पहले से कहीं अधिक हिंसात्मक होगा।’

सोनू उनके लिए मसालेदार आम पन्ना ले आया था।

‘धन्यवाद, सोनू,’ कहते हुए विद्युत ने उस खट्टे-मीठे पेय का एक पात्र पुरोहित जी की तरफ बढ़ा दिया।

‘बाबा के बिना उन लोगों से लड़ पाना बहुत मुश्किल होगा, पुरोहित जी। अब हमारा नेतृत्व कौन करेगा?’

पुरोहित जी चेहरे पर हैरानी के भाव लिए हुए, विद्युत की तरफ मुड़े।

'हमारे नए मठाधीश हमारा नेतृत्व करेंगे, विद्युत। ताकतवर द्वारका शास्त्री का वंशज हमारा नेतृत्व करेगा।

तुम हमारा नेतृत्व करोगे, ओ देवता!'

'कल्कि केवल हिंदुओं के लिए नहीं आ रहे हैं। न ही वो केवल मुसलमानों या ईसाईयों के लिए आ रहे हैं। न ही सिखों या यहूदियों के लिए। वो समस्त मानवजाति के लिए आ रहे हैं! प्रभु विष्णु के नौवें अवतार, बुद्ध की तरह, जो सबके थे। इसी तरह कल्कि प्रत्येक पवित्र आत्मा की रक्षा करेंगे, प्रत्येक नेक मनुष्य और निर्दोष व्यक्ति की।'

विद्युत मन लगाकर पुरोहित जी की बात सुन रहा था। अपने बाबा के बाद, इसी श्रेष्ठ पुजारी पर देवता भरोसा करता था।

'खैर, अब तुम्हारी क्या योजना है, बेटा?' विषय बदलते हुए, देव-राक्षस मठ के बुद्धिमान पुरोहित ने पूछा। वह जानता था कि विद्युत को बहुत वेदना से गुजरना पड़ा था।

'हम्म... अभी कुछ पक्का नहीं पता है, पुरोहित जी,' देवता ने जवाब दिया। 'मैं वापस काम पर जाऊंगा और कुछ दिन अपनी कंपनी में दोबारा से चीजें व्यवस्थित करने में लगाऊंगा। इसके बाद, मैं वहां चला जाऊंगा जहां अवतार का जन्म हुआ है, और बाकी के साल उनकी देखभाल में बिताऊंगा, उनकी रक्षा करूंगा। हां, मैं एक शौक तो पूरा कर ही सकता हूं। मेरा ऑफिस मुझे एक सुपर-बाइक तो दे ही देगा। वह दुनिया की सबसे ताकतवर मोटरसाइकिल है। वो मेरी जरूरत को ध्यान में रखते हुए बनाई जाएगी। उसमें शानदार ड्यूल-डक्ट इंजन होगा, उसकी वजह से मेरा लोकल मैकेनिक बबलू उसे देव-दत्त या देव-दास करके कुछ बुलाता है! वह कभी भी ड्यूल-डक्ट नहीं कह पाया!'

पुरोहित जी ने मुस्कुराकर, सिर हिला दिया, और अपने आम पन्ने का मजा लेने लगे। फिर उन्होंने ऐसे ही पूछा।

'और दामिनी का क्या?'

विद्युत और दामिनी ने एक-दूसरे का हाथ थाम रखा था, पहले से कहीं अधिक मजबूती से। देवता की योजना सुनकर दामिनी परेशान थी। उसने अपना पूरा जीवन कल्कि की सुरक्षा में समर्पित करने का निर्णय ले लिया था, जब तक कि अवतार तेरह साल का नहीं हो जाता, और वो आगे भी ऐसा करने वाला था।

वह उसे इस खतरनाक और बलिदान भरी योजना से हटाने की भरसक कोशिश कर रही थी।

'तुम अपना काम करते हुए भी उनकी देखभाल कर सकते हो, विद्युत। तुम्हें बस अपनी कंपनी में सप्ताह में दो दिन देने की जरूरत है। तुम प्रभु की सुरक्षा के लिए एक टीम लगा सकते हों, जहां भी वो हैं, और बीच में जाकर उनसे मिल...'

'क्या तुम मुझसे शादी करोगी, दामिनी?'

'तुम समझ नहीं रहे हो, बेबी... वहां एक बेहतर...'

विद्युत के सवाल को समझकर वह रुकी।

'क्या........ तुमने अभी क्या कहा, विद्युत?' उसने पूछा, अपने मन में प्रार्थना करते हुए कि उसने सही सुना हो।

'प्लीज मुझसे शादी कर लो, दामिनी। मैं इस रास्ते पर तुम्हारे बिना नहीं चल सकता।'

दिल्ली की वो आकर्षक पत्रकार अपने आंसुओं को नहीं रोक पाई।

'हां...हां... एक हजार बार हां, विद्युत।

मैं तुमसे शादी करूंगी... तुम बुद्धू बच्चे!'

विद्युत देव राक्षस मठ में सबसे विदा ले रहा था। अपने देवता को जाता देख मठ के पुरुष, महिलाएं और बच्चे, सभी रो रहे थे। वो सब एक बात निश्चित रूप से जानते थे—विद्युत देव-राक्षस संप्रदाय का नया मठाधीश था।

अपने प्रियजनों जैसे बलवंत, सोनू और गोवर्धन से विदा लेने के बाद, देवता दुनिया की सबसे सुंदर लड़की के सामने आया।

'उफ्फ... तुम मेरे साथ ऐसा क्यों करती हो, नैनू?' उसने अपने सामने खड़ी सुंदर लड़की को छेड़ते हुए कहा।

'ओह, छोड़ो भी... मुझे पूरा यकीन है कि गुड़गांव पब की हर हसीना को देखकर तुम्हारा दिल धड़क जाता होगा, विद्युत,' उसने आंखें चढ़ाते हुए जवाब दिया।

वो उसे हद से अधिक प्यार करती थी। वो उसे आज भी उतना ही चाहती थी, जितना पहले।

विद्युत हंसा। लेकिन कुछ ही पल में वो गंभीर भी हो गया, जब उसने देखा कि नैना की आंखें उसके साथ नहीं हंस रही थीं।

'बस इतना जान लो, नैना, तुम वो लड़की थीं जिससे मैं प्यार करते-करते रह गया... जबकि मुझे नहीं करना चाहिए था।'

नैना ने उसे उदासीन मुस्कान से देखा, उसी तरह जब सुंदर लड़कियां अपनी नकली नाराजगी दिखाने के लिए करती हैं। लेकिन तभी उसे अहसास हुआ कि आज शायद वो उसे आखरी बार देख रही थी, वैसे ही जैसे बहुत पहले कभी देखा था।

'बस ये जान लो, विद्युत... मैं तुमसे प्यार करती हूं। और हमेशा करती रहूंगी।'

उसने देवता के गाल को चूमा, और देवता ने भी उसे चूमा।

·||卐||·

जैसे ही उसके सफ़ेद और सिल्वर रंग की मोटरबाईक का इंजन चालू हुआ, वो असाधारण रूप से ताकतवर इंजन दहाड़ा, और तेजस्वी विद्युत ने सबसे अंतिम

बार विदा ली। तभी पुरोहित जी को कुछ ऐसी बात याद आई, जो उन्हें अब तक नहीं जान पड़ी थी।

धरती के अंतिम देवता को हाथ हिलाकर विदा करते हुए, वो ख़ुशी से मुस्कुराए ।

ग्रंथों के अनुसार, ड्यूल-डक्ट या देवदत्त ही उस दिव्य के सांसारिक वाहन का नाम था।

यही तो कल्कि के वाहन का नाम था।

समाप्त

शुरुआत...

उपसंहार

तूफानी रात में वो एक भूत की तरह दिखाई पड़ रहा था।

अपने चार हाथ-पैरों के सहारे वो, तेज हवा और बरसात की परवाह किए बिना, एक कब्र से दूसरी कब्र तक जा रहा था। धुआंधार बारिश उस मध्ययुगीन कब्रिस्तान में पुराने कफन को धोते हुए, कब्रों को तोड़ रही थी। केरोसिन का एक छोटा-सा लैंप उठाए, वो अपने काले जादू के लिए किसी सही लाश की तलाश कर रहा था। वो अब किसी भी तरह इंसान नहीं लग रहा था, और जिंदा से अधिक मृत ही लगने लगा था। उसके गंदे बाल बिखरे हुए थे, जो उसके माथे से होते हुए, गालों तक आ रहे थे। पूरी तरह से भीगकर, उसका सफेद कुर्ता-पजामा उसके बदन से चिपक गया था, और उसके वृद्ध चेहरे से त्वचा निकलने लगी थी। ऐसा लग रहा था मानो उस पर किसी काली, बुरी ताकत का कब्जा हो।

आखिरकार उसे वो दूर से दिखाई दिया और वो उसकी तरफ अपने चार हाथ-पैरों पर उछलता हुआ, पागलों की तरह भागा। अपनी अजीब तरह की मुड़ी हुई उंगलियों से उसने कब्र के पत्थर पर लगी मिट्टी और कीचड़ को साफ़ किया, जिससे वह उस पर गुदा हुआ नाम साफ़-साफ़ पढ़ सके। इस संतुष्टि से कि उसने ग्रंथों में वर्णित ताबूत को ढूंढ़ लिया था, उसने ऊपर चांदरहित रात को देखा और किसी प्राचीन जादूगर की तरह गुर्राया, और फिर अपने नंगे हाथों और गंदे नाखूनों से कब्र की खुदाई शुरू कर दी।

जैसे वो दलदली कब्र को खोद रहा था, और मुट्ठी में भर-भरकर मिट्टी फेंक रहा था, वो पागलों की तरह कुछ बुदबुदाता जा रहा था, मानो किसी दूर बैठे व्यक्ति से बात कर रहा हो। उसके मुंह से निकले अशुभ शब्द ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो वो किसी दूसरी दुनिया की ताकत का आह्वान कर रहा हो।

'उठो!' दम निकले पिशाच की तरह वो बुदबुदाया। 'धरती का हृदय फाड़कर, अंधेरे की चादर को चीरकर उठो!'

तूफानी रात में, उसकी आंखें पागलों की तरह प्रत्येक दिशा में भटक रही थीं।

'उठो, लूसिफर!'

ब्रह्मानंद जानता था कि स्वयं शैतान ही कलयुग के मसीहा को रोक सकता था।

वह धरती पर शैतान को बुला रहा था।

क्रमशः...

क्रमशः...

धूमकेतु

धधकते महासागर

विनीत बाजपेयी

लेखक के बारे में

विनीत युवा उद्यमी हैं। महज 22 साल की उम्र में ही उन्होंने छोटे स्तर पर अपनी कंपनी Magnon की शुरुआत की। आज Magnon उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी डिजिटल एजेंसियों में से एक है, और फोर्च्यून 500 ओमनिकोम ग्रुप का हिस्सा है।

आप विश्व की टॉप-10 एडवर्टाइजिंग एजेंसी TBWA का नेतृत्व इसके भारत के CEO के रूप में करते हैं। आप देश की मल्टीनेशनल एडवरटाइजिंग नेटवर्क कंपनी के सबसे युवा सीईओ हैं।

आपने उद्यमिता और कॉर्पोरेट दक्षता में अनेकों अवार्ड हासिल किए, जिनमें *आंत्रप्रेन्योर ऑफ़ द ईयर 2016* भी शामिल है। आपको अभी हाल में *इंडिया'स डिजिटल इकोसिस्टम* के 100 सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में भी शामिल किया गया।

विनीत की दूसरी कंपनी *टेलेंटट्रेक* इंडिया में मीडिया, मनोरंजन और क्रिएटिव इंडस्ट्री के लिए प्रतिभा की पहचान करती है। यह इस क्षेत्र का तेजी से बढ़ता हुआ हायरिंग और नेटवर्किंग प्लेटफार्म है।

वह प्रबंधन और प्रेरक विषयों पर तीन बेस्टसेलिंग किताबें लिख चुके हैं—*बिल्ड फ्रॉम स्क्रेच, द स्ट्रीट टू द हाईवे* और *द 30 समथिंग सीईओ*।

उनके पहले दो उपन्यास *हड़प्पा—रक्त धारा का श्राप* और *विनाशकारी प्रलय* , दोनों नेशनल बेस्टसेलर रहे। उन्हें आलोचकों और साहित्यकारों की प्रशंसा भी प्राप्त हुई।

www.VineetBajpai.com
facebook.com/vineet.bajpai
twitter/Vineet_Bajpao

instagram/vineet.bajpai
विनीत को मेल लिखने के लिए vb@vineetbajpai.com

“ब्रह्मांड की समस्त काली शक्तियां उसकी दास हैं...”

1699 ईसापूर्व, आर्यवर्त के दलदल – जब प्रलय की लहरें एक-एक नगर को अपनी चपेट में लेती जा रही थी, तब विराट नौका और धरती के बीच एक अंतिम युद्ध की शुरुआत हुई। एक निर्मम राजा ने मानवजाति के अस्तित्व को चुनौती देते हुए, कलयुग के आगमन की घोषणा की।

2017, बनारस – रात्रि के आकाश में एक पवित्र नक्षत्र प्रस्फुटित हुआ और भविष्यवाणी में नियत समय आ पहुंचा। देव-बलिदान एक भयानक राक्षस-बलि में बदल गया, और देवता ने पापी भ्रातृसंघ के रक्तरंजित इतिहास से पर्दा उठाया।

762 ईस्वी, राष्ट्रकूट साम्राज्य – शक्तिशाली सम्राट पृथ्वीवल्लभ से मिलने के लिए पवित्र नगरी से एक रहस्यमयी अतिथि आया। उसने सम्राट को प्राचीन रहस्य सौंपा, जिसने सम्राट को एक शौर्यपूर्ण और असंभव अभियान के लिए प्रेरित किया।

2017, न्यूयॉर्क शहर – छठी पीढ़ी के एक अरबपति को ‘द बिग मैन’ का फोन आया। न्यू वर्ल्ड ऑर्डर के उस सर्वेसर्वा ने अपने अंतिम दांव के बारे में बताया। मुंबई के अंडरवर्ल्ड ने भी शैतान के दूत से हाथ मिला लिया!

क्या विद्युत भ्रातृसंघ के साथ होने वाले निर्णायक युद्ध में विजयी हो पाएगा? यूरोप में 14वीं सदी में हुई काली मृत्यु के पीछे कौन सा घिनौना सत्य है? प्रकाश और अंधेरे, अच्छाई और बुराई, ईश्वर और शैतान के बीच होने वाले अंतिम युद्ध का साक्षी बनने के लिए पढ़िए।

विनीत भारत के जॉर्ज आर आर मार्टिन (Game of Thrones) हैं... –टाइम्स ऑफ इंडिया

विनीत बाजपेयी... श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में उभरे हैं। –डी एन ए

ISBN 978-93-89237-03-0
9 789389 237030
₹200
TreeShade Books
www.TreeShadeBooks.com